TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180718

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/V24K Accession No. G.H.909

Author वन्द्योपाध्याय, ताराशंकर

Title कालिन्दी / 1951

This book should be returned on or before the date last marked below.

कालिन्दी

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

जनवाणी-प्रकाशन

प्रकाशक
जनवाणी-प्रकाशन
१६१।१, हरीसन रोड,
कलकत्ता-७

प्रथम संस्करण
मूल्य ५)

मुद्रक
श्री हजारीलाल शर्मा
जनवाणी प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स लि०,
३६, वाराणसी घोष स्ट्रीट,
कलकत्ता – ७

प्रकाशकीय

"धरती माता" तथा "रायकमल" के प्रकाशन के पश्चात् जब हमने ताराशंकर बाबू से पूछा कि उनके किस उपन्यास का अनुवाद अब हिन्दी-संसार के समक्ष उपस्थित किया जाय, तब उन्होंने तुरन्त "कालिन्दी" का नाम लिया। बंगला-साहित्य के बीच आज से लगभग ग्यारह साल पहले "कालिन्दी" का प्रकाशन हुआ था और तब से अब तक इसके कम-से-कम नौ-दस संस्करण हाथों-हाथ निकल चुके हैं। इसमें हमारे मध्यवर्गीय परिवार की बिगड़ती हुई परम्परा का मार्मिक चित्र अङ्कित है। पारस्परिक कलह के कारण आज लाखों भारतीय गाँवों की सुख-शान्ति क्रमशः किस प्रकार क्षीण होती जा रही है, इसीकी याद दिलाना लेखक को अभीष्ट है।

अभी, वर्षों की गुलामी के बाद, जब कि हमारा देश स्वाधीन हुआ है, इसके पुनर्निर्माण की अगणित समस्याएँ हमारे सामने हैं। किन्तु, इन समस्याओं में हमारे गाँवों के पुनर्निर्माण एवं उत्थान की समस्या ही सबसे प्रधान हैं; क्योंकि भारतीय राष्ट्र का प्रमुख जनपद आज भी गाँवों में ही निवास करता है। किन्तु, गावों के पुनर्निर्माण की बात तब तक आकाश-कुसुम की तरह ही रहेगी, जबतक कि गाँवों की जनता की अशिक्षा, कुसंस्कार एवं ईर्षा-द्वेष की अकारण भावनाओं का निराकरण नहीं किया जाय।

उपर्युक्त आवश्यकता पर दृष्टि रखकर ही लेखक ने पहले "कालिन्दी" के प्रकाशन की इच्छा प्रकट की। लेखक का यह विचार हमें भी बिलकुल सामयिक मालूम पड़ा। हिन्दी कोटि-कोटि भारतीयों की भाषा है। इसके द्वारा ही शिक्षा-संस्कार का कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। अतः

"कालिन्दी" में वर्णित पात्र-पात्रियों के दर्पण में जनसाधारण ने अपने दिनानुदिन बिगड़ते हुए रूप को देखकर यदि उसे सजाने-संवारने का यत्किञ्चित प्रयास भी किया, तो लेखक और प्रकाशक दोनों के श्रम सार्थक होंगे।

निरुद्देश्य साहित्य-सृजन के सिद्धान्त में इस उपन्यास के लेखक का विश्वास नहीं। जिस रचना से पाठक को कोई प्रेरणा, कोई दृष्टि अथवा विचार नहीं मिला, वह रचना व्यर्थ है। रचना में रचयिता का लक्ष्य स्पष्ट होना ही चाहिये।

किन्तु, इस लक्ष्य के प्रकटीकरण में लेखक की एक बहुत बड़ी कसौटी है। जिस लेखक ने दुनिया की खुली किताब नहीं पढ़ी, सृष्टि के विभिन्न कारखानों का परिभ्रमण नहीं किया, और केवल अपनी भावुकता के आवेग से, तथ्य, तत्त्व और उपादान-संग्रह के श्रमसाध्य लगन से, यदि वह इसे प्रकट करना चाहे, तो वह पाठकों के हृदय पर कदापि अधिकार नहीं पा सकता। हमें हर्ष है कि इस पुस्तक के लेखक में पाठकों को इस प्रकार के अभाव का कदापि दर्शन नहीं होगा। ताराशंकर बाबू ने इस उपन्यास में जितनी भी मूर्त्तियाँ गढ़ी हैं, हमें पूर्ण विश्वास है, कि उनमें पाठकों को केवल वैचित्र्य और कौतूहल ही नहीं मिलेंगे; बल्कि आत्मचेतना की मार्मिकता और जीवन का स्पंदन भी मिलेगा।

श्रावणी पूर्णिमा, ई० १९५१ —व्यवस्थापक।

कालिन्दी

एक

नदी के उस पार एक दियारा दीख पड़ा है। रायहाट गाँव के पास ही ब्रह्माणी नदी है। इसका स्थानीय नाम कालिन्दी है, किन्तु लोग इसे काली नदी कहते हैं। इसी नदी के उस पार चर निकला है। जहाँ यह दियारा निकला है, वहाँ पहले काली नदी की तरेटी थी। इस समय काली नदी, गाँव का एक भाग हड़पकर, उससे सटकर बह रही है। गाँववालों को अब बीस हाथ ऊँचा किनारा लाँघकर नदी में उतरना पड़ता है।

इसी दियारे के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ है। रायहाट पुराना गाँव है। यहाँ का जमींदार-वंश—रायघराना—अनेक शाखा-प्रशाखाओं में बँट गया है। रायवंश के सभी हिस्सेदार, उस दियारे पर अपना-अपना अधिकार करने के लिये, एक हाथ में लाठी और दूसरे में कागज लेकर, आगे बढ़े। इन लोगों में अपने सिर घुसेड़ दिये और दो महाजनों और कई किसान प्रजाओं ने। सब मिलाकर झगड़ा करनेवालों की संख्या एक सौ पन्द्रह तक पहुँच गयी। उनमें परस्पर प्रत्येक से प्रत्येक का विरोध था।

प्रत्येक जमींदार का दावा था—दियारे उसकी सीमा में निकला है, अतः उस पर उसी का अधिकार होना चाहिये। दोनों महाजनों में से प्रत्येक

यह दावा करता था कि उसकी बन्धक भूमि के पास ही दियारा निकला है, अतः उसको उनकी बन्धक सम्पत्ति कहनी चाहिये, और अन्त में ऐसा ही होकर रहेगा। रियायों का कथन था कि—उनकी इस पार की जमीन काली के पेट में गयी है, अतः उस पार काली ने हरजाने के रूप में जो भूमि दी है, वह उन्हें मिलनी चाहिये।

इस समय रायवंश में एक सौ पाँच हिस्सेदार हैं। बकाया लगान के मुकदमे में जमींदारों के नाम लिखने में पूरे तीन पन्ने भर जाते हैं। इस मुकदमे में एक सौ दो हिस्सेदारों ने भाग लिया है। बाकी तीनों में एक है बिल्कुल असहाय, नाबालिग, किन्तु दूसरा और तीसरा पक्ष है यहाँ का बहुत काल से लड़नेवाला। एक पक्ष है रायवंश के नाती का परिवार और दूसरा है रायवंश के ही सबसे अधिक धुरन्धर और कूट-नीतिज्ञ इन्द्रराय का। इन्द्रराय का हाथ गरुड़ के तेज पंजे की भाँति फैल जाने पर कभी भी बिना मुट्ठी भरे नहीं लौटता। ऐसा लगता है कि भूमि भी ऊपर चली आती है। इसी इन्द्रराय की प्रतीक्षा में सभी झगड़ा करनेवालों के उठे हुए हाथ इस समय भी रुके हुए हैं, नहीं तो इतने दिनों में कोई दुर्घटना हो गयी होती।

दूसरा पक्ष है—इन्द्रराय के खानदानी विरोधी, रामेश्वर चक्रवर्ती, का। वे भी किसी समय इन्द्रराय के मुकाबिले के व्यक्ति थे। कूटबुद्धि की अपेक्षा उनका व्यक्तित्व बड़ा था। वे दम्भ की मूर्ति ही थे। इन्द्रराय के साथ द्वन्द्व में वे इन्हें ही अस्त्र रूप में व्यवहार करते, हर मुकदमे में वे इन्द्रराय को ही गवाह मानते। इन्द्रराय के झूठ कहने पर वे हँसते हुए उनका खण्डनकर कहते—'तुम्हें गवाही देने की फीस दी है इन्द्र। व्यर्थ ही खर्चकर तुमने गवाहों को जूते खरीद दिये।' घर लौटकर वे ग्राम में खान-पान का एक बड़ा आयोजन कर डालते।

किन्तु जिस काल को गति से यदुपति गये, उनकी मथुरापुरी का

गौरव नष्ट हुआ, ऐसा लगता है, उसी काल के प्रभाव से रामेश्वर अब वे नहीं हैं। वे अब दृष्टिहीन होकर अँधेरे घर में पुराने विजय के खम्भे की भाँति भूमि पर पड़ गये । अब उनके नेत्र प्रकाश एकदम बरदाश्त नहीं कर पाते, और माथा भी बिगड़ गया है। उनकी सम्पत्ति का कारबार देखते हैं पुराने नायब योगेश मजुमदार, मजुमदार की आड़ में हैं शान्त और विषाद की मूर्ति के समान एक नारी—रामेश्वर के दूसरे विवाह की स्त्री सुनीति देवी। दो पुत्र हैं—बड़े की अवस्था अठारह और छोटे ने पन्द्रहवें में पैर रखा है। इस समय मजुमदार ने सुनीति देवी से बहुत कह-सुनकर पढ़ना-लिखना छुड़ाकर बड़े को जमींदारी के काम में लगा लिया है। अवश्य ही उसे पढ़ने-लिखने से प्रेम भी नहीं था। इस झगड़े के प्रारम्भ के पहले से ही मजुमदार तथा रामेश्वर का जेठा पुत्र महीन्द्र यहाँ नहीं हैं—वे महाल देखने के लिये चले गये हैं। लोगों ने समझा—इन्द्रराय विरोधी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, अथवा सुयोग देख रहे हैं, अवसर पाते ही पंजा मार बैठेंगे।

किसान इतना नहीं समझते, वे एक दिन आकर इन्द्रराय को पकड़ बैठे, "हजूर, आप कुछ फैसला कर दीजिये।"

अपनी भौंहें थोड़ी टेढ़ीकर हँसी के साथ उन्होंने कहा—किसका फैसला रे? (जैसे उन्हें कुछ ज्ञात ही न हो।) किसके साथ झगड़ा है तुमलोगों का?

किसानों ने उत्साहित होकर कहा—वही, नदी के उस पार के चर की बात कह रहे हैं। इस पार हमारी जमीन खाकर ही तो नदी ने उस पार उसे उगला है; हमारी जो जमीन पानी में चली गयी—उसकी लगान में छूट तो हमें मिली नहीं, हम तो साल-साल का भुगतान गिनते आ रहे हैं।

बाँयें हाथ से मूँछ पर ताव देते-देते राय ने कहा—अच्छा, तो तुमलोगों को नुकसान देने की क्या आवश्यकता है? नुकसानवाली जमीन से

इस्तीफा दे सकते हो। बाँयें हाथ से मूँछ पर ताव देना राय की एक लत है। लोगों का कथन है कि इसके साथ ही साथ मन में वे उपाय सोचते हैं।

किसानों ने निराश होकर राय के मुख की ओर कुछ देर तक देखकर कहा—हजूर, ऐसा होने पर आपने न्याय क्या किया ?

इन्द्रराय हँसकर बोले—तुमलोग जैसा कहोगे, उसको ही मान लेने का नाम तो न्याय नहीं है रे ! न्याय के लिये तो एक कानून है। उस कानून के अनुसार ही तो जज को न्याय करना पड़ता है।

किसान हताश होकर उठकर चले गये। जाते-जाते सलाहकर वे रामेश्वर बाबू के घर पहुँचे। कचहरी में मालिक कोई नहीं था, नौकर ने कहा—बड़े बाबू भी नहीं, नायब बाबू भी नहीं, और मालिक के साथ तो मुलाकात होगी नहीं।

किसान तो गाँव के ही हैं। उनको सारी बातों की जानकारी है। उनको मालूम है कि इस समय इस घर के सारे कामों की आड़ में एक अदृश्य शक्ति कार्य करती है, परमाशक्ति के समान वह भी नारी-रूपिणी है। उन्होंने कहा—हम माँ के साथ मुलाकात करेंगे।

नौकर अवाक् हो गया, उसने ऐसी बात कभी नहीं सुनी थी। वह बोला—तुमलोग पागल हो गये हो क्या ?

रामेश्वर बाबू का छोटा लड़का अहीन्द्र पास के ही एक घर में पढ़ रहा था, वह अब बाहर निकल आया। नंगी तलवार के समान उसका रूप, कुछ लम्बा-पतला शरीर, खूब गोरा देह का रंग, भूरी आँखें, सिर के केश तक भूरे हैं। उसको देख किसान उत्साहित हो गये। इस घर के बड़े लड़के महीन्द्र को देखकर उन्हें भय लगता है, दस बातें कहने पर वह एक का जवाब देता है। उसके मुख की ओर देखकर भी वे बातें नहीं करते। किन्तु छोटे बाबू का रूप जितना भी उग्र क्यों न हो, ऐसा साफ-स्वच्छन्द

व्यवहार, इस प्रकार की मधुर बातें, उनको किसी के पास नहीं मिलतीं। कहानी कहकर ही उनके साथ उसका मिलन-क्षेत्र तैयार हुआ है। वह पुराने किसानों के पास संथाल-विद्रोह की बातें सुनने जाता है, स्वयं भी देश-विदेश की अनेक कहानियाँ सुनाता है। समुद्र के तीर पर सोमनाथ शिवमन्दिर की लूट की कहानी, अमेरिका के गोरों के साथ विलायत के गोरों के युद्ध की कहानी, वे अचरज के साथ सुनते हैं। वे अहीन्द्र को देख अत्यन्त उत्साहपूर्वक बोले—छोटे भैया, कब आये ?

अहीन्द्र यहाँ से दस मील दूर शहर के स्कूल में पढ़ता है। अहीन्द्र ने हँसकर कहा—कल सन्ध्या को आया हूँ, चार दिन की छुट्टी है। इस समय तुमलोग कहाँ आये हो ? भैया भी घर नहीं हैं, नायब-काका भी नहीं हैं।

उन्होंने कहा—आप तो हैं न भैया ! आप हमलोगों का फैसला कर दीजिये।

खिलखिलाकर हँसते हुए अहीन्द्र बोला—मैं फैसला कर सकता हूँ क्या, दुर-दुर !

उन्होंने पकड़ लिया—नहीं भैया, आपको हमारे दुःख की बात सुननी ही पड़ेगी। आपके न सुनने पर हम किसके पास जायँगे ? नहीं तो हमें माँ के दरबार में ले चलिये। हम कुछ न खाकर यहीं पड़े रहेंगे।

अहीन्द्र माँ के पास गया। सुनीति स्वामी के लिये भोजन तैयार कर रही थीं। अहीन्द्र के आकर खड़े होते ही बोलीं—क्या है अहि ?

माँ और पुत्र का रूप एक है, अन्तर है केवल केशों तथा आँखों का। मुँह, रंग तथा देह की गठन में अहि है जैसे माँ का प्रतिविम्ब—केवल भूरे केश तथा नेत्र पितृवंश की विशेषता है। सुनीति के बड़े-बड़े काले नेत्र और केश भी अत्यन्त काले-काले हैं। उसके बड़े पुत्र महीन्द्र से उसकी कोई समानता ही नहीं है, उसके सब अंग पिता के समान हैं।

अहि ने सब बातें सुनाकर माँ से कहा—वे एकदम तुमसे भेंट करना चाहते हैं माँ। क्या कह दूं उनसे ?

वे पुत्र के मुख की ओर देख भौंहें टेढ़ीकर, बोलीं—ऐसा भी कभी हो सकता है अहि ? मैं क्यों उनसे भेंट करूँ ? क्या समझकर तू ऐसी बात कहने आया है ?

अहि तुरन्त ही लौट पड़ा। माँ ने हँसकर पीछे से पुकारा—इसी प्रकार चल दिया ? अहि ने उनकी ओर मुख न फेरकर ही बोला—जाकर उनसे यह बात कह दूं।

अरे, एक बार तेरा मुख तो देखूँ!

पुत्र घूमकर खड़ा हो गया। माँ ने उसका चिबुक छूकर कहा—इस प्रकार का मानी पुत्र तो मैंने कहीं देखा ही नहीं, फूल के घाव से ही क्रोधित हो जाता है!

बात ठीक है, माँ की साधारण बात से ही अहि रूठ जाता है। इस संसार में उसका सारा दबदबा केवल माँ के ऊपर है। बचपन से ही वह बाप के निकट नहीं जाता, किन्तु उसका बड़ा भाई महीन्द्र पिता के पास-पास फिरता रहता है। दोनों भाइयों की प्रकृति परस्पर विपरीत है। महीन्द्र रूठना नहीं जानता, वह भयंकर क्रोध करना, अपनेको भूलकर आघात करना और बलपूर्वक इच्छित वस्तु दूसरों से ले लेना जानता है। वह इस्पात की तरह टूट सकता है, तथापि किसी प्रकार झुक नहीं सकता। और अहि शुद्ध सोने के समान झुकनेवाला है—आघात से हटता नहीं, रूठकर टेढ़ा हो जाता है।

माँ ने फिर पूछा—तुमने व्यर्थ ही क्या क्रोध किया है ?

मैंने क्रोध नहीं किया है।

नहीं क्यों ? मैं तो साफ देख रही हूँ। जान पड़ता है कि तुमने उनसे कहा है कि माँ के साथ भेंट करा दूंगा।

अहि बोला—कहा तो नहीं है, किन्तु भेंट करने में हानि ही क्या है ?

हानि नहीं है, तू क्या कहता है ? रायबाबू लोग हँसेंगे, कहेंगे—घर की बहू होकर किसान-प्रजा के साथ बातें करती है !

कहने दो। यही कहकर वे उनके दुःख की बात सुनेंगे नहीं, और इस प्रकार मुसलमान नवाबों के घरों जैसे परदे की जरूरत ही क्या है ? आजकल स्त्रियाँ देश का कार्य कर रही हैं।—यूरोप में—इस युद्ध में—

बीच में रोकते हुए माँ ने हँसकर कहा—तुम्हारी मास्टरी के सामने और कुछ कह नहीं सकती अहि ! तो तू स्वयं ही जो कहना हो, कह दे न। वही मेरी बात होगी। मैं महि से कह दूँगी कि मैंने ही यह बात कही है।

पुत्र ने हठ किया—नहीं, ऐसा नहीं होगा, तुमको सुनना ही पड़ेगा। मैं दरवाजे पर खड़ा रहूँगा ; वे बाहर रहेंगे और तुम घर में रहोगी।

अन्त में ऐसा ही हुआ। अहीन्द्र को बीच में रखकर सुनीति किसानों की फरियाद सुनने बैठीं। उन्होंने युक्तियों से अपना दावा बताते हुए सारा वृत्तान्त कह सुनाया। केवल इन्द्रराय के निकट शरण लेने तथा राय महाशय द्वारा युक्तिपूर्वक उसके खण्डन की बात नहीं बतलायी। उन्होंने अपनी बात समाप्त कर कहा—आपके चरणों में हमने आश्रय लिया है माँ, आप ही इसका न्याय कर दीजिये। हमारा सब-कुछ काली का कवल बन गया है माँ, हमारे पास आलू बोने और ईख बोने के खेत नहीं हैं। और क्या करें माँ—किसान के घर चने के पौधे नहीं होते, गेहूँ नहीं बोया जाता। तिसपर भी हमलोग बराबर लगान देते जाते हैं।

सुनीति बोली, 'तुमलोग उस घर के भैया के पास जाओ। अहि को तुम्हारे साथ कर देती हूँ।' उस घर के भैया का अर्थ है इन्द्र राय महाशय। किसान इन्द्र राय का नाम सुनकर चुप हो गये। रंगलाल ने तुरन्त सोच-कर कहा—जो नहीं माँ, वे जमींदार हैं, किन्तु बुद्धि में हैं जलेबी के पाग के समान। जो करना हो, आप ही कर दीजिये।

सुनीति ने कहा—छिः, क्या ऐसी बात की जाती है ? वे ही इस गाँव के सबसे बड़े आदमी हैं। इस घर के मालिक के रोग की बात तो तुम लोग जानते ही हो। महि, हजार होने पर भी लड़का ही है। मैं स्त्री हूँ। गाँव के सारे जमींदारों के झगड़े का फैसला मुझसे हो सकता है ? यदि कभी भगवान ने कृपा की, महि-अहि योग्य हुए, तभी तुम्हारे फरियादों का विचार यहाँ हो सकेगा। इस समय तुमलोग उस घर के भैया के पास ही जाओ। अहि तुम्हारे साथ जा रहा है।

किसानों में रंगलाल ही फिर बोला—जी माँ, उन्होंने भी पंजा फैलाया है। इसीका तो हमें भय है, नहीं तो अन्य जमींदारों से लड़ने का हममें साहस है। बहुत होगा दस रुपये खर्च होंगे।

सुनीति बोलीं—वे भी चर पर दावा कर रहे हैं क्या ?

मुँह से तो कहा नहीं, किन्तु लक्षण ऐसा ही है। गाँव के सब जमींदारों ने दावा किया है माँ, हम भी दावा करते हैं, और महाजन भी आ जुटे हैं। दावा नहीं किया है तो केवल आपलोगों ने। किन्तु—

किन्तु क्या सरदार ? उसमें क्या हमारा भी हिस्सा है ?

बार-बार हताश के समान सिर हिलाकर रंगलाल बोला—और क्या कहूँ माँ ? और कहूँ भी तो किससे ? कानून तो कहता है कि चर जिस गाँव के पास निकलता है, उसी गाँव का मालिक पायेगा। वह चर रायहाट के पास निकला है नहीं, वह तो निकला है उस पार के चक अफजलपुर के साथ। अफजलपुर तो सोलह आने आपका ही है, और इस पार होने पर भी तो आप तीन आने दो पाई के मालिक हैं।

दूसरे किसान रंगलाल की बात से चञ्चल हो उठे। मनुष्य बूढ़ा होकर सठिया जाता है, नहीं तो अपना दावा बतलाने आकर बूढ़ा यह क्या कह रहा है ! सुनीति तनिक आश्चर्य के साथ बोलीं—देखो भैया, तुम्हारी

बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। तुमलोगों का दावा है कि चर तुम्हें मिलना चाहिये।—और

बीच में ही बाधा देकर लज्जित भाव से रंगलाल ने कहा—मैं तो कह रहा हूँ माँ, न्याय की बात। आप ही कहिये, धर्म के अनुसार चरहमें मिलना चाहिये कि नहीं ?

सुनीति चुपचाप इस बात पर विचार कर रही थीं—क्या इनका पाना उचित है। दरिद्र किसान प्रजा—अहा-हा !

रंगलाल ने फिर कहा, और जो मैं कह रहा हूँ,—वह कानून की बात है। कानून तो धर्म से कुछ लेता नहीं।

राम का दोष रहीम के गले मढ़ना ही कानून का काम है। सुनीति ने धीरभाव से विचारकर अन्त में कहा—अच्छा, मैं आज ही महि और मजुमदार को आने के लिये चिट्ठी लिख देती हूँ। वे लोग यहाँ आयँ, इसके बाद तुमलोग आना। फिर भी यह बात ठीक है, तुमलोगों के साथ कुछ अविचार नहीं होगा।

रंगलाल फिर बोला—केवल कानून ही न देखियेगा, धर्म की ओर भी दृष्टि रखियेगा।

सुनीति ने कहा—धर्म छोड़कर क्या कुछ किया जाता है भैया ? तुमको कुछ भय नहीं है। किसान कुछ उत्साहित होकर चले गये।

सुनीति बोलीं—तू ही एक बार तीसरे पहर उस घर के भैया के पास जायगा अहि।

दो

आनीति रायवंश के छोटे घराने के मालिक इन्द्र राय को भैया कहती हैं ; किन्तु इन्द्र राय से उनका कुछ सम्बन्ध नहीं है। इन्द्र राय रामेश्वर चक्रवर्ती की पहली स्त्री राधारानी के सहोदर भाई हैं। चक्रवर्तीवंश के साथ रायवंश का विरोध तीन पीढ़ियों से चला आ रहा है ; रायवंश के सबलोग चक्रवर्तियों के विरुद्ध हैं। किन्तु इसी छोटे घराने के साथ उनका विरोध अधिक है। फिर भी आश्चर्य है, रामेश्वर चक्रवर्ती के साथ छोटे घराने के रायवंश की कन्या का विवाह हुआ था।

तीन पीढ़ियों के पूर्व इस विरोध का प्रारम्भ हुआ था। रायवंश श्रोत्रिय तथा चक्रवर्तीवंश कुलीन है। उस समय श्रोत्रिय कुलीन के हाथ अपनी कन्या देते थे। रामेश्वर के पितामह परमेश्वर ने रायवंश के मँझले घराने की उत्तराधिकारिणी कन्या से विवाह किया था। विवाह करके भी ससुर के रहते वे कभी स्थायी भाव से ससुराल में नहीं रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् जिस दिन वे यहाँ आकर मालिक बन बैठे, उसीदिन रायों के साथ उनका झगड़ा भी उठ खड़ा हुआ। उस दिन भी रायवंश के नेता इसी छोटे घराने के मालिक—इन्हीं इन्द्र राय के पितामह राजचन्द्र राय थे। उस दिन परमेश्वर चक्रवर्ती के ससुर अर्थात् रायवंश के मँझले घराने के

मालिक का श्राद्ध-दिवस था। राजचन्द्र के ही ऊपर श्राद्ध के सम्पूर्ण प्रबन्ध का भार आ पड़ा था। मजलिस में बैठकर गड़गड़े की नली से कश खींच कर राजचन्द्र ने परमेश्वर चक्रवर्ती के हाथ में पुनः दे दिया।

परमेश्वर ने नली न खींचकर ही दूसरे रायवंशज के हाथ दे दी। इसके पश्चात् अपनी झोली से एक छोटा हुक्का तथा चिलम निकाल नौकर को देकर बोले—किसी ब्राह्मण को दे, वह जल भरकर इस चिलम में आग डाल दे। वे परम तेजस्वी तांत्रिक ब्राह्मण थे।

राजचन्द्र सम्बन्ध में परमेश्वर के साले थे। उन्होंने कहा—कुलीनों में आडम्बर खूब है। हँसकर परमेश्वर बोले, गुण्डागिरी से आडम्बर बहुत अच्छा है राय महाशय। राजचन्द्र ने उत्तर दिया, किन्तु गुण्डागिरी से ली हुई भूमि ही प्यारी होती है। यह बात सुन राय-वंश के सभी हो-हो कर हँसने लगे।

किन्तु परमेश्वर को क्रोध नहीं आया, उन्होंने तुरन्त ही हँसते हुए उत्तर दिया, केवल भूमि ही नहीं महाशय, गुण्डों की कन्यायें भी। यद्यपि वे कुलीना तो नहीं होतीं, किन्तु रत्न के समान होती हैं।

इस पर मजलिस में जो जहाँ थे, सब हँसने लगे--हँसे नहीं केवल राय लोग। फलतः झगड़ा उठ खड़ा हुआ। श्राद्ध के अन्त में ब्राह्मणभोजन के समय रायों ने एकत्र होकर कहा, परमेश्वर चक्रवर्ती अगर हमारे साथ एक गगड़े में तम्बाकू न पियेंगे, तो हमलोग भी भोजन न करेंगे।

परमेश्वर अपने छोटे हुक्के से तम्बाकू पीते ही पीते बोले—इससे चक्रवर्ती-वंश के किसी पुरुष की अधोगति नहीं होगी। ब्राह्मण-भोजन के अभाव में राय-वंश की ही अधोगति होगी।

इसके पश्चात् राय-वंश को सिर नीचा कर खाने बैठना पड़ा। किन्तु उसी दिन दोनों वंशों के मनों में विरोध की खाई खुद गयी।

परमेश्वर तथा राजचन्द्र के समय विरोध की जो खाई खोदी गयी थी,

वह दोनों पक्षों के मिलने के मार्ग में बाधक बनी रही। कुछ हड़प नहीं की, किन्तु परमेश्वर के पुत्र सोमेश्वर के समय वह खाई किनारे काटनेवाली नदी बन गयी; वह तट काटकर काली नदी की भाँति सम्पत्ति हड़पने लगी। मामले-मुकदमे होने लगे। राजचन्द्र के पुत्र तेजचन्द्र पहले आहत हुए। सोमेश्वर को एक बात की सुविधा थी—सारी सम्पत्ति की मालकिन उसकी माता थीं। सोमेश्वर के नाना दस्तावेज लिखकर सम्पत्ति अपनी कन्या को दे गये, अतः सोमेश्वर के कारण उनकी सम्पत्ति छूने का अधिकार किसी को नहीं था। इसी समय वीरभूमि का प्रसिद्ध संथाल-विद्रोह हुआ। सोमेश्वर आगे-पीछे कुछ न सोच सन्थालों के साथ मिल गये। माथे में सिन्दूर का टीका लगाकर शायद उन्होंने सन्थालों की सेना का सञ्चालन भी किया था। इसी को लेकर माता और पुत्र में विवाद हुआ। पुत्र उस समय विद्रोह के उन्माद से उन्मत्त था। वह माँ से कह बैठा—तुम इसका मूल्य न समझ पाओगी, श्रोत्रिय सदा सरकार के कृपापात्र रहे हैं, वही दासरक्त तो तुम्हारे शरीर में भी···।

माँ ने सर्पिणी के समान फण फैलाकर कहा—क्या कहता है, इतनी लम्बी बातें हैं तेरी? इसमें तेरा दोष क्या? दूसरों के अन्न से जिनका पालन होता है, उनकी बातें सदा बड़ी-बड़ी होती हैं, उनका स्वर सदा पंचम में ही चढ़ा रहता है।

सोमेश्वर बोले, अपनी बात का उत्तर तुमने स्वयं दे दिया, कौए के घोंसले में कोयल का पालन होता है, उसका स्वर पंचम ही रहता है, यह उसकी जाति का गुण है, कौवे उससे सदा क्रोधित रहते हैं।

दूसरी ओर उस समय तेजचन्द्र सदर में अफसरों के पास सदा आदमी भेजते हैं। यह सम्वाद सोमेश्वर जानते थे और उनकी माँ ने भी सुना था। सोमेश्वर गरज उठे—रायहाट को खाक में मिला दूँगा, राय-वंश को निर्वंश कर दूँगा।

सच्ची बात यह है कि उनका यह गर्जन केवल थोथी धमकी नहीं है। उनके अधीन उस समय हजारों सन्थाल उन्मत्त शक्ति लेकर उनके संकेतों का इन्तजार कर रहे थे। सोमेश्वर का गोरा रंग, भरे नेत्र तथा भूरे केश देखकर वे देवता के समान उनसे भक्ति करते, उन्हें लाल देव कहते थे। सोमेश्वर की माँ ने पिता-वंश की ममता से विह्वल होकर उनके दोनों पैर पकड़ लिये। सोमेश्वर साँप से डँसे हुए मनुष्य की भाँति चौंककर पीछे हट गये और एकदम थकित की तरह बैठ गये। उन्होंने कहा, तुमने किया क्या माँ, यह तुमने किया क्या? पिता-वंश की ममता से मेरे सिर पर बज्र गिरा दिया। माँ ने पुत्र के सिर पर हाथ फेरकर लाखों आशीर्वाद दिये। पुत्र इससे शान्त नहीं हुआ।

एक लम्बी साँस फेंककर सोमेश्वर बोले—इस पाप का प्रायश्चित्त नहीं है माँ। किन्तु तुम निश्चिन्त रहो, राय-वंश का बाल भी कोई बाँका नहीं कर सकेगा।

इसी रात वे चुपचाप छिपकर घर से निकल पड़े। एक वस्त्र, असहाय अवस्था, हाथ में केवल एक नंगी तलवार। घर छोड़ सन्थालों के स्थान शाल-वन की ओर वे जा रहे थे कि पीछे से किसी ने कहा—इतना तेज मुझ से नहीं चला जाता। थोड़ा धीरे चलो।

चौंककर सोमेश्वर ने पीछे की ओर देखा—उनकी स्त्री शैवालिनी पीछे-पीछे आ रही है।

उन्होंने अचरज से पूछा—तुम कहाँ जाओगी?

शैवालिनी ने प्रश्न किया—मैं कहाँ रहूंगी?

क्यों, घर में माँ के पास!

इसके बाद जब गोरे आयेंगे, तुम्हें अपमानित करने के लिये मुझे पकड़ ले जायँगे तब?

यह बात सोमेश्वर के मन में नहीं आयी थी। सामने ही गाँव की

सिद्ध पीठ सर्वरक्षा का आश्रम है। उसी आश्रम में प्रवेशकर सोमेश्वर बोले—ठहरो, विचार कर लूँ। बच्चे को छोड़ आयी हो ; जैसे वह भी उनका अपना पुत्र नहीं है।

शैवालिनी बोली, वह तो माँ के पास है। माँ को नहीं जगा सकी।

बहुत देर तक टहलने के बाद सोमेश्वर ने कहा—हो गया। माँ के पास छोड़ रक्षा पाने की दूसरी जगह नहीं है, इसी जगह तुम रहोगी।

विस्मित होकर शैवालिनी ने स्वामी के मुँह की ओर देखते हुए प्रश्न किया—यहाँ छिपकर रहने योग्य स्थान है क्या ?

है ! भक्ति के साथ माँ को प्रणाम करो, आश्रय की भीख माँगो। माँ के प्रति अविश्वास मत करो।

हिन्दू स्त्री—प्रायः एक सौ वर्ष पूर्व की हिन्दू स्त्री—इस बात में मन-प्राण से विश्वास करती। शैवालिनी परम भक्ति-भाव से पृथ्वी पर लोटकर प्रणाम किया।

दूसरे ही क्षण खून से लाल तलवार उठा हा-हा हँसते अथवा रोते सूनसान रातके आकाश को गुंजाते हुए सोमेश्वर ने शाल-वन में प्रवेश किया। शाल-वन ने उस समय मशाल के प्रकाश में अद्‌भुत भयानक शोभा धारण कर ली थी। ऊपर रात का अँधेरा था और उसके समान ही घोर सघन वन की शोभा। बीच में साल के तने तथा भूमि पर उनकी लम्बी छाया पड़ रही थी। उन सब के बीच एक बड़ा अग्निकुण्ड जला कर सिन्दूर से रंगे हुए लाल मुँहवाले दानव के समान हजारों सन्थाल बैठे थे। एक साथ ही प्रायः सौ से अधिक मृदंग बज रहे थे—धिताङ्, धिताङ्, धिताङ्। रह-रहकर हजारों सन्थाल एक साथ चिल्ला उठते—उ-र्-र्! उ-र्-र्।

सोमेश्वर एक हजार सन्थाल लेकर आगे बढ़े, एक थाना लूटकर, ग्राम जलाकर, मिशनरियों का एक आश्रम नष्टकर, कई अंग्रेज नर-

नारियों की निर्दयतापूर्वक हत्या कर आगे बढ़े। रास्ते में मयूराक्षी नदी पड़ी। नदी के उस पार बन्दूकधारी अंग्रेजी सेना खड़ी थी! सोमेश्वर ने आज्ञा दी—और आगे न बढ़ो, पेड़ के पीछे-पीछे खड़े हो जाओ।

उस ओर इसी बीच अङ्गरेजी सेना भयभीत करने के लिये खाली आवाजें करने लगी। सन्थालों ने विस्मय के साथ देखा कि उनको चोट नहीं लगी। किसी के शरीर में खोंच तक नहीं आयी। यही उनका काल बन गया! उन्होंने सोचा—गोली हमने खा ली।—ऐसा कहकर उन्मत्त सन्थालों का दल भरी हुई मयूराक्षी में कूद पड़ा।

क्षणभर में उस पार बन्दूकें फिर गरज उठीं, इस बार मयूराक्षी की गेरुआ धारा लाल हो गयी—मृत देहें कूड़े के समान तैरने लगीं। सोमेश्वर अचल मूर्त्ति के समान ही तट पर खड़े थे। वे भी कुछ देर में तट से कटे वृक्ष की तरह मयूराक्षी के जल में गिर पड़े। छाती में लगकर रायफल की गोली पीठ फोड़कर बाहर निकल गयी थी।

इसके पश्चात् सोमेश्वर की माँ पौत्र रामेश्वर को लेकर सरकार बहादुर से लड़ाई करने बैठीं—

सरकार सोमेश्वर के अपराध में उनकी सारी सम्पत्ति जप्त कर लेना चाहती थी। सोमेश्वर की माँ ने मुकदमा किया—सम्पत्ति उनकी है, सोमेश्वर की नहीं। सरकार-विरोधी सोमेश्वर को उन्होंने भी नहीं रखा, अतः सोमेश्वर के अपराध में उन्हें दण्ड न मिलना चाहिये।

सरकार की ओर से तलब हुए राय लोग। उनमें तेजचन्द्र प्रधान थे। सरकार उनसे जानना चाहती थी कि सोमेश्वर की माँ की बात सत्य है कि नहीं; विद्रोही सोमेश्वर के साथ सचमुच वे कुछ सम्बन्ध रखती थीं कि नहीं।

घर से बाहर निकलते समय तेजचन्द्र की माँ बोलीं—उस घराने की

ननद जी ने रायवंश को बचाने के लिये सोमेश्वर के पैर पकड़े थे। मुझे भी क्या—

तुरन्त माँ के चरणों की धूल ले तेजचन्द्र ने हँसकर कहा—तुम्हारा अपनी ननद के साथ नाते का सम्बन्ध है माँ, किन्तु मेरे साथ उनका रक्त का सम्बन्ध है।

माँ ने कहा—आशीर्वाद देती हूँ, तुम लोगों में ऐसी सुबुद्धि हो। किन्तु, क्या जानते हो, राय लोगों का बहिन का प्यार—कंस का प्यार—है?

तेजचन्द्र बोले—चक्रवर्ती जयद्रथ की पीढ़ी में हैं मां, साले के वंश के नाश के लिये वे ही व्यूह में सब से आगे रहते हैं। छोड़ो इन बातों को, लौट आऊँ। इसके बाद विचारकर जो करना हो करना; जो कहना हो, कहना।

वहाँ रायवंशवालों ने एक स्वर से रायवंश की कन्या का समर्थन किया। तेजचन्द्र की माँ को कुछ कहना अथवा करना नहीं पड़ा—स्वयं सोमेश्वर की माता ही पौत्र रामेश्वर का हाथ पकड़कर राय-घराने के चण्डी-मण्डप में सन्ध्या की आरती के समय उपस्थित हुईं। वह कुछ कर तो न सकीं, किन्तु, हर एक के सिर पर हाथ फेरकर उसने आशीर्वाद दिया। तेजचन्द्र ने रामेश्वर को गोद में उठा लिया। उसकी माँ ने ननद का हाथ पकड़कर कहा—घर में पद-धूलि देनी पड़ेगी।

घर में पहुँचकर तेजचन्द्र की माँ बोलीं—राधे, आसन तो ले आ।

राधे—राधारानी—तेजचन्द्र की सात वर्ष की बालिका है। वह कुछ कर रही थी, उसने जवाब दिया—मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ क्या?

कठोर स्वर से दादी ने कहा—आकर बतलाती हूँ हरामजादी!

हँसकर सोमेश्वर की माँ बोलीं—क्यों क्रोध करती हो बहु? हमारे वंश की कन्याओं का ढंग ही यही है। मेरा भी ऐसा ही है—राय-घराने की लड़कियाँ बराबर से तेजमिजाज हैं।

तेजचन्द्र की माँ ने कहा—ससुराल में इस लड़की की क्या गति होगी, मैं इसी सोच में मर रही हूँ। यह लड़की स्वामी की नाक में रस्सी डालकर उठायेगी, बैठायेगी ; नहीं तो ससुराल का अन्न उसके भाग्य में नहीं है।

सोमेश्वर की माँ ने एक बार राधारानी को पुकारा—नतिनी, एक बार यहाँ आ जाओ न, एक बार तुम्हें देखूँ, मैं भी तुम्हारी दादी लगती हूं।

उनको देखकर राधारानी अत्यन्त भलेमानस की तरह नौकरानी के हाथ से आसन लेकर आगे आयी। आदरपूर्वक उसे बिछाकर उन्हें प्रणाम किया, और चुपचाप जैसे आदेश की इन्तजार में खड़ी हो गयी।

सोमेश्वर की माँ ने अत्यन्त स्नेह तथा प्यार से उसे अपनी गोद की ओर खींचकर कहा—तुम लोग व्यर्थ निन्दा करती हो बहु, इतनी सुन्दरी और इतनी अच्छी लड़की तो मैंने देखी नहीं। ऐं, यह तो बड़ी भली लड़की है।

तेजचन्द्र की माँ ने इसके साथ ही साथ उनका हाथ जोर से पकड़ लिया और कहा—तब तो राधा को तुम्हें अपने चरणों में स्थान देना होगा। हम और कहाँ जायँगे ? कहो, रामेश्वर के साथ राधा का व्याह करोगी न ?

ऐसी घटना हो जायगी, इसकी आशा सोमेश्वर की माँ को नहीं थी। वह अन्यमनस्क होकर चुप हो रहीं। इसी समय तेजचन्द्र ने रामेश्वर का हाथ पकड़, घर में प्रवेश किया। उनकी माँ बोलीं—तेजू पकड़, फूफी के पैर पकड़। पकड़, कहती हूं पकड़। खबरदार, जब तक हाँ न कहें, छोड़ना मत। मैंने रामेश्वर के साथ राधा के विवाह के लिये कहा है।

तेजचन्द्र की माँ बोली—मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ ननद जी, "न" तुम कहो मत। यह सर्वनाशी झगड़ा समाप्त हो जाय, इसके लिये एक पुल बाँध दो।

सोमेश्वर की माँ के नेत्रों में जल भर आया। वे स्वयं राय-वंश की कन्या थीं। अपने पिता के वंशवालों के साथ यह घृणापूर्ण झगड़ा

उन्हें भी अच्छा नहीं लगता था। चक्रवर्तियों के साथ रायों के पराजित हो जाने पर, आड़ में लोग उन्हें वंशनाशिनी कन्या कहकर सम्बोधित करते, यह सम्वाद भी उनसे किया नहीं था। और, रामेश्वर अभी दस वर्ष का बालक है, इधर उनके जीवन-प्रदीप का तेल भी समाप्त होता जा रहा है, उनके न रहने पर रायों से भरे हुए इस रायहाट में रामेश्वर को देखेगा कौन, यह सोच भी उन्हें कम नहीं था। उन्होंने और दुविधा नहीं की, आँखों में जल भरकर कहा—ऐसा ही हो, बहू, रामेश्वर को तेजचन्द्र को ही सौंप दिया।—ऐसा कहकर उन्होंने राधारानी को गोद में उठा लिया। उसके कान में कहा, क्यों वर पसन्द है न ?

राधारानी रामेश्वर की ओर देख, फिर सोमेश्वर की माँ के कन्धे में मुँह छिपाकर बोली—अरे ! कैसी कटीली आँखें हैं।

सोमेश्वर की माँ हा-हा कर हँसने लगीं, रायवंश की कन्या को मोहित करने में चक्रवर्तीवंश निपुण है। उस समय तेजचन्द्र का घर शंखध्वनि से गूँज उठा।

सेतुबन्ध बनाया गया।

तेजचन्द्र जितने दिन जीवित रहे, उतने दिन उस सेतु पर से लोगों का आना-जाना होता रहा।

राधारानी इस घर से उस घर आती-जाती, रामेश्वर आते-जाते, तेजचन्द्र स्वयं एक समय रामेश्वर की कचहरी में बैठ हिसाब-किताब, कागज-पत्र देखते। भीतर राधारानी की मां गृहस्थी का प्रबन्ध करतीं।

उस समय उच्च शिक्षा का उतना सुयोग नहीं था; किन्तु, तेजचन्द्र ने पुत्र तथा दामाद को शिक्षा के लिये बड़ी चेष्टा की। उन्होंने पोथी-पुस्तक संग्रहीत कर पण्डित, मौलवी—दो शिक्षक—नियुक्त कर दिये। इन्द्रचन्द्र फारसी के पण्डित बन गये, कानून की पुस्तक में ये डूब गये। रामेश्वर ने काव्य का अध्ययन किया।

इन्द्रचन्द्र हँसकर कहते—काव्य अधिक न पढ़ो। जानते हो, रसाधिक्य होने से विकार होता है।

रामेश्वर लम्बी साँस छोड़कर कहते—अहा मित्र, तुम्हारा कहना सफल होवे, होवे रस-विकार। रायवंश की 'तन्वी श्यामा, शिखरिदशना, पक्वविम्बाधरोष्ठी' गण मुझे घेर कर बैठें, कमलपत्र से विजन करें, चन्दन-रस से अभिषिक्त कर दें मेरा अंग—

बाधा देकर इन्द्रचन्द्र कहते—ठहरो, फक्कड़ कहीं के! रामेश्वर अपने मन से ही बड़बड़ाते—श्रोणी भारा दलसगमना स्तोकनम्रान्तनाभ्याम्। इसके फलस्वरूप सचमुच रामेश्वर अवस्था के साथ ही साथ उच्छृङ्खल हो गये। घर में राधारानी, राय-घराने की तेजमिजाज कन्या, बहुत झगड़ालू हो गयीं। तेजचन्द्र के परलोक-गमन के पश्चात् राय-वंश की कन्या तथा चक्रवर्तीवंश के युवक के कलह और घटना-चक्र से दोनों वंश पुनः पीड़ित हो गये।

उस दिन राधारानी स्वामी से कलहकर पिता के घर चली आयी थी। सन्ध्या के समय रामेश्वर बेले के फूल की माला गले में पहन, इत्र की सुगन्ध चारों ओर फैलाते हुए ससुराल जा पहुँचे। इन्द्रचन्द्र उनसे बोले भी नहीं। रामेश्वर स्वयं ही आसन पर बैठ, हाथ जोड़कर बोले—नमस्तुभ्यम् श्यालक प्रवरम् कठोरम् कुम्भवदनम्—

बाधा देकर इन्द्रचन्द्र बोले—तुम बड़े अभिमानी हो।

रामेश्वर ने कहा—श्रेष्ठ रस जिस कारण मीठा होता है, और जिस कारण मिष्टान्न में पानी का एकाधिकार होता है, इसीलिये पानी के नाम से धन्योऽहम्, अतः मिष्टान्न की व्यवस्था कर डालो।

अपनी प्यारी बहिन राधारानी के दुःख के कारण रामेश्वर को इन्द्र-राय इस पर भी क्षमा न कर पाये, वे आगे बात न बढ़ा, चुपचाप बैठे रहे। रामेश्वर ने भी अधिक प्रतीक्षा नहीं की, उन्होंने उठकर हँसते-हँसते

कहा—नहीं, अरसिकेषु रस-निवेदनम् नितान्त मूर्खता है। जाता हूँ घर में।

घर में प्रवेशकर उन्होंने पुकारा—कहाँ हो, सखि मदलेखा, कहाँ हो ? अपने साले इन्द्रचन्द्र की पत्नी हेमांगिनी को वे सखी मदलेखा कहते। उन दोनों के कथनोपकथन महाकवि वाण भट्ट की कादम्बरी की भाषा में होते। स्वयं रामेश्वर ने उन्हें कादम्बरी पढ़कर सुनायी थी।

हेमांगिनी ने आदर के लिये राधारानी का नाम कादम्बरी रखा था। रामेश्वर ने उत्तर दिया था—तो राय-पत्नी को नर्म सहचरी 'मदलेखा' होना होगा।

हेमांगिनी ने कहा था—तो आप हमारे 'चन्द्रापीड़' हुए न ?

कादम्बरी के अनुसार अवश्य ही होना होगा, न होने से चलेगा कैसे ? इसके अतिरिक्त मेरी जन्म-कुण्डली के लग्न में हैं शायद चन्द्र देवता ; अतः थोड़ा-सा मेल भी खा जाता है।

थोड़ा-सा !—विस्मय दिखा हेमांगिनी ने कहा था—थोड़ा-सा ! विनम्रता दिखा रहे हैं ! रूप में, गुण में सोलह आने समानता है। रूप तो आप दर्पण में देख सकते हैं। और गुण भी कम मत समझिये। दिवस में हर समय निद्रा, सन्ध्या समय उदय होते हैं, चन्द्र-देवता के सत्ताईस प्रेयसियां हैं। आपकी बात आप ही जानें, तो भी उनसे हारेंगे ; यह बात मैं शपथपूर्वक कह सकती हूं।

रामेश्वर ने हाथ जोड़कर कहा था—देवि, यह दास उस अपराध का अपराधी नहीं है और आज से, इस नये चन्द्रापीड़ के जन्म के समय चन्द्रापीड़ लिख कर वादा करता है—राधारानी—कादम्बरी-छोड़ वह और किसी को नहीं जानेगा।

राधारानी ने तर्जनी उठाकर आदेश के स्वर में कहा था—देखो, याद रहेगा न !

आज रामेश्वर की बोली सुन हेमांगिनी उनको सम्बोधन कर बोलीं—आइये देवता, आइये।

धीमी आवाज तथा भय से रामेश्वर ने पूछा—आपकी देवी कादम्बरी कहाँ हैं?

आसन बिछाकर हेमांगिनी बोलीं—बैठ जाइये। इसके पश्चात् गम्भीरता से बोलीं—नहीं चक्रवर्ती महाशय, आपको अब अपना सुधार करना उचित है।

लम्बी साँस छोड़कर रामेश्वर ने कहा—चेष्टा तो मैं करता हूँ, किन्तु सफलता नहीं मिलती।

'सफलता नहीं मिलती'—कह देने से चलेगा कैसे? आपके व्यवहार के विद्वेष से यदि राधा के चित्त में ही विकार उत्पन्न हो जाय, तो कहिये, क्या कीजियेगा?

रामेश्वर एकटक साले की पत्नी के मुँह की ओर ताकते रहे।

हेमांगिनी बोलीं—हुँ, कैसा जान पड़ता है? इससे अभी से सावधान हो जाइये। आज मैंने जैसा देखा है, उससे राधा के आत्महत्या कर लेने में कुछ आश्चर्य नहीं है। समय रहते सावधान हो जाइये!

रामेश्वर उच्छृङ्खल चरित्र के थे। वे हेमांगिनी के विकार शब्द की नई व्याख्या ग्रहण नहीं कर पाये। विकार शब्द का जो अर्थ उन्होंने ग्रहण किया, शास्त्र उसी अर्थ का अनुमोदन करता है, एवं वर्तमान अवस्था में ऐसा विकार बिल्कुल स्वाभाविक—शास्त्र-सम्मत—है। किन्तु; क्रोध न कर सके, वे हैं शास्त्र के अच्छे पण्डित। मन ही मन उन्होंने अपराध स्वीकार कर कहा—या तो अपना सुधार करूँगा, या ब्राह्मण का यह यज्ञोपवीत त्याग दूँगा।

दो तल्ले पर लम्बे बरामदे के प्रवेश-द्वार के सामने ही माँ के घर में राधारानी सोयी थी। माँ की मृत्यु के पश्चात् यह घर बन्द ही रहता

है। राधारानी के आने पर वही व्यवहार करती है। बरामदे में प्रवेश करते ही रामेश्वर चौंककर खड़े हो गये। राधारानी के पलंग के पास बैठकर एक तरुण युवक कोई पुस्तक पढ़कर उसे सुना रहा है।

वह कौन है राय-पत्नी ?

रामेश्वर को चौंकते देख हेमांगिनी को कौतुक सूझा। उसने कहा—देव, उपेक्षिता कादम्बरी के मनोरंजन के लिये इस समय इसी तरुण केयूरक को हमने नियुक्त किया है।

युवक था राधारानी का फुफेरा भाई। अपने माता-पिता को खोकर वह आज ही मामा के घर आश्रय लेने आया है।

इसके पश्चात् की समस्त घटनायें रहस्य से भरी हुई हैं। इसीलिये संक्षिप्त भी हैं। जानते हैं केवल रामेश्वर और जानती है राधारानी। इसके दूसरे दिन से सेतु टूटने लगा। राधारानी का पिता के घर आना-जाना बन्द हो गया। रामेश्वर स्वयं हो गये कठोर नियमपालक ब्राह्मण—सभी ओर से एकाग्र चित्त, तथा विषयानुरागी हो गये। बचपन में रामेश्वर के जिन भरे नेत्रों को देख राधारानी ने भय पाया था, वे कुतूहल और सरसता खोकर ऐसे तीखे हो गये कि, वह भय करने लगी। उधर रायवंश से फिर छेड़-छाड़ आरम्भ हो गयी। आपस का आना-जाना कम होकर लोक-व्यवहार तक ही सीमित रहा। इसके प्रायः एक वर्ष बाद राधारानी के एक पुत्र हुआ। किन्तु ; एक मास बाद बच्चा मर गया और कई दिन पश्चात् एक रात राधारानी भी गायब हो गयीं। पहले सब ने सोचा था कि शायद उसने आत्महत्या कर ली। इन्द्रराय ने सन्देह किया कि राधे को रामेश्वर ने मार डाला, किन्तु, राधारानी को किसी ने दस मील दूर के रेलवे स्टेशन पर देखा था।

लाज के कारण राय-वंश का सिर नीचा हो गया, रामेश्वर ने पश्चिम में रहनेवाले एक शिक्षक की कन्या सुनीति देवी से फिर विवाह कर

लिया। महीन्द्र तथा अहीन्द्र—दो पुत्र सुनीति से उत्पन्न हुए। इसके बाद कई वर्ष पहले रामेश्वर बीमार हो गये। आज दो वर्षों से पलंग पकड़कर एकदम घर में बैठ गये हैं। कभी अपने आप मीठे स्वर से बात करते हैं, फिर चुपचाप बिछौने पर लेट जाते हैं।

राय तथा चक्रवर्ती-वंशों का यही इतिहास है। इसी नाते सुनीति इन्द्रराय को उस घर के भैया कहती हैं।

\+ + + +

सुनीति उस दिन तीसरे पहर अहीन्द्र से बोलीं—तू जायगा एक बार उस घर के भैया के यहाँ ?

अहि बोला—क्या कहूँगा ?

कहना—सुनीति ने थोड़ी देर तक विचार किया। इसके बाद बोलीं—नहीं, रहने दे अहि ! मजुमदार महाशय और महि आ जायँ। और ; राय लोग क्या कहेंगे, इसे भी देख ले।

अहि बोला—यह तुम लोगों का भय है। बिना कारण मनुष्य का अपमान करना क्या इतना सरल है माँ ? महात्मा गान्धी ने दक्षिण अफ्रीका में क्या किया था, जानती हो ? वहाँ गोरे सड़क पर जिस ओर जाते, उस ओर कालों को जाने न देते। उस पर जाने से अपमान करते, जेल तक होती। महात्माजी ने सारे अपमान सहनकर उसी रास्ते से जाना प्रारम्भ कर दिया। अपमान के भय से बैठ जाने पर क्या काले वह अधिकार पा सकते थे ? कहो, क्या कहना होगा ?

सुनीति देवी शिक्षक की पुत्री हैं। उन्हें इस प्रकार की आदर्श कथायें बहुत रुचती हैं। वे पुत्र के मुख की ओर देखकर बोलीं—अच्छा, तो जा, जाकर कहना—यह जो सारे गाँव का झगड़ा है—यह क्या अच्छा है ? आप इस समय गाँव में सब से बड़े हैं, आप ही इसको मिटा

ोजिये। किन्तु ; गरीब प्रजा का कुछ अहित न हो, यही देखियेगा। ह बात माँ ने विशेष रूप से कह दी थी।

इन्द्रराज अपने बैठकखाने में एक महाजन के साथ इसी दियारे के म्बन्ध में बात कर रहे थे। महाजन कहता था कि ५०० रुपये नजर कर राय महाशय उसका दावा स्वीकार कर लें। इन्द्रराय ने हँसकर हा—दियारा कम से कम पाँच सौ बीघा है, दस रुपये बीघे नजराना कर बन्दोबस्त करने पर भी पाँच हजार रुपये होंगे लेने, और एक रु० ीघे लगान होने पर वर्ष में पाँच सौ रुपये लगान में मिलेंगे।

किन्तु ; यह तो मामले-मुकदमे की बात है हुजूर !

डिग्री तो मुझे मिलेगी ही, और डिग्री हो जाने पर खर्च भी मिलेगा। तः नुकसान करने का मुझे कुछ कारण नहीं दिखाई देता।

महाजन ने विचारकर कहा—मैं आपको हजार रुपये नजराना, और ही पाँच सौ रुपये लगान दूंगा। पेशगी मैं पाँच सौ दे रहा हूँ। मैं ार दिन बाद आऊँगा।

उसके चले जाने पर राय बाहर निकले। अहीन्द्र उनकी इन्तजार ं बाहर ही बैठा था। वह अहीन्द्र को तीव्र दृष्टि से देखने लगे। अहि ा उन्हें प्रणामकर कहा—मेरी माँ ने मुझे आपके पास भेजा है।

तुम रामेश्वर के पुत्र हो न ? राय लोग चक्रवर्तियों को कभी बाबू हीं कहते।

हाँ।

हुँ, आँखें और केश देखकर ही पहचान हो जाती है। रामेश्वर के ौन पुत्र हो ?

राय की सभी बातों में अपमान का एक स्वर होता था, जो तेज सूई ी तरह मनुष्य को बेध देता था। किन्तु ; किसी बात का ख्याल न कर हि ने हँसकर कहा—मैं उनका छोटा पुत्र हूँ।

क्या करते हो ? पढ़ते हो, कि पढ़ना छोड़ दिया ?

नहीं, मैं फर्स्ट क्लास में पढ़ता हूँ—शहर के स्कूल में।

राय ने अचरज से कहा—फर्स्ट क्लास में पढ़ते हो ? किन्तु ; तुम्हारी अवस्था तो अत्यन्त कम है। वाह, तुम बड़े अच्छे लड़के हो ! तुम्हारा बाप भी बड़ा बुद्धिमान था। किन्तु, तुम्हारा बड़ा भाई, क्या नाम है उसका ?—सुनता हूँ वह पढ़ता-लिखता नहीं। स्कूल में तो खराब लड़का कहकर उसकी शिकायत होती थी, मास्टर ने मुझ से कहा था।

अहि ने स्थिर दृष्टि से उनके मुख की ओर देखकर कहा—मेरी बातें एक बार सुन लीजिये।

हँसकर राय ने कहा—तुम तो उसी दियारे की बात कहोगे न ?

हाँ।

देखो, मैं जहाँ तक जानता हूँ, वह दियारा मेरा है।—यह बात अपनी माँ से कह देना।

ठीक है, कह दूँगा। फिर भी माँ का अनुरोध है कि असामियों के साथ अन्याय न होना चाहिए, यही बात आप देखियेगा।

राय ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया। अहीन्द्र भी अधिक देर न कर, जाने के लिये तैयार हो, बोला—तो मैं जा रहा हूँ।

ऐसा क्यों ? थोड़ा जलपान कर लो।

नहीं, जल खा लिया है, दियारे की ओर ही घूमने जाऊँगा।

राय ने कहा—सुनो। उस समय अहीन्द्र कुछ दूर चला गया था, वह खड़ा हो गया। राय बोले—दियारे पर सुनता हूँ कि साँपों का बड़ा उपद्रव है। तुम्हारा न जाना ही अच्छा है।

अहीन्द्र ने विनय के साथ कहा—अच्छा, मैं भीतर न जाऊँगा।

तीन

इन्द्रराय ने सच ही कहा था, दियारा कीड़े-मकोड़ों और घोंघों आदि से भरा हुआ है। गाँव के पास ही कालिन्दी नदी की छिछली धारा पार करने पर बालू तथा मिट्टी मिला हुआ बिना घास-पात का थोड़ा स्थान मिलता है। इसके बाद ही दियारा आरम्भ होता है। सारा दियारा जंगली घास तथा काँस के वन से भरा हुआ है। उन्हीं के बीच असंख्य कीड़े-मकोड़े और साक्षात् मृत्यु के समान भयंकर अनेक विषधर साँप रहते हैं।

रंगलाल मण्डल बोला—बाबू साहब, यही कुछ वर्ष हो गये, एक बछड़ा किसी प्रकार अलग होकर दियारे के ऊपर चला गया। बस, अब जाता कहाँ? एक पहाड़ी साँप ने उसकी पिछली टाँग पकड़ ली। आह! बछड़ा कैसे चिल्लाता था! बस, कई-कई बार चिल्लाया, पर उसने उसे लपेट लिया। देखते-देखते बछड़ा गुँधे हुए आँटे की तरह लम्बा हो गया। किन्तु; किसी को आगे जाने का साहस न हुआ।

अहीन्द्र ने पूछा—अच्छा, आगे क्या इस दियारे पर ही काली नदी थी?

हाँ, भैयाजी, ठीक दियारे के बीच में। नदी के घाट से गाँव एक पाव रास्ते से अधिक था। वैशाख में दोपहर के समय नदी के घाट पर आने में पैरों में फफोले पड़ जाते थे।

तुमने देखा है ?

बूढ़ा किसान मन के जोश से पुरानी बातें कहता ही जाता है और अहीन्द्र काली नदी के तट पर दियारे के पास बैठकर उसकी ओर देखता और सुनता जाता है। बूढ़ा कहता है—काली नदी के किनारे कोमल दूब गलीचे की भाँति फैली रहती, उसे गाँवभर के पशु खाकर भी समाप्त नहीं कर पाते। इसके बाद थी—तराई की भूमि। उस समय गाँव की शोभा भी कैसी थी! बाबू लोग भी कैसे थे! एक-एक दिक्पाल के समान। छातियाँ कैसी! रंगलाल ने कहा—आपके पितामह—बाप रे, बाप! वे 'रंगलाल' कहकर पुकारते तो भय से शरीर का रोआं-रोआं काँप उठता।

अहीन्द्र ने दियारे की ओर देखते हुए ही पूछा—क्या तुम्हें याद है कि कब काली ने पहले-पहल वह किनारा काटा ?

रंगलाल बोला—काली तो साधारण नदी नहीं है भैया, यह है साक्षात् यमराज की बहिन। कब से इसने रायहाट की भूमि को खाना प्रारम्भ किया, इसे कौन कह सकता है ? जब उन्होंने इस ओर अपना हाथ बढ़ाया है, तब रायहाट को नहीं रहने देंगी। कहता हूँ न कि ये यमराज की बहिन हैं। समझते हैं, काली ने जिसे लिया, उसे बचाने की शक्ति किस में है ? कितने गाँव इनने खा लिये, इसका कुछ ठीक-ठिकाना नहीं। हर साल आप देखिये, कितनी छतें, कितनी लकड़ियाँ, कितने पशु, कितने मनुष्य, काली की बाढ़ से बहकर यमराज के घर चले जाते हैं। एक बार मैंने स्वयं देखा था, उस समय जवान था। मैंने देखा, एक घर की छत पर बैठी एक स्त्री बहती जा रही है। ओह, कैसे रो रही थी! उसको सुन पेड़ और पत्थर भी रो देता भैया! मैं अपनी पतली नाव लेकर कूद पड़ा, साथ में काछी ले ली। एक तो पानी का बहाव, इस पर तेजी से डाँड़े लगाये। सौं-सौंकर छत के पास पहुंच गया। ओह!

फिर तो उसके मुँह पर कैसी मुस्कुराहट ! उसने समझ लिया कि अब बच गयी। भैया, क्या बताऊँ ! इसी समय उठी एक भँवर, और बस, चक्कर मारकर एकदम छत के साथ अपने पेट में भर लिया। कलकल कर जल जैसे पुकार उठा—क्या कहूँ भैया, ऐसा जान पड़ा, जैसे काली खिल-खिलाकर हँस रही हैं। उसने अपने हाथ जोड़ उन्हें सिर से लगाकर काली को प्रणाम किया। और उसी वर्ष देखा कि काली माँ इस किनारे से चल रही हैं।

उसने कहा—उसी साल जाड़े में देखा, काली की छिछली धारा उस ओर बालू डालकर रायहाट के पास बहने लगी है। इसके पश्चात् साल-साल उस ओर की जमीन पर बालू भरना आरम्भ किया और इधर गहरी होती गयी। वर्षा में जब काली के दोनों तटों पर बाढ़ आती, उस समय उस पार से इस पार तक जल के अतिरिक्त कुछ दिखायी न देता। उस समय वह किनारा छः महीने बालू और छः महीने जल से ढँका रहता। इसके पश्चात् पहले-पहल काली ने, इस पार की घास से भरी हुई हरी चराई भूमि को हड़प लिया। उस पार उसी समय से वर्षा के अन्त में बालू पर पतली मिट्टी की तह जमने लगी।

कहते-कहते बूढ़े किसान के मन में दार्शनिकता जग उठी। उसने कहा—उस जगह काली ने बालिका की तरह घरौंदा बनाया है। बालिका की तरह जहां जो कुछ पाती हैं, वहीं ले जाकर इकट्ठा कर देती हैं। और उस पर बालू और मिट्टी डाल देती हैं। हमारी बालिकाओं के खेल में देखते हैं न, वे गीली बालू में पैर घुसेड़कर उस पर बालू थोप-थोपकर पैर निकाल लेती हैं, कैसा घर बन जाता है ! और मन होने पर लाठी मारती हैं—तोड़ती हैं और कहती हैं कि हाथ के सुख के लिये बनाया और पैर के सुख के लिये तोड़ दिया। हमारी काली भी वैसी ही हैं,—तोड़ती हैं, जिस प्रकार गढ़ती हैं उसी प्रकार। ओह ! क्या-क्या आकर जमा

होता है भैया—घोंघा, सीपी आदि कितने प्रकार की। उनकी कैसी शोभा है!

अहीन्द्र ने फिर पूछा—अच्छा, तुमलोगों ने उसी समय इस दियारे का फैसला क्यों नहीं कर लिया?

रंगलाल ने अहीन्द्र की मूर्खता पर हो-हो हँसकर कहा—यह देखिये, भैया क्या कहते हैं! उस समय यह दियारा लेकर लोग करते क्या? थोड़ा गहरा, बालू, वहाँ थोड़े बालू का ढेर, और कीड़ों की भरमार थी। छोटे लोगों की स्त्रियाँ भी लकड़ी-बकड़ी बटोरने दियारे के भीतर न जातीं। समझे हैं न, छोटे-छोटे कीड़े एकदम शरीर से लिपट जाते। उससे पीड़ा कितनी होती! सारा शरीर फूल जाता!

चैत्र मास का तीसरा पहर है, सूर्य पश्चिम में लाल होकर अस्ताचल के पास पहुँच गया है। काली के उस पार रायहाट के किनारे पर बड़े-बड़े पेड़ हैं, जिनमें सेमल के ही पेड़ अधिक हैं, सेमल की सारी शाखा-प्रशाखायें लाल रंग के फूलों से भर गयी हैं। पलास के पेड़ भी वैसे ही पत्तारहित और सेमल से भी गहरे लाल रंग के फूलों से भरे हुए हैं। वसन्त की हवा में कहाँ से एक मधुर सुगन्ध आकर फेफड़े में भर गयी।

अहीन्द्र ने बार-बार उस सुगन्ध को खींचकर पूछा—यह किस फूल की सुगन्ध है?

अत्यन्त तुच्छतापूर्वक रंगलाल बोला—उस दियारे में कोई फूल-सूल फूला होगा। उसका नाम कौन जानता है? कहाँ से काली उसे ले आयी हैं, यह काली ही जानें। समझते हैं न? प्रथम बार जब घास खूब उगी थी, हम गाय चराने के लिये इसे देखने आये थे।

कहते-कहते रंगलाल के मुँह पर उसी दिन का वही अचरज छा गया। वह कहता गया—कितनी ही प्रकार की अनजानी और अनदेखी छोटी-छोटी लतायें-पौधे तथा घासें उस दियारे पर लगी हुई थीं, उसका कुछ

ठिकाना नहीं। घास पर पैर रखते ही पतंगों की जाति के सैकड़ों कीड़े कूदने तथा ऊपर हजारों प्रकार की तितलियाँ उड़ने लगतीं। इसके बाद बनैली घास तथा काँस आदि उगे थे। किन्तु ; इनके भीतर-भीतर कितने पेड़, कितनी लतायें छिपी हुई हैं, उनकी संख्या कौन जानता है ? उन्हीं सब मधुर गन्धवाले पौधों के आसपास कितने विषधरों ने घर बनाया था। कहते-कहते रंगलाल सिहर उठा—खबरदार भैया, कभी सुगन्ध के लोभ में भीतर न जाइयेगा। वरन् संथालों से कह दीजियेगा, वे ठीक जानते हैं, क्या हैं ? फूल से उन्हें बड़ा प्रेम है न !

अकस्मात् बूढ़ा रंगलाल बहुत उत्साहित हो उठा, बोला—चलियेगा भैया, सन्थालों के गाँव में ? अहा हा ! कैसी फसल लगी है ! ओह ! आलू कैसा हुआ है, इतना बड़ा-बड़ा ? सेम की फलियाँ हैं आधे हाथ लम्बी-लम्बी ! उसने लालच में पागल होकर कहा—भैयाजी !

अहि ने अचरज के साथ कहा—सन्थाल कहाँ हैं ? वे तो बड़ी दूर पहाड़ पर हैं न ?

सिर हिलाकर रंगलाल बोला—यह देखिये, आप कुछ नहीं जानते। दियारे में सन्थाल रहते हैं भैया ? वह देखिये, धुँआँ उठ रहा है न ! वे सब भोजन पका रहे हैं। उन्होंने ही तो आँखें खोल दी हैं ! हमारी बंगाली जाति में ऐसी शक्ति कहाँ है कि जंगल काटें और सब जन्तु-जानवरों को मार, यहाँ खेती करें ! किन्तु ; उन्होंने ठीक चुन-चुनकर असली भूमि ले ली है। वे कहाँ से आये, और कब आये, कोई नहीं जानता।

वे अपने ही आये हैं, अपने मन से ही थोड़ी जगह-जमीन साफकर बस गये हैं, खेती करते हैं और अब, सब घर बना रहे हैं। गाँववाले जानते हैं कि वहाँ माँझी बसते हैं और खेती होती है। उसको देखकर ही तो आँखें खुली हैं। बस अब जायें कहाँ ? लग गयी फटाफटी ? जमींदार कहते हैं —'दियारा हमारा है। हम किसान कहते हैं, इस पार हमारी जमीन जाने से

उस पार दियारा निकला है। वह हमारा है।' असल बात है—वे सन्थाल वहाँ सोना पैदा कर रहे हैं। समझते हैं न ?

अहीन्द्र आगे बढ़कर बोला—चलो चलें, किस ओर चलना है ?

वह देखिये, वन के झुरमुट से माँझिनों का दल नदी से पानी लाने के लिये निकला है।

अहीन्द्र ने देखा, हरे रंग के घने वन में से आठ-दस काली स्त्रियों की पंक्ति निकल रही है, जो माथे पर घड़े रखकर ऊँचे स्वर से गाते नदी की ओर जा रही हैं। दोनों ओर छातीभर ऊँचा काँस तथा घास का जंगल है। उसी के बीच से थोड़ा-सा साफ एक रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा दियारे में गया है। जंगली घास के वन में नाना प्रकार की लतायें और पौधे उगे हुए हैं। घास के गुच्छों के सहारे लताओं ने फैल-फैलकर घास के सिरे पर जैसे चादर फैला दी है। साँप के फण की तरह उठे हुए टेढ़े-मेढ़े तने जगह-जगह रास्ते पर आ गये हैं, मनुष्य के शरीर से लगकर वे हिलने लगते हैं। बीच-बीच चैत की तेज हवा आकर घास के जंगल का एक भाग झुका, जैसे लहरों पर लहरें बनाती हुई, बह रही है। साथ-साथ विचित्र सर-सर, सन-सन शब्द हो रहे हैं।

रंगलाल ने एक लता का तना तोड़कर कहा—अहा ! अनन्तमूल हो गया है, कितनी लतायें हैं !

अहीन्द्र इस रास्ते की स्वच्छता देख प्रसन्न हो गया और सन्थालों की बात सोचने लगा—इतनी काली जाति, किन्तु उसके जीवन में कितनी मृदुल स्वच्छता है ! कहीं वन के भीतर जैसे कुछ शोर सुनाई पड़ रहा है। चारों ओर अहीन्द्र ने देखा, एकदम दाहिनी ओर झोपड़ियाँ दिखायी दे रही हैं। वह रास्ते की एक मोड़ पारकर सहसा एक गाँव में पहुँच गया।

घास का जंगल अत्यन्त निपुणता से साफकर उसी के बीच दस-बारह घर हैं। काले रङ्ग के आधे नंगे आदिम मनुष्यों ने यह बस्ती बसायी है।

घर तो अब भी तैयार नहीं हुए हैं, थोड़े समय के लिये झोपड़ियाँ बना, उनकी चारों ओर घेरा दे, उन पर मिट्टी का लेप लगा, उन्हीं में वे रहते हैं। आसपास मिट्टी की दीवार के स्थायी घरों की नीवें भी पड़ चुकी हैं। प्रत्येक घर के सामने गोबर तथा मिट्टी से लिपा हुआ साफ चबूतरा है। चबूतरे के पास ही, अलग-अलग बोझों में बँधे हुए, अनेक प्रकार के अन्नों का खलियान है। सेम की लतायें, आलू की लतायें, मसूर के पौधे, चने के पौधे—सब अलग-अलग रखे हुए हैं। यह देख अहीन्द्र मुग्ध हो गया!

रंगलाल ने पुकारकर पूछा—सरदार माँझी कहाँ है रे? कौन आया है, देख तो!

कौन?—तू कौन है?—कहते-कहते काले शरीरवाला चलायमान पत्थर का टुकड़ा बाहर निकल आया। आकृति की अपेक्षा उसका आकार ही बड़ा है, और उस पर आँखें पड़ने से मनुष्य अचरज में पड़ जाता है। पेशियों की पुष्टि तथा दृढ़ता और बहुतायत के सामने उसके अंग-प्रत्यंग जैसे छोटे पड़ गये हैं। वह खूब गोरे, दुबले, किन्तु लम्बे बालक को देख उसका मुँह अचरज से देखने लगा।

रंगलाल बोला—तू तो बहुत दिनों का है। क्या अपने लाल देवता को जानता है? तुम्हारे सन्थाली दंगे के समय—

रङ्गलाल को और बोलना नहीं पड़ा, विशाल विन्ध्याचल जैसे अगस्त्य के चरणों पर साष्टांग लोट गया।

रङ्गलाल बोला—ये हैं उनके नाती—लड़के के लड़के—बेटे के बेटे।

माँझी ने अपनी भाषा में आदेश दिया—मोढ़ा ले आओ, जल्द।

छोटे स्टूल के आकार के रस्सियों से बुने हुए बैठने के आसन पर अहीन्द्र को बिठाकर वह स्वयं उसके सामने भूमि पर बैठ गया। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़ उसके मुँह की ओर देखते-देखते बोला—हुँ, ठीक

वैसे ही हैं। वैसा ही मुँह, वैसा ही आग के समान रङ्ग, वैसी ही आँखें! हुँ, ठीक है, ठीक कहता है तू सरदार!

रङ्गलाल ने हँसकर पूछा—तूने उन्हें देखा था माँझी?

हाँ, देखा था क्यों नहीं! शाल के जंगल में मृदंग बजता था, सब बड़े-बड़े माँझियों ने शराब पी थी। मैं उस समय छोटा लड़का था। देखा, उसी आग के उजाले में लाल देवता आये।

अहीन्द्र ने अचरज के साथ पूछा—तुम्हारी अवस्था कितनी है माँझी?

बहुत सोच-विचारकर माँझी बोला—बहुत हो गयी है, दो कोड़ी होगी!

रङ्गलाल ने हो-हो हँसकर कहा—इनका हिसाब ऐसा ही रहता है, इनकी उम्र पचहत्तर-अस्सी वर्ष की होगी, भैयाजी!

पचहत्तर-अस्सी! अहीन्द्र को अचरज हुआ। अब भी वज्र के समान बलवान शरीर है! इसी बीच पाढ़े के सब सन्थाल और उनके बाल-बच्चे अहीन्द्र के पास आकर खड़े हो गये, और अचरजभरी दृष्टि से उन्हें देखने लगे। पाढ़े में यह शोर हो गया, लाल देवता के पौत्र आये हैं, और देखने में ठीक उनके ही समान हैं—आग की तरह शरीर का रंग है। भीड़ के आगे स्त्रियों का दल था। काले पत्थर में खुदी हुई मूर्तियों की तरह इनके शरीर थे। उसी तरह बलवान तथा तेल लगे हुए पत्थर की तरह काले! मोटा-छोटा कपड़ा पहने, सिर के केश में तेल लगा, पट्टी पर जूड़ा बँधा था; वे जुल्फ नहीं निकालतीं, कान पर पत्तियों समेत अनेक प्रकार के ताजे फूले हुए फूलों के गुच्छे पहनती हैं। अहीन्द्र ने अनुभव किया, वही गन्ध जैसे इस जगह और तेज हो गयी है।

उसने पूछा—किस फूल की सुगन्ध है माँझी?

माँझी ने स्त्रियों के मुँह की ओर देखा। चार-पाँच स्त्रियों ने कलरव कर कुछ कहा और अपने कानों से फूलों के गुच्छे निकालकर फेंक दिये।

अहीन्द्र ने देखा, लवंग की तरह छोटे आकार के फूल हैं। एक गुच्छे में कदम्ब की तरह गोले होकर बहुत-से निकले हैं। किन्तु ; सरदार माँझी ने गम्भीरता के साथ कुछ कहा। स्त्रियों ने फूलों के गुच्छे कानों पर लगाकर पंक्ति बना ली और हवा की तरह बन के पौधों को हटाते-हटाते कहीं चली गयीं।

रंगलाल बोला—क्या हुआ ? वे सब कहाँ चली गयीं ?

फूल लाने। लाल बाबू लेंगे।

कान के फूल देने से ही तो काम चल जाता !

धत्, लाल देवता के नाती को वैसा ही फूल दिया जायगा ? तू देगा ?

अहीन्द्र बोला, न जाना ही अच्छा था, माँझी, दियारे में बहुत-से साँप हैं न ?

उद्दण्डता के साथ माँझी ने कहा—वे सब भाग जायँगे। किस ओर भाग जायँगे, इसका पता नहीं।

अहीन्द्र ने पूछा—क्या यहाँ खूब बड़े-बड़े साँप हैं ?

अहीन्द्र की बात अनसुनी कर स्त्रियों तथा बालकों का दल चिल्ला उठा—आज ही हमलोगों ने एक साँप मारा है, देखियेगा बाबू, खूब बड़ा अजगर है।

उत्साह के साथ आसन से उठकर अहीन्द्र ने पूछा—'किस जगह ! कहाँ ?' साथ-ही-साथ बहुत उत्साहपूर्वक माँझियों का दल आगे-आगे चला। सबसे आगेवाले लड़के-लड़कियाँ जैसे नाचती जा रही हैं। गाँव की एक ओर एक विशाल अजगर क्षत-विक्षत होकर मांस के ढेर के समान पड़ा हुआ है। अहीन्द्र तथा रंगलाल सिहर उठे। अहीन्द्र ने पूछा—यह कहाँ था ?

माँझी ने बड़े उत्साह से टूटी-फूटी भाषा में बहुत-कुछ कहा। साथ-ही-

साथ हाथ-पैर हिलाने का उसका कैसा विचित्र ढंग था ! मुख्य बातें यही हुई थीं—एक बहुत कोमल बकरी का बच्चा, अपने मन से ही कूदता-कूदता, जङ्गली घास के बन के पास नाचता, फिर रहा था । पास में ही एक माँझी बैठकर बाँसुरी बजा रहा था और उसके निकट ही उसका कुत्ता बैठा था । कुत्ता सहसा भूँकने लगा, माँझी ने उसकी आँखों का अनुसरण कर देखा, एक भयंकर साँप जंगली घास के वन से एक हाथ मुँह बाहर निकालकर एकटक लोलुप दृष्टि से उस नाचनेवाले बकरी के बच्चे को देख रहा है । सन्थाल युवक ने बांसुरी रख दी और धनुष और तेज वाण उठा लिया । इसके बाद उसने अचूक निशाना मार साँप का सिर ही भूमि के साथ बेध दिया । उसने चिल्लाकर गाँववालों को पुकारा । उस समय सिर बिंधे हुए अजगर ने अपनी लम्बी देह छटफटाकर घास के जंगल में जैसे तूफान मचा रखा था । किन्तु ; पाँच-सात धनुषों की वाण-वर्षा के सामने वह कब तक ठहरता ?

साँप देख आने के बाद बैठते ही एक प्रौढ़ा संथाली स्त्री ने तुरन्त दुहा हुआ दूध एक कटोरे में लाकर रख दिया । दूध की फेन अभी तक नहीं टूटी थी । स्त्री ने आदर के साथ कहा—बाबू, आप पीजिये ।

अहीन्द्र हँसने लगा । माँझी ने कहा, यही मेरी माँझिन है बाबू । लाल बाबू को नमस्कार कर—ये हमारे लाल देवता के नाती हैं ।

रंगलाल गाल पर हाथ रखकर क्या सोचता था, अकस्मात् चौंककर बोल उठा—ऐं, इसीको कहते हैं कि चूहा बिल खोदता है और साँप सुख करता है ।

दूध का कटोरा रखते-रखते अहीन्द्र बोला—क्यों ?

मलीन हसी हँसकर रंगलाल ने कहा—दियारा नदी में निकला, साँप-वाँप के भय से कोई इधर आता भी नहीं । माँझी बेचारे आये, उसे साफ करते हैं, खेती करते हैं, उधर जमींदार लाठियाँ लेकर तैयार हो कह रहे हैं—दियारा हमारा है । हम सब किसान कह रहे हैं - यह हमारा है । इसके बाद

माँझियों को निकाल बाहरकर सब जम के रहेंगे। माँझी ने झटपट कहा—क्यों ? हमलोग भी लगान देंगे। वे क्यों हमलोगों को भगायेंगे ?

रंगलाल बोला—इस गाँव में सभी बाबू हैं। लगान किसे दोगे ? सभी कहेंगे, हमें सोलहो आने लगान दो।

क्यों ? हम अपने लाल देवता के नाती—इन्हीं लाल बाबू—को लगान देंगे।

अहीन्द्र बोला—ना, ना माँझी, यदि दियारा हमारा न हुआ तो, हमें लगान देने से काम कैसे चलेगा ? जिसका दियारा होगा, उसीको लगान देनी पड़ेगी।

तोभी हम तुम्हें ही लगान देंगे, जिसे देना हो, तुम्हीं दे देना।

रङ्गलाल चालाक मनुष्य, चतुर किसान, है। वह भूमि-सम्बन्धी कायदा-कानून समझता है और यह भी समझता है कि यदि किसी प्रकार इस दियारे पर चक्रवर्तियों का अधिकार साबित हो जाय, तो दूसरों के समान अन्याय-अत्याचार नहीं होगा। उनकी भी आशा पूरी होगी ; क्योंकि माँ की बात के विरुद्ध कभी कुछ नहीं होगा। अहीन्द्र के शरीर को दबाकर उसने कहा—बाबू अभी लड़के हैं, ये जानते नहीं माँझी ! दियारा इन्हींका है।

माँझी बोला—हम सभी कहेंगे, हमारे लाल बाबू का दियारा है।

बात में बाधा पड़ी। वे स्त्रियाँ जिस प्रकार दौड़ती-दौड़ती गयी थीं, उसी तरह दौड़ती-दौड़ती आकर लाल बाबू के सामने खड़ी हो गयीं। उन सभी के आँचलों में फूलों के गुच्छे हैं। हर एक ने अपने-अपने आँचल से फूलों का ढेर गिरा दिया। हवा अत्यन्त मधुर गन्ध से भर गयी।

माँझी ने एक लम्बे शरीर वाली किशोरी को दिखाकर कहा—यह देखें लाल बाबू, यह मेरी नातिन है। इसीने आज साँप मारा है। इसका विवाह होनेवाला है।

लाज-संकोच-रहित होकर वह किशोरी उन्हीं को ओर देख रही थी, वह देखती ही रही। अहीन्द्र बोला—अब जा रहा हूँ माँझी !

स्त्रियों ने कलरव कर कुछ कहा। माँझी हँसकर बोला—युवतियाँ कह रही हैं कि वे सब नाचती हैं, तुम्हें देखना पड़ेगा।

किन्तु सन्ध्या हो गयी माँझी !

माँझी ने कहा—मशाल जलाकर तुम्हें कंधे पर बिठाकर पहुँचा दूंगा।

अहीन्द्र फिर 'नहीं' न कह सका। कितना सुन्दर नाचती हैं ! कितने ऊँचे स्वर में इतना सुन्दर गाती हैं ! उसने कहा—तो तनिक जल्द-जल्द माँझी।

लड़कियाँ साथ-ही-साथ कलरव करती-करती दौड़ती चली गयीं। सिरिङ्ग-सिरिङ्ग—अर्थात् गान, गान। मरङ्ग बाबू, राँगा बाबू, अर्थात् उनके मालिक राजा लाल बाबू देखेंगे।

मृदंग बजने लगे—धितां-धितां, बांस की बांसुरी में गाने का स्वर बज उठा। आधे चन्द्रमा के आकार में लाल बाबू को घेरकर, वसन्त की हवा में हिलते हुए हिंडोले के समान, सन्थाल-तरुणियों ने देह हिला-हिला-कर नाचना आरम्भ किया और साथ-ही-साथ बांसुरी के स्वर में स्वर मिला कर गाना भी। बूढ़ा माँझी अहीन्द्र के पास बैठा था। अहीन्द्र ने पूछा, गाने का क्या अर्थ है माँझी ?

वे कहती हैं कि हमारे राजा का व्याह होगा, रानी सजकर बैठी है, राजा उसे लाल जवाफूल ला देंगे।

दूसरे ही क्षण माँझी कूदकर खड़ा हो गया और एक मृदंग लेकर पुरुषों के साथ नाच-नाचकर बजाना आरम्भ कर दिया।

× × ×

रात के प्रायः आठ बजे का समय है। रायबाबू के बैठकखाने के सामने कुछ लोग मशाल का प्रकाश जलाकर जा रहे हैं। इस समय मशाल अस्वाभाविक हो गया है। इन्द्रराय ने गम्भीर आवाज से पूछा—कौन जाता है ?

सूखी जंगली घास का बण्डल बाँध और उस पर महुए का तेल डाल-कर बूढ़ा माँझी अपने लाल बाबू को पहुँचाने जा रहा था। मैं हूँ, उस पार दियारे का कमला माँझी।

अचरज के साथ राय ने पूछा—इतनी रात में इस प्रकार प्रकाश जला कर कहाँ जाओगे?

अपने लाल देवता के नाती लाल बाबू को घर पहुंचाने जा रहा हूँ। लाल देवता, सोमेश्वर चक्रवर्ती; राय को पुरानी कहानी याद पड़ी।

चार

सन्ध्या का दीपक जला, लक्ष्मीघर में गृहलक्ष्मी के सिंहासन के सामने की दीवार पर दीपक रखकर, सुनीति ने, गले से आँचल लगा, प्रणाम किया।

दहकती आग से भरी हुई धूपदानी लेकर नौकरानी बाहर खड़ी थी। धूपदानी उसके हाथ से लेकर सुनीति ने आग पर धूप छिड़क दी। धूप की सुगन्ध से घर भर गया।

घर का दरवाजा बन्द करते-करते सुनीति बोलीं—तुलसीमन्दिर तथा ठाकुरबाड़ी में ब्राह्मणी से धूप देने के लिये कह दे मानदा। मुझे बड़ी देर हो गयी, शायद बाबू रंज हो जायँ।

झटपट तिल-तेल की बोतल लेकर वे ऊपर रामेश्वर के घर की ओर चली गयीं।

रामेश्वर के घर के दरवाजे तथा खिड़कियाँ हर समय बन्द रहती हैं, दिन-रात घर में दीपक जलता रहता है। उस दीपक में तिल का तेल पड़ता है। उज्ज्वल प्रकाश उनकी आँखों को एकदम सहन नहीं होता। प्रकाश में वे बिल्कुल देख नहीं पाते, अन्धकार में ही देख पाते हैं। तेल की बोतल हाथ में लेकर सुनीति ने धीरे से दरवाजा खोल घर में प्रवेश किया। बहुत बड़े कमरे में एक मन्द दीपक जल रहा है। इतने बड़े कमरे

में हर जगह उसका प्रकाश फैल नहीं पाता। चारों कोनों में अन्धेरे ने असीम के समान, सीमित प्रकाश-पुंज को घेर लिया है। अन्धकार-प्रकाश में जैसे उसने एक रहस्य-लोक बना दिया है। उसी के बीच, कमरे के मध्य में उस समय के विशाल पलंग पर रामेश्वर चुपचाप बैठे थे।

कमरे का दरवाजा खुलते ही रामेश्वर ने अत्यन्त मीठे स्वर से पुकारा—सुनीति ?

कमरे का दरवाजा बन्द करते-करते सुनीति बोलीं—हाँ, मैं ही हूँ। दीपक में तेल डाल दूं ? खिड़कियाँ खोल दूँ ? सन्ध्या हो गयी।

खोल दो।

सन्ध्या का अन्धकार घना हो जाने पर खिड़कियाँ खोली जाती हैं। उस समय कभी-कभी रामेश्वर उन खुली खिड़कियों के पास खड़े होकर बाहरी संसार से परिचय करते हैं। खिड़कियाँ खोलते ही उस बन्द कमरे में बाहर की वायु ने तनिक जोर से प्रवेश किया। साथ ही साथ दीपक बुझ गया। रामेश्वर ने बाहर की शीतल हवा में साँस लेकर कहा—अहा !

सुनीति बोलीं—दीपक बुझ गया है।

रामेश्वर बोले—हवा में बहुत सुन्दर फूलों की गन्ध आ रही है। यह कौन महीना है ?

चैत मास। इसके बाद चिन्ता के साथ सुनीति बोलीं—दीपक इस हवा में नहीं ठहरेगा।

रामेश्वर कह रहे थे—'ललित-लवंग-लता-परिशीलन कोमल-मलय-समीरे।' बत्ती डालकर एक झाड़ जला दूं ?

झाड़ ?

हाँ, बत्ती का प्रकाश भी तो खूब ठंडा है। इस हवा में दीपक नहीं ठहरेगा।

अच्छा, ऐसा ही करो। ऐसा कहकर रामेश्वर फिर गुनगुनाने लगे—"मधुकर-निकर-करम्बित-कोकिल कूजित कुंज कुटीरे।"

घर में झाड़ तथा बत्ती ठीक रखी रहती हैं। बीच-बीच में जलती भी हैं—हवा के कारण भी ऐसा होता है और रामेश्वर बाबू की इच्छा से भी। सुनीति ने बत्ती सजाकर झाड़ में बिठा दी। इसके बाद कई धूपबत्तियाँ लेकर बोलीं—कपड़े बदलो, सन्ध्या के लिये स्थान बना दूँ।

करनी ही होगी। न करना पाप है। करने पर कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं।

सुनीति ने रोककर कहा—यह क्या कहते हैं? रामेश्वर कभी-कभी इसी तरह बकना आरम्भ करते। उस समय उनको रोकना पड़ता है, नहीं तो एक ही बात वे कुछ देर तक इसी प्रकार बकते रहते।

रोके जाने पर रामेश्वर चुप हो गये। सुनीति ने फिर कहा—कपड़े बदलो, सन्ध्या करो। इस प्रकार बकते क्यों हो?

ना-ना-ना, मैं बकता कहाँ हूँ! बकूँगा क्यों? कहाँ है? कपड़ा दो।

रामेश्वर बड़ी सावधानी के साथ बिछौने से उतर आये। स्वामी को सन्ध्या के निमित्त बिठाकर सुनीति बोलीं—सन्ध्या कर डालो, मैं दूध गर्म कर ला दूँ।

सुनीति ने लौटकर देखा, रामेश्वर सन्ध्या समाप्त कर खिड़की के पास खड़े हैं। सुनीति को देखते ही वे बोले—बताओ, क्या बज रहा है?

दूर दियारे पर उस समय अहीन्द्र को घेरकर संथाल ढोल तथा बाँसुरी बजा रहे थे, लड़कियाँ नाच रही थीं। उसकी ही आवाज थी। सुनीति बोलीं—सन्थाल ढोल बजा रहे हैं।

बाँसुरी सुनती हो न? बाँसुरी?

हाँ। सन्ध्या का समय है न! माँझी ढोल बजाते हैं, बाँसुरी बजाते हैं, स्त्रियाँ नाचती हैं। उनका यही आनन्द है।

तुमने कविराज गोस्वामी श्री जयदेव का गीतगोविन्द पढ़ा है?

"करतल ताल तरल वलयावलि कलित कलम्बन वंशे।
रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशंसे।"

यमुनातट पर वंशी-ध्वनि के साथ एक दिन गोपियाँ नाचतीं। गीत-गोविन्द तुमने नहीं पढ़ा है?

स्वामी के मुँह की ओर देख, एक लम्बी सांस छोड़, सुनीति ने कहा—तुमने तो कभी पढ़कर सुनाया नहीं, मैं स्वयं तो संस्कृत नहीं जानती।

आज तुम्हें सुनाऊँगा, मुझे कंठस्थ है।

अच्छा, अभी दूध तो पी लो। इतना कहकर सुनीति ने दूध का कटोरा सामने बढ़ा दिया। दूध पी लेने पर कटोरा सुनीति के हाथ में देते ही सुनीति ने जल का ग्लास तथा गमछा उनके सामने रख दिया। हाथ-मुँह धोकर रामेश्वर ने फिर कहा—कविराज गोस्वामी ने क्या कहा है, जानती हो?—

"यदि हरि स्मरणे सरसं मनो यदि विलास कलासु कुतूहलम्।
मधुर कोमल कान्त पदावलीं, शृणु तदा जयदेव सरस्वतीम्॥"

सुनाऊँगा, तुम्हें आज सुनाऊँगा।

आनन्द से जैसे सुनीति की छाती भर गयी। उन्होंने कहा—तो मैं झटपट काम खतम कर आऊँ। दूसरे ही क्षण जैसे सुनीति रुक-सी गयीं—कितनी देर, यह भाव कितनी देर के लिये?

हाँ, आओ। हवा बहुत मधुर चल रही है। वसन्त का समय है। अच्छा सुनीति, होली बीत गयी न?

हाँ, आज अँधेरे पक्ष की सप्तमी है।

क्यों, मुझे तो अबीर लगायी नहीं!

सुनीति अपराधिनी की तरह चुपचाप खड़ी रही।

लाओ, लाओ; अबीर हो, तो लाओ, एक मुट्ठी आज।

सुनीति ने इसका भी उत्तर नहीं दिया; केवल एक लम्बी साँस छोड़ी।

और सुनो। जयदेव सरस्वती की पदावली यदि सुनोगी, तो बहुत सुन्दर वस्त्र धारण करोगी। सुन्दरतापूर्वक केश सँवारोगी। इसके बाद रसराज की मूर्ति हृदय में स्मरणकर लीला-विमोहित मन से पदावली सुननी पड़ेगी।

सुनीति अच्छी तरह जानती थीं कि लौटकर आते-आते स्वामी का मन इस प्रकार का नहीं रह जायगा। किन्तु ; वे कभी स्वामी की बात का प्रतिवाद नहीं करतीं। इसीसे मलीन हँसी हँसकर बोलीं—वैसे ही आऊँगी।

केश सँवार लेना।

सँवार लूँगी।

हाँ, घर इत्र नहीं है-इत्र ?

है, वह भी लाऊँगी।

मुझे इसी समय थोड़ा-सा दे सकती हो ?

ला देती हूँ। सुनीति ने झटपट बक्स खोल एक सुन्दर इत्रदान निकाला। रुई में इत्र डुबो स्वामी के हाथ में देकर घर से बाहर होने के लिये फिरीं। किन्तु रामेश्वर ने पुकारा—सुनो।

सुनीति बोलीं—कहो।

उस प्रकाश के सामने तुम एक बार खड़ी तो हो जाओ। मैं अन्धकार में रहता हूँ। बहुत दिनों से जैसे तुम्हें अच्छी तरह देखा नहीं है।

सुनीति स्थिर भाव से स्वामी के मुँह की ओर देखती हुई खड़ी हो गयीं।

रामेश्वर ने लम्बी साँस लेकर कहा—आँख जाने से बढ़कर मनुष्य के लिये और कोई दुःख नहीं है। भयंकर पाप न होने से मनुष्य की आँख नहीं जाती।

सुनीति ने दुःखित स्वर में कहा—किन्तु आँख तो तुम्हारी खराब नहीं है, तीन-चार बार डाक्टरों को दिखाया, वे तो ऐसा नहीं कहते।

तीव्र स्वर में प्रतिवादकर रामेश्वर बोले—जानती नहीं, वे कुछ भी नहीं जानते, तुम भी नहीं जानती। दिन के प्रकाश में मेरी आँखें अपने आप बन्द हो जाती हैं, कोई जैसे उनमें सुई चुभो देता है! बुझा दो सुनीति, वह प्रकाश बुझा दो, नहीं तो आड़ में हटा दो, आह!

प्रकाश आड़ में हटा, सुनीति चुपचाप घर से बाहर हो गयीं।

उस समय मकानों में नीचे चारों ओर कमरे होते थे, जिनको एकदम बन्द ही कहा जा सकता था। बाहर जितनी मधुर वायु बहती थी, नीचे के तल्ले में उतनी गर्मी रहती थी। सुनीति स्वामी के लिये भोजन अपने ही हाथ से बनाती थीं। भोजन तैयार करते-करते वे पसीने में नहा उठीं।

रसोइयादारिन ने कहा—अरे बाप रे, माँ जैसे पसीने में एकदम नहा उठी हैं! मैं जो इतनी देरतक आग की आँच के सामने थी, मुझे तो इतना पसीना नहीं हुआ!

मानदा नौकरानी ने कहा—पंखा ले आऊँ?

अत्यन्त लज्जित तथा संकुचित हो सुनीति बोलीं—नहीं रे, नहीं, रहने दे! अब तो ठीक हो रहा है। इस प्रकार पसीने से नहा उठना, उनको भी अस्वाभाविक जान पड़ता था। उनका भोजन बन चुका था। वे खाने की वस्तुएँ लेकर खड़ी हो गयीं। भोजन ठीककर बोलीं—दो बाल्टी जल ला दे मानदा, तनिक शरीर धो डालूँ।

मानदा पुरानी नौकरानी है। उसने कहा—सन्ध्या समय शरीर धोयेंगी माँ? यह दोरसा समय है। इसमें शरीर क्या धोइयेगा; गमछा भिगोकर शरीर पोंछ डालिये।

नहीं रे, सारा शरीर जैसे लसलस कर रहा है। इसके बाद मुस्कुराकर

बोलीं—मैं क्या मर जाऊँगी मानी ? यदि ऐसा हो, तो संसार में दुःख कौन भोगेगा ?

मानदा और कुछ न कह पानी तथा गमछा ले आयी और नहाने की व्यवस्था कर दो।

अपना हाथ दोनों नाकों के पास ले जा, जरा सूँघकर, सुनीति बोलीं —धूएँ की गन्ध साबुन न लगाने से नहीं जायगी।

कहते-कहते घर के भीतर साबुन लेकर भी वे चुप खड़ी रहीं। धोया कपड़ा बाहर निकालने से काम चल जाता, किन्तु—। फिर उनका सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया। मन में उन्हें संकोच पीड़ित कर रहा था !

मानदा ने पुकारा—माँ, आइये।

सुनीति झटपट बाहर निकल हँसकर बोलीं—बक्स खोलकर देखा, कपड़े पुराने हो रहे हैं ! सोचती हूँ, रखकर क्या होगा, पहन डालूँ। किन्तु तुमलोग हँसोगी, इसीसे नहीं पहनती।

मानदा तथा रसोइयादारिन—दोनों—एक साथ हाँ-हाँ कर उठीं—नहीं, माँ, नहीं, आप पहनिये। अच्छा कपड़ा पहनने पर आप कितनी सुन्दरी लगती हैं ! पहनिये, पहनिये।

पहन लूँ ?

हाँ, माँ, पहनिये। पहनियेगा क्यों नहीं ?

बूढ़ी स्त्री का शौक देख तुमलोग हँसोगी न ?

अरे माँ, क्यों हँसूँगी और आप बूढ़ी कैसे हुईं माँ ? बड़े भैयाजी तो अभी अठारह वर्ष के हो रहे हैं। मुझे याद है कि आपके पन्द्रहवें वर्ष में भैया आपकी गोद में आये। सब मिला कितना हुआ—यही तो तैंतीस वर्ष की आप हुई हैं।

सुनीति का संकोच दूर हो गया। उन्होंने फिर बक्स खोल ; ढाके की

एक साड़ी निकाल ली। शरीर धोते-धोते बोलीं—गरमी के दिन आये में केशों का बोझ लेकर मर रही हूँ।

मानदा बोली—आप नहा लीजिये, आपके केश बाँध दूँगी। केश बाँधने की बात सुनते ही आप कहती हैं—पुत्र बड़ा हो गया है, बूढ़ी हो गयी हूँ, और न जाने क्या-क्या। जाकर देखिये, छोटे घराने की राय की स्त्री की आपसे कितनी अधिक अवस्था है, केश पक रहे हैं; तोभी केश रोज बाँधती हैं।

हाथ-मुँह में साबुन लगा, नहाना समाप्तकर, सुनीति ने कहा—अच्छा वैसा ही कर, केश सँवार दे तो। खुला केश पीठ पर पड़कर सुर-सुर करता है।

सुनीति के केश भौंरे की तरह काले-काले और घुँघराले हैं। अपनी मुट्ठी में केश पकड़ मानदा बोली—कितने सुन्दर केश हैं माँ! अहा हा! कितने कोमल हैं! छोटे भैया ठीक देखने में आप जैसे हैं। किन्तु; ये केश उन्हें मिले नहीं और ऐसी सुन्दर आँखें भी उन्हें नहीं मिलीं!

सुनीति चौंक पड़ीं—अरे, अहीन्द्र तो अबतक नहीं लौटा? उन्होंने उत्कण्ठित स्वर में कहा—हाँ रे, अहि तो अबतक नहीं लौटा? बहुत देर से गया है!

मानदा बोली, अच्छा जाकर देखिये न, वे बैठकर रंगलाल से बातें कर रहे हैं। जब मैं नदी-तीर पर पानी लाने गयी थी, तब उन दोनों को देखा। सरदार कभी यह हाथ उठाता है, और कभी वह हाथ फटकारता है; जैसे भाषण दे रहा हो।

सुनीति बोलीं—उसे एक नशा हो गया है। सब किसानों के साथ बैठ बातें करता है। राय लोग निन्दा करते हैं और महि तो मुझे ही दोष देता है। किन्तु; बाबू के कान में यह बात नहीं गयी।

मानदा ने कहा—रायों की बात छोड़िये माँ। वे इस घर की निन्दा

छोड़ कुछ नहीं चाहते। और छोटे भैया की तरह लड़का तो हजारों में एक भी नहीं है—मैंने तो देखा नहीं। देख आओ, रायों के लड़कों को। वे बात में जैसे सुई चुभोते हैं। तू-तुकार, हरामजादा-हरामजादी शब्द तो उनके ओठों पर हैं। लीजिये माँ, अब माँग में सिन्दूर लीजिये—सिर में लगाइये, लगाना पड़ेगा।

सुनीति खाली आँखों से पश्चिम की ओर एक तल्ले की छत पर से उस पार की शून्यता की ओर देख रही थीं—उधर बैठकखाने के आँगन में इतना प्रकाश कैसा? आकाश भी प्रकाशित हो गया है। उन्होंने शंकित होकर कहा – बाहर निकलकर देख तो मानदा, बाहर इतना प्रकाश कैसा है?

मानदा शंकित चित्त से, सावधानी के साथ, बाहर गयी और कुछ क्षण के बाद ही दौड़ी आयी—अरे माँ, एक दल सन्थाल मशाल जलाकर भैया को पहुँचाने आये हैं। वे सब झटाझट प्रणाम करते हैं और भैया को 'लाल बाबू' कहते हैं।

'लाल बाबू?'—सुनीति सिहर उठीं। सन्थालों के लाल देवता–अपने ससुर—की कहानी उन्होंने बहुत बार सुनी है। दूसरे क्षण उनका मन अपने ससुर-कुल के गौरव से भर गया और इन आदिम जंगली मनुष्यों के कृतज्ञतापूर्ण आज्ञापालन की बात यादकर उनके प्रति भी उनकी ममता की सीमा न रही। इस घराने को सन्थालों ने कभी नहीं भुलाया, सरकार के साथ मुकदमे के बाद से ही इस घर ने जानबूझकर सन्थालों से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया है। बहुत दिनों तक उनके स्वामी पर सरकार की कड़ी आँखें थीं।

अहीन्द्र ने हँसते-हँसते घर में प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे रंगलाल आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया।

आज वह दियारा देख आया माँ! सन्थालों ने बड़ी खातिरदारी की।

मुझे कहते हैं 'लाल बाबू'। एक अजगर उन्होंने मारा है—बहुत बड़ा ! अहीन्द्र की इच्छा हो रही थी, एकदम सब बातें एक ही साथ कह दे।

माँ ने कहा—वह साँप-वाँप से भरा दियारा है। वहाँ तू क्यों गया था ?

अहीन्द्र हँसकर बोला—सात करोड़ सन्थालोंवाली हे वंग-जननी रखा है हमें तुमने बंगाली बनाकर, मनुष्य बनाया नहीं। जाने से हुआ क्या ! भय किसका ?

बाहर दरवाजे पर रंगलाल खड़ा था। उसने पुकारा—'भैया !' उसी के गमछे में फूल थे।

सुनीति ने चौंककर घूँघट खींचते हुए पूछा—माँझी चले गये क्या ? मानदा, माँझियों को ठहरने को कह दो। उन्हें भूँजा और लड्डू देने होंगे।

फूल की सुगन्ध और कदम्ब के फूल की तरह फूलों की बनावट देख सुनीति भी आकर्षित हुई। वे भी फूलों के कई गुच्छे उठाकर बोलीं—कितने सुन्दर फूल हैं !

उल्लास के साथ अहीन्द्र बोला—मैं इसी फूल की सुगन्ध के लिये ही तो दियारा गया था।

रंगलाल ने कहा—माँझी ठीक पता जानते हैं। जब गया, तो मुझे देखते ही कमल माँझी, संथालों के सरदार ने—ओह कैसा चेहरा है उसका माँ ! ठीक जैसे पहाड़ की तरह—पहचान लिया और कहा—'हुं, ठीक वैसा ही शरीर, उसी प्रकार आग जैसा रंग, वैसी ही आँखें, वैसे ही केश, ठीक हमारे लाल देवता के नाती हैं।' वहाँ की लड़कियाँ इस फूल के गुच्छे कानों में पहने हुई हैं। उन्होंने इतने फूल दिये। सब अपने आँचल भर-भरकर ले आयीं। रंगलाल बोला—सब लीजिये भैया, चलिये, मैं ले चलता हूँ।

सुनीति बोलीं—तू बहुत-से फूल लेकर बाबू के कमरे में दे आ। वे

बहुत खुश होंगे। सुनता है न ? वे उस समय रोज सन्ध्या को फूलों की माला पहनते थे। जा, ले जा।

अहीन्द्र बोला—नहीं, तुम ले जाकर उन्हें दे आओ।

क्यों ? अब की आकर तो तुमने एक बार भी बाबू से भेंट नहीं की ! ना, ना, यह तो अच्छा नहीं, अहि !

मुझे बड़ा दुःख होता है माँ। वे कैसे हो गये हैं ! ऐसे बड़े पण्डित, कितना सुन्दर संस्कृत बोलते हैं ! मुझे रुलाई आती है।

सुनीति की आँखें छलछला उठीं। वे लम्बी साँस छोड़ स्वयं फूल लेकर उठीं। बोलीं—क्या करूँ, तुम्हारा अभाग्य और हमारा जला सिर ! अच्छा, मैं हो दे आती हूं। जाते-जाते फिर लौटकर बोलीं—महराजिन, सब माँझियों को भूँजा तथा लड्डू दे दो।

अब तक अहीन्द्र माँ को देख, बोला—आज तो माँ, तुम बड़ी सुन्दर लगती हो ! क्यों तुम चौबीसों घण्टे इतनी गरीब-गरीब बनी रहती हो?

सुनीति लज्जा से लाल हो गयीं। फिर भी चटपट अपनी लज्जा छिपा कर बोलीं—आज मैं लाल बाबू की माँ हुई हूं न, इसीसे। और समधी आयेंगे, ऐसा जानकर सजी हूं। तुम्हारा व्याह उन सन्थालों की कन्या के साथ कर दूंगी।

बालक लजा गया। माँ भी तेजी से ऊपर चली गयीं। कुछ क्षण बाद ही रंगलाल ने माँझियों के साथ भीतरी दरवाजे पर आकर पुकारा—भैया जी !

मानदा बोली—आओ सरदार, भीतर ही उनको ले आओ, माँ ऊपर हैं।

\+ + + +

सुनीति ने किवाड़ ठेल घर में प्रवेश कर देखा—घर में अन्धकार है। जान पड़ता है, बत्ती बुझ गयी है। उन्होंने दरवाजा खोल अहि से कहा—एक दीपक तो ले आ अहि।

अन्धेरे कमरे से रामेश्वर बोले—कौन ? सुनीति ? उनका कण्ठस्वर बहुत उत्तेजित था और धीमे स्वर से आशङ्का का आभास प्रकट हो रहा था।

सुनीति ने समझा, दीपक बुझ जाने से रामेश्वर उत्तेजित हो गये हैं। यद्यपि उनकी आँखें प्रकाश नहीं सहन कर सकती थीं, किन्तु घने अन्धेरे में अकेले रहने से वे आशङ्कित हो जाते थे। सुनीति बोलीं—अभी दीपक ले आता है। किन्तु मैं क्या लायी हूं ? खूब मधुर गन्ध मिल रही है न ?

उन्होंने सुनीति की बात का उत्तर नहीं दिया। वे उत्तेजित भाव से उसी प्रकार धीमी आवाज में बोले—बैठकखाने में इतना प्रकाश क्यों है सुनीति ? इतने आदमी ! मुझे पकड़ ले जायँगे क्या ? इसीलिये मैंने दीपक बुझा दिया है।

सुनीति का सारा आनन्द मलीन हो गया। वे लम्बी साँस फेंककर बोलीं—वे सन्थाल हैं। अहि को पहुंचाने आये हैं।

अहि को पहुंचाने आये हैं ? सन्थाल !

हां, काली के उस पार जो दियारा निकला है, अहि आज वहीं घूमने गया था। वहां सन्थाल आकर रहते हैं। रात हो जाने से वे मशाल जला अहि को पहुंचा गये हैं। अहि तुम्हारे लिये खूब अच्छे-अच्छे फूल लाया है। क्या गन्ध नहीं पा रहे हो ?

फूल ! तभी तो मधुर गन्ध आ रही है ! अहि लाया है ? मेरे लिये ?

हां।

अहि ने प्रकाश ले किवाड़ ढकेल घर में प्रवेश किया। सुनीति ने प्रकाश में फूलों के गुच्छे रामेश्वर के सामने रख दिये। रामेश्वर ने मुग्ध दृष्टि से देखते-देखते कहा—कूटज फूल—वनबालायें पर्वत-दुहितायें उस समय कानों और केशों में गहने की तरह पहना करती थीं। इन्हें हमलोग कहते हैं कुर्ची फूल।

अहि बोल उठा—सन्थालों की स्त्रियां इनके गुच्छे बनाकर कानों के पास पहनती हैं।

सुनीति बोलीं—सन्थाल अहि को देवता की तरह मानते हैं। ससुर जी का नाम लेकर कहते हैं कि तुम हमारे 'लाल देवता' के नाती हो, देखने में भी ठीक वैसे ही। एक बूढ़े सन्थाल ने उसे देखकर कहा है—अहि ठीक मेरे ससुर के समान है देखने में, इसका नाम रखा हैं रँगा बाबू।

रामेश्वर ने सन्न हो अहि के मुख की ओर देखकर कहा—उठाओ तो, प्रकाश उठाओ, सुनीति, देखूँ।

सुनीति ने प्रकाश उठाकर अहीन्द्र के मुख के पास रखा। देखते-देखते सहमति-सूचक सिर हिलाकर उन्होंने कहा—हां। कण्ठस्वर की करुणा-सूचक ध्वनि ने सुनीति तथा अहीन्द्र दोनों को स्पर्श किया। शायद कोई भीतरी बात वे कह उठेंगे, इस भय से सुनीति बोलीं—अहि, जा, तू खा ले। मैं प्रकाश जलाकर आती हूं।

अहि चला गया। सुनीति ने प्रकाश जलाया और एक सफेद पत्थर के ग्लास में फूल सजाकर कहा—यह देखो, आज खूब सुन्दर कपड़ा पहने हूं, केश भी बँधा है। गीतगोविन्द सुनाओगे न?

रामेश्वर के कान में यह बात पहुंची ही नहीं। वे जैसे अपने को भूलकर किसी गहरी चिन्ता में निमग्न हो गये हों। सुनीति ने उन्हें छूकर पूछा—क्या सोचते हो?

सोचता हूं—अहि यदि सन्थालों को लेकर सरकार से दंगा करे!

ना, ना, ना! अहि इस तरह का लड़का नहीं है। खूब अच्छा लड़का है। प्रत्येक बार स्कूल में फर्स्ट होता है। तुम तो बुलाकर बात-चीत नहीं करते। बातचीत करके देखो, खूब संस्कृत पढ़ी है, देश-विदेश की कितनी कहानियां सुनाता है।

रामेश्वर की दुर्भावना इससे भी नहीं गयी। उन्होंने बार-बार गर्दन

हिलाकर कहा—सन्थालों ने पहचान लिया है और नाम रखा है लाल बाबू और वह देखने में भी ठीक वैसा ही है।

सुनीति की कभी-कभी इच्छा होती है कि एक कठोर पत्थर के निष्ठुर आघात से सिर फोड़कर भाग्य के लेख को धूल में मिला दें। वे घर से बाहर निकल आयीं। नीचे मानदा और महराजिन सन्थालों के सम्बन्ध में बातें कर रही हैं—हमें उनकी बांसुरी सबसे अच्छी लगती है, सुन रही हो, घर जाते समय बांसुरी बजाते जा रहे हैं।

सुनीति ने क्रोध के साथ कहा—छिः, अभी भी बातें कर रही हो! छिः!

पाँच

इन्द्रराय को बहुत सवे उठने का बहुत दिनों से अभ्यास है। वे एक समय सवेरे उठ, बाहर निकलकर, नियमित व्यायाम करते थे। अवस्था बढ़ जाने से व्यायाम का अभ्यास तो नहीं है, किन्तु अब भी सोने के बाद उठकर बाहर थोड़ा टहल आया करते हैं।

अकेले ही जाते हैं। गाँव के उत्तर लाल मिट्टी का एक टीला है। वह एकान्त स्थान है। कई कोस दूर पर शाल का एक जंगल है और जंगल के पास ही एक पहाड़। सन्थाल परगने के पहाड़ का एक भाग आकर यहीं समाप्त होता है। यही टीला उनके सवेरे टहलने का निश्चित स्थान है। पृथ्वी के कक्ष की तरह, उनके सवेरे टहलने का भी है एक निश्चित कक्ष। आजकल उन्हें एक साथी मिल गये हैं। उन्हींकी अवस्था के एक परदेशी पुरुष, डिस्पेप्सिया से मृतप्राय होकर स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान की खोज में यहीं इन्द्रराय की शरण पहुँच गये हैं। इन्द्रराय ने उनको घर-बार तथा कुछ जगह-जमीन देकर यहीं बसा दिया है। सवेरे टहलते समय इन्द्रराय के साथ यही सज्जन रहते हैं।

आज इन्द्रराय बाहर जाने के लिये फाटक खोल फिर लौट आये। हिन्दुस्तानी जमादार मुचुकुन्द सिंह कचहरी के बरामदे में चित होकर नाक

बजा रहा था। राय ने उसके मोटे पेट पर हाथ की छड़ी से ठेलकर पुकारा—उठो, जल्द उठो।

सिर हिला नहीं, नींद से लाल अपनी दोनों आँखें फाड़कर देखा कि कौन है।

राय को देख वह चौंक पड़ा, उसका सारा शरीर हिल उठा, दूसरे ही क्षण सकबकाकर वह उठ बैठा और बोला—हजूर!

आओ, मेरे साथ, लाठी ले लो।

चपरास और पगड़ी भी?

धमकाकर राय बोले—नहीं, केवल लाठी लेकर आओ, इसीसे काम चल जायगा।

लाठी लेकर सिंह खोज रहा था—धत् तेरी की, अंगोछा कहाँ गयल बा? क्योंकि गमछा कन्धे पर न रख उसका मन जाने को किसी प्रकार तैयार नहीं होता था! गमछा पानेपर उसको सिर में बाँध मुचुकुन्द बाहर आया।

राय के साथी अचिन्त्य बाबू उस समय अपने मिट्टी के घर के द्वार पर बैठे मन लगाकर अपनी दोनों पुतलियों को मूँछ पर जमा काले केश चुन रहे थे।

राय के आकर खड़े होते ही बोले—काली मूँछ अब नहीं है, ऐसा अब कहा जा सकता है राय महाशय!

राय हँसकर बोले—यह तो आप दर्पण में ही देख सकते हैं अचिन्त्य बाबू।

अचिन्त्य बाबू ने गर्दन हिलाकर कहा—उँहुक, दर्पण तो मैं देखता नहीं।

राय ने अचरज से पूछा—आप दर्पण नहीं देखते? क्यों?

उसको देखते ही ऐसा लगता है कि शरीर बहुत खराब हो गया है। जान पड़ता है कि अधिक दिन न जिऊँगा। किन्तु आज आपके साथ कौन है?

आज तनिक दूसरी ओर जाऊँगा ; नदी उस पार एक दियारा निकला है, उसी ओर जाऊँगा।

अचिन्त्य बाबू चौंक पड़े—अरे बाप रे! वहाँ सुनता हूँ भयंकर साँप हैं।

अन्त में क्या प्राण खोइयेगा? ना, ना, यह विचार छोड़िये, दियारा-फियारा देखने जमादार-फमादार भेज दीजिये न, न हो तो नायब-गुमाश्ता साथ कर दीजिये।

अरे नहीं, नहीं। आप भय न कीजिये। वहाँ इस समय सन्थाल रहते हैं, अच्छा रास्ता बनाया है, खेती करते हैं, कुँआ बनाया है। सुना है कुएँ का पानी खूब अच्छा है। नदी का जल ही तो छनकर जाता है! चल कर देखिये, खेती के लिये कैसी भूमि है! आपका तो बहुत-सा प्लान-टान है। चलिये, वह यदि काम आ सके, तो देखा जाय।

अचिन्त्य बाबू ने और आपत्ति नहीं की। किन्तु उनकी चाल कम हो गयी! इन सज्जन के बाप दारोगा थे और इन्होंने स्वयं एफ० ए० पासकर पोस्ट आफिस में नौकरी की थी। किन्तु ; रोग के कारण असमय इनवैलिड पेन्शन ले ली थी। थोड़ी पेन्शन से परिवार चल रहा था। पिता तथा अपनी नौकरी की बचत से व्यापार की बात सोचते हैं। उस सम्बन्ध में खोज-खबर लेकर लाभ-नुकसान भी कागज-कलम द्वारा कर डालते हैं ; किन्तु प्रत्यक्ष काम के समय हाथ-पैर बटोरकर बैठ जाते हैं। फिर दूसरे काम के विषय में विचारने लगते हैं!

कालिन्दी के किनारे आकर अचिन्त्य बाबू बोले—ब्यूटीफुल सन राइज् (सुन्दर सूर्योदय)! न हो आप लौट आइये राय महाशय, मैं बैठे-बैठे सूर्योदय देखूँ।

राय ने मीठी हँसी हँसकर कहा—जाइयेगा नहीं? किन्तु भय क्या मृत्यु की गति रोक सकता है अचिन्त्य बाबू?

अचिन्त्य को क्रोध आ गया, तोभी यथाशक्ति अपना भाव छिपाकर बोले—ऐसा कहकर मृत्यु के मुँह में गिर पड़ना वीरता नहीं है।

मान लीजिये, पाँच हचार की एक थैली के पास, एक भयंकर साँप रख कर, कोई कहे—यदि ले जा सको, तो थैली तुम्हारी ; तो क्या आप उसे लेने जाइयेगा ?

राय महाशय हा-हा हँसकर बोले—निश्चय। साँप मारकर रुपये ले लूँगा।

अचिन्त्य बाबू ने अचरज के साथ राय के मुँह की ओर कुछ देर तक देखकर कहा—ओ, आप जाकर लीजिये महाशय। मैं न तो लेना चाहता हूँ, और न जाना चाहता हूँ। बात समाप्त करते ही वे नदी-किनारे की हरी घास पर बैठ गये। उन्होंने कहा—यह हुआ ठीक अल्ट्रा वायोलेट रे—जवाकुसुम का साथ।

इन्द्रराय हँसे और जूता खोल नदी के पानी में घुस पड़े।

असल बात यह है, कल सन्ध्या समय उस मशाल के प्रकाश में सन्थालों के साथ लाल देवता के पौत्र का वह जुलूस, इन्द्र राय को बहुत खटका। 'लाल देवता के नाती, हमारे लाल बाबू'—इन शब्दों में जैसे उन्हें किसी विशेष अर्थ का पता मिला था। रात के अन्तिम पहर तक बैठे-बैठे उन्होंने इसी बात पर विचार किया था। एक दुधमुँहा बालक एक ही क्षण में हिमालय की तरह अलंघ्य हो उठा! वे सन्थाल-जाति के स्वभाव से अनजान नहीं थे। आदिम वर्वर जाति ने जिसे देवता कह दिया, वह उसे कभी पत्थर नहीं कहेगी। कहें, रामेश्वर के इस सुकुमार पुत्र को वे सब देवता कहें, किन्तु देवता ने इस दियारे के सम्बन्ध में कोई देववाणी की है कि नहीं, यही उन्हें मालूम करना है। असल में इसीकी आशंका है। इसीको जानने के लिये वे रास्ता बदलकर दियारे की ओर आये हैं।

दियारे के भीतर सन्थाल-बस्ती में जाने के रास्ते पर खड़े होकर उन्होंने मुचुकुन्द सिंह से कहा—पुकारो तो माँझियों को।

मुचुकुन्द सिंह ने गाँव में प्रवेशकर अपने मोटे गले से चिल्ला-चिल्ला कर शोरगुल मचा दिया। उसको थोड़े चूने और सुरती की जरूरत थी। जल्दी में उठकर आते समय वह उन्हें भूल आया था। गाँव में पुरुष कोई नहीं, वे सब अपनी-अपनी गायें, भैंसें, बकरियाँ इसी घने वन में कहीं चराने चले गये थे, स्त्रियाँ अपने कामों में लीन थीं। उनमें से किसी ने मुचुकुन्द को उत्तर नहीं दिया। दो-एक स्त्रियाँ मिट्टी खोद उनके बड़े-बड़े ढेर बना रही थीं, उन्हें बाद में पानी से भिगोकर घर की दीवारों में लगायेंगी। केवल एक अधेड़ सन्थाल एक जगह बैठ एक कठपुतली लेकर कुछ कह रहा था। कठपुतली की कमर से ऊपर तक एक कपड़ा घाँघरे की तरह पहना दिया था, उसी घाँघरे में हाथ डालकर उसने पुतली पकड़ रखी थी। चिल्लाते-चिल्लाते मुचुकुन्द वहाँ आकर उससे बोला—अरे चल, बाबू तुम्हारी बस्ती देखने आये हैं।

माँझी शान्त मन से अपना काम करते-करते बोला—तू जाकर सरदार माँझी से कह! मैं अभी इससे लड़ूँगा।

अचरज में भरकर मुचुकुन्द ने पूछा—यह क्या है रे? क्या करेगा इसे लेकर?

माँझी ने हाथ बढ़ाकर कठपुतली उसके मुँह के सामने कर दी। कठपुतली ने दोनों हाथों से ताली बजाकर सिर हिलाना आरम्भ किया।

मुचुकुन्द ने अपना मुँह थोड़ा हटाकर मुग्ध-भाव से कहा—अहा!

कई जवान स्त्रियाँ आँगन साफ कर रही थीं, वे खिलखिला पड़ीं।

इसी बीच एक लड़का सरदार माँझी के पास दौड़ा गया। खबर पाते ही कमल माँझी उसी समय आ उपस्थित हुआ। मुचुकुन्द के सामने खड़े होकर उसने विनय के साथ पूछा—तू किसका सिपाही है? क्या कहता है?

मुचुकुन्द बोला—इन्दर राय, छोटा घराना। चल, बाहर हजूर खड़े हैं।

माँझी ने व्यस्त होकर आज्ञा दी—मचिया ले आओ।

राय अब तक तीखी नजर से देख रहे थे। पूर्व-पश्चिम लम्बा दियारा पाँच सौ बीघा तो होगा नहीं, किन्तु तीन सौ बीघा तो अवश्य है। हाथ में थोड़ी मिट्टी लेकर उसकी भी परीक्षा की। मिट्टी का ढेला आकार के विचार से हल्का है। महीन बालू के कण सूर्य के प्रकाश में चमक रहे हैं। समझ गये, पैदावार के लिये जिसे सोना उगलनेवाली भूमि कहते हैं, यह भी वैसी ही है। एक बार चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर उन्होंने दियारे से सटे हुए उस पार के गाँव की ओर निगाह डाली। यह गाँव चक्रवर्तियों का चक अफजलपुर है। इसके सामने होने से तो दियारा होगा चक्रवर्तियों का। किन्तु क्या दियारा ठीक चक अफजलपुर के सामने ही पड़ता है! आकाश की ओर देखा, फिर तरुण सूर्य तथा अपनी छाया एक रेखा में रखकर खड़े हो गये।

चैत मास है, आज चैत की अमावस्या होने से सूर्य प्रायः विषुवत् रेखा पर है। ऐसा होने पर दियारा चक अफजलपुर के एकदम उत्तर है। किन्तु बारह आने दियारा तो अफजलपुर की सीमा में ही पड़ेगा! एकदम पश्चिमी भाग का चौथाई भाग—सोलहो आने—राय वंश की सीमा में पड़ेगा।

राय हँसने लगे—भूमि बाप की नहीं, भूमि लाठी की होती है। इसकी भी आवश्यकता नहीं थी, किन्तु राधारानी की सन्तान के भोगने की चीज उसकी सौत के लड़के भोगेंगे—यही बात उनको अत्यन्त दुःख देती है।

मांझी ने आकर थोड़ा झुककर उन्हें प्रणाम किया। एक लड़का मचिया ले आया। राय अपने हाथ की छड़ी मचिये पर रख उस पर भार देकर खड़े रहे, बैठे नहीं। इसके बाद पूछा—तू ही यहां का सरदार-माँझी है?

हाथ जोड़कर माँझी ने उत्तर दिया—हां, बाबू साहब!

हुँ—यहां कब आया है ?

जी, दो-तीन महीने हुए ; यही कातिक में आया था, यहां आलू बोया ।

राय ने हँसकर कहा—समझ गया, छः महीने हो गये, किन्तु किससे पूछकर तुम लोग यहां बसे ?

किससे पूछें, देखा जंगली भूमि खाली है, बस गया ।

बड़ी गहरी दृष्टि से उसके मुँह की ओर देखकर राय बोले—यह दियारा मेरा है ।

मांझी ने कहा—यह हम नहीं जानते ।

मुझे कबूलियत लिखनी पड़ेगी, यहां बसने के लिये कबूलियत लिखनी होगी ।

मांझी ने सन्देह की दृष्टि से राय की ओर देखकर कहा—यह क्या है !

कागज पर लिखना होगा, 'आप हमारे जमींदार हैं, आपको इस दियारे की लगान हम हर किश्त में चुका देंगे ।' इसके बाद तुम उसी कागज पर अपने अंगूठे का निशान दोगे ।

मांझी चुपचाप इस पर विचार करने लगा, जैसे बात समझने की चेष्टा कर रहा है । राय ने कहा—समझ गये न ! तुम्हें कबूलियत लिखनी पड़ेगी ।

इसी बीच सन्थालों की स्त्रियां आकर एक ओर खड़ी हो गयीं । वे बहुत गम्भीरता के साथ बातें सुनने लगीं और धीरे-धीरे आपस में आलोचना करने लगीं । मांझी की नतिनी अब बोल उठी—क्यों, क्यों लिखनी पड़ेगी ? अंगूठे का निशान क्यों देना होगा ?

ऐसा न करने पर यहां न रहने पाओगी ।

लड़की बोली—क्यों, क्यों न रहने पाऊँगी ?

दियारा मेरा है, यहां रहने पर कबूलियत देनी ही होगी ।

इसी समय मांझी ने गर्दन हिला अपना इनकार जनाते हुए कहा—उहुँक ।

भौंहें टेढ़ी कर राय ने कहा—'उहुँक' कहने से चलेगा नहीं मांझी । प्रजा के बन्दोबस्त का यही नियम है । कबूलियत न देने से नहीं चलेगा ।

वही लड़की बोल उठी—तुम यदि कागज पर एक सौ लिखाकर और दो सौ बना लो तो ?

राय हँसने लगे—ना-ना ऐसा भय नहीं है । ऐसा नहीं लिख लूँगा । क्या जमींदार ऐसा कभी कर सकते हैं ?

लड़की बोली—करते क्यों नहीं ? ऐसा ही उस गांववाले ने लिख लिया ।

मांझी अब बोला—सो अब हम अपने लाल बाबू से पूछेंगे । यदि वे कहेंगे, तो हम निशान दे देंगे ।

राय का मुँह लाल हो गया । उन्होंने गम्भीरता के साथ कहा—हुं । इसके बाद पीछे गांव की ओर फिरकर बोले—मुचुकुन्द सिंह !

मुचुकुन्द उस समय तक उस कठपुतली के नाच के उस्ताद सन्थाल के साथ जमा बैठा था । वह चूने और तम्बाकू की पत्ती मिलाकर खैनी तैयार कर रहा था, और उस्ताद नाना प्रकार से नचा-नचाकर कह रहा था—चिलाक्, चिलाक्, चिलाक । साथ ही साथ उसकी कठपुतली गर्दन तथा सिर हिलाकर ताल पर ताली देती थी—खटास, खटास, खटास, खटास ।

मुचुकुन्द सिंह अचरज के साथ बैठे-बैठे तारीफ कर रहा था । मालिक की पुकार सुन कहा—गांव में आना मांझी, वहां बहुत पैसे मिलेंगे ।

राय-वंश बहुत परिवारों में बँट गया है । वर्ष में पांच सौ से अधिक किसी की आय नहीं है । केवल छोटा घराना आज तीन पीढ़ी से एक ही सन्तान की विशेषता होने से इनमें समृद्ध है । इन्द्रराय की वार्षिक आय डेढ़ हजार से दो हजार तक है । और ; उस ओर मँझला घराना—अर्थात्

रामेश्वर चक्रवर्ती रायों की सम्पत्ति के पांचवें भाग के अधिकारी हैं। उनकी आय दो हजार रुपये के लगभग है। आय कम होने पर भी इन्द्रराय का रोब अधिक है। रामेश्वर चक्रवर्ती का मस्तिष्क खराब हो जाने के पश्चात् इन्द्रराय के प्रताप में कोई बाधक नहीं रह गया। घर आकर उन्होंने सन्थालों के गांव में दस लठैतों के भेजने की व्यवस्था की। उन्होंने आदेश दिया कि ठीक तीन बजे मांझियों को पकड़कर कचहरी में बैठा रखना। वही उनके भोजन का समय है। साधारणतः सन्थाल जाति अत्यन्त शान्त तथा निरीह स्वभाव की होती है। मिट्टी की तरह सहज में गर्म नहीं होती, किन्तु कभी-कभी उसकी छाती फाड़कर अन्तर से आग की लपटें निकल पड़ती हैं, किन्तु ऐसा शताब्दि में एक बार होता है कि नहीं, इसमें सन्देह है।

तीसरे पहर लठैतों ने जाकर उन्हें पकड़कर छोटी कचहरी में बैठा रखा। इन्द्रराय उस समय घर के अन्दर दिन में सो रहे थे। सरदार मांझी ने कुछ इन्तजार किया—कहां हैं बाबू महाशय? कहां हैं? एक साथ ही सात-आठ लठैत गरज उठे, चु—प!

कचहरी घर की सजावट आज विशेष प्रकार की है। आज की चमक-दमक कुछ असाधारण है। कचहरी के प्रवेशद्वार पर गुणा-चिह्न के समान दो-दो करके चार तलवारें तिरछी-तिरछी झूल रही हैं। दोनों ओर उनके ऊपर एक-एक ढाल है। इन्द्रराय के बैठने के तख्तपोश पर एक बाघ का चमड़ा बिछा हुआ है। मुचुकुन्द सिंह एक बड़ा भारी पग्गड़ बांधे, वर्दी तथा तमगा लगाये, एक छोटे स्टूल पर बैठा है। सन्थाल अचरज के साथ यह सब देख रहे थे। इन्द्रराय पूरे कूटनीतिज्ञ हैं। वे जानते हैं कि आँखों में चकाचौंध पैदा किये बिना सम्मान के जादू से मनुष्य को भयभीत नहीं किया जा सकता। चपरासी नायब सभी फुसफुसाकर बातें कर रहे थे। जरा भी शोर होने पर नायब भौंहें तानकर कहता था—उँह!

अचिन्त्य बाबू प्रति दिन तीसरे पहर इसी समय इन्द्रराय के पास आया करते थे। वे आकर सब कुछ देख-सुन थोड़ा शंकित हो उठे। नायब के पास आ धीरे-धीरे पूछा—क्या बात है मित्तिर महाशय! इतने लोग-बाग, ढाल-तलवार? कोई दंगा-वंगा है क्या?

मित्तिर ने हँसकर धीमे स्वर से कहा—अकस्मात् बाबू का विचार, और क्या?

अचिन्त्य बाबू की नजर उस समय कमल मांझी पर थी—उन्होंने सिहरकर कहा, सर्वनाश! साक्षात् यमदूत! अच्छा, इस समय जाता हूँ, दूसरे समय आऊँगा।

बैठियेगा नहीं?

उंहु। अभी कुछ व्यस्त हूं। सुनता हूं कि उस दियारे पर बहुत प्रकार की ओषधियों के पौधे हैं। सोच रहा हूं कि कलकत्ता में उन पौधों के भेजने का रोजगार करूँ। इसी का प्लान—हिसाब-किताब मिलाना होगा।

वे चले गये।

प्रायः एक घण्टे के पश्चात् इन्द्रराय ने कचहरी में प्रवेश किया। सब लोग आदर के लिये खड़े हो गये। देखादेखी सन्थाल भी उठकर खड़े हो गये। इन्द्रराय आसन पर बैठकर दूसरे काम में लग गये। बिना स्नान तथा भोजन किये हुए सन्थालों का दल हाथ जोड़कर बैठा रहा। कचहरी के दरवाजे पर सन्थाल स्त्रियों का दल न जाने कब आकर खड़ा हो गया। वे भयभीत होकर अपने-अपने बाप-भाई तथा पति की खोज में आयी थीं। अपनी भाषा में बात करते-करते वे आगे बढ़ आयीं।

इन्द्रराय ने लठैतों को क्या-कुछ संकेत किया, एक लठैत ने आगे बढ़ स्त्रियों को रोककर कहा—तुमलोग यहां क्यों आयीं? जाओ, यहां गोल-माल न करो।

कमल की नातिन—बड़ी शरीरवाली लड़की—ने कहा—तुम लोग क्यों हमारे आदमियों को पकड़ लाये हो ?

वृद्ध कमल मांझी ने अपनी भाषा में कहा—जाओ, जाओ, तुम लोग घर जाओ। बाबू क्रोध करेंगे। यह बड़ा खराब होगा।

स्त्रियां भय के साथ उदास मन से चली गयीं।

इसी समय बूढ़े मांझी ने हाथ जोड़कर कहा—हमलोग अभी तक खाये नहीं हैं बाबू, आज हमें छोड़ दो।

इन्द्रराय बोले—कबूलियत पर निशान देकर घर चले जाओ।

मांझी बोला—हां, बाबू, ऐसा कैसे होगा ? पहले अपने लाल बाबू से राय ले लें, तब तो देंगे !

नायब ने धमकाया—लाल बाबू कौन है रे ? उससे क्या राय लेगा ! तुम्हें निशान देना होगा।

अद्‌भुत् जाति है, विद्रोह भी नहीं करती, भय भी नहीं करती। कमल मांझी ने गर्दन हिलाकर कहा—उ—हुं।

फिर सन्थालों की स्त्रियों का शोर फाटक के सामने सुनाई पड़ा। वे फिर लौट आयी हैं। राय के मन में अब दया आ गयी—अहा ! किसी तरह इन्हें यहां छोड़ जाना बेचारियों के मन में ठीक जँचता नहीं है। जाते-जाते फिर लौट आयी हैं। उन्होंने एक लठैत से कहा—दरवाजा खोलकर उन्हें आने के लिये कहो। उन्होंने मन में निश्चय किया कि सबको यहीं खिलाकर आज छुट्टी दे देंगे। अंगूठे का निशान वे अपनी इच्छा से दे जायँगे।

लठैत के पहुंचने के पहले ही फाटक का दरवाजा खोल अहीन्द्र ने घर में प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे वे सब स्त्रियां थीं। राय विस्मय से चकित हो गये, बड़े क्रोध से वे वज्र की तरह गर्म तथा तैयार हो गये।

अहीन्द्र ने आ प्रणामकर हँसते हुए कहा—इनके लड़के-लड़कियां रो

रही हैं मामा जी। भय से आपके सामने आ नहीं सकती हैं। इन बेचारों ने अभी तक न तो स्नान किया है और न भोजन किया है। अब क्या इसी तरह इन्हें बैठाकर रखा जायगा ? इन्हें छोड़ दीजिये।

अहीन्द्र इतनी बातें कह गया, राय वज्र की तरह कठोर हृदयकर बैठे ही रहे। किन्तु ; फट पड़ने का उन्हें अवसर न मिला ! क्षण-क्षण पर उनके हृदय में बिजली की लपट ने इस ओर से उस ओर तक जलाकर उनको बरसने के लिये तैयार कर दिया। सहसा उनके मन में आया, जैसे राधा-रानी का ही पुत्र उन्हें पुकार रहा है—मामाजी !

अहीन्द्र अब सन्थालों से बोला—तुम लोग अब घर जाओ, और बुलाने पर ही आ जाना, समझते हो न ?

सन्थाल हँसते हुए उठ खड़े हुए, किन्तु एक लठैत बोल उठा—खबरदार, कहता हूँ बैठो, सब लोग बैठे रहो।

इसी क्षण वज्रपात हुआ, अत्यन्त क्रोध से इन्द्रराय गरज उठे—चुप रहो हरामजादे ! इसके बाद वे सन्थालों से बोले—जाओ तुम लोग, घर जाओ।

छः

किन्तु सारे गाँव में अफवाह फैल गयी कि रामेश्वर चक्रवर्ती के छोटे लड़के अहीन्द्र ने इन्द्रराय की नाक काटकर झाँवा रगड़ दिया ; इन्द्रराय ने सन्थालों को रोक रखा था, अहीन्द्र ने उन्हें बलपूर्वक उठा दिया है। इस अफवाह की जड़ वे ही—अचिन्त्य बाबू ही—हैं। थोड़ी आड़ में खड़े होकर दूर से जो कुछ देखा और सुना जा सकता है, उसे देख-सुनकर यह कहानी उन्होंने गढ़ी है। वे एक बहुत बड़े झगड़े की कल्पनाकर भय से हट गये थे, किन्तु निरापद दूरी पर आड़ में खड़े होकर इसके देखने का लोभ भी रोक न सके।

उस समय की दुर्बलता का विचारकर इन्द्रराय भी लज्जित हो गये, क्षणभर की दुर्बलता के कारण लोगों ने उनके सिर जो अपमान लाद दिया, उसको दूर करना अब बहुत कठिन हो गया। चक्रवर्ती-घराने के बड़े लड़के महीन्द्र तथा प्रवीण नायब योगेश मजुमदार आ गये हैं। कल रात में ही वे आये हैं। आज प्रातःकाल ही उनका आदमी सन्थाल बस्ती में गया था। वह लौटकर बोला, कि आज चक्रवर्ती-घराने के नायब सन्थाल बस्ती में बैठे हुए हैं, और बहुत से आदमी भी साथ हैं। जब हमने सन्थालों को बुलाया, तब उनके नायब ने कहा—जाकर बाबू से कह दो, कि मैं उन्हें अपने साथ लेकर आ रहा हूँ।

इन्द्रराय ने गम्भीरता से टहलना प्रारम्भ किया, मन ही मन वे अपने को बार-बार धिक्कार रहे थे। उन्होंने दिव्य दृष्टि से देखा कि उस पार का दियारा और इनके बीच बहनेवाली कालिन्दी नदी के दोनों किनारे अकस्मात् पत्थर हो गये। कुछ देर बाद ही मजुमदार आ उपस्थित हुए, उनके पीछे-पीछे सन्थाल भी आये और प्रणामकर खडे हो गये। मजुमदार ने राय को प्रणामकर कहा—अच्छे हैं न ?

राय ने थोड़ा हँसकर कहा—हाँ। इसके बाद फिर बोले—क्या बात है ? सुनता हूं कि सन्थालों को लेकर चक्रवर्ती लोग फिर देश जय करेंगे।

उनकी बात सुनकर जैसे हँस रहे हों, इस प्रकार हँसकर मजुमदार बोले—आकर सब बातें सुनों। हमारे छोटे भैया अपने दादा से समानता रखते हैं, यह सच बात है।

राय दोनों होंठ तनिक तिरछाकर बोले—तो तुम लोग सन्थाली सेना लेकर पहले मुझसे ही लड़ोगे क्या ?

लज्जा से जीभ काट मजुमदार बोल उठे—राम, राम, राम ; ऐसा भी हो सकता है ? इसके अतिरिक्त आपका अपमान इस अंचल में कौन कर सकता है ?

राय चुप रहे, मजुमदार ने फिर कहा—यही बात कल उस घराने की मालिकिन के साथ हो रही थी। उन्होंने कहा - यह झगड़ा सारे गाँव का झगड़ा है। अभी कोई आगे नहीं आया है, किन्तु झगड़ा प्रारम्भ होने पर कोई पीछे नहीं रहेगा। मैंने इसीलिये अहि को उस घराने के भैया के पास भेजा था। मजुमदार देवर, कल तुम एक बार जाना और कहना—उनके जैसे मनुष्य के रहते हुए भी यदि ऐसा सर्वनाशी झगड़ा खड़ा हो जाय, तो इससे शोचनीय बात और क्या होगी ?

राय बोले—हुँ।

मजुमदार ने फिर कहा—हमारे बड़े बाबू, महीन्द्र बाबू कुछ तेज

स्वभाव के हैं। अवस्था कम है न! उन्होंने जरूर कहा था—मामला, मुकदमा ही हो, जिसके पक्ष में न्याय होगा, वही दियारा पावेगा। मुझे भी कहा कि मना कर दो कि सन्थाल किसी के बुलाने से न जायँ। किन्तु; मालिकिन ने कहा—क्या ऐसा भी कभी हो सकता है? और हमारे अहीन्द्र बाबू तो अन्य प्रकार के लड़के हैं। उन्होंने कहा—यह नहीं हो सकता भैया, मैंने मामा से कह उनको छुट्टी दिलायी है। उनके बुलाने से ही उन्हें जाना पड़ेगा। मैं स्वयं उन्हें वहाँ हाजिर कर दूंगा। वे स्वयं आते, किन्तु स्कूल खुलने के कारण आज सवेरे ही शहर चले गये।

राय कुछ उदास हो गये। यह लड़का उनके लिये जैसे एक रहस्य हो गया है। आज सवेरे उन्होंने इसी बालक के सम्बन्ध में सोचा था—अद्भुत् कूटनीतिज्ञ बालक है। उस दिन मशाल के प्रकाश में जब जा रहा था, तब भी यही बात उन्होंने सोची थी, किन्तु प्रत्येक बार वह उन्हें लज्जितकर हँसता हुआ आ खड़ा होता है।

मजुमदार बोले—आप जैसे व्यक्ति से मेरा अधिक कहना धृष्टता है। सारे गाँव के झगड़े से किसी का कल्याण नहीं होगा। इस सम्बन्ध के कागज-पत्र, कितना किसका अधिकार है, और यहाँ का सब हाल-चाल तो आप जानते ही हैं। आप ही इसका न्याय कर दीजिये।

राय बोले—रामेश्वर का छोटा लड़का वास्तव में बहुत अच्छा है। छुरे की धार की तरह सरलतापूर्वक काटता चलता है, कहीं रुकता नहीं। लड़का अपने वंश के समान भी नहीं है। चक्रवर्ती-वंश की आँख कटी, केश कटे, शरीर का रंग साफ नहीं होता, किन्तु जान पड़ता है कि इसने माँ का रंग पाया है।

मजुमदार बोले—हाँ, किसी समय हमारी मालिकिन रूपवती थीं और स्वभाव की भी बहुत मधुर। लड़का माँ के समान ही है। किन्तु हमारे मालिक के पिता का रंग भी ऐसा ही गोरा था।

हाँ, इसीलिये सन्थालों ने नाम रखा था—लाल देवता। शायद उसका नाम भी उन्हींने रखा हो—लाल बाबू।

माँझियों का दल अब तक चुपचाप खड़ा था। अब सरदार कमल माँझी बोला—हाँ, मैंने यह नाम रखा है—लाल देवता का नाती। उसी प्रकार आग के समान रंग; इसी से मैंने कहा—लाल बाबू।

राय गम्भीर भाव से चुप रह गये, सन्थाल की बात का उत्तर नहीं दिया। सुयोग पाकर मजुमदार ने फिर उसी सम्बन्ध में कहा—तो यही बात रही, गाँव के सभी साझेदारों को बुला, चण्डी-मण्डप में बैठ इसका निर्णय हो जाय। दियारा जिसका होगा, वही इनसे लगान लेगा। ये अभी चले जायँ। गरीब-दुखिये हैं; जितनी मिहनत करेंगे, उतना ही उन्हें अन्न मिलेगा। —इतना कह राय के कुछ कहने के पूर्व मजुमदार ने माँझियों से कह दिया—जाओ, तुम लोग घर जाकर अपने-अपने काम-काज करो। हमलोग आपस में ठीक कर लेंगे कि कौन लगान पायेगा। उसको ही तुम लोग कबूलियत लिखना, लगान देना।

माँझियों का दल प्रणामकर अपनी भाषा में इसी पर बातें करता चला गया। राय गम्भीर मुँह से जिस ओर बैठकर देखते थे, देखते रहे। सन्थालों के चले जाने पर उन्होंने कहा—यही अच्छा है मजुमदार, उन बेचारों को कष्ट देने से क्या लाभ; वे जायँ। पहले इस झगड़े का फैसला हो जाय।

जी हाँ, एक दिन गाँव के सब साझेदारों को बुला—

रोककर राय बोले—माँझी लोग तो एक ओर रहे, सब से पहले छोटे घराने और चक्रवर्तियों में फैसला हो जाय।

अच्छा, ऐसा ही हो। एक दिन कागज-पत्र देखिये, इसके बाद जैसा कहियेगा, वैसा ही होगा।

नहीं। एक दिन प्रमाणी लाठी का प्रयोगकर, बल से जिसका

होगा, वही चेष्टा लगाये। मामला-मुकदमा तो इसके पीछे की बात है।

हाथ जोड़कर मजुमदार बोले—नहीं, नहीं, बाबू, क्या आपके मुँह ऐसी बात शोभा देती है? आप हैं उस घराने के पालनकर्ता—लड़के—

राय ने रोककर कहा—यह बात कहो मत मजुमदार। बार-बार मेरा अपमान मत करो। यह बात यादकर मेरे मन में आग लग जाती है।

मजुमदार चुप हो गये। कुछ देर बाद विनय के साथ वे फिर बोले—आप हैं ज्ञानी, विचारशील पुरुष, बड़े आदमी। आपका नौकर होने के नाते साहस कर कह रहा हूँ:

—क्या यह आग जलाकर रखना अच्छा होगा बाबू?

चंचल हो बार-बार गर्दन हिलाकर राय बोले—रावण की चिता है मजुमदार, यह शान्त नहीं होगी, शान्त होने योग्य नहीं है।

मजुमदार ने बात नहीं बढ़ायी। उनका चित्त भी क्रोधित हो उठा। अपने स्वामि-वंश की मान-मर्यादा को कम न कर पाये। विनय के साथ झुक, राय को प्रणामकर, फिर बोले—अच्छी बात है, आपने जैसा आदेश दिया है, वैसा ही होगा।

राय बोले—बैठो, बहुत समय हो गया है, थोड़ा शर्बत पी लो। न पीने से मुझे दुःख होगा मजुमदार।

मजुमदार फिर बैठकर बोले—जी, इस घर से तो मैं माँगकर खा सकता हूँ।

मजुमदार चले गये। राय गहरी चिन्ता में डूब गये। बुरी शायत में अहीन्द्र उनके सामने आकर खड़ा हुआ था। राधारानी की सोयी स्मृति फिर जाग उठी है। साथ ही साथ चक्रवर्तियों पर भयंकर क्रोध से वे फूल-फूल उठते हैं।

रामेश्वर का सिर खराब और आँखों में रोग होने के बाद से शान्त हो गया था।

इस दियारे के सम्बन्ध में अहीन्द्र को सामने देखते ही उनका वह क्रोध फिर जाग उठा। राधारानी के सौतेलों के लिये वे रास्ता साफ कर देंगे! यदि आज यह लड़का राधारानी का होता, तो इसी प्रकार द्वन्द्व का अभिनयकर मन में हँसते—और हँसते-हँसते पराजय स्वीकार कर घर बैठ जाते। लोग कहते—इन्द्रराय अपने भानजे से हार गये। अब हार जाने से राधारानी के घर छोड़ने की लाज दूनी हो जायगी और समाज में उनके सिर पर धूल पड़ जायगी।

और उनके हट जाने का अर्थ राधारानी के सौतेले पुत्रों का रास्ता निष्कण्टक कर देना है।

अचिन्त्य बाबू राय के घर से ही बाहर निकले! वे राय की दस वर्षीया कन्या उमा को पढ़ाते थे। पढ़ाने के पश्चात् कचहरी में आ तख्ते पर बैठकर राय से बोले—एक बहुत सुन्दर प्लान बनाया है राय महाशय! देशी जड़ी-बूटियों की सप्लाई का विचार है। दियारे में हर प्रकार की जड़ी-बूटियाँ हैं। जैसा सुना है, उसमें दो सौ सैकड़े लाभ है। हिसाब देखियेगा क्या?

रहने दीजिये अभी।

अच्छा रहने दीजिये। और विचार करता हूँ कि पाँच वस्तुएँ मिलाकर अजीर्ण की औषधि तैयार करूँगा। बंगाल देश में इस समय अजीर्ण (डिस्पेप्सिया) ही प्रधान रोग है।

राय ने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया। उन्होंने पुकारा नायब को—मित्तिर, एक बार नैनीचोरा पाल को बुलाओ तो। बोलो, बहुत जरूरत है। और—अच्छा, मैं ही भीतर जाता हूँ। राय उठकर कचहरी-घर के भीतर चले गये। नायब से कहा—तो डेमियों पर एक बन्दोबस्ती पट्टे की कबूलियत लिख डालो। नैनीपाल को बीस बीघे दियारे की भूमि का बन्दोबस्त करते हैं। नैनी हमें कबूलियत देता है।

नायब बोला—अच्छी बात है।

नैनी पाल एक भूमिहीन किसान है। मार-झगड़े, मामले-मुकदमे, में उसका सब कुछ चला गया है। वह कई बार जेल की भी हवा खा आया है, इस समय पान-बीड़ी, चने-चबेने की दूकान करता है। लोगों का कहना है कि चोरी का माल है, विशेषकर चोरी का धान भी लेता है। एक बार दारोगा की नाक पर घूसा मारकर उनकी नाक तोड़ दी थी। एक बार दो आने उधार के लिये रायबाड़ी की फुलवाड़ी के एक लड़के से उसने झगड़ा किया था, और उसके दोनों कान उमेठ कर कहा था—इसी से मेरे दो आने वसूल हो गये। नैनीचोरा पाल ऐसे स्वभाव का मनुष्य है! राय ने काँटे से काँटा निकालने की व्यवस्था की। बीस बीघे भूमि के लिये उनको जमींदार मान चक्रवर्तियों से झगड़ा करने में वह कुछ भी आगापीछा न करेगा।

इसी सम्बन्ध में और दो-चार बातें कर राय बाहर आये। अचिन्त्य बाबू उस समय कचहरीघर से बाहर निकल रहे थे। राय बोले—जा रहे हैं?

अचिन्त्य बाबू ने संक्षेप में कहा—हाँ।

राय हँसकर बोले—बैठिये, बैठिये, आपका प्लान सुना जाय।

जी नहीं, दुष्ट के आने के पहले स्थान छोड़ देना अच्छा है। नैनीपाल बड़ा भयंकर है। बेटा, हठात् मार बैठता है।

पागल हैं क्या! देखते हैं, दीवार पर कितनी तलवारें झूल रही हैं!

सिहरकर अचिन्त्य बाबू ने कहा—हटा दीजिये, ये बड़ी भयंकर हैं। बंगालियों के हाथ के अस्त्र सरकार ने बहुत सोचने-विचारने के बाद कानून बनाकर ले लिये हैं। इनका लाइसेंस तो है न आपके नाम?

यह कहते-कहते वे बाहर चले गये। कुछ ही देर बाद कन्या उमा अपने मन से ही हाराधन के दस लड़कोंवाली कविता पढ़ते-पढ़ते आयी और

गाने के स्वर में ही बोली—पिता जी, आपको माँ पुकारती हैं। बहुत देर हो गयी, स्नान कीजिये।—कहते-कहते वह खिलखिलाकर हँसने लगी। इसके बाद हँसना बन्दकर गम्भीर भाव से वह बोली—आपके कान में एक बात कहूं, पिता जी ?

कन्या उमा बड़ी तरंगमयी है ; राय ने उसके मुँह के पास अपना कान कर दिया। वह फुसफुसाकर बोली—प—ऐकार, दन्त्य स में आकार।

हँसकर राय ने कहा—अच्छा, अच्छा। तू घर में जा, मेरे आने में थोड़ी देर है—जाकर अपनी मां से कह दे।

उमा ने पूछा—क—हल्, य—ओकार, चन्द्रविन्दु ?

काम है।

नहीं, चलिये आप।

छिः, ऐसा मत करो। काम है, सुनती हो ? वह देखो, काम के लिये आदमी आ रहा है।

नैनीपाल आ एक छोटा प्रणामकर खड़ा हो गया। नाटा कद, काठ की तरह शरीर, चौड़े माथे के नीचे नाक पर एक विचित्र दाग है। इस दाग से उसकी निष्ठुरता उसके मुँह पर प्रकट हो रही है।

किन्तु गाँवभर में उस समय तक नैनीपाल के साथ भूमि बन्दोबस्त करने की चर्चा फैल गयी थी। अचिन्त्य बाबू ने जड़ी-बूटियों के व्यापार की कल्पना छोड़ दी। सर्वनाश ! दियारे के ऊपर ही वह किसी दिन मेरा खून कर डालेगा !

× × × ×

हेमांगिनी स्वामी की प्रतीक्षा में बैठी थीं। काम समाप्त करने के बाद स्नानकर जब राय ने घर में प्रवेश किया, दोपहर हो गया था। स्वामी के पूजा-आसन के पास बैठ बाहर की ओर देखते-देखते वे जैसे कुछ

सोच रही थीं। राय को देखकर बोलीं—इतनी देर क्यों? खाओगे कब?

राय पत्नी को प्रसन्न करने के लिये ही अकारण हँसकर बोले—हाँ, कुछ देर हो गयी। एक जरूरी काम था।

अच्छा, स्नान-पूजा समाप्त कर लो। अब तक घर में किसी ने भोजन नहीं किया है। केवल उमा ने ही खाना खाया है।

स्नानकर राय पूजा पर बैठे—तारा, तारा माँ।

भोजनादि के बाद राय बिछौने पर सोकर गड़गड़े से धीरे-धीरे कश ले रहे थे। सारा घर एक प्रकार शान्त हो गया था। बाहर चैत की धूप कड़ी आग के समान असह्य तो नहीं, किन्तु तेज हो गयी थी। पक्षियों ने अभी-अभी से ही घने पत्तों में विश्राम करना शुरू कर दिया है। मकान के बरामदे में बैठे कबूतर सिर हिला-हिलाकर गुटुरगूं-गुटुरगूं कर रहे हैं। बीच-बीच में बन्द खिड़कियों की फाँक से गर्म हवा के झोंके आ जाया करते हैं। गर्म हवा में बहेड़े तथा महुए के फूलों की कड़ी मादक गन्ध भरी है। झर-झर, सर-सर शब्द करते-करते गिरे हुए पत्ते हवा में उड़ रहे हैं। बाहर में सूर्य तथा पवन-देवता का खेल चल रहा है, दो किशोरों की मित्रता की लीला हो रही है।

हेमांगिनी भाण्डार तथा लक्ष्मीघर में कुंजी लगाकर स्वामी के पलंग के पास बैठ गयीं।

राय ने पूछा—सब काम हो गया?

हो गया।

खूब भूख लगी थी तुम्हें न?

हाँ, खूब! ऐसा लगता था कि घर की ईंटें तथा काठ निकाल कर खा लूँ—

हुआ न?

राय ने हँसकर कहा—क्रोध तो खूब हुआ है !

हेमांगिनी बोलीं—देखो, एक बात कहती हूं ।

कहो ।

कहती हूँ—और क्यों ?

राय इतने ही समझ गये । वे एक लम्बी साँस ले, करवट बदल कर सो गये । उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया । रामेश्वर के प्रति हेमांगिनी के स्नेह की बात वे जानते हैं । वह स्नेह हेमांगिनी आज भी भूल नहीं सकी हैं ।

हेमांगिनी तनिक उदासी से ही बोलीं—मुँह फेरकर सो गये ? अच्छा, वह बात नहीं कहूंगी । अब दूसरी बात कहती हूं, सुनो । यह मुझे कहनी ही पड़ेगी ।

विना घूमे ही राय ने कहा—कहो ।

दृढ़ता के साथ हेमांगिनी बोलीं—झगड़ा करोगे तो करो, किन्तु अन्याय-अधर्म नहीं कर पाओगे । हमारी अनेक सन्तानें चली गयीं । उमा और अमल रह गये हैं । उनका अन्तकाल मैं नहीं होने दूंगी ।

अब राय संकोच में पड़ गये ! उनकी कई सन्तानें—शैशव पार कर बालक होने पर—मर गयीं । उनकी अकाल मृत्यु के कारणों का विश्लेषण करते समय हेमांगिनी जब राय के पाप-पुण्य का हिसाब करने बैठती हैं, तब उनका सिर जैसे भूमि में गड़ जाता है ।

हेमांगिनी ने कहा—कहो, मुझे छूकर शपथ करो, तुम कोई अन्याय-अधर्म नहीं करोगे ।

राय ने लम्बी साँस छोड़कर कहा—क्यों ? हर काम में उसी बात का स्मरण करा देती हो ?

रुँधे हुए स्वर में हेमांगिनी बोलीं—इतनी सन्तानों के मर जाने का दुःख रावण की चिता के समान मेरे हृदय में जल रहा है । तुम भूल

जाते हो, किन्तु मैं तो भूल नहीं सकती। इसीसे तुम्हें स्मरण करा देना पड़ता है।

राय ने उठकर कहा—खिड़की खोल दो—बेला ढल गयी जान पड़ती है। हेमांगिनी ने खिड़की खोल दी, धूप बहुत कम हो गयी है। पक्षी एक साथ बोल उठे हैं। उनका विश्राम समाप्त हो चुका है—इससे यही सूचित होता है। राय खिड़की से नदी के उस पार के दियारे की ओर देखते हुए उसी की बात सोच रहे थे।

अमल-उमा, राधारानी-रामेश्वर, रायबाड़ी—कैसे सन्देह में हेमांगिनी ने लाकर उन्हें फेंक दिया?

हेमांगिनी ने कहा—बोलो।

राय ने लम्बी साँस छोड़कर कहा—वैसा ही होगा। उन्होंने निश्चय किया, तीसरे पहर नैनी को बुला अपने हाथ से पट्टा-कबूलियत रद्द कर देंगे।

हेमांगिनी आँख पोंछते-पोंछते बाहर चली गयीं। जान पड़ता है कि आवेग उनके धैर्य के तट को पारकर उफनना चाहता था। राय चुपचाप उसी दियारे को देखते बैठे रहे। मन उदास हो गया है। सूर्य के प्रकाश में काली की बालू चमक रही है। दियारे के ऊपर जंगली घास हवा के झोंकों से हजार-हजार साँपों के फणों के समान नाच रही है। आकाश धूसर है। इतने बड़े भाग में कहीं एक भी मनुष्य दिखायी नहीं पड़ता। किन्तु भूमि के लिये सृष्टि के आदि से लेकर मनुष्यों में रगड़-झगड़ चली आती है, और जान पड़ता है कि कभी इसका अन्त नहीं होगा। ना, हेमांगिनी ठीक कहती हैं; जरूरत नहीं, रायहाट के साथ ही राय-वंश भी काली के पेट में चला जायगा। हानि ही क्या है!

हेमांगिनी लौट आयीं। अत्यन्त सरल-स्वाभाविक भाव से बोलीं—अमल को रुपये भेजे हैं?

अमल मामा के घर रहकर पढ़ता है। राय ने अनमने भाव से ही कहा—भेज दिया है।

देखो।

कहो!

इस ओर फिरकर देखो। मैंने कोई अपराध तो नहीं किया है?

थोड़ा हँस मुँह फेरकर राय बोले—ना, तुम अच्छा ही कह रही हो। और क्या हुक्म है?

उमा को मैं भैया के पास भेज दूँगी। शहर में रहकर कुछ लिखना-पढ़ना सीखेगी; कुछ कायदा-ढंग सीखेगी। मैं अच्छा वर चुनूँगी। यहाँ रहकर वह गाँव की बालिकाओं की तरह झगड़ा सीखेगी, और सब तरह के उपद्रव करेगी।

राय बोले—हाँ, राय-घराने की लड़कियों की बदनामी तो है। उनके मुँह पर एक विचित्र करुण हँसी छा गयी। याद पड़ गयी उस दिन की बात, रामेश्वर की दादी ने राधारानी के सम्बन्ध में कहा था। रायघराने की लड़कियों का ढंग ही है ऐसा, वे सब दिन से तेजमिजाज हैं।

हेमांगिनी ने स्वामी का मुँह देखकर समझा—स्वामी को इस बात से चोट लगी है। वे उदास हो गये हैं। स्वामी को प्रसन्न करने के विचार से, अपने दोनों हाथों से, उनका गला पकड़कर उन्होंने कहा—क्रोध करते हो?

पत्नी के कण्ठ में प्रेमपूर्वक एक हाथ डाल उसके मुँह की ओर देखकर राय बोले—ना, ना; तुमने सच्ची बात कही है।

अधेड़ दम्पति की आँखों में अनुराग है। किन्तु सहसा चौंककर दोनों ने एक दूसरे को छोड़ दिया। यह क्या? इतना शोरगुल कैसा? गाँव में कहीं खूब हल्ला हो रहा है। कहीं आग लगी है क्या? राय ने बिछौने से उतरकर कपड़े उतारना आरम्भ कर दिया।

मालिक ! —नीचे किसी ने पुकारा, नायब मित्तिर ही तो जान ड़ते हैं ।

कौन ? मित्तिर ?

जी, हाँ ।

हल्ला कैसा है मित्तिर ?

जी, रामेश्वर के बड़े लड़के महीन्द्र ने नैनीपाल को गोली से मार ाला है ।

राय कपड़ा पहन रहे थे, सहसा उनका हाथ रुक गया । उन्होंने द्भुत् दृष्टि से हेमांगिनी के मुँह की ओर देखा । हेमांगिनी की आँखों आँसू झर रहे थे । उन्होंने कहा—

तुमने क्या कर डाला ? छिः-छिः !

राय तेजी से उतर गये ।

सात

महीन्द्र योगेश मजुमदार के साथ कल रात को ही आ गये हैं। बात वायु से भी आगे पहुँच जाती है—यह बात सम्पूर्ण सत्य न होने पर भी बिलकुल झूठी नहीं कही जा सकती। पचास मील दूर बाहरी संसार से सम्बन्ध-रहित एक गाँव में कैसे यह बात पहुँच गयी, यह सोचकर विस्मय करना पड़ता है। सुनीति का पत्र भी उस समय नहीं मिला था। घोंघों से भरी हुई दियारे की भूमि को सन्थालों ने आकर साफ कर डाला है। आसपास के किसान दियारे की मिट्टी देखकर उसका बन्दोबस्त कराने के लिये पागल हो उठे हैं। यहाँ तक कि शहर के धनी लोग भी इस भूमि के लिये काफी नजराना देना चाहते हैं—इसी प्रकार बढ़ी-चढ़ी अनेक बातें उन्होंने सुनी हैं। अन्त में सब से महत्त्व का समाचार मिला—दियारा दखल करने के लिये रायवंशवाले कौरवों की तरह ग्यारह अक्षौहिणी सेना तैयार कर रहे हैं; चक्रवर्ती-घराने के किसी को भी उस पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं दिया जायगा।

उत्तेजना से महीन्द्र उत्साहित हो उठा। इस प्रकार की उत्तेजना से महीन्द्र में जैसे एक प्रकार की अधीरता आ गयी। उसने मजुमदार से कहा—रहने दीजिये अभी यहाँ के काम, चलिये, आज ही घर चलें।

मजुमदार बोले—वहाँ से कुछ खबर आ जाय, वहाँ जब माँ हैं—

महीन्द्र चिढ़कर बोला—माँ कभी खबर नहीं देंगी। वे ये सब बातें समझतीं ही नहीं। इसके अतिरिक्त उन्हें है एक भयंकर भय—झगड़ा होगा। दियारे में हल चल जाने से ही हमें मुकदमे में फँसना होगा। उस समय दखली के मामले में जाना पड़ेगा।

मजुमदार और विरोध न कर सके। वे उसी दिन रवाना होकर पिछली रात घर पहुँचे। अहीन्द्र तथा सुनीति से दियारे की बात सुन महीन्द्र खुश हो गये। मजुमदार बोले,—तब तो हमारा हो ही गया है। सन्थाल जब रंगलाल बाबू को छोड़कर दूसरे को लगान नहीं देंगे, तब तो दखल हो ही गया। किन्तु दियारे का नाम रखना होगा—लाल बाबू का दियारा। कागज-पत्र में हम ऐसा ही लिखेंगे।

महीन्द्र बोला—ना, हम अपने दादा के नाम पर रखेंगे—लाल देवता का दियारा। और कल ही चपरासी लेकर वहाँ जाइये और सन्थालों से कह दीजिये, जिससे कोई रायों के बुलाने पर न जाय। जो जायगा, उसपर जुर्माना होगा यदि इस पर राय जोर करेंगे, तो हम उसका इलाज करेंगे।

अब अहीन्द्र बोला—'नहीं, ऐसा नहीं होगा भैया।'

वह महोन्द्र से डरता है, किन्तु इस विषय में चुप नहीं रह सका।

महीन्द्र सूखी दृष्टि से उसकी ओर देखकर बोला—क्यों?

मैं उस घराने के मामा को वचन दे आया हूँ—

उस घराने के मामा! उस घराने के मामा कौन? शायद इन्द्रराय? शायद माँ ने सम्बन्ध जोड़ दिया है। वाह, बहुत अच्छा!

सुनीति तथा अहीन्द्र दोनों चुपचाप इस तिरस्कार को सहन कर गये। महीन्द्र फिर बोला—इसके बाद बात ही क्या की जाय? न्याय से सम्पत्ति मेरी है। मेरे न रहने पर वे धमकाकर दखल कर लेंगे।

और तुम एक दुधमुँहे बालक हो, तुम बिना समझे-बूझे वचन दे आये ! क्या वह बात मुझे माननी पड़ेगी ?

अहीन्द्र ने फिर विनय के साथ कहा—वे भी तो यही कहते हैं, दियारा हमारा है।

वे यदि कल आकर कहें—यह मकान मेरा है—

अहीन्द्र इसका जवाब कुछ न दे सका। सुनीति मन ही मन अहीन्द्र की बात का समर्थन करने के लिये मुँह खोलकर इसका प्रतिवाद नहीं कर सकी। मजुमदार चालबाज आदमी थे, उन्होंने अहीन्द्र का मुँह देख चालाकी से एक निपटारा कर दिया। वे बोले—अच्छा है, अहि बाबू ने जब वचन दे दिया है, तब उनका वचन मैं रखूँगा। छोटे राय के बुलाने पर मैं स्वयं सन्थालों को लेकर जाऊँगा। देखूँगा कि वे क्या करते हैं।

महीन्द्र चुप हो गया। बात अच्छी तथा युक्तिपूर्ण है ; किन्तु उसका मन अच्छी तरह इसका समर्थन न कर सका।

मजुमदार बोले—इसके अतिरिक्त सामने-सामने बातकर देखूँ, किस मुँह से वे दियारे को अपना बताते हैं।

सुनीति ने कहा—यह तो खूब अच्छा है महीन्द्र, इसमें तुम कुछ आपत्ति न करो।

महीन्द्र ने इच्छा न रहते हुए भी कहा—ऐसा ही हो। किन्तु अहि कल ही स्कूल चला जाय, उसका इस मामले में पड़ना ठीक नहीं ! एक बात और—इस प्रकार सम्बन्ध कायम करने की बात फिर न होवे, तीन पीढ़ियों से वे हमारे साथ शत्रुता करते आ रहे हैं।

वैसा ही हुआ। अहीन्द्र सबेरे उठकर स्कूल चला गया। सबेरे ही मजुमदार सन्थालों को लेकर राय की कचहरी में उपस्थित हुए, और अन्त में इन्द्रराय की द्वन्द्व घोषणा सम्मान के साथ स्वीकार कर लौट आये।

मजुमदार के मुँह से सब हाल सुन महीन्द्र गर्म हो उठा और बोला—बहुत अच्छा कह आये। माँ का हृदय जैसा है, वे सोचती हैं कि संसार के सभी मनुष्यों का दिल भी वैसा ही है। कह आइये उनसे, उनके उस घर के भैया की बात कह आइये।

मजुमदार बोले—महि बाबू, यह बात माँ से न कहो। वे आपकी भलाई के लिये कहती हैं। और लड़ाई-झगड़े से उन्हें भय भी लगता है न!

महीन्द्र ने कहा—यह ठीक है। उनको बहुत भय लगता है। जमींदारी का काम ही उनके भय की बात है। उनके बाप की तीन पीढ़ीवाले नौकरी करते थे।

मजुमदार ने इस विषय में बातें नहीं बढ़ायीं। महीन्द्र को वह खूब जानते हैं।

उन्होंने प्रसंग बदलकर कहा—बाबू के साथ एक बार राय करने की आवश्यकता है।

अब एक लम्बी साँस छोड़ महीन्द्र ने कहा—आज सवेरे मैं उनके कमरे में गया था। उनको देखकर मेरी छाती फट गयी मजुमदार काका। जान पड़ता है कि वे पूरे पागल हो गये हैं।

मजुमदार चुपचाप बैठे रहे। महीन्द्र भी नीरव था। इस सन्नाटे में हल्ला करते सन्थाल-बालक-बालिकाओं का एक दल आ गया। हाथ में तीर-धनुष, एक के धनुष के साथ तुरन्त मारे हुए दो छोटे जानवर लटक रहे थे। अब भी उन दोनों की चोटों से खून बह रहा था। बालकों के पीछे कई तरुणियाँ हैं। तरुणियों में कमल माँझी की नातिन-वही लम्बी बालिका—सब के आगे है। यह दल महीन्द्र तथा मजुमदार को देख जैसे सन्नाटे में आ गया।

मजुमदार और महीन्द्र तनिक चंचल हो उठे। इनके अकस्मात् आ

जाने से उन्होंने समझा कि इन्द्रराय ने फिर कोई गोलमाल किया है। महीन्द्र ने मजुमदार से ही पूछा—फिर क्या हुआ? निश्चय ही रायों ने फिर कुछ गोलमाल किया है।

मजुमदार ने सारे दल को सम्बोधितकर पूछा—तुम लोग क्या कर रहे हो?

सारा दल अपनी भाषा में आपस में ही न जाने क्या कह उठा। मजुमदार फिर बोले—क्या कहते हो? बँगला में क्यों नहीं कहते?

लम्बे शरीर वाली बालिका बोली—कहती हूँ, हमारा बाबू कहाँ है?

हँसकर मजुमदार ने कहा—यही बड़े बाबू हैं। कहो न, क्या कह रही हो?

वह कहाँ है? वह हमारा है लाल बाबू—वह कहाँ है?

वे पढ़ने के लिये स्कूल चले गये शहर में। यही हैं बड़े बाबू, यही हैं मालिक-मरंग बाबू।

कैसे, यह कैसे होगा!

मजुमदार हँसकर बोले—अच्छी मूर्ख जाति है! जो पकड़ेगी, उसे छोड़ेगी नहीं—यह कैसे होगा? यही होगा रे, यही हैं। ये हैं बड़े भाई, वे हैं छोटे भाई। समझा?

हाँ, यह तो हम देखती हैं। ये भी हैं वैसे ही। वैसा ही रंग है। किन्तु वे ही हैं मेरे लाल बाबू। उनके लिये हमने खरगोश मारा है।

महीन्द्र उत्साह के साथ कुर्सी से उठकर बोला—खरगोश! कहाँ? देखें, देखें!

उन्होंने वे खरगोश लाकर कचहरी के बरामदे में रख दिये। धूसर रङ्ग के जंगली खरगोश—साधारण पालतू खरगोश से आकार में बहुत बड़े—वाह, यह तो बहुत बड़ा है। इसका रंग भूमि की तरह है। ये मिले कहाँ तुम्हें? वही लड़की बोली—

क्यों ? उसी नदी के दियारे में, बहुत हैं। सियार हैं, लोमड़ियाँ हैं, खरगोश हैं, तीतर हैं। हम उन्हें मार भून-भून खाते हैं।

महीन्द्र का उत्साह और बढ़ गया। उसको शिकार से बड़ा प्रेम है, जिसको नशा भी कहना अत्युक्ति नहीं है। वह बोला—चलिये मजुमदार काका, आज तीसरे पहर शिकार करने चलेंगे। दियारा भी देखा जायगा, शिकार भी होगा। ठीक है न ?

अच्छी बात है !

लड़की बोली—तू जायगा, बन्दूक लेकर जायगा ? मार सकेगा ? खोजकर निकाल सकेगा ?

हँसकर महीन्द्र ने कहा—अच्छा, यह उसी समय देखोगी। जा, अपने सरदार माँझी से कहना—हम तीसरे पहर आयँगे।

वह हमारा लाल बाबू ? उसे ले आओगे न ?

वह यहाँ नहीं है !

क्यों ? वह क्यों नहीं जायगा ? तू उसे क्यों नहीं ले आयगा ?

मजुमदार हँसने लगे—कैसी आफत है !

क्यों हमने क्या किया ? ऐसा क्यों कहते हो ?

अच्छा, अच्छा। बाबू के आने पर उसे ले आऊँगा। अभी तुम लोग जाओ।

इस बार आश्वासन पाकर वे अपनी भाषा में शोर करने लगीं। वही लड़की इस दल की नेतृ थी। उसने कहा—दलो, दलो अर्थात्—चलो, चलो, चलो।

महीन्द्र कचहरी में घुसकर बन्दूक निकाल लाया नली का मुँह निकाल भीतर देखकर बोला—बहुत गन्दी हो गयी है। वह बन्दूक का बक्स निकालकर ठीक करने लग गया।

इन्द्रराय का यह कार्य अचिन्त्य बाबू को नहीं जँचा। वे बहुत

क्रोधित हो उठे। आज प्रातःकाल तक उन्होंने जड़ी-बूटियों के चालान के हानि-लाभ का हिसाब राय को समझाया है। राय ने भी आपत्ति नहीं की, बल्कि उत्साह ही दिलाया। किन्तु उस लाभ की परवा न कर उन्होंने दियारे का बन्दोबस्त क्यों कर दिया, इसका कारण उनकी समझ में नहीं आया। और नैनीपाल जैसे दुष्ट व्यक्ति को बिना नजराना लिये आश्रय देने का कारण भी वे समझ न सके। उसी को लेकर सारा दियारा दुर्गम हो गया। कौन उसके साथ झगड़ा करेगा? उसकी सीमा छोड़ दियारे में जाने पर भी नैनी झगड़ा करेगा ही। यही क्रोध प्रकट करते-करते वे रास्ते पर आ रहे हैं।

हुआ, अच्छा ही हुआ, उत्तम हुआ, खूब अच्छा हुआ। वहाँ फिर कोई कैसे जायगा? रह जायगी सारी भूमि परती। जाते ही वह गँवार बिना मारे छोड़ेगा नहीं। वाह वा, मैं फिर जाऊँ? सर्वनाश! किसी दिन वह दुष्ट एकदम मेरा खून ही कर डालेगा। वे इसी प्रकार बकते-बकते जा रहे हैं।

चक्रवर्तियों की कचहरी के बरामदे में मजुमदार ने हँसकर पूछा—क्या हो गया अचिन्त्य बाबू? हठात् क्यों चिढ़ उठे हैं?

हठात्?—अचिन्त्य बाबू जैसे पागल हो उठे—हठात्? क्या कहते हैं महाशय? आज तीन दिनों से लाभ-नुकसान का हिसाब कर देखा, टू हण्ड्रेड परसेण्ट लाभ! कलकत्ता के सात-आठ फर्मों को पत्र लिखे, सात-आठ आने खर्च करके; और आप कहते हैं हठात्?

मजुमदार बोले—यह सब हम क्यों कर—

बाधा देकर अचिन्त्य बाबू ने कहा—ठीक बात, मेरी ही भूल है। आप लोग कैसे जानेंगे? सुनिये महाशय, आपके इन्द्रराय ने एक 'डेञ्जरस गेम' में हाथ लगाया है। बाघ के साथ खेलना—नैनीपाल साक्षात् बाघ है!

विस्तार के साथ सब घटना का वर्णनकर अन्त में क्षोभ और दुःख से ये सज्जन रोने लगे। महाशय, तीन रात मैं सोया नहीं। इस प्रकार दस बार हमने लाभ-हानि का हिसाब किया। अच्छा था, बदहजमी कम हो गयी थी। इन तीन रातों में जागने से बदहजमी फिर बढ़ गयी। बात कहते-कहते जैसे उनका रोग बढ़ गया। साथ-साथ कई डकारें लेकर उन्होंने कहा—लवणभास्कर तनिक न खाने से गैस पैदा होगी। जाऊँ, थोड़ा खा लूँ। गैस से हार्ट फेल होना असम्भव नहीं है। वे उठ पड़े और बकते-झकते चले गये।

महीन्द्र ने बन्दूक फेंककर गम्भीर भाव से कहा—चपरासी से कह दीजिये—नैनीपाल को रायों की कचहरी से निकलते ही पकड़ लाये।

\+ + + +

मजुमदार ने खूब अच्छी तरह कहा—आदेश के स्वर में नहीं, अनुरोध के स्वर में—देखो नैनी, ऐसा करना तुम्हें उचित नहीं होगा। यह हम साझेदारों का झगड़ा है। इसमें तुम्हारा शामिल होना क्या अच्छा है?

नैनी नख से नख काटता हुआ बोला—तो महाशय, इसमें अच्छा-बुरा क्या है? सम्पत्ति रखने में झगड़ा है, सम्पत्ति लेने में भी झगड़ा है—ऐसा सोचकर कोई सम्पत्ति छोड़ देता है?

महीन्द्र गम्भीर स्वर में बोला—देखो नैनी, वह सम्पत्ति मेरी है, वह इन्द्रराय की नहीं है। तुमको मना करता हूँ, तुम इसमें न पड़ो।

महीन्द्र की गम्भीर आवाज से नैनी चिढ़कर बोला—सम्पत्ति आपकी ही है, इसका क्या पता?

मैं कह रहा हूँ न!

यही बात राय महाशय भी कहते हैं—सम्पत्ति उनकी है।

वे झूठी बात कह रहे हैं

और आप सत्य कहते हैं!—व्यंग्य से नैनी बोल उठा।

महीन्द्र बोला—चक्रवर्ती-वंश उतना नीच नहीं है, वह मिथ्या बात नहीं कहता। समझते हो न ?

नैनीपाल तैयार होकर ही आया था, इन्द्रराय के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये महीन्द्र के अपमान का संकल्प लेकर ही आया था। वह पुकारने ही से यहाँ आ गया था।

वह बोल उठा—हाँ, हाँ, यह सब हमें खूब मालूम है, इस जगह के सभी जानते हैं। चक्रवर्ती-घराने की बात कौन नहीं जानता ?

महीन्द्र क्रोध से लाल होकर बोला—क्या, क्या कह रहा है तू ?

मुँह बिचकाकर नैनी ने कहा—कह रहा हूँ तुम्हारी सौतेली माँ की बात ; कहता हूँ—जिसकी माँ निकल जाय—

उसी क्षण प्रलय हो गया। असहनीय क्रोध से महीन्द्र अपने को भूल गया और अपने अभ्यस्त हाथ में शीघ्रता के साथ बन्दूक ले टोटा भर घोड़ा दबा दिया।

नैनीपाल के मुँह की बात मुह में ही रह गयी। वह—रक्त से सनी हुई देह—मुँह बाकर भूमि पर गिर पड़ा। बन्दूक का शब्द, बारूद की गन्ध, धुँआ, रक्त और सब कुछ लेकर एक भीषण दृश्य उपस्थित हो गया ! मजुमदार जैसे बिना शब्द—मूक—हो गये। वह थर-थर काँप रहे थे। महीन्द्र नीरव था, किन्तु उसी ने पहले सन्नाटा भङ्ग किया। बन्दूक हाथ में लेकर ही बोला—मैं जा रहा हूँ, थाने में आत्म-समर्पण करने जा रहा हूँ।

मजुमदार ने कुछ कहने की चेष्टा में कई बार हाथ हिलाया, किन्तु मुँह से बात न निकली। महीन्द्र ने माँ से भी भेंट नहीं की। चैत के तीसरे पहर की कड़ी धूप में छः मील दूर थाने में आकर बोला—मैंने गोली मारकर नैनीपाल नामक एक व्यक्ति की हत्या की है।

आठ

वज्र के समान कठोर आघात से छाती फट जानेपर भी सुनीति को रोने का उपाय नहीं था। सन्तान के दुःख से अपने को भूलकर लौटे रहने की सबसे अच्छी जगह स्वामी के पास थी, किन्तु उसी स्थान पर सुनीति को अपने जीवन के इस कठिन दुःख को अत्यन्त संयम द्वारा शान्त रखना पड़ा। तीसरे पहर यह दुर्घटना हो गयी। सुनीति तीसरे पहरभर भूमि पर मुँह छिपाकर मिट्टी की मूर्ति के समान पड़ी रहीं वह सन्ध्या समय गृहलक्ष्मी के सिंहासन के सामने धूप-दीप देने भी न उठीं। सन्ध्या के बाद ही उन्हें उठना पड़ा। याद आ गयी—उन्हीं पर बिलकुल निर्भर स्वामी की बात। अब भी वे अन्धकार में हैं—दोपहर के बाद से उन्होंने कुछ खाया नहीं है। यथा-सम्भव अपने को शान्तकर उन्होंने रामेश्वर के घर में प्रवेश किया। बन्द घर में ऊमस हो रही थी, दीपक जलाकर सुनीति ने खिड़की खोल दी। अभी तक वे स्वामी की ओर देख नहीं सकी थीं, स्वामी के मुँह की कल्पना से ही उनका हृदय आवेग से भर जाता था। इस बार कठोरता से मन को दबा उन्होंने स्वामी की ओर देखा। उन्होंने देखा कि गहरे भय के कारण रामेश्वर की दोनों आँखें फँस-सी गयी हैं और मिट्टी की मूर्ति के समान वे बिना हिले-डुले बैठे हैं। वे सुनीति की आँखों से आँखें

मिलते ही भयपूर्ण धीमे स्वर में बोले—महीन्द्र को छिपा रखा है?

सुनीति जैसे अपने को सम्भाल नहीं पाती थीं। दाँतों-पर-दाँतों को जोर से दबाकर वे चुप रह गयीं। रामेश्वर फिर बोले—खूब अन्धेरे घर उसे छिपाना, जिससे कोई देख न सके।

आवेग की साँस को किसी प्रकार रोक, अब सुनीति ने कहा—क्यों? हमारे मही ने तो कुछ अन्याय नहीं किया है, क्यों वह छिपा रहेगा?

क्या तुम जानती नहीं? मही ने खून किया है।

जानती हूँ।

तो, उन्हें पुलिस पकड़ ले जायगी।

सुनीति के हृदय में धीरे-धीरे बल आ रहा था। उन्होंने कहा—मही ने स्वयं थाने में आत्म-समर्पण कर दिया है। उसने कुछ अन्याय तो नहीं किया है। क्यों चोर की भाँति वह छिपता फिरेगा? उसने अपनी माँ के अपमान का बदला ही तो लिया है, सन्तान के योग्य काम किया है।

बहुत देर तक चुपचाप सुनीति के मुँह की ओर देख रामेश्वर बोले—तुम ठीक कहती हो। मणिपुर की राजकन्या के अपमान से उसका पुत्र वभ्रुवाहन पिता के वध से भी नहीं रुका। तुम ठीक कहती हो।

गम्भीरता के साथ सुनीति ने कहा—इस विपत्ति में तुम थोड़े खड़े हो जाओ। तुम्हारे खड़े न होने पर मैं किसके सहारे चल-फिर सकूँगी? मही का मुकदमा कौन लड़ेगा? अरे मन को थोड़ा साहस दो, मन में सोचो—तुम्हें कुछ नहीं हुआ है।

रामेश्वर धीरे-धीरे चारपाई से उतर खुली खिड़की के पास खड़े हो गये।

सुनीति बोलीं—मेरी बात सुनते हो?

सम्मति-सूचक बार-बार गर्दन हिला रामेश्वर ने कहा—हूँ। सुनीति

बोलीं—तुम्हारे साहस करने से मही का कुछ न होगा। मजुमदार देवर मुझसे कहते थे—ऐसी उत्तेजना पर खून करने से फाँसी नहीं मिलती, बहुत समय निपराध छूट जाते हैं।

ऐसा कहते-कहते उनके दोनों होंठ थर-थर काँपने लगे। उनकी आँखों के सामने नैनीपाल का खून से सना हुआ निर्जीव शरीर आ गया। ओह! कैसा खून! कचहरी के बरामदे में खून जमने से एक तह पड़ गयी है! सुनीति का मन अभागे नैनीपाल के लिये हाहाकार करने लगा—महीन्द्र ने अन्याय किया है, अपराध किया है; दण्ड देने जाकर उसकी मात्रा अधिक कर दी है। इसके लिये उसे दण्ड मिलना चाहिये और दण्ड भी इतना ही मिलना चाहिये। वे अपने को भूलकर चुपचाप खड़ी रहीं।

कुछ देर बाद मानदा ने घर से निकलकर उन्हें पुकारा—माँ!

सुनीति की निश्चलता टूटी। एक गहरी साँस छोड़, उन्होंने कहा—आती हूँ।

चूल्हे की आँच खराब हो रही है माँ।

अपने को सम्भाल सुनीति ने स्वामी की ओर फिरकर देखा।

रामेश्वर एकटक बाहर अंधेरे की ओर देखते हुए खड़े थे। उनके लिये सन्ध्या-कर्म की जगह ठीककर सुनीति बोलीं—कपड़े बदल लो, सन्ध्या कर डालो। मैं दूध गर्म कर ले आती हूँ।

रामेश्वर बोले—एक बात कहता हूँ तुमसे। तुम—

सुनीति कुछ देर तक रुकने के बाद बोलीं—कहो, क्या कहते हो।

तुम स्थिर मन करके अपनी बहन को पुकारो—अर्थात् राधारानी, राधारानी। वह जीवित नहीं है, उस पार से वह तुम्हारी पुकार सुन सकती है। कहो—तुम्हारे सम्मान के लिये मेरे महीन्द्र की ऐसी अवस्था हुई है, तुम उसे आशीर्वाद दो, बचाओ।

सुनीति बोलीं—पुकारूँगी, उन्हें पुकारूगी क्यों नहीं ?

\+ + + +

सुनीति ने नीचे आकर देखा—मजुमदार बैठकर उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ! वे महीन्द्र का समाचार जानने के लिये थाने गये थे ! उनको देख सुनीति के दोनों होंठ थर-थर कांपने लगे। उनके नेत्र के सामने जंजीर में बँधे हुए उदास महीन्द्र की मूर्ति आ गयी। वे मुँह से कुछ पूछ न सकीं। किन्तु मजुमदार ने देखा—उत्कण्ठित प्रश्न मूर्ति धारणकर उनके सामने खड़ा है।

वे बिलकुल मूर्ख की तरह थोड़ा हँसकर बोले—मही को देख आया।

फिर भी सुनीति चुपचाप मूर्ति की तरह खड़ी रहीं। मजुमदार बिना कारण ही खांसकर और गला साफकर फिर बोले—मैंने देखा, बहुत साहसहीन नहीं है। और कुछ देर तक सुनीति की ओर से कोई प्रश्न नहीं पूछा गया, तो वे फिर बोले—थाने के दारोगा ने भी कुछ खराब व्यवहार नहीं किया। फिर उन्होंने कहा—मैं सब कुछ मालूम कर आया ; उसने थाने में जो बयान दिया है, उसे देख आया। वह तनिक भी झूठ नहीं बोला है।

सुनीति ने लम्बी सांस छोड़ी। किन्तु जीवन में गतिशीलता नहीं आयी। दारोगे ने मुझसे पूछा कि उस आदमी ने क्या कहा था। मही बाबू ने यह बात नहीं कही। दारोगा बात जानना चाहता था, इसपर उन्होंने कहा—यदि मैं वह उच्चारण ही कर दूं, तो उसे मैंने गोली से मारा ही क्यों ? मैंने कह सब दिया

अब सुनीति बोलीं—छिः।

सिर नीचाकर मजुमदार बोले—न कहने से काम न चलता बहू जी, मही को बचाना होगा न ?

सुनीति की आँखों से अब टप-टप आँसू गिरने लगे। मजुमदार ने

भरसक अपने को प्रसन्न रखने की चेष्टा कर कहा—आप चिन्ता न कीजिये, इस मामले में मही का कुछ न होगा। दारोगे ने भी मुझसे यही बात कही है।

अत्यन्त संकोच के साथ सुनीति ने पूछा—मही ने कुछ नहीं कहा ?

लम्बी साँस छोड़कर मजुमदार बोले—उसने कहा है, माँ से कहियेगा, वे रोयें नहीं ! मैंने अन्याय नहीं किया है। बड़ी माँ को देखा नहीं, माँ कहने से माँ की याद आती है। उस शैतान ने जब माँ का नाम लिया, उस समय माँ की ही याद मुझे आ गयी ; मैंने उसे गोली मार दी। इसमें मुझे तनिक भी दुःख नहीं है, भय भी नहीं है। किन्तु माँ के रोने से मुझे दुःख होगा।

सुनीति बोलीं—कल अब जाओगे देवर ; तो उससे कहो, कि मन-ही-मन वह अपनी बड़ी माँ को पुकारे, प्रणाम करे। उससे कहना—तुम्हारे बाप ने यही बात कही है। मैं भी कहती हूँ।

धोती के सिरे से अपनी आँख पोंछते हुए मजुमदार ने कहा—आपके साथ बहुत-सी बातें करनी हैं। स्थिर होकर धैर्य के साथ आपको सुनना होगा।

सुनीति बोलीं—मैंने क्या धैर्य छोड़ दिया है देवर जी ?

विना विचारे ही मजुमदार ने कहा—नहीं—माने मामले के विषय में परामर्श करना है न ! सिर ठीक रखकर करना होगा, यही और क्या ?

अच्छा, तुम थोड़ा ठहर जाओ। मैं दूध गर्म कर उन्हें पिला आऊँ। जाते-जाते सुनीति खड़ी हो गयीं। कुछ जोर से मानदा को पुकारकर कहा—मानदा, महाराज से कह दे, मजुमदार देवर को थोड़ा जलपान दे जाय। और तू हाथ-पैर धोने के लिये पानी ला दे।

मजुमदार बोले—केवल एक ग्लास ठण्डा पानी लाओ। प्यास से गला जैसे सूख-सा गया है।

स्वामी को खिलाने के बाद सुनीति नीचे आकर मजुमदार से थोड़ी दूरी पर बैठ गयीं। योगेश सिर पर हाथ रख गहरी चिन्ता में डूबे थे। सुनीति बोलीं—क्या कहते थे, कहो देवर।

लम्बी साँस छोड़ मजुमदार ने कहा—मामले की बात कर रहा था। मुझे पूरा विश्वास है बहू जी, मही का इसमें कुछ नहीं होगा। दारोगे ने भी मुझे विश्वास दिलाया है।

यह तो तुमने कहा था देवर।

हाँ। किन्तु इस समय दो बातें सोचने की हैं, यही मैं कह रहा था।

कौन-सी बातें? कहो।

मामले में रुपया खर्च करना होगा, अच्छा वकील रखना होगा। और दारोगा-टारोगा को कुछ देने से अच्छा रहेगा।

सुनीति ने पूछा—घूस?

हाँ, घूस ही न! यह कलियुग है बहू जी। फिर हम घूस देकर झूठा कराना नहीं चाहते।

कितने रुपये लगेंगे?

दो हजार तो लगेंगे ही, मुकदमे का खर्च लेकर!

मैं अपना गहना दूँगी देवर, उन्हींसे इस समय तुम खर्च चलाओ।

कुछ आगा-पीछाकर मजुमदार बोले—मैं कह रहा था दियारा बेचने के लिये—फालतू चीज है, और खरीददार भी हैं। आज ही थाने में एक मारवाड़ी महाजन मुझसे कह रहा था।

कुछ देर तक सोचकर सुनीति ने कहा—उसे अभी रहने दो देवर, अभी तुम गहने से ही काम चलाओ। बाद में जैसा होगा, किया जायगा। और क्या कह रहे थे?

एक बात और है बहू जी—यही तो भय की बात है। यदि छोटे राय बाबू खड़े हो जायँ।

सुनीति चुपचाप भूमि की ओर देखती, बैठी रहीं ! इस बात का उत्तर न दे सकीं।

मजुमदार बोले—आप एक बार उनके घर जाइये।

सुनीति चुप रहीं।

मजुमदार बोले—मही की बड़ी माँ माँ ही हैं, किन्तु वे तो हैं राय महाशय की सहोदरा बहिन। नैनीपाल उनका आश्रित था, किन्तु क्या वह अपनी सहोदरा से भी बड़ा था ?

सुनीति धीरे-धीरे बोलीं—किन्तु मही ने तो उनकी सहोदरा के अपमान का बदला लेने के लिये यह काम नहीं किया है देवर।

किन्तु बात तो वही एक ही है।

उदासी से हँसकर सुनीति ने कहा—यदि एक ही बात है, तो कैफियत देने के लिये मेरे जाने की क्या आवश्यकता है देवर ? उसके समान मनुष्य क्या यह बात स्वयं नहीं समझ लेगा ?

मजुमदार चुप हो गये। उनको कोई बात कहने के लिये न मिली। सुनीति फिर बोलीं—जो काम मही ने किया है देवर, बिना कारण ऐसा काम, भगवान भी क्षमा नहीं करेंगे। किन्तु जिस कारण किया है, उसने बड़े होकर उसका पाप हलका कर दिया है। वह कारण जो नहीं समझेगा, उसे क्या मैं समझाने जाऊँ ! कुछ देर के बाद फिर बोलीं—मही के लिये मही की माँ बड़ी हैं। राय महाशय के लिये उनकी बहिन बड़ी हैं। मही ने माँ के अपमान के बदले के लिये जो करना था, किया। अब राय महाशय अपनी बहिन के लिये जो उचित समझेंगे, करेंगे। इसमें मैं क्या करूँगी ?

\+ + + + +

गहरी रात में गाँव में सन्नाटा है। रामेश्वर बिछौने पर पड़े जाग रहे हैं। पास ही अलग बिछौने पर सुनीति गतिहीन पड़ी हुई हैं। वे

भी जागकर महीन्द्र की बात सोच रही हैं—माँ के अपमान का बदला लेने के लिये उसने वीरोचित कार्य किया है। इस युक्ति से मन को बाँधने पर भी, प्राण वह बन्धन तोड़ पागल की तरह हाहाकार करना चाहता है। छाती में असह्य वेदना दबाये हुए वे गतिहीन पड़ी हुई हैं। सोने के कमरे स्वामी के पास रहने पर भी खूब मनमाना उसे हल्का नहीं कर पाती हैं। रामेश्वर के जाग जाने पर विपत्ति आ जायगी, वे अधीर हो जायँगे, दुःख-पर-दुःख आ जायगा।

पूर्व की ओर चाँद निकल रहा था। खुली खिड़की से मन्द प्रकाश घर में आ रहा था। रामेश्वर सावधानी से पलंग से उतरकर खिड़की के पास खड़े हो गये। सोती हुई सुनीति की नींद में बाधा न पहुँचे, इसी-लिये ऐसी सावधानी उन्होंने रखी थी। खिड़की से नीचे की भूमि देख वे कई कदम पीछे हट गये। धीमे स्वर में बोले—उफ, बड़ा ऊँचा है!

सुनीति सिहरकर झटपट उठीं, और पास जा उन्हें पकड़कर बोलीं—क्या कहते हो

रामेश्वर ने बहुत भय से चौंककर कहा—कौन?

सुनीति झटपट बोल उठीं—मैं हूँ, मैं, भय नहीं, मैं हूँ।

कौन? राधारानी?

नहीं, मैं हूँ सुनीति।

स्थिर हो रामेश्वर एक साँस छोड़कर बोले—तुम सोयी नहीं? रात बहुत हो गयी सुनीति।

सुनीति विचित्र हँसी हँसने लगी। तुम जो नहीं सोये! जाओ, जाकर सो जाओ।

मुझे नींद नहीं आ रही है, सुनीति। सोते समय हठात् रामायण की याद हो आयी।

मैं रामायण पढ़ूँगी, तुम सुनोगे?

नहीं। मेघनाद को जब अधर्म-युद्ध में लक्ष्मण ने मारा, उस समय रावण के मन की बात तुम्हें स्मरण है? शक्ति, शक्ति! मेरे मन में आता है – वैसी ही शक्ति यदि पा जाता,

तो रायहाट और राय-वंश को ध्वस्त कर देता। रामेश्वर थर-थर काँप रहे थे, सुनीति परेशान हो स्वामी को थोड़ा खींचकर बोलीं—आओ, बिछौने पर बैठ जाओ, मैं हवा करूँ।

रामेश्वर ने आपत्ति नहीं की, आकर बिछौने पर बैठ गये। वे खिड़की से चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशित गाँव की ओर एकटक देखते रहे। सुनीति बोलीं –तुम चिन्ता न करो, महि ने कुछ अन्याय नहीं किया है। भगवान उसकी रक्षा करेंगे।

रामेश्वर ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया। नीरव बाहर की ओर देखते-देखते सहसा बड़ी घृणा के साथ मुँह बिचकाकर बोल उठे—आह! विष ने एक दम जर्जरित कर दिया है। सुनीति ने कातरता के साथ प्रार्थना कर कहा—अरे क्या कहते हो तुम! मुझे भय लग रहा है।

भय लगना ही चाहिये। देखो, ध्यान से देखो—विष से गाँव एक दम जर्जरित हो गया है। कितने समय से मनुष्य के शरीर का विष जमता जा रहा है—रोग, शोक—न जाने क्या-क्या। मन का विष—हिंसा-द्वेष, मार-पीट, खून-खच्चर, आह! सब जमा हो रहे हैं। चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशित गाँव की ओर देखकर सुनीति ने एक लम्बी साँस छोड़ी। वास्तव में गाँव विचित्र लग रहा था! घने अँधेरे के समान बड़े-बड़े पेड़, बहुत पुराने टूटे-फूटे घर-द्वार, कंगूरे टूटे हुए मन्दिरों की पंक्ति, एक ओर गाँव को रगड़ती हुई कालिन्दी का ऊँचा करार—सब कुछ देख-सुनकर, पागल रामेश्वर के समान विष-जर्जरित न जान पड़ने पर भी, लम्बी साँस छोड़ने की इच्छा होती है!

सहसा रामेश्वर फिर बोले—देखो।

क्या ?

कुछ देर चुप रहने के बाद उन्होंने कहा—मेरी उँगलियाँ बहुत खुजला रही हैं।

क्यों ? कहीं चोट तो नहीं लगी है ?

उदासी के साथ गर्दन हिला रामेश्वर बोले—उ हुँ।

तो ! क्या, देखूँ !—आड़ में रखा हुआ दीपक पास लाकर बोलीं—कहाँ ? कुछ तो नहीं हुआ है।

तुम जान नहीं पा रही हो। हुआ है—हुआ है। देखती नहीं हो, उँगलियाँ फूलकर लाल हो गयी हैं।

तुम्हारे वंश के हाथ इसी तरह लाल-लाल होते हैं।

नहीं, तुम से अब तक मैंने नहीं कहा है। सोचा था—कुछ नहीं, मन का भ्रम है। किन्तु—। वे आगे नहीं बोले, चुप हो गये। सुनीति ने कहा—तुम थोड़ा सो जाओ। सिर पर थोड़ा जल देकर हवा करूँगी।

रामेश्वर ने आपत्ति नहीं की। सुनीति के कहने के अनुसार वे चुपचाप सो गये। सुनीति सिरहाने बैठ हवा करने लगीं। चन्द्रमा के प्रकाश में काली के किनारे की बालू देख उनके मन में एक उदासी का विचार पैदा हो रहा है। काली की पतली धारा में चन्द्रमा का प्रतिविम्ब सुनीति के मन की उदासीनता में सौन्दर्य तथा आनन्द उत्पन्न करने की चेष्टा करने पर भी सफल नहीं हो सका। उसके उस पार वही जंगली घास तथा काँस से ढँका हुआ दियारा है। चन्द्रमा के प्रकाश में कोमल काले रंग के एक बहुत बड़े गलीचे की भाँति वह फैला हुआ है। सर्वनाशी दियारा ! हवा करते-करते सुनीति भी धीरे-धीरे लुढ़ककर बिछौने पर पड़ गयीं, पड़ते ही फिर सचेत हो गयीं, किन्तु बहुत थक जाने से उठने की इच्छा नहीं हुई। जब नींद टूटी, प्रभात हो चुका

था। रामेश्वर जागकर चुपचाप बैठे थे। सुनीति को उठते देख बोले—कविराज जी को एक बार बुलावा भेजो तो।

क्यों? क्या शरीर में कुछ हुआ है?

ये उँगलियाँ एक बार दिखाऊँगा।

कुछ हुआ नहीं है, किन्तु मैं बुलावा भेज रही हूं।

ना, बहुत दिनों तक चिन्ता नहीं की, सोचा था—कुछ नहीं है। किन्तु अब खूब समझ रहा हूं—हुआ है—हुआ है।

रात में ठीक यही बातें कही थीं। अब सुनीति कितना सहन करतीं, चिढ़ तो सकतीं नहीं, अभाग्य के लिये रोने का भी अवसर नहीं। यह एक विचित्र दशा है! उन्होंने कहा—उँगलियों में क्या होगा, बोलो—उँगलियाँ—

कोढ़—कोढ़। सुनीति की बात काट धीमे स्वर से रामेश्वर बोल उठे—बहुत दिनों से प्रारम्भ हुआ है, तुम्हारे साथ व्याह के पहले से छिपाकर तुम से व्याह किया है।

सुनीति वज्र से घायल की भाँति एकदम सन्न हो गयीं।

नौ

एक वर्ष के बीच ही चक्रवर्ती-घराने की अवस्था वज्र से मारे हुए ताड़ के पेड़ के समान हो गयी। ताड़ के सिरे पर बिजली गिरने से वह तुरन्त जल नहीं जाता। कई दिनों में ही पत्ते सूख जाते हैं। इसके बाद सूखे पत्ते जड़ से टूटकर झूल जाते हैं, और फिर गिर जाते हैं। किन्तु उसका लम्बा तना, गला कटाकर, पुराने कीर्ति-स्तम्भ की भाँति, खड़ा रहता है। चक्रवर्ती के घराने की दशा भी वैसी ही हो गयी। महीन्द्र के मुकदमे में ही उनकी धन-सम्पत्ति प्रायः समाप्त हो गयी। बची हुई सम्पत्ति में बिजली मारे हुए ताड़ के तने के समान बड़ा मकान रह गया। वह भी मरम्मत न होने से पुराना, बदसूरत, रूखा तथा काला हो गया है। इसी बीच मकान का प्लस्तर अनेक जगहों पर टूट गया है। चूने से न पोते जाने के कारण उसमें काई जमने से वह काला हो गया है। महीन्द्र के मुकदमे में दो हजार के स्थान पर खर्च हो गये पाँच हजार रुपये। मजुमदार के प्रबन्ध से रुपये की कमी नहीं हुई, हैण्ड-नोट पर रुपये मिल गये। किन्तु रुपये रहते हुए भी बाकी मालगुजारी में एक दिन सम्पत्ति भी नीलाम हो गयी। भाग्य का ऐसा ही बन्दोबस्त है। पेशी जिस दिन हुई, महीन्द्र के मामले में राय उसी दिन बाहर निकले। मामले के अत्यन्त संकट के

दिन ही नीलाम की तारीख थी। मजुमदार के समान व्यक्ति भी यह बात भूल गया। जब ख्याल आया, तब जो होना था, हो चुका था। राय-घराने के बहुत से लोग मन ही मन पुलकित हो उठे, किन्तु चक्रवर्ती के घराने में इसके लिये कोई आपत्ति नहीं उठी। बिजली गारने पर उसकी आवाज से सिहरने का समय नहीं मिलता। मुकदमे में महीन्द्र को दस वर्ष के कालेपानी की सजा मिल गयी। उसी आघात से चक्रवर्ती-घराना एक दम सन्न हो गया था।

सब को आशा थी कि महीन्द्र को कठोर दण्ड नहीं मिलेगा। समाज के निकट महीन्द्र का अपराध, नैनीपाल के अन्याय के कारण अक्षम्य नहीं जान पड़ता था। किन्तु कचहरी में सरकारी वकील की चतुराई से यह अपराध अक्षम्य प्रमाणित हो गया। माँ के अपमान से सन्तान के आपे में न रहने की आड़ में उन्होंने जज तथा जूरियों को समझा दिया कि जमींदार तथा प्रजा का पुराना विरोध है। सवाल के समय उन्होंने ईसप की कहानी के भेड़िये और मेमने का उल्लेखकर कहा—यदि यह अपराध कुछ अपमानजनक बातों के कारण कम समझा जाय, तो ईसप के भेड़िये को मेमने की हत्या के लिये तनिक भी दोष नहीं दिया जा सकता! भेड़िये का भी अभियोग था—मेमने ने भेड़िये के बाप को गालियां दी हैं। यह अपमान की बात तो ईसप की कहानी के समान दुरात्मा का एक छल-मात्र है। असल बात यह है—उद्धत जमींदार-पुत्र ने इस तेजस्वी प्रजा की हत्या इसके नेता होने के कारण की है—यह बात मैंने भली भांति प्रमाणित कर दी है, इसका मुझे दृढ़ विश्वास है और जो बात कई कठोर बातों से उत्तेजित होने का कारण मानी जाती है, वह भी झूठी नहीं है, वह अक्षर-अक्षर सत्य है—असामी की—

आप झूठी बकवाद करते हैं—वकील की बात में बाधा देकर महीन्द्र

बोल उठा, वह कठघरे में रेलिंग पर भार देकर खड़ा था। वकील के वक्तव्य का प्रारम्भ सुनकर ही उसकी तेजरहित भूरी आँखों में तेज भर आया। वह साक्षात् कठोरता का स्वरूप धारणकर बोल उठा—आप क्यों झूठी बकवाद करते हैं; हाँ, उद्धत प्रजा के हिसाब से ही मैंने गोली मारकर उसकी हत्या की है।

सरकारी वकील बोले—देखिये, देखिये, असामी का मुँह तो देखिये। प्राचीन काल की सामन्तशाही मनोभाव का यह ज्वलन्त उदाहरण है।

इसके बाद फाँसी ही कानूनी विधान था। किन्तु जज ने इस अपमान की बात का आश्रय तथा अल्प आयु का विचारकर उससे मुक्ति दे दी। उधर सम्पत्ति उस समय नीलाम हो रही थी, चक्रवर्ती-घराने के महाजन मजुमदार महाशय के साले ने नीलाम लिया। किन्तु लोगों का कहना है, उसने मजुमदार की ही ओर से कार्यवाही की है।

महीन्द्र ने अविचलित भाव से फैसला सुना। यह सबने विस्मय के साथ देखा। जज ने फैसला सुनाकर इजलास उठ जाने के बाद कहा—'I admire his boldness! मैं उसके साहस की प्रशंसा करता हूँ।'

सरकारी वकील हँसकर बोले—Yes Sir, इसके पितामह सन्थाल-विद्रोह के समय सन्थालों के साथ होकर लड़ाई में मारे गये। सामन्त-वंश का शुद्ध रक्त इनके शरीर में है।

महीन्द्र ने सम्पत्ति नीलाम की बात नहीं सुनी। उसने अपनी सजा को ही परिवार का अभाग्य मान मजुमदार को बुलाकर कहा—दुःखी मत होइयेगा। अपील की भी आवश्यकता नहीं है। जब मैं स्वयं स्वीकार कर रहा हूँ, तब अपील से लाभ नहीं होगा। सब कुछ स्वाहा हो जाय, तो लूटकर ही क्या होगा? अन्त में क्या राय-घराने से भीख माँगकर खाना पड़ेगा?

इजलास की भीड़ में एक कुर्सी पर अवसन्न की तरह इन्द्रराय बैठे थे।

महीन्द्र ने अन्तिम बात उनकी ही ओर संकेत कर कही थी। यह उनके कान में पड़ी भी, किन्तु वे किसी प्रकार सिर उठाकर देख न सके।

महीन्द्र फिर बोला—यदि पिताजी को खबर न सुनायी जाय, तो अच्छा है। माँ को रोने से मना कर दीजियेगा। पिताजी का भार अब उन्हों पर है। अहि को जितना वह पढ़ना चाहे, पढ़ाया जाय। वह सिर ऊँचा किये हुए हथकड़ी पहनकर सिपाही के साथ चला गया। सबके बाद सिर नीचा किये हुए इन्द्रराय कचहरी से बाहर निकले। वे घर आ एकदम अन्दर जाकर बिछौने पर पड़ गये। उनका मुँह देख हेमांगिनी सिहर उठीं और बहुत सङ्कोच एवं उदासी से पूछा—क्या हुआ?

इन्द्रराय ने इस बात का उत्तर नहीं दिया।

× × × ×

सुनीति ने सारी बातें सुनीं। महीन्द्र का समाचार तो उसी दिन सुना। किन्तु यह समाचार दो दिन बाद दूसरे से मिला। उसी समय गाँवभर में बात फैल गयी थी। सुनीति इन असह्य सङ्कटों में उदासीन न रह सकीं, उन्होंने मजुमदार को बुलाकर पूछा—देवर, क्या यह सत्य है?

मजुमदार निरुत्तर हो अपराधी की तरह खड़े रहे।

सुनीति बोलीं—कहो देवर, कहो। यदि भीख ही माँगनी हो, तो हम छाती पहले से ही मजबूत कर लें। अब मत छिपाओ, कहो।

अब मजुमदार ने कहा—क्या कहूँ बहूजी, मैं उस समय महि के मुकदमे का फैसला सुन—

सुनीति ने कठोरता के साथ बीच में ही पूछा—क्या सब चला गया?

आँखें पोंछ मजुमदार बोले—जी नहीं, देवोत्तर सम्पत्ति, देलगान भूमि, यह गाँव, चक अफजलपुर, इसके बाद खास भूमि—यह सब बची है।

सुनीति चुप हो गयीं। अब उन्हें कुछ जानना नहीं था। कुछ

देर चुप रह मजुमदार बोले—एक काम कर, एक बार चेष्टा कर, देखा जाय, सम्पत्ति लौट भी सकती है। इस दियारे के लिये एक आदमी बहुत दिनों से पीछे पड़ा है, उसको बेच मुकदमा लड़कर देखा जाय, शायद सम्पत्ति वापस मिल जाय।

सुनीति बोलीं—नहीं देवर, दियारा रहने दो। उसी के लिये मेरे महि को कालापानी हुआ है। यह दियारा उनके न आने तक पड़ा रहेगा।

मजुमदार एक लम्बी साँस छोड़कर बोले—तो रहने दीजिये। ऐसा होने पर भी मैं नहीं छोड़ूँगा। एक बार रवि घोषाल के यहाँ जाऊँगा, शायद रुपये लेकर वह सम्पत्ति लौटा दें।

सुनीति ने हँसकर कहा—वे भी तो बहुत रुपये लेंगे; वे रुपये ही कहाँ से दूंगी? तुम तो सब जानते ही हो।

मजुमदार फिर कुछ नहीं बोले, जाने के लिये उठ खड़े हुए। किन्तु सुनीति ने रोककर कहा—थोड़ा और ठहर जाओ देवर। यह बात कुछ दिन बाद ठहरकर कहती, किन्तु ऐसा कर नहीं पाती हूँ। मैंने कहा है कि तुम सब जानते हो, भगवान ने जिस अवस्था में फेंक दिया है, उसमें नौकर, नौकरानी, रसोइयादारिन सभी को जवाब देना पड़ेगा। आपका ही सम्मान महीने-महीने क्या देकर करूँगी देवर!

मजुमदार झटपट बोल उठे—यह तो अच्छा है बहूजी, अब काम ही कौन-सा रह गया है? आदमी की जरूरत ही क्या है? तोभी जब आवश्यकता पड़ेगी, मैं आकर काम कर जाऊँगा। जो कुछ वसूली है, उसको मैं गुमाश्ते के रूप में कर दूंगा। आप केवल नकद रुपये ही वेतन दीजियेगा।

सुनीति ने फिर कुछ नहीं कहा। मजुमदार धीरे-धीरे बाहर चले आये। उसी दिन सुनीति ने मानदा, महराजिन, यहाँ तक कि नौकर को भी जवाब दे दिया। जवाब दे देने पर भी मानदा नहीं गयी। उसने कहा—

मैं नहीं जाऊँगी। आज पचीस वर्षों से यहाँ रहती हूँ, आँखें भी इसी घर में मूँदूंगी। घर नहीं, द्वार नहीं, मैं कहाँ जाऊँ? चाहे झाड़ू मारो, चाहे जूते मारो! मैं यहीं रहूँगी।

इन्द्रराय कचहरी से आकर घर में घुसे, तो दो-तीन दिन बाहर नहीं निकले। अत्यन्त गम्भीर मुँह से घर में घूमते हैं, किसी से बात नहीं करते, यहाँ तक कि दिन में तम्बाकू देने के लिये भी किसी को नहीं बुलाते। उनका ऐसा आचरण देख नौकर-चाकर तो दूर, उनकी प्यारी कन्या उमा भी सामने नहीं जाती। उस दिन हेमांगिनी जाकर उदास भाव से खड़ी हो गयीं। राय ने उनकी ओर देख भौंहें सिकोड़कर चिन्ताकुल गम्भीर भाव से ही पूछा—ऐं?

हेमांगिनी ने धीमे स्वर से उदासी के साथ कहा—एक बात पूछने आयी हूं।

राय का सिर और थोड़ा झुक गया।

हेमांगिनी बोलीं—क्या तुम्हारा शरीर—

बात के बीच में ही पागल की तरह सिर उठाकर राय बोल उठे—तारा—तारा माँ!

हेमांगिनी ने देखा, राय की दोनों आँखें छलछला आयी हैं।

हेमांगिनी ने सिर झुका लिया। राय बोले—लज्जा का बोझा—केवल लज्जा का बोझा नहीं हेम, अपने अपराध का बोझा लिये हुए मैं सिर उठा नहीं पाता हूं। रामेश्वर का बड़ा पुत्र मेरा सिर धूल में मिलाकर चला गया। तारा—तारा माँ! फिर चञ्चलता के साथ कई बार घूमने के बाद राय बोले—हेमांगिनी, मैंने नैनीपाल को नियुक्त किया था। केवल दियारे पर अधिकार करने का ही मेरा उद्देश्य नहीं था। नैनी को मैंने कहा था—यदि तू चक्रवर्तियों का खुल्लमखुल्ला अपमान करे, तो मैं तुझे इनाम दूंगा। किन्तु नैनी ने राधारानी का—मेरी सहोदरा का—अपमान किया।

हेमांगिनी की आँखों में आँसुओं की बाढ़ आ गयी।

राय उत्तेजना के साथ बोलते-बोलते सिहर उठे—ओह! अदालत में महोन्द्र ने क्या कहा, जानती हो? सरकारी वकील ने कहा—मृत नैनीपाल ने जिसका अपमान किया था, वह है आसामी की सौतेली माँ। महोन्द्र ने उसी समय प्रतिवाद किया, 'जिसका' नहीं, जिनका कहिये; वह नहीं वे, और सौतेली माँ नहीं, माँ, मेरी बड़ी माँ कहिये।

लम्बी गहरी साँस छोड़ हेमांगिनी ने उदासी के स्वर में कहा—कालापानी हो गया? दस वर्ष! कई बार घूम अकस्मात् राय ने हेमांगिनी का हाथ पकड़कर कहा—तुम एक बार महोन्द्र की माँ के पास जाओगी हेम?

हेमांगिनी ने स्वामी के मुँह की ओर देखा।

राय ने कहा—मेरे अनुरोध पर जाओ! मुझे प्रायश्चित्त करना पड़ेगा, हेम। रामेश्वर की स्त्री तथा पुत्र की रक्षा करनी पड़ेगी।

हेमांगिनी ने कातर स्वर में कहा—अरे, कौन मुँह लेकर मैं जाऊँगी? क्या कहूँगी? राय फिर सिर झुकाकर टहलने लगे। हेमांगिनी की बात का जवाब उन्हें नहीं मिला। कुछ देर बाद हेमांगिनी अपने को संभालकर बोलीं—उमा को साथ ले जाऊँ। राय बोले—'मैंने तुम्हें भेजा है', हेमांगिनी, तुम यह बात छिपा रखना—तुम जैसे अपने आप मुझ से छिपाकर गयी हो। वे सिर झुकाकर फिर बोले—कहना, योगेश मजुमजार को जवाब दे दें और दियारे की लगान वसूल कर लें।

हेमांगिनी चली गयीं। राय इतने में भीतर से कचहरी में आ एक नौकर से बोले—योगेश मजुमदार को एक बार बुला लाओ तो, कहना, जरूरी काम है। अपने साथ ही लाना।

अपनी कचहरी के फाटक में मजुमदार के प्रवेश करते ही सम्मान प्रकटकर बोले—आइये, आइये मजुमदार महाशय, आइये।

मजुमदार उन्हें प्रणामकर बोले—बाबू, आश्रयहीन मनुष्य को महाशय कहना गाली देना है। मैं आप लोगों का नौकर हूँ।

हँसकर राय बोले—सम्पत्ति होने पर आश्रय होने में कितनी देर लगती है मजुमदार, एक दिन एक क्षण में आ जाता है।

मजुमदार चुपचाप राय के मुँह की ओर देखते रहे। राय बोले—जानते हो मजुमदार, आजकल बड़े-बड़े लोगों के सिर बिकते हैं, मृत्यु के बाद उनका सिर लेकर लोग देखते हैं, कि साधारण लोगों से उनके मस्तिष्क में क्या अन्तर है। मैं भी तुम्हारी दो-एक हड्डियाँ मोल लेना चाहता हूँ, पाँसा तैयार कराऊँगा।

मजुमदार के मुँह और नेत्र लाल हो गये, किन्तु मुँह से कुछ बोल न सके। राय ने फिर कहा—हँसी की है, क्रोध मत करना। अभी एक काम मेरा कर दो, कह-सुनकर दियारा मेरे हाथ बेच दो। उसके लिये गाँव में आज भी मेरा सिर नीचा है।

मजुमदार ने अब गला साफकर कहा—दियारा तो वे बेचेंगे नहीं राय महाशय।

वे? वे कौन? तुम्हीं तो इस समय मालिक हो।

मेरा जवाब हो गया।

जवाब हो गया? किसने दिया? क्या रामेश्वर अब भी इस पर दृष्टि रखते हैं?

जी नहीं। वे एकदम काम से बाहर हो गये हैं। जवाब बहू जी ने दिया है।

बहुत देर चुप रहकर राय ने कहा—सुनता हूँ, वे बहुत अच्छी हैं; सावित्री के समान रामेश्वर की सेवा करती हैं। इधर से भी बुद्धिमती जान पड़ती हैं। ऐसा न होने पर तुम कुछ बाकी भी न छोड़ते। बाघ थोड़ा खाकर इच्छा न होने पर छोड़ जाता है, किन्तु

साँप का उपाय नहीं है। निगलना आरम्भ कर देने पर उसे समाप्त करना ही पड़ता है। किन्तु यह काम तुमने अच्छा नहीं किया, मजुमदार!

अब मजुमदार बोले—रुपये भी तो मैंने पांच हजार दिये हैं।

सो तो दिये ही हैं; किन्तु मुकदमे के खर्च में से आधा तो तुम्हारे ही घर गया है मजुमदार। मैं तो सब कुछ जानता हूँ। मेरा दुःख तो रह ही गया, मैं चक्रवर्तियों का नाश न कर सका।

मजुमदार ने जवाब दिया—पन्द्रह आने तीन पैसे तो आप का ही किया हुआ है बाबू, नैनोपाल को तो आपने ही खड़ा किया था।

राय ने एक लम्बी साँस छोड़कर कहा—उससे मैं सुखी नहीं हो सका योगेश। मैं जीवन में कभी इतना अपमानित नहीं हुआ। रामेश्वर का बड़ा लड़का मेरे मुँह में चूना-कालिख लगा गया। वही कालिख मुझे धोनी पड़ेगी। यही बात कहने के लिये तुम्हें बुलाया है। अब तुम लालच छोड़ दो। उस दियारे की ओर हाथ मत बढ़ाना। वह रामेश्वर के लड़कों के पास ही रहे। वे न जानें, किन्तु तुम जान लो, अब मैं उनका रक्षक हो गया।

मजुमदार बोल न सके। वह अपनी हथेली की रेखाओं को देख, जान पड़ता है, अपनी भाग्य-लिपि पढ़ने की चेष्टा करने लगे। राय सहसा बोले—साइकिल पर वह रामेश्वर का छोटा पुत्र है न?

सामने रास्ते पर एक आदमी बहुत तेजी से साइकिल पर जा रहा था, चाल की तेजी के कारण ठीक-ठीक पहचान न होने पर भी भूल की गुञ्जाइश नहीं थी। सवार का खूब गोरा रङ्ग और उसके सिर पर के भूरे केश हवा में उड़ रहे हैं, चक्रवर्तियों की पताका के समान उड़ रहे हैं। मजुमदार ने देखकर कहा—जी हाँ, प्यारा अहीन्द्र ही है।

राय बोले—पुकारो तो, पुकारो तो उसे। वह इतनी 'उतावली' के साथ कहाँ से आ रहा है! मजुमदार चंचल हो गये। उन्होंने बार-बार

पुकारा—अहि, अहि, सुनो, सुनो ! चलती हुई गाड़ी के ऊपर से ही वह मुँह घुमा एक हाथ उठाकर बोला—आता हूं। दूसरे ही क्षण वह रास्ते की मोड़ घूमकर लापता हो गया। मजुमदार चंचल होकर कहने लगे—मैं जाता हूँ बाबू। देखूँ, अहि इस प्रकार कहाँ से आया है; क्या बात है, मालूम करूँ।

राय बोले—वह ख़बर मुझे सुनाना मजुमदार।

तेजी से गाड़ी चलाकर द्वार पर पहुंचते ही अहीन्द्र एक प्रकार कूद कर ही उतरा। गाड़ी से उतर घर में जाने के लिये भी वह दौड़ ही रहा था। किन्तु सूनसान घर में से धीरे-धीरे रोने की आवाज उसके कान में पड़ते ही उसकी चाल धीमी हो गयी। सारी उत्तेजना मर-सी गयी। धीरे-धीरे मकान में प्रवेशकर उसने पुकारा—माँ।

दोपहर के सन्नाटे में सुनीति अपनी वेदना कम कर रही थीं, धीरे-धीरे विलाप कर रही थीं। अहि की आवाज सुन वे आँखें पोंछ बाहर आयीं और बोलीं—'देर कर दी अहि ? कल ही लौट आने को कह गया था !' उनकी आवाज में शंका का चिह्न था।

अहि बोला—हेडमास्टर साहब कल लौटकर नहीं आये मां, वे आज सवेरे नौ बजे लौटे हैं।

परीक्षा का फल निकला है ?

हां, माँ।

तेरा परीक्षा-फल ?

पास हो गया माँ !

तो बतलाता क्यों नहीं ? सुनीति का मुँह उज्ज्वल हो गया।

कहते अच्छा नहीं लगता माँ। एक लम्बी साँस छोड़ अहि बोला—भैया ने मुझ से कहा था—अच्छी तरह पास होने पर एक घड़ी खरीद देंगे,—एक रिस्टवाच। सुनीति की आंखों से फिर जल झरने लगा।

अहि बोला—मैं बड़ा अकृतज्ञ हूँ माँ ! मास्टर साहब बोले—कम्पोट तुम कर नहीं सकते, डिविजनल स्कालरशिप तुम्हें मिलेगी। जिस कालेज में जाओगे, वहां बहुत सुविधायें मिलेंगी। कहां पढ़ोगे, ठीक कर डालो। मैं यह सुन अपने को भूलकर दौड़ आया। रास्ते भर में भैया की बात एक बार भी याद नहीं पड़ी माँ। मकान में आते ही रोने की तुम्हारी आवाज सुनकर ख्याल आ गया, भैया की याद आ गयी।

सुनीति ने पुत्र को छाती से लगाकर कहा—तुम अच्छी तरह पढ़कर जल्द-जल्द पास कर लो। इसके बाद तुम जज होगे। देखना, इस तरह का अन्याय जिसमें किसी पर न होने पावे। इसी बीच महि लौट आयेगा। वह घरपर रहकर पारिवारिक काम देखेगा। तू वहां से रुपये भेजा करेगा।

अहि बोला—एक बात का पता लगाया है माँ। भैया को दस वर्ष रहना नहीं पड़ेगा ! हर महीने चार-पाँच दिन माफ होते हैं। साल में अच्छा व्यवहार करने पर दो-तीन महीनों की छूट मिलती है। ऐसा होने पर दस के तिगुने तीस महीने—ढाई वर्ष—दस वर्ष में कम हो जायेंगे। साढ़े सात वर्ष रहना पड़ेगा। आजकल कालापानी होने पर भी अण्डमान नहीं भेजा जाता, देश की ही जेल में रखा जाता है।

रामेश्वर खाँसने लगे। उनका शब्द सुनते ही चौंक सुनीति बोलीं—बाबू को प्रणाम कर आ अहि, उनको खबर दे आऊँ, उनकी बात ही हम सब भूल जाते हैं।

मिट्टी की मूर्त्ति के समान रामेश्वर उसी चारपाई पर बैठे थे। सुनीति ने वास्तव में आनन्द की हँसी हँसकर कहा—हे, तुम्हारे अहि ने पास किया है, स्कालर शिप पाया है।

अहि ने रामेश्वर को प्रणाम किया। रामेश्वर ने हाथ बढ़ाकर उसे पास बिठा लिया और कहा—पास हुए हो ? स्कालरशिप पायी है ?

हाँ, इसे आशीर्वाद दो।

हाँ, हाँ।

यह अब कालेज में पढ़ेगा। जहाँ जायगा, वहीं इसे बहुत सुविधायें मिलेंगी।

वाह! वाह! राजा दिलीप के पुत्र रघु ने सारे वंश का मुख उज्ज्वल किया था, उन्हों के नाम पर वंश का भी नाम पड़ गया रघुवंश। तुमने रघुवंश पढ़ा है अहि, महाकवि कालिदास का रघुवंश "वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागार्थो प्रतिपत्तये—जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।"

अहि ने अब कहा—स्कूल में तो ये सब महाकाव्य पढ़ाये नहीं जाते, अब कालेज में पढ़ूंगा।

अंग्रेजों के एक महाकवि हैं। उनका नाम है शेक्सपियर। वह सब तो पढ़ते हो?

हाँ, शेक्सपियर पढ़ना पड़ेगा बी० ए० में।

इसके उत्तर में रामेश्वर ने कुछ नहीं कहा—वे सहसा गम्भीर होकर बोले—जाओ, तुम इस समय टहल आओ।

सुनीति बोलीं—ना, ना! इसने अभी खाया नहीं है। तू यहीं बैठ अहि—मैं यहीं भोजन ला देती हूं।

रामेश्वर ने कड़वे स्वर में कहा—ना, ना। जाओ अहि, साबुन लगाकर अच्छी तरह हाथ-मुँह धो डालो, अथवा स्नान ही कर डालो। इसके बाद भोजन करना।

पिता की अनिच्छा अहीन्द्र ने समझ ली, वह झटपट घर से बाहर हो गया।

सुनीति ने आँखों में आँसू भरकर कहा—क्यों तुमने उसे इस तरह हटा दिया?

इसी लिये--

बात काटकर अपने दोनों हाथ मलते-मलते रामेश्वर बोले—छूत, छूत, कोढ़।

सुनीति ने ऊँचे स्वर से प्रतिवाद किया—ना, ना। कविराज ने कहा है, डाक्टर ने कहा है, रक्त की परीक्षा कर देखा गया है, वह रोग तुम्हें नहीं है।

वे जानते नहीं, वे कुछ नहीं जानते। बाहर सीढ़ी पर पैर की आहट पा रामेश्वर चुप हो गये। दरवाजे पर हल्का धक्का देकर अहीन्द्र ने पुकारा—माँ!

आती हूँ अहि। सुनीति चिढ़कर हो जा रही थीं; किन्तु अहीन्द्र ने दरवाजा खोल घर में प्रवेश किया। उसके पीछे थीं राय-पत्नी हेमांगिनी—इन्द्रराय की स्त्री।

दस

बहुत दिनों के बाद हेमांगिनी ने रामेश्वर को देखा। रामेश्वर का स्मरण आते ही उनकी स्मृति में रामेश्वर की उस समय की छवि आ जाती। भूरे नेत्र, भूरे केश, कुछ गोरा शरीर, विलासी, कौतुक और हँसी से उज्ज्वल एक युवक की मूर्ति स्मरण हो आती। और आज इस बन्द अंधेरे घर में दुःखी, उदास और शंकित एक जीर्ण अधेड़ को देख वे सिहर उठीं। आँखों में जल भर आया। सुनीति के साथ घनिष्ठ परिचय न होने पर भी एक ने दूसरे को सामाजिक क्षेत्र में देखा था, अतः उनके पहचानने में सुनीति को देर न लगी। उन्होंने अत्यन्त धीरता के साथ उनका स्वागत कर कहा—आइये, आइये बहन, आइये। झटपट उन्होंने एक आसन बिछा दिया।

हेमांगिनी ने संकोच के साथ कहा—इतनी खातिरदारी से मुझे लाज लगेगी बहन। यहाँ तो मेरी खातिरदारी उचित नहीं है। तुम तो मेरी सम्माननीया हो। किन्तु "बहन" कहकर सम्मान कर दिया, मैं बैठती हूँ। आसन पर बैठ सब से पहले उन्होंने आँखें पोंछीं। इसके बाद मीठे स्वर में सुनीति से पूछा—जान पड़ता है, पुरानी बातें इन्हें भूल गयी हैं, है न?

ना, ना। आप हैं राय-पत्नी, राय-पत्नी। धीरे से बोलने पर भी

रामेश्वर ने सुन लिया था। उन्होंने लम्बी साँस छोड़, अत्यन्त करुणा पूर्ण रीति से गर्दन हिलाकर कई बातें कहीं।

हेमांगिनी की आँखों में फिर जल भर आया। उन्होंने अपने को संभालकर कहा—ना, आप पहचान नहीं सके। आपने आदर और सम्मान के साथ मेरा जो नाम रखा था, उस नाम से तो पुकारा नहीं?

रामेश्वर बोले—भूल जाइये राय-पत्नी, वह बात भूल जाइये। जहाँ दुःख ही है प्रधान, राय-पत्नी, वहाँ सुख के स्मरण से क्या लाभ भगवान रस-स्वरूप हैं, उन्होंने जिसे छोड़ दिया है, वह व्यक्ति, दूसरों को देने के लिये, रस कहाँ पायेगा?

हेमांगिनी ने गहरे प्रेम से भरे हुए स्वर में कहा—ना, ना—यह आप क्या कह रहे हैं? भगवान के त्यागने पर क्या सुनीति आपके घर आतीं अहि को ओर संकेत कर बोलीं—ऐसा चन्द्रमा के समान पुत्र घर में प्रकाश करता?

रामेश्वर हँसे—अद्भुत् हँसी। न देखने पर उसकी कल्पना नहीं हो सकती।

सूर्य को ग्रहण लग गया राय-पत्नी, अब चन्द्रमा का ही भरोसा है देखूँ, आप लोगों का आशीर्वाद!

चाहे कितने भी यत्न तथा निपुणता से शृङ्गार क्यों न किया जाय दिन के प्रकाश में उसके भीतर का स्वरूप जिस प्रकार प्रकाशित होता रहता है, उसी प्रकार रामेश्वर के रूपक के भीतर से हाल में होनेवाली घटना के मार्मिक आघात का दुःख प्रकट हो ही गया। एक साथ ही सुनीति तथा राय-पत्नी की आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे। अहि अधिक सहन न कर सका। वह चुपचाप घर से बाहर चला गया।

रामेश्वर ने सुनीति को सम्बोधितकर कहा—अहि को भोजन दे दो, सुनीति। उसने तो अब तक कुछ नहीं खाया है।

हेमांगिनी ने चंचल होकर कहा—यह क्या ! मैंने तुम्हें बैठा रखा है, बहन ! और उसने अब तक नहीं खाया ?

अब पहली बार सुनीति बोलीं—शहर से अभी लौटा है। इसीसे देर हो गयी। परीक्षा-फल निकला है, इसी कारण दोपहर के समय विना खाये ही भागा आया है।

स्नेह के साथ हँसकर हेमांगिनी ने कहा—मेरा बच्चा निश्चय पास हुआ है ! यह तो बड़ा अच्छा लड़का है !

मुँह उज्ज्वल कर सुनीति बोलीं—हाँ बहन, आपके आशीर्वाद से खूब अच्छी तरह पास हुआ है, अहि ! डिविजन में फर्स्ट हुआ है, स्कालरशिप पायेगा।

अकस्मात् दूसरे प्रसंग के बीच से अत्यन्त स्वाभाविकता के साथ—पंक से पंकज की उत्पत्ति के समान, दुःख का स्तर नीचाकर, आनन्द के कारण, सब लोग एक उज्ज्वल प्रकाश से प्रकाशित हो उठे। हेमांगिनी बोलीं—शिव के ललाट के चन्द्रमा का क्षय नहीं होता, चक्रवर्ती महाशय, यह चन्द्रमा आपका अक्षय है।

रामेश्वर बोले—मंगल हो आपका, अमोघ हो आपका आशीर्वाद !

सुनीति ने हेमांगिनी की पद-धूल ले उन्हें प्रणाम किया। हेमांगिनी बोलीं—जाओ, तुम लड़के को भोजन दे आओ, मैं चक्रवर्ती महाशय के निकट बैठती हूँ।

हेमांगिनी ने कहा—कितने दिन सोचा था, आकर आप को देख जाऊँ, किन्तु ऐसा कर न सकी। और सोचा—जाने दो, जब सब छूट ही गया, तो छूट ही जाय। किन्तु यह भी नहीं हुआ, छोड़ा भी नहीं गया। पत्थर की निशानी क्षय होकर मिट जाती है, किन्तु मन का दाग कभी नहीं छूटता। मैं आज और रह न सकी। अपराध तो हमारा ही है, इसके लिये वे ही जिम्मेदार हैं।

कौन ? इन्द्र ? ना, ना, राय-पत्नी, जिम्मेवार मैं हूँ। इन्द्र हैं कारण। सब का लेखा लगाकर देखा है। चित्रगुप्त की हिसाब की बही में कभी-कभी मैं झाँककर देख लिया करता हूँ न।

हेमांगिनी लम्बी साँस लेकर चुप हो रहीं। कुछ देर बाद बोलीं—किन्तु इस प्रकार टूटकर पड़े रहने से तो चलेगा नहीं, चक्रवर्ती महाशय। सुनीति की ओर, लड़के की ओर निहारकर, उनके मुँह देखिये तो छाती फट जाती है रायपत्नी, छाती फट जाती है। किन्तु क्या करूँ, कुछ उपाय नहीं है।

उपाय आपको करना होना, उठकर खड़ा होना होगा।

कैसे उठकर खड़ा होऊँगा! दिन के प्रकाश में मेरी आँखों में असह्य पीड़ा होती है। इसके बाद—आप से छिपाऊँगा नहीं, राय-पत्नी, मेरे हाथ में कोढ़ हुआ है।

हेमांगिनी चकित हो गयीं।

रामेश्वर बोले—ये सब विश्वास नहीं करते—कविराज कहते हैं, नहीं; डाक्टर कहते हैं, नहीं; जो रक्त-परीक्षा करता है, वह कहता है, नहीं; सुनीति कहती है, नहीं—सभी मूर्ख हैं। रायपत्नी, भगवान के विधान का अटल रहस्य इनकी समझ में नहीं आता। जानती हैं, आयुर्वेद में क्या है? जहाँ मृत्यु अवश्यम्भावी है, रोग जहाँ कर्मों का फल है, वहाँ चिकित्सक की भूल होगी ही। एक बार नहीं, सौ बार देखने पर सौ बार भूल होगी!

हेमांगिनी सतर्क दृष्टि से रामेश्वर के सब अंग देख रही थीं। उन्हें कहीं तनिक भी विकार दिखायी नहीं पड़ा। उन्होंने सुना था, आज प्रत्यक्ष देखा, रोग का ख्याल ही पागलपन का लक्षण है! वे बोलीं—नहीं चक्रवर्ती महाशय, यह आपकी भूल है। कहीं एक विन्दु भी कुछ नहीं है।

हाथों की दसों उँगलियाँ फैलाकर रामेश्वर बोले—इन उँगलियों में, इन उँगलियों

अहीन्द्र का भोजन प्रायः समाप्त हो चला था। सुनीति पंखा झल रही थीं। हेमांगिनी ऊपर से उतर आयीं। आज तो जा रही हूँ, बहन।

सुनीति बोलीं—सब समय तो ननदोई से बातें होती रहीं, क्या मेरे पास तनिक भी नहीं बैठेगी, दीद

साथ बातचीत करने की कितनी साध है, यह और एक दिन बतलाऊँगी, सुनीति। चक्रवर्ती महाशय ने जब तुम्हारे साथ व्याह किया, तब तुम पर ही क्रोध आया था, अकारण क्रोध। इसके बाद जितना ही देखती, उतना ही तुम से बातकर तुम्हें छाती से लगाये रखने की साध होती। बहुत बातें हैं, और किसी दिन कहूंगी। आज जाती हूँ। जानती हो, छिपकर किन्तु एक बात कह जाती हूँ; यही कहने के लिये मैं आयी हूँ। तुम मजुमदार को हटा दो—उनसे मैंने सुना है, तुम्हारी सम्पत्ति स्वयं ही दूसरे के नाम से ले ली है।

सुनीति एक लम्बी साँस छोड़कर बोलीं—जानती हूं, दीदी, मैंने उसे जवाब भी दे दिया है। किन्तु आश्चर्य की बात यह है, कि तोभी वह यहाँ आता है; और न कहने पर भी काम-काज कर देता है।

हेमांगिनी बोलीं—वह भी बन्द कर देने की आवश्यकता है, बहन; जो इस प्रकार विश्वासघात कर सकता है, उसका विश्वास ही क्या है?

अब बार-बार कह रहा है—दियारा बेच डालिये, बहुत रुपये मिलेंगे।

ना, ना; ऐसा करना मत, बहन। मैंने उनसे सुना है, दियारे से तुम्हें बहुत लाभ होगा, आय बढ़ेगी।

किन्तु दियारे के लिये सारे गाँव का झगड़ा है दीदी, मैं कैसे सम्भाल पाऊँगी? और झगड़ा न मिटने पर बन्दोबस्त कैसे करूँगी?

सन्थालों को बुलाकर तुम लोग लगान वसूल कर लो, सुनीति। मैं इतना कह जाती हूँ, तुम्हारे भैया कुछ आपत्ति नहीं करेंगे। यदि कोई और करेगा, तो उसमें भी वे तुम्हारी ही सहायता करेंगे।

सुनीति ने कृतज्ञताभरी दृष्टि से हेमांगिनी की ओर देखकर कहा—उनको मेरा प्रणाम कहियेगा, दीदी, कहियेगा—

रोककर हेमांगिनी बोलीं—ऐसा न कर पाऊँगी, कह दिया है न छिपाकर आयी हूँ।

\+ + + +

मानदा नौकरानी नहीं गयी, घर-द्वार नहीं है—कहकर अब भी यहीं है। नियमित रूप से अपने काम करती है। वह सुनीति के मना करने पर भी नहीं मानती। वरन् इस समय उसका काम बढ़ गया है।

बढ़ाया है, उसने स्वयं ही बढ़ा लिया है। सदर कचहरी का नौकर चला गया है, नायब भी नहीं है। किन्तु तोभी सफाई की आवश्यकता है। उसने आवश्यकता स्वयं ही निकालकर अपनी गर्दन पर काम बढ़ा लिया है। इसके बाद सवेरे-सन्ध्या द्वार पर जल, दीपक का प्रकाश, धूप का धुआँ—यह सब तो देना ही पड़ता है। हिन्दू का घर है, माँ-लक्ष्मी रुष्ट हो जायँगी न?

सुनीति ने मना किया था, किन्तु मानदा ने कहा था—जब तक मैं हूँ, करती हूँ; इसके बाद आपलोगों की जैसी इच्छा हो, कीजियेगा। उस समय पैसा बचाने के लिए यदि आप गोबर से लीपियेगा—लीपियेगा, मैं तो देखने नहीं आऊँगी। कचहरीघर को वह दोपहर के समय साफ करती है। खाने-पीने के बाद विश्राम का समय है, उस समय बाहर आदमी नहीं रहते, उसी समय वह काम कर डालती है। उसे अपने लिये लाज नहीं है, नौकर की जगह नौकरानी के कचहरी साफ करने पर कोई कुछ कहे न, रायघराने के लड़के गाना बना डालेंगे। उस दिन उसने

तख्तपोश के ऊपर पड़ी हुई चादर लेकर सारे फर्श को ठीककर झाड़ू दे रही थी और गुनगुना रही थी। इतने बड़े घर में अकेले काज करने पर भी कैसे गाना गाने लगती है? दो-एक बार बड़े दर्पण के सम्मुख खड़ी हो जीभ तथा होंठ निकालकर देखती है कि पान से कैसे लाल हुए हैं! स्नान के बाद से ही केश खुले रहते हैं, उन खुले केशों को भी इसी समय बाँधती है। आज सहसा उसका गाना बन्द हो गया—जान पड़ा, बहुत से लोग जैसे कचहरी के बाहरी आँगन में बातचीत कर रहे हैं। झाड़ू देना बन्दकर सिटकिनी लगाये हुए दरवाजे की सिटकिनी खोल उसने देखा—संथाल दल बाँधकर आये हैं।

सूनसान कचहरी के बन्द दरवाजे की ओर देख चिन्ता के साथ वे न जाने क्या कह रहे थे। मानदा घर के भीतर-ही-भीतर सुनीति के पास जाकर बोली—संथाल आकर दल बाँधकर खड़े हैं माँ। वे न जाने क्या कह रहे हैं! मैं इसी गली-गली से जाकर नायब बाबू को पुकारूँ?

सुनीति बोलीं—नहीं। अहि को पुकार, वह ऊपर अपने घर ही में है।

अहीन्द्र के आकर सामने खड़े हो जाने पर माँझियों का दल कलरव कर उठा—लाल बाबू हैं! अहीन्द्र साधारणतया यहाँ रहता नहीं, उन्होंने मजुमदार की आशा की थी। अनायास अहीन्द्र को पाकर वे बहुत खुश हो गये। अहीन्द्र ने पूछा—क्यों, तुमलोग कैसे हो?

ठकाठक उन्होंने प्रणाम किया। कमल माँझी हाथ जोड़कर बोला—अच्छी तरह हैं। आप कैसे आये बाबू! हम सब आपको कितना याद करते हैं, कितना खोजते हैं। कहते हैं, हमारे लाल बाबू आते क्यों नहीं, स्त्रियाँ भी पूछती हैं।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—मैं पढ़ने गया था माँझी।

क-ख-अ-आ यही सब? कि रिंजी, फर्सी, बाबू?

हाँ, बहुत पढ़ना होता है। अब तुमलोग कहाँ आये हो ?

आप ही के पास तो आये हैं। कहते हैं, हमारी भूमि की लगान तुम ले लो, हमलोगों को चेक-रसीद दे दो। ऐसा न होने पर कैसे रहेंगे ?

लगान कौन लेगा, अब भी यह ठीक नहीं हुआ है माँझी। उसके ठीक—

रोककर कमल ने कहा—नहीं, सब ठीक हो गया। उन्हीं राय हुजूर ने सब ठीक कर दिया। हमसे बोले—दियारा तुम्हारे लाल बाबू का ठीक हो गया माँझी। लगान उसी कचहरी में देनी होगी। इसीसे तो भागा आया हूँ।

हेमांगिनी की दोपहर की बात अहीन्द्र को स्मरण हो आयी। उसने अब सन्देह न कर कहा—दो तो, दे जाओ।

कुछ देर चुपचाप देखते रहने के बाद माँझी ने विनय के साथ कहा—बाबू, आप क्या कह रहे हैं ? जमीन को नापना पड़ेगा, इसके बाद हिसाब करना होगा, अपने खाते में नाम लिखना पड़ेगा—यह सब करो पहले। नहीं तो कैसे देंगे ?

अहीन्द्र ने परेशान होकर कहा—यह तो नहीं कर पाऊँगा माँझी। मैं तो यह सब नहीं जानता। फिर भी मैं उसका प्रबन्ध कर देता हूँ, समझा न ?

माँझी अचरज में पड़ गया—तो आपने कौन-सी विद्या सीखी है ?

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—पढ़ी बहुत-सी पुस्तकें हैं, माँझी ; अनेक देशों की बातें, कितने बड़े-बड़े वीरों की बातें, कितने युद्धों की बातें !

हैं, वे सब किस गांव की बातें हैं ? वीर किसे कहते हैं ? वे सब कहां हैं ?

इस पृथ्वी पर अनेक देश हैं। उन सब देशों और उन्हीं के बड़े-बड़े वीरों की बातें पुस्तकों में लिखी हैं मांझी। कितनी और भी बातें हैं।

इस आकाश में सूर्य निकलता चन्द्रमा निकलता है—ये सब बातें भी लिखी हैं।

हाँ, माँझी के नेत्र तथा मुँह पर विस्मय छा गया। वह मुँह फेरकर अपने दल के सब लोगों से अपनी भाषा में बोला—लाल बाबू कितना जानते हैं!

साथियों का दल लाल बाबू की प्रशंसा में कोलाहल कर उठा। कमल बोला—हाँ बाबू, यह पिरिथिमी—यह धरती माता—इसको किसने बनाया? क्या लिखा है पोथियों में तुम्हारी?

अहीन्द्र ने कहा—पृथ्वी है एक ग्रह, समझा? आकाश में रात के समय जो तारे निकलते हैं, यह भी वही एक तारा है। आगे पृथ्वी धाँय-धाँय कर जलती थी, जिस प्रकार कड़ाही में गुड़ अथवा रस खौलता है उसी प्रकार।

माँझी ने गर्दन हिलाकर कहा—उँ हुं, तुझे अब भी बहुत पढ़न होगा। पिरिथिमी में आगे था जल। कुछ नहीं, केवल जल था। इसके बाद क्या हुआ, सुनो। —कहकर उसने मोटे स्वर में आरम्भ किया—

अन्य जनम् कु धरति लेगुम्
अथ जनम् कु मानोया हड़
मान मान कु मानोया हड़
धरति को डाबा ओ आ कादा
धरति सानाम् कु डाबा ओ किदा।

गाना समाप्त कर माँझी बोला—पहले था जल—केवल जल। इसके बाद हुआ—'अथ जनम् कु धरति लेगुम्' लेगुम् ने शरीर से मिट्टी निकाल कर धरती बनायी—मिट्टी बनायी। लेगुम् है वही, जिससे तुमलोग मछलियाँ पकड़ते हो, केंचुआ, हाँ, केंचुआ। देखते क्यों हो—आज भी उसके शरीर से मिट्टी निकलती है। इसके बाद हुआ—'अथ जनम् कु

ानोया हड़', कहता है—मिट्टी से बना मनुष्य, 'मान मान कु मानोया ड़' मनुष्य-मनुष्य—केवल मनुष्य। इसके बाद 'धरति तु डाबा ओ कादा' र्थात्—मनुष्य ने बनायो धरती। मिट्टी खोदकर खेती, फस्ल हुई। धरति खानाम् कु डाबा ओ किदा'—एक बार समस्त धरती पर खेती से नेक फस्लें हुईं।

अहीन्द्र हँसकर बोला—तुम्हारा गाना और तुम्हारी कहानी बहुत च्छी लगी।

माँझी फिर बोला—धरती—मिट्टी—बनी, तुम्हारे लेगुम्—केंचुआ, ोड़े से।

अहीन्द्र ने उसे उत्साह देकर कहा—ये बातें तो मैं जानता हीं, माँझी।

उत्साह पा माँझी ठीक से बैठकर बोला—तो सुनिये आप, मैं तलाता हूँ—ठाकुर जानते हो बाबू, ठाकुर—भगवान? उसने पहले जल नाया—सब जल हो गया, उस समय उसने दो हाँसिल, हाँसिल, नाया, हाँसिल—हाँसिल हुए पक्षी। समझते हैं न? तो उन दोनों क्षियों ने ठाकुर से कहा—तू ने हमें बना तो दिया, किन्तु हम रहेंगे हाँ? खायेंगे क्या? ठाकुर बोले—हाँ, यह तो है! उस समय ठाकुर बुलाया मगर को, और कहा—तुम मिट्टी निकाल सकते हो? मगर ला—आपके कहने से निकाल सकता हूँ। मगर ने मिट्टी निकाली, न्तु वह सब मिट्टी जल में गलकर खतम हो गई। उस समय ठाकुर ने लाया, इचा होका को—बड़ी मछली को, उसकी मिट्टी भी गल गयी। पके बाद आया काटकम, उसे क्या कहते हो तुम लोग? अहा, काटकम ा हिन्दी न बता सकने से माँझी चिन्तित हो गया।

कठपुतली का उस्ताद माँझी बात में सम्मिलित हो गया, काँकूड़ि—कड़ा कहते हैं बाबू लोग। वही, जिसके लम्बे पैर होते हैं। कमल

माँझी ने कहा—हाँ। केकड़े को बुलाया उस समय ठाकुर ने और कहा—मिट्टी निकालो तुम। उसने मिट्टी निकाली, किन्तु वह भी गल गयी। उस समय ठाकुर ने बुलाया 'लेगुम्'—केंचुए को! पूछा—तुम मिट्टी निकाल सकते हो? वह बोला—निकाल सकता हूँ, अब आप हारो को भी बुलाइये। हारो है तुम्हारा 'कछुआ'। कछुआ आया। केंचुए ने किया क्या—उसको जल के ऊपर खड़ा कराया, और उसके पैर जंजीर से बाँध दिये। इसके बाद केंचुए ने उसकी पीठ के ऊपर अपनी दुम रखी और मुँह डुबो दिया जल के भीतर। मुँह से मिट्टी खाता और दुम से निकालकर कछुए की पीठ पर रखता। उस समय वह फिर न गल सकी। इसी प्रकार मिट्टी निकालते-निकालते पृथ्वी भर गयी। सारी कहानी सुनाकर कमल अपनी विद्वत्ता पर हँसने लगा और बोला—समझे, बाबू? यह सब तुम्हें सीखना पड़ेगा।

सन्थालों की इस पुरानी कहानी से अहीन्द्र को बहुत अचरज हुआ। इनमें भी इस प्रकार की पौराणिक कथायें हैं, वह इन्हें नहीं जानता था। पीछे से कठपुतलियों के उस्ताद ने कहा—सरदार! तुम तो कहानी में ही डूब गये। जमीन की बात पक्की कर डालो। यह ज्ञान में कमल का जोड़ीदार है। सरदार की 'पण्डिताई' उसे सहन नहीं हुई, इसके अलावा वह शुद्ध सांसारिक मनुष्य, दुनिया के काम में पक्का है, अन्य माँझियों ने भी कठपुतली के उस्ताद की बात का समर्थन किया।

कमल थोड़ा रंज हुआ था, किन्तु सब का समर्थन देख, उसने प्रतिवाद नहीं किया। अहीन्द्र के मुँह की ओर देखकर बोला—बाबू महाशय!

अहीन्द्र हँसकर बोला—तुम्हारी यह कहानी खूब अच्छी है, माँझी, बहुत अच्छी है।

हुँ, खूब अच्छी तो है! हाँ बाबू, तो हमारा क्या करोगे?

कह दिया न, आदमी भेज दूंगा ।

उ हुं । तुम्हें स्वयं जाना पड़ेगा । वे सब चोर हैं ।

कमल की दोनों आँखें जल उठीं । उसने कहा—सुनो, लाल बाबू, इसलिये मुझे क्रोध आया । बड़ी-बड़ी हाँड़ियों में घी ले जाता, दूकान-वाला घी लेता । वह एक सेर से अधिक कभी न होता । महाजन का क्या यही धर्म माँझियों की हड्डी चबाकर खा गया । गुमाश्ते ने रुपये ले लिये, किन्तु रसीद नहीं दी । लगान के लिये जमीन नीलाम करा ली । लगान बढ़ाया । कहा—जमीन बढ़ाओ तो लगान बढ़ेगी, नहीं तो कैसे बढ़ेगी ? बाप-दादों ने जंगल काटकर खेत बनाये, हमने लगान दी, नीलाम कैसे होगी उसने नहीं सुना । उस समय हम क्रोधित हुए । सिधु, कानु , सुभा ठाकुर (सूबेदार) हुआ—एक रात में हुआ । जानते हो बाबू, रात में ही लोग बड़े होते हैं और रात में ही छोटे होते हैं । सुभा, सिधु, कानु ने हुक्म दिया, हम बगावत करेंगे । तुम्हारे दादा—पिता के पिता—लालदेव ठाकुर ने कहा—बगावत करो, तुम लोग बागी हो जाओ । इसी को लेकर हमारे पिताओं के साथ लालदेव ठाकुर ने बगावत कर दी । तब महाजन को पकड़ लिया । एक-एक कर उँगलियाँ काटीं और कहा—लो, बजाओ रुपये, बजाओ ! दाढ़ीवाले महाजन जमींदार को पकड़ा, अच्छे बकरे की तरह उसे काट दिया । एक गुमाश्ता जल में घुसा, उसे तीर से छेद दिया । इसके बाद बाहर निकालकर पहले उसके पैर काटे । कहा—यह ले चार आने सूद । इसके बाद कमर काटी, यह ले आठ आने सूद और लगान । दोनों हाथ काटे और कहा—बारह आने—सूद, लगान और त्योहारी । इसके बाद काटा सिर और कहा—यह लो सोलह आने—चुकती, बिबाक ।

कमल चुप हो गया । सारे घर में सन्नाटा छा गया ; जैसे सब

उदास हो गये। अहीन्द्र चुपचाप विस्मय के साथ देख रहा था, सुप्त ज्वालामुखी के समान उस कमल की ओर। सन्थाल भी चुप थे। उन पर जैसे कैसी उदासी छा गयी थी!

कमल ही फिर बोला—इस बार उसका मुँह भी उदास था। कण्ठ-स्वर में प्रार्थना थी, इसीसे कहता हूँ, बाबू।

अहीन्द्र अब बोला—फिर ठगे जाने से तुम बगावत करोगे?

बगावत करूँगा, कमल ने उदास होकर कहा—नहीं।

क्यों?

लालदेव नहीं, सिधु सुभा ठाकुर नहीं, राँची में विसरा महाराज नहीं, और कौन बगावत करायेगा? कौन हुक्म देगा? और बाबू—

कमल अपने साथियों की ओर दिखाकर बोला—ये सब पहले जैसे सन्थाल नहीं हैं। ये झूठी बातें कहते हैं, काम करते समय गृहस्थ को ठगते हैं, मेहनत नहीं करते, ये लोभी हो गये हैं। इन्हें पाप ने पकड़ लिया है। ये बगावत नहीं कर सकते। इन्होंने धर्म नष्ट कर दिया है।

अन्त में कमल का स्वर करुणा से भर गया। वह अपनी बात समाप्त कर उदास दृष्टि से देखते-देखते कुछ देर चुपचाप बैठा रहा। उसके पीछे मांझियों का दल सिर नीचे किये खड़ा था। अपने सरदार के अभियोग से उन्हें लज्जा आ गयी है।

चूड़ा माँझी, कठपुतली नाच के उस्ताद, ने बात प्रारम्भ की। वह आदमी बहुत वास्तववादी है, उसने हँसकर कहा, रुपया लेने से कुछ होता नहीं बाबू, रुपया नहीं, बगावत कर क्या करेंगे? और बाबू यदि बगावत कर मर ही जायँ, तो बगावत करने से लाभ क्या है? अब हमने इसे समझ लिया है।

इस पर कमल ने घृणा की दृष्टि उस पर डाल मुँह फेर लिया, इसके बाद अहीन्द्र से बोला—आज ही न बाबू?

इस बात पर पीछे से साथियों ने कुछ कहा। उसे सुनकर कमल बोला—और ये बगावत नहीं करेंगे बाबू! बगावत हुई, इसके बाद हजारों सन्थाल गोलियों से मारे गये। जो बचे, उन्हें भात नहीं मिला। साँवा घास खायी। बाबू उस समय मैं गिधड़ा—बालक—तो भी याद पड़ता है, चूहे की बिल से धान निकाला, केवल मुट्ठीभर धान, पानी में पकाया, उसी जल को माँड़ कहकर खाया। अब ये विद्रोह नहीं करेंगे। इसीसे साहस नहीं होता है। कहते हैं कि चेक रसीद न होने से उसका मन खेती में नहीं लगता। इसके बाद हमारे यहाँ व्याह है, मेरी नातिन—उसी लम्बी युवती का व्याह होगा। इसीसे हम सब मतवाले हो रहे हैं, सभी हाँड़िया (मर्द) खायेंगे, नाचेंगे, गायेंगे। इसीसे सब जल्दी कर रहे हैं।

अहीन्द्र बोला—अच्छी बात है, जल्दी ही कर लिया जायगा—कल अथवा परसों। किन्तु अपनी नातिन की शादी में हमें निमन्त्रण दोगे न?

माँझी ने सिहरकर कहा—बाप रे, तुम हो हमारे राजा, लालदेव के नाती, उसी तरह आग जैसा रंग, वैसी ही आँखें, वैसे ही केश। तुमसे इसीलिये कैसे कहूँ? हम सब क्या-क्या खाते हैं—मुर्गी, सूअर—छिः।

सन्थाल चले गये। अहीन्द्र विस्मय के साथ उस बूढ़े माँझी की कहानी पर विचार कर रहा था। वह स्वयं विज्ञान से प्रेम करता है। उसने बूढ़े की कहानी में आदिम बर्बर जाति के आदिम वैज्ञानिक मन का पता पाया। सृष्टि के रहस्य-भेद के इच्छुक मन ने कल्पना की सहायता से कहानी बनाकर रहस्य-भेद किया है।

उसकी विचार-धारा भंगकर रंगलाल तथा नवीन ने आकर प्रणाम किया।—भैया जी!

जिज्ञासा के साथ अहीन्द्र ने उसकी ओर देखा—कुछ बोला नहीं।

खूब हँसकर रंगलाल बोला—यह देखिये, दियारा आपका ही हुआ न?

मैंने कहा था न? छोटे राय ने सन्थालों से कह दिया है—इसी कचहरी में लगान देने के लिये!

अहीन्द्र को एक बात याद पड़ी, उसने नवीन से कहा—नवीन तुम तो पुराने आदमी हो, सन्थालों की भूमि नाप सकते हो!

विनय के साथ नवीन बोला—जी हाँ, नाप-जोख सब कर दूँगा।

रंगलाल ने उत्साह के साथ कहा—आप चलिये, जाकर खड़े रहिये, बस! हम सब ठीक कर देंगे।

अहीन्द्र बोला—तो कल सवेरे तुम लोग आना।

ग्यारह

सवेरे ही दल के साथ रंगलाल ने आकर पुकारना शुरू किया। अत्यन्त सवेरे उठकर काम करने का अभ्यास मानदा को बहुत दिनों से है। उसने काम करते-करते चिढ़कर उत्तर दिया—तुम कौन हो? तुम तो अच्छे आदमी हो! इतने सवेरे अच्छे आदमी उठते हैं क्या? यह क्या किसान का घर है?

रंगलाल क्रोधित हो गया। आवाज को भरसक गम्भीर बनाकर उसने कहा—बुला दो, छोटे भैया को, बुला दो। जरूरी काम है।

क्या काम है?

तुम स्त्री हो, तुम नहीं समझोगी। जरूरी काम है।

मानदा का स्वर एकदम रूखा हो गया, वह बोली—जरूरी काम है, किन्तु तुम्हारा काम है। इससे मुझे क्या मतलब है, इतने सवेरे जाकर मैं बकवाद सुनूँ? तुम इस प्रकार न चिल्लाओ, नींद टूट जाने पर बकवाद सुननी पड़ेगी।

रंगलाल ने समझा, मानदा झूठ बोल रही है, रोब जमाने की चेष्टा कर रही है। अहीन्द्र को वह अच्छी तरह जानता है, उन्होंने स्वयं ही उसको सवेरे आने को कहा है। मन-ही-मन हँसकर उसने थोड़ी ऊँची आवाज में पुकारा, छोटे भैया; छोटे भैया; भैया जी!

दो तल्ले पर से किसी ने तेज तथा रूखे स्वर में उत्तर दिया—कौन है ? कौन हो तुम ?

उस स्वर की गम्भीरता तथा रूखेपन से रंगलाल चौंक पड़ा, समझा—मालिक रामेश्वर बाबू अकस्मात् जाग पड़े हैं, भय से सूख गया। उसके साथ और कई आदमी आये थे, वे भी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। मानदा ने घर के भीतरी बरामदे से उत्तर दिया। वह बोली—मैंने बार-बार मना किया, भैया जी, किन्तु ये किसी प्रकार सुनते ही नहीं, कहते हैं—तुम स्त्री हो, नहीं समझोगी, जरूरी काम है।

अब अहीन्द्र का स्वर स्पष्ट मालूम हो गया। इसमें इस समय भी थोड़ी अप्रसन्नता का आभास है। अहीन्द्र बोला—ओह, हाँ-हाँ, रंगलाल है न ? हाँ-हाँ, मैंने ही आने को कहा था।

रंगलाल विस्मय से भर गया था। वह अब भी सोच रहा था कि क्या यह आवाज छोटे भैया जी की है ? अहीन्द्र की बदली हुई इस स्वाभाविक बात का उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

अहीन्द्र फिर बोला—मैं अभी आ रहा हूँ रंगलाल, थोड़ी देर इन्तजार करो।

कुछ देर बाद ही वह मुस्कुराता हुआ कचहरी का दरवाजा खोल बाहर निकला। बरामदे में अकेला रंगलाल नहीं, उनका पुराना साथी नवीन लोहार, और और भी दो-तीन किसान—रंगलाल के गाढ़े मित्र—इन्तजार में खड़े थे। नवीन के हाथ में चार हाथ लम्बे चार डण्डे थे। रङ्गलाल के हाथ में एक बण्डल रस्सी और कइयों के हाथ में लाल कपड़े की कई झण्डियाँ थीं।

अहीन्द्र ने यह दल देख हँसकर कहा—ओह, तुम लोग तो बड़े सवेरे आ गये रङ्गलाल ! मैं सवेरे नहीं उठ पाता। किन्तु लाल झण्डियाँ क्या होंगी, नवीन।

रङ्गलाल को आघात-सा लगा था, उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। नवीन लोहार, उसके पुराने मित्र ने उत्तर दिया—जी, आज हमारा कायमी दखल होगा न, इसीलिये चारों कोनों पर इन्हें गाड़ देना होगा।

यह कल्पना अहीन्द्र को बहुत पसन्द आयी। वाह, वाह, अच्छा होगा। अब चलो, देर हो रही है।

रङ्गलाल ने उदास स्वर में कहा—आपकी नींद सवेरे ही तोड़ दी, भैया जी। भारी भूल हो गयी, जागने पर ही पुकारना चाहता था।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—नहीं, नहीं। यह अच्छा ही हुआ, रङ्गलाल, अकस्मात् नींद टूटने पर मेरा मिजाज बहुत खराब हो जाता है। मैंने तुम लोगों को कुछ कह तो नहीं दिया, रङ्गलाल ?

रङ्गलाल इतने पर जैसे पानी हो गया, बोला—जी नहीं। हमलोगों ने उसको बुरा नहीं माना। अब चलिये, धूप निकलने पर आपको बहुत कष्ट होगा।

यह छोटी सेना बाहर निकल पड़ी। रङ्गलाल गड़बड़ में पड़ा हुआ था, जैसे उसकी बहुत-सी बातें अनकही रह गयीं। कल से ही उसने ये बातें उनको कहने का संकल्प कर लिया था, किन्तु अहीन्द्र के स्वर तथा रूखेपन के कारण सभी बातें उल्टी हो गयीं। वह रास्ते में जाते-जाते भूमिका की भाँति कहने लगा—समझा, नवीन, यह जो कहावत है कि बाघ पेट से बाघ होता है, सिंह होता है—यह मिथ्या नहीं है।

नवीन ने न तो इसका अर्थ समझा और न उद्देश्य, किन्तु गम्भीरता के साथ समर्थन करते हुए कहा—निश्चय। अहीन्द्र कौतूहल से खिलखिलाने लगा।

रङ्गलाल बोला—हँसिये नहीं, भैया जी, हँसी की बात नहीं है। मेरा मिजाज बिगड़ गया था। समझा नवीन, भैया ने पुकारा, तुम कौन

हो ! कहने से विश्वास नहीं करोगे, भाई ; मुझे ऐसा लगा, मालिक उठ खड़े हुए हैं ! एकदम ठीक-ठीक !

नवीन बोला—यह तो ठीक कहते हो सरदार, ठीक-ठीक मैंने भी यही सोचा था।

रङ्गलाल ने उत्साहित होकर कहा—इसीसे तो कहता हूं—बाघ का बच्चा बाघ ही होता है।

मैं कभी-कभी सोचता था—आह ! भैया जी, किस प्रकार जमींदार बनेंगे ? आज वह चिन्ता हमारी दूर हो गयी।

अहीन्द्र गम्भीरता के साथ थोड़ा सिर झुकाकर चल रहा था—वह मन में लज्जा का अनुभव कर रहा था। उसके मन में देश-विदेश के अनेक महापुरुषों की बातें याद आ रही थीं। उनके आदर्श की तुलना में जमींदार ! छिः।

रङ्गलाल ने फिर कहा—सन्थालों की भूमि मैंने देखी है, कुल मिलाकर पचास बीघे होगी, इससे अधिक नहीं। इसके बाद हम पाँचों के दस-दस बीघे के हिसाब से पचास बीघे। सौ बीघों के नापने में कितनी देर लगेगी ? पहर दिन चढ़ते-चढ़ते माप हो जायगी। क्यों नवीन ?

नवीन बोला—हाँ, ऐसा ही है। मैं चार डण्डे दे आया हूं। चार आदमियों के नापने से कितनी देर लगेगी ?

रङ्गलाल ने कहा—समझते हैं भैया जी, हम पाँच आदमियों के जमीन लेने की बात फैलने दीजिये, देखियेगा गाँव के सब किसान हल्ला बोल देते हैं।

अहीन्द्र ने अचरज से पूछा—तुम लोग भी जमीन लोगे ? वहाँ, ऐसा तो कहा नहीं।

रङ्गलाल बोला—यह देखो, इसी बीच भूल गये, भैया जी ? वही

देखिये, पहले ही दिन आपके साथ कचहरी में भेंट हुई। आप घर में मालिकिन के पास हमें ले गये। हम किसानों ने कहा था—भूमि हमारी है, भूमि हमारी है।' मैंने ही तो यह कह दिया था, जब चक अफजलपुर के साथ दियारा निकला है, तब दियारा आप लोगों का है। यह कानून मुझे अच्छी तरह मालूम है। किन्तु यदि धर्म से बात की जाय, आजकल कोई धर्म से नहीं बोलता, तो हम भी अवश्य पायेंगे। मालिकिन ने कहा भी था, याद कर लीजिये।

अहीन्द्र अनेक बातें सोच रहा था। ये जो कुछ कहते हैं, वह सब सत्य है, इस सत्य को अस्वीकार करना भी वह नहीं चाहता। वह कहना भी चाहता है, कि उस बात के अनुसार आज ही बन्दोबस्त होगा, ऐसी बात तो नहीं हुई थी। इसमें बहुत-सी बातें हैं—नजराना, लगान, पट्टा, कबूलियत—बहुत-सी बातें हैं। सन्थालों की बात और है। आज वे बस गये हैं, शायद दस, पन्द्रह अथवा बीस वर्षों में चले जायँ। उनकी जमीन जमींदार की खास हो जायगी। और इनका अधिकार, पीढ़ी-दर-पीढ़ी दान देने अथवा बेचने का अधिकार भी, ये कायमी कर लेंगे। इसके अतिरिक्त सन्थालों ने उस दियारे को साफ कर उपजाऊ बनाया है। उनके दावों के साथ किसी के दावे को तुलना नहीं हो सकती।

रङ्गलाल बोला—जूता नहीं खोलना पड़ेगा, भैया जी। आइये, कन्धे पर लेकर मैं पार करा दूं।

सब कालिन्दी के घाट पर पहुँच गये थे। अहीन्द्र ने रङ्गलाल को रोककर कहा—रहने दो।—इतना कहकर जूतों का जोड़ा वे स्वयं उठा रहे थे। किन्तु इसके पहले रङ्गलाल ने झपटकर उसे हाथ में उठा लिया और सिर पर रखकर कहा—बाप रे, हमारे रहते आप जूता ढोयेंगे! सर्वनाश!

नदी के उस पार दियारे के प्रवेश-मार्ग पर सन्थाल दल बाँधकर खड़े

थे। वे भी उत्सुकतापूर्वक राह देख रहे थे। उनके बालक भी आज बकरी, भेड़, गाय, भैंस चराने नहीं गये थे।

रङ्गलाल बोला—ओह, अण्डे-बच्चे तक सब हाजिर हैं! आज तुम्हारी बड़ी धूम है, है न माँझी?

कमल माँझी ने गम्भीर भाव से कहा—हाँ, क्यों नहीं जी! आज सारी भूमि हमारी होगी, राजा को लगान दूंगा, देवता को पूजा दूंगा।

नवीन रङ्गलाल की ओर देखकर बोला—देखो, हम कहते हैं कि सब जंगली बोगाँ की जाति के हैं। इसकी देखो, बुद्धि देखो। लक्षण, कल्याण सब समझते हैं।

सरदार माँझी ने फिर कहा—हुं, बुद्धि क्यों नहीं है। नहीं तो धर्म कैसे बचेगा? पाप जो होगा।

नदी के जल में मुँह धोने के लिये अहीन्द्र पीछे रह गया था। इसके आते ही आलोचना बन्द हो गयी। अहीन्द्र हैरान होकर बोला—तो जल्द काम आरम्भ करो, नहीं तो धूप हो जायगी।

सरदार ने अपनी भाषा में कुछ कहा। दो मिनट के भीतर ही एक बालक ने एक बड़ा छाता लाकर हाजिर कर दिया। छाता बाँस के सींकचे तथा डण्डे के ढाँचे पर बड़ी चतुराई के साथ शाल के पत्ते से छाया हुआ है और इसकी छाजन के ऊपर किसी पेड़ के छिलके से नक्काशी की हुई है—अहीन्द्र छाता देख मुग्ध हो गया।

वह बोला—वाह! बड़ा सुन्दर छाता है, माँझी! तुम लोगों ने बनाया है?

हाँ जी! हमलोग सब काम कर सकते हैं, बाबू। बहु—त कर सकते हैं। यह छाता मेरी माँझिन ने तैयार किया है। मैं खूब बड़ा हूँ न? इसीसे बनाया है, इ—त—ना—बड़ा।

पहले नवीन ने दियारे के चार कोने निश्चित कर चारों कोनों में लाल

झण्डियाँ गाड़ दीं। इसके बाद जरीब से नापना आरम्भ हुआ। देशी हिसाब से चार हाथ लम्बे डण्डे से नाप होने लगी।

रङ्गलाल बोला—माँझी तू नाम बोलता जा। भैया जी, आप लिखते जाइये। अन्त में जिसका जो होगा, जमीं-जमा हिसाबकर ठीक कर लिया जायगा। कमल ने गर्दन हिलाकर कहा—क्यों ऐसा करेंगे जो, इसका नाम, उसका नाम, तुम लोग लिखकर क्या करोगे? एक बार ही क्यों नहीं लिख लेते।

अहीन्द्र हँसकर बोला—ऐसा होने पर किसे कितनी लगान लगेगी, किसकी कितनी जमीन है, यह कैसे ठीक होगा माँझी?

कमल बोला—वह सब हम ठीक कर लेंगे जी, अपनी-अपनी नाप कर ठीक कर लेंगे। तुम लोगों का हिसाब हम नहीं समझते।

रङ्गलाल, नवीन और उनके साथी उत्साहित हो उठे, उनका काम बहुत सरल हो जायगा। टुकड़ी-टुकड़ी जमीन नापने की जरूरत नहीं होगी, एक बार ही सन्थालों के अधीन जमीन नापकर छुट्टी मिल जायगी। नाप हो जाने पर वे अपनी-अपनी भूमि नापकर ठीक कर सकेंगे। इतने ही के लिये वे जैसे बेचैन हो रहे हैं। रङ्गलाल बोला—यही अच्छा है, भैया जी, अपना-अपना भाग वे अलग लेंगे। आपकी स्टेट एक जगह एक जमा होकर रहेगी। यह आपके लिये भी अच्छा होगा।

कठपुतली का उस्ताद आकर सरदार से कुछ कह रहा था। उसकी बात खतम होते-न-होते जैसे कमल माँझी फूलकर कुप्पा हो गया। शरीर पर बुढ़ापे के कारण जो शिकन आ गयी थी, वह देह के फैलने के कारण मिट गयी। उस्ताद की बात समाप्त होते ही कमल ने उसके गाल पर एक चाँटा जड़ दिया और मुख से बिल्कुल दो बातें कहीं, किन्तु उनसे भी बहुत क्रोध प्रकट हो रहा था। वह चाँटे खाकर बैठ गया, वहाँ उपस्थित सन्थालों के चेहरे से ऐसा जान पड़ने लगा कि वे भीषण भय से

भीत हो गये हैं। कमल माँझी उस समय भी क्रोध से तप रहा था। अकस्मात् इस घटना से चकित होकर अहीन्द्र इसका कारण जानने के लिये चारों ओर देखने लगा। किन्तु कमल माँझी के भयंकर रूप और सभी के मुँहों पर भय की छाप के अतिरिक्त और कुछ दीख न पड़ा। अहीन्द्र ने कमल की ही ओर देखकर पूछा—क्यों कमल, क्या हुआ? उसको मारा क्यों?

अब कमल यथासम्भव विनय के साथ बोला—जी राजा, उसने दुष्टता की है, कहा—मैं सरदार-फरदार नहीं मानता।

अचरज के साथ अहीन्द्र ने पूछा—क्यों?

अब मार खाये हुए उस्ताद ने हाथ जोड़कर करुण-स्वर में कहा—जी राजा बाबू! मैंने दोष किया है, मैंने दोष किया है। मैंने सब जमीन अलग-अलग कर देने के लिये कहा। हम अपनी जमीन अलग-अलग लेंगे—ऐसा मैंने कहा। इससे ही मैंने सरदार का मान घटाया। मैंने अपराध किया।

कमल अपनी भाषा में सर-सर बहुत-सी बातें कह गया। उसकी आवाज से जान पड़ा कि वह उस्ताद को डाँट रहा है। किन्तु अब वह उतना भयंकर नहीं रह गया है। कमल की बात समाप्त होते ही स्त्रियाँ कल-कल कर चारों ओर बोलने लगीं। वे भी उसका अपमान कर सरदार का समर्थन करती थीं।

अहीन्द्र बोला—तो तुम्हारी सारी जमीन एक साथ ही नापी जायगी न?

हुँ। मेरा नाम लिख लो कागज में, निशान ले लो पहले। बतलाओ, लगान कितनी होगी, हम सब दे देंगे। फिर वह क्या कहते हो जी, नजराना न? वह क्या हम दे सकेंगे? मैं सब लोगों से लगान वसूल कर तुम्हारी कचहरी में दे आऊँगा।

नवीन इतनी देर बाद साहस कर हँसते हुए बोला—तब तो तू इनका जमींदार हुआ, और तेरे जमींदार हुए हमारे भैया जी।

उँ हुँ। मैं सरदार रहा। राजा हुए, जमींदार हुए, हमारे लाल बाबू।

नाप आरम्भ हुई—राम-दो-तीन-चार—लम्बाई हुई एक सौ चालीस लट्ठे। नवीन और रङ्गलाल—दोनों ने मिलकर भूमि पर निशान लगाया और हिसाब लगाकर बतलाया—चालीस बीघे, कई विश्वे हुए। अहीन्द्र बड़े ध्यान से हिसाब का ढंग देख रहा था, बचपन में पढ़ी हुई जमीन नापने की कविता का स्वर उसके कानों में बजने लगा।

रङ्गलाल ने कहा—तो अभी तुम्हारी जमीन हुई माँझी—चालीस बीघे, कई कट्ठे, कट्ठा नहीं हुआ, तो छोड़ ही दिया। अब भैया जी के साथ लगान ठीक कर लो।

कमल अहीन्द्र के मुँह की ओर देखकर बोला—हाँ लाल बाबू, आप हिसाब लगाकर देखिये।

अहीन्द्र हँसकर बोला—ठीक है माँझी।

ना, आप, एक बार आप देखिये न।

देखा है।

ना, आप एक बार स्वयं देखिये।

विवश हो अहीन्द्र को कागज-कलम लेकर बैठना पड़ा, उसके चारों ओर गम्भीरता के साथ सन्थाल बैठ गये। सबकी आँखें अहीन्द्र के ऊपर लगी थीं। स्त्रियाँ बातें कर रही थीं,—सरदार गम्भीरता के साथ कह रहा था—चुप, चुप, सब चुप रहो, लाल बाबू हिसाब कर रहे हैं, भूमि का हिसाब, जरीब का हिसाब हो रहा है।

गाँव में कोई तरुणी अपने आँगन में बैठी हुई गा रही थी—

चेतान दिश महैण आमिन बाबू,
लातार दिशभरे आड़गु अना

जमि किन् संई दा—

जमा किन चपाउ ईदा

गरिब हड़ ओ कारे ऐम—आः।

अर्थात् पहाड़ के ऊपर से अमीन आये। जमीन की नाप करते हैं, लगान बढ़ाते हैं, किन्तु हम गरीब हैं, हम लगान कहाँ पायेंगे?

एक लड़की ने कहा—यह बात बाबू से कहनी होगी।

कमल की नतिनी बोली—चलके बोलूँगी। अधिक लगान क्यों लेंगे लाल बाबू?

इसी समय चलोगी?

उँ—हुँ, सरदार माँझी चिढ़ जायगा। बाप रे!

तो फिर?

तीसरे पहर हम बाबू को बुलायेंगी।—हाड़िया (शराब) जमा करूँगी, नाचूँगी, उनको बुला लाऊँगी।

अकस्मात् एक बालिका विस्मय-विमुग्ध नेत्र से बोली—कहो तो लाल बाबू से कह दूं। लाल बाबू झक-झक कर रहे हैं।

कमल की नातिन बोली—आग जैसा रंग है, लालदेव के नाती हैं।

एक बालिका कुछ कहना चाहती थी, किन्तु सरदार की क्रोधभरी आवाज से चौंक पड़ी। साथ ही और कितनों की आवाजें सुन पड़ीं।

इस बार कमल माँझी के साथ रंगलाल और नवीन के दल से झगड़ा हो रहा था। सन्थालों की जमीन के पूर्व प्रायः पचास बीघा दियारा पड़ा हुआ है। उसी भूमि को पसन्द कर रंगलाल तथा नवीन नापने के लिये तैयार हुए। कमल माँझी बोला—वह जमीन तुम न लो चौधरी, हम उसे नहीं देंगे।

रङ्गलाल ने खीझकर कहा—दोगे नहीं क्यों?

तो हम और जमीन कहाँ पायेंगे? हमारे बाल-बच्चे क्या करेंगे?

उनके भी बच्चे होंगे, उनके बच्चे भी होंगे, ऐसा कहकर सारे दियारे पर अकेले ही रहोगे क्या ? नापो, नापो जमीन, खड़े क्यों हो गये ?

नवीन के नापने के लिये तैयार होते ही कमल उसका डण्डा दबाकर क्रोध से चिल्लाते हुए बोला—नहीं, नहीं देंगे।

रङ्गलाल उस समय जैसे पागल हो गया। इस पूर्व की ओर के दियारे की मिट्टी सब जगहों से अच्छी है, तोड़ने पर भूरे की तरह टूट जाती है, भीतरी बालू का भाग मैदे की तरह महीन, आलू और ईख के लिये इससे अच्छी भूमि नहीं होती। वह चिल्लाकर बोला—देखो माँझी, फटाफटी हो जायगी ; खबरदार, तू डण्डा न पकड़।

एक भयानक हिंसापूर्ण हँसी हँसकर कमल बोला—तुम को पकड़ भूमि पर पटक दूंगा।

बार-बार इस प्रकार की घटनाओं के होने से अहीन्द्र का मन उदास हो गया। वह अपने स्वर को तेजकर बोला—हटो, हटो।

कमल एवं रंगलाल दोनों ही अब हटकर खड़े हो गये।

अहीन्द्र बोला—दूसरी ओर जमीन पसन्द कर नाप लो नवीन। यह जमीन तुम्हें भी नहीं मिलेगी, सन्थालों को भी नहीं मिलेगी। यह मेरे खास में रहेगी। इसमें मेरी खेती होगी।

जमीन की नाप-जोख खतमकर घर लौटते समय अहीन्द्र बोला—देखो, फिर झगड़ा न करना।

एक माँझी छाता लेकर अहीन्द्र के साथ गया। जेठ की धूप से उस समय आग बरसने लगी थी। उसी धूप में रंगलाल, नवीन तथा उनके साथी अपनी-अपनी हद नापकर मिट्टी की सीमा बाँधने लगे।

सन्थालों ने भी दल बाँधकर जमीन बाँटना प्रारम्भ कर दिया।

बहुत जोर से बिना जल की भूमि पर खूँटा गाड़ते-गाड़ते रंगलाल बोला—रहो साले, कितने दिन रहोगे, मैं यह भी तो देखूँगा।

बारह

उसी दिन तीसरे पहर सन्थालों ने हिसाब कर लगान का पाई-पैसा मिटा दिया। किन्तु रङ्गलाल तथा नवीन के दल ने बखेड़ा शुरू कर दिया। उन्होंने भी मान लिया था कि लगान छोड़ वे भी नजराना नहीं देंगे। जब सन्थालों ने नजराना देने से रिहाई पायी, तो वे ही क्यों नहीं पायेंगे? क्या चक्रवर्त्तियों के लिये वे सन्थालों से भी दूसरे हैं? अहीन्द्र चुप हो गया, कुछ जवाब न दे सका। रङ्गलाल तथा नवीन की बात काटने लायक उसे नहीं मिली। बहुत देर तक चुपचाप उत्तर की प्रतीक्षा कर रङ्गलाल बोला—भैया जी, तो आप आज्ञा दे दीजिये।

किन्तु अहीन्द्र आज्ञा न दे सका। प्रति बीघे पाँच रुपये लेने से पचास बीघे के ढाई सौ रुपये मिलेंगे। अपने परिवार की वर्तमान अवस्था केवल आँख से ही नहीं देख रहा है, वरन् भीतर-भीतर अनुभव भी कर रहा है। उसकी माँ जब रसोई-घर में बैठकर आग की गर्मी सहन करती हैं, तब वह भी चूल्हे के समीप बैठकर इंधन सरका दिया करता है। गर्मी कैसी होती है, वह इसको खूब जानता है। गर्मी तथा कष्ट की बात जाने भी दें, तो उसकी माँ को अपने हाथ से भोजन बनाना पड़ता है—इसी में बहुत लज्जा छिपी हुई है, जिसके भार से उसका सिर नीचा

हो जाता है। उसकी माँ अवश्य कहती हैं—जब जैसा, तब तैसा। न करने से चलेगा कैसे ?—प्रसन्नचित्त हँसती हुई कहती हैं। किन्तु उसके मन में कालिन्दी का जल रोकने के लिये घास-फूस के बाँध बाँधने की बात आती है। बाँध के उस पार अथाह जल रहता है और इस पार हरी घास मुस्कुराती रहती है। इसी प्रकार उसकी माँ के मुँह की मुस्कुराहट के उस पार अथाह दुःख की बाढ़ है। कालिन्दी की बाढ़ में उतार होता है, वर्षा के अन्त में यह सूख जाती है, किन्तु माँ की छाती की बाढ़ सूखती नहीं, और सूखनेवाली है भी नहीं। इस समय कैसे वह इतने रुपये छोड़ दे ?

नवीन बोला—तो आदमी पीछे पाँच रुपये के हिसाब से नजराना देना होगा सरदार ! ऐसा न करने से हमारा भी अपमान है। सन्थाल नहीं देते, तो वे छोटी जाति के हैं। हमें तो राजा का सम्मान करना ही पड़ेगा।

रङ्गलाल ने बार-बार सम्मति-सूचक गर्दन हिलाकर कहा—यह तो तुमने बात की तरह बात कही है, नवीन। लीजिये, लीजिये, ऐसा ही रहा भैया जी। पचास बीघे की लगान एक सौ रुपये, और पाँच रुपये के हिसाब से पाँच आदमियों का नजराना पचीस रुपये, एक सौ पचीस हम दे रहे हैं। यह भी तो एक अंजलिभर हो गया।

अहीन्द्र का मुँह लाल हो गया, इनकी बातों के ढंग में वह एक लगातार, किन्तु छिपे हुए षड्यंत्र का सूत्र देख पाया। ये उसे ठगने के लिये ही आये हैं। इसके अलावा—अंजलि भरकर रुपया आदि अन्तिम कई बातों से उसे प्रलोभन देना स्पष्ट हो रहा था। उसके क्रोध तथा चिढ़ की सीमा न रही। वह दृढ़, किन्तु कठोर स्वर में बोला—इस समय जमीन का बन्दोबस्त नहीं होगा। मैं पिताजी से बिना पूछे कुछ कर नहीं सकता।

रङ्गलाल कुछ देर चुप रहकर बोला—अच्छा, तो हमलोग जोत-जातकर जमीन तैयार करें ? इसके बाद आप लोग लगान लीजियेगा।

इसका क्या मतलब ?

इस बात का मतलब तो अत्यन्त स्पष्ट है, बन्दोबस्त हो या न हो, किन्तु वे जमीन दखल करेंगे ही। अकारण थोड़ा सिर खुजलाकर रङ्गलाल बोला—यही कह रहा हूँ, हम खेती करें, इसके बाद लगान लीजियेगा। और यदि अभी लेंगे, तो वह भी लीजिये, हम तो देने के लिये तैयार हैं ही।

अत्यन्त क्रोध से अहीन्द्र का सिर न जाने कैसा हो गया, किन्तु बड़ी चेष्टा के साथ उसको मन में ही दबाकर चुपचाप बैठा रहा।

रङ्गलाल ने प्रणामकर कहा—तो हम जा रहे हैं, भैया जी ! जब पुकारियेगा, लगान लेकर हाजिर हो जायँगे। चलो भाई, चलो, सब लोग चलें, सन्ध्या हो रही है।

अहीन्द्र ने कुछ कहा नहीं, हाथ के इशारे से ही बतला दिया—जाओ, तुम लोग चले जाओ। इनकी उपस्थिति जैसे उसे सहन नहीं हो रही थी। रङ्गलाल तथा नवीन का दल बारी-बारी प्रणामकर चला गया, अहीन्द्र अकेले ही उस सूनसान कचहरी के तख्ते पर दीवार के सहारे बैठा रहा। छत की कड़ियों पर दल-के-दल कबूतर बैठकर गुटर-गूँ कर रहे थे। सामने खुले हुए मैदान में नारियल के पेड़ों की पंक्तियाँ हैं, इन्हीं में से किसी पर अपने को छिपाये हुए उल्लू ने सन्ध्या-आगमन के आनन्द में बोलना शुरू कर दिया। घर के भीतर से चुपचाप अन्धकार शोकातुरा विधवा की भाँति बाहर आ रहा है। इतना बड़ा मकान, किन्तु कहीं प्रकाश का चिह्न भी नहीं है, कहीं एक मनुष्य की आहट नहीं है। केवल सीढ़ी के पास दो ऊँचे झाऊ के पेड़ हवा में सन-सन कर रहे हैं। उस शब्द को सुनकर ऐसा जान पड़ता है कि यह अनाथ मकान छाती फाड़कर

साँस ले रहा है। किन्तु किसी समय हँसी, कोलाहल तथा प्रकाश से यह मकान जगमगाता रहता था। इस मकान के मालिक की एक बात के लिये प्रजा हाथ जोड़कर भय के साथ इन्तजार करती रहती; और आज एक किसान कह गया, राजी होइये या न होइये, वे बलपूर्वक जमीन दखल कर लेंगे ही! अहीन्द्र ने एक:गहरी साँस छोड़ी। इसके पश्चात् अत्यन्त शक्तिहीन की तरह चौकी पर लेट गया। उसका सिर भारी हो गया था।

कुछ देर बाद मानदा ने एक हाथ में धूपदानी तथा दीपक और दूसरे में पानी का लोटा लेकर कचहरी-घर में प्रवेश किया। द्वार के चौकठों पर पानी छिड़क धूप-दीप का प्रकाश दिखाते-दिखाते उसने देखा—अहीन्द्र फटी दरी बिछे हुए तख्ते पर आँखें बन्दकर चुपचाप पड़ा है। उसको देखकर उसके अचरज की सीमा नहीं रही। ऐसी सूनसान कचहरी के बरामदे में फटी दरी के ऊपर असमय छोटे भैया सो रहे हैं।

साथ-ही-साथ उसे चिन्ता भी हुई—कोई रोग-सोग तो नहीं हो गया? शरीर पर हाथ रखकर देखने का साहस नहीं हुआ। कौन जानता है, यदि नींद टूट जायगी, तो अनर्थ हो जायगा, शायद चिल्ला उठें। सोच-विचारकर डरती-डरती उसने घर में जाकर पुकारा—माँ! सुनीति कपड़े पछाड़कर रामेश्वर के घर में प्रकाश जलाने के लिये ऊपर जाने की तैयारी कर रही थीं। मानदा की पुकार से बाधा पड़ने के कारण चिढ़कर बोलीं—जब-तब क्यों पीछे से पुकारती हो मानदा? जानती हो, मैं अब ऊपर प्रकाश जलाने जाऊँगी।

मानदा बोली—क्या मैं साध से पुकारती हूँ, माँ? छोटे भैया ऐसी सन्ध्या के समय कचहरी के बरामदे में उसी फटी दरी पर सो गये हैं, शायद अस्वस्थ हैं।

अस्वस्थ हैं?

शायद हों। वे सुकुमार बालक हैं, यह जेठ महीने की आग की

लपट जैसी धूप है ! इसी धूप में दियारा नापने गये, इसके बाद सन्थाल आते हैं, ग्वाले आते हैं, किच-किच, चिल्ल-पों। जाइये, आप उन्हें जगाकर घर में ले आइये। मैं तो भय से पुकार न सकी।

सुनीति बोलीं—तू भी मेरे साथ आ। मैं अकेले कैसे कचहरीघर जाऊँगी ?

तुलसी-मन्दिर के ऊपर धूप और दीप रखकर मानदा ने कहा—घर के भीतर से चलिये, शायद बाहर रास्ते पर कोई हो !

अहीन्द्र के सिर पर हाथ रख शान्त होकर सुनीति बोलीं—कहाँ, ज्वर तो नहीं है। अहीन्द्र ने स्पर्श करते ही समझ लिया, यह माँ का हाथ है। उसने झटपट बैठकर कहा—माँ ! क्या है माँ ?

कुछ नहीं अहि, इस समय असमय यहाँ सोये क्यों हो ?

इसी तरह कुछ सिर भारी हो गया है, मन भी थोड़ा खराब हो गया है, इसीसे थोड़ा सो गया।

प्रेमपूर्वक सिर पर हाथ फेरते हुए सुनीति बोलीं—सिर क्यों भारी हो गया है रे या मन ही क्यों खराब हुआ है ?

सच्ची बात छिपाकर अहीन्द्र ने कहा—क्या जानूँ ! इसके बाद फिर बोला—यह सन्ध्या का अन्धकार, कोई कहीं है नहीं, इतना बड़ा मकान ! मन खराब हो गया माँ। मैंने सुना है कि बारह बजे रात तक यहाँ लोग गपशप करते रहते थे।

सुनीति ने एक लम्बी साँस छोड़ी, चुपचाप उन्होंने भी सूनसान घर में चारों ओर नजर उठाकर देखा। मानदा झटपट बोली—मैं प्रकाश ला रही हूँ भैया जी, आप प्रकाश लेकर कचहरी में बैठिये न। दो-चार मित्रों आदि के साथ गपशप कीजिये। ताश-वाश खेलिये।

अहीन्द्र हँसा, किन्तु उक्त बात का कुछ उत्तर नहीं दिया। सुनीति बोलीं—इस घर की मान-मर्यादा सब कुछ तुझ पर निर्भर करती है बेटा,

अच्छी तरह पढ़ने-लिखने और युवा होने से ही दुःख दूर होगा अहि।

मानदा सवेरे से ही रङ्गलाल और नवीन के दल पर बिगड़ी हुई थी। वह बोली—हाँ भैया, उस समय यदि सवेरे किसान आकर पुकारें, तो भला देखूँ, देखूँगी सब गर्म हैं कितने! पुकारते क्यों हो, नहीं, वह तुम समझोगी नहीं। मैं आज बीस वर्षों से जमींदार के यहाँ नौकरी करती हूँ, मैं नहीं समझूँगी? बस सवेरे उठने से ही आपका सिर भारी है। फिर ऐसी धूप सहनी पड़ी।

सुनीति बोलीं—नदी की ओर की हवा में थोड़ा टहल आओ न। आकाश में चन्द्रमा निकलता है, मन भी बहल जायगा। खुली हवा में सिर भी हल्का हो जायगा। मैं जाती हूँ, बाबू के घर में प्रकाश नहीं जलाया गया। मानदा, चूल्हे में आग जला दे।

अहीन्द्र के मन का बोझ थोड़ा हल्का हो गया, माँ की बातों से उसके मन में थोड़ा उत्साह आ गया। उसके जवान होने पर यह दुःख दूर हो जायगा, यही सोचते-सोचते वह रास्ते पर निकल आया। उसके भैया की बात स्मरण हो आयी—उसको एम० ए० तक पढ़ाया जाय। ऐसे-वैसे एम० ए० होने से तो काम नहीं चलेगा, खूब अच्छी तरह पास करना होगा। फर्स्ट होने से कैसा होगा—फर्स्ट क्लास फर्स्ट।

नदी के किनारे आने पर ढोल के शब्द तथा सन्थाल-स्त्रियों के गाने के स्वर से उसकी विचार-धारा टूट गयी। उस पार के दियारे में आज अत्यन्त आनन्दोत्सव मनाया जा रहा है। आज उन्होंने जमींदार को लगान देकर रसीद पायी है, आज जमीन उनकी हो गयी है, अतः आज का दिन उनके लिये परम शुभ है, उन्होंने अपने देवता का पूजन किया है। पाँच लाल मुर्गियों और एक लाल बकरे की बलि देकर पूजा हुई है। इसके बाद भरपेट चुलाई हुई मदिरा पीकर वे गाना-बजाना कर रहे हैं। बड़ी अद्भुत् जाति है!

कालिन्दी

आकाश में शुक्लपक्ष की सप्तमी का आधा चन्द्रमा कालिन्दी के पतले सोते में पड़कर सुन्दर खेल खेल रहा है। दूर पर कालिन्दी की छोटी-छोटी लहरों के सिरों पर जैसे चन्द्रमा पिघल गया है और चाँद-जटित लहरें चमक-चमककर नाच रही हैं। दूर—इस ओर—कालिन्दी का जल चाँदी के एक बिछौने के समान है। सामने ही पैर के समीप चन्द्रमा कालिन्दी के सोते के नीचे बिखरे हुए एक चन्द्रहार के समान टेढ़ा-मेढ़ा लम्बा होकर प्रवाहित हो रहा है। सफेद-सफेद टिटिहिरियाँ पानी की धारा के उस पार बालू पर भाग-भागकर दौड़ रही हैं। कभी-कभी कोई दूसरे से डर थोड़ा उड़कर दूर जा बैठती है। दूर पर आकाश में एक चिड़िया उड़ती है और पुकारती है—हहि-टि-हहि-टि। नदी की बालुकामयी तलहटी स्वच्छ कुहरे के समान चन्द्रमा के प्रकाश में मोहग्रस्त की तरह पड़ी हुई है। अहीन्द्र नदी के किनारे चुपचाप बैठ गया। सहसा उसे लगा, कहीं कोई बात कर रहा है। स्वर उड़ता जा रहा है, भाषा तथा शब्द ठीक समझ में नहीं आ रहे हैं। उसने चारों ओर देखा, और तनिक जोर से पुकारा—कौन? किसी ने उत्तर नहीं दिया, वरन् बोलने की आवाज भी बन्द हो गयी।

कई क्षण बाद उसकी दृष्टि नदी के उस पार की बालू पर दो चलायमान मूर्त्तियों पर पड़ी। कुछ ही देर बाद फिर बोलने के शब्द सुनाई देने लगे।

अहीन्द्र अपना कौतूहल रोक न सका। छिछली नदी की धारा पारकर वह उस पार की बालू पर पहुँच गया। बालू-बालू से ही थोड़ा आगे जाने पर वह बात की भाषा समझ पाया। सन्थालों की भाषा है; गले के स्वर से जान पड़ा, वे दोनों स्त्रियाँ हैं। ढंग से जान पड़ा, झगड़ा हो रहा है। उसने पुकारा—कौन है?

जो बातें कर रही थीं, वे दोनों ही थोड़ा चकित हो घूमकर खड़ी

हो गयीं। एक ने अचरज के साथ अपनी भाषा में जो कुछ कहा, उसमें अहीन्द्र केवल एक शब्द समझ पाया, लाल बाबू! उसके पहचानने में भी अहीन्द्र को देर न लगी, उसके लम्बे शरीर ने उसकी पहचान करा दी। वह कमल माँझी की नातिन है। दूसरे के आगे आने पर अहीन्द्र ने पहचाना—वह वृद्धा है सरदार कमल माँझी की स्त्री। अहीन्द्र को देख वह बहुत प्रसन्न हुई और टूटी-फूटी हिन्दी में जोर से बोली—देख, लाल बाबू, देख, लड़की मुझ से झगड़ाकर भाग आयी है। और कह रही है, यह स्थान छोड़कर चली जायेगी।

युवती नातिन झंकार दे उठी—क्यों झगड़ा न करूँगी? क्यों न चली जाऊँगी? तू बाबू, न्याय कर दे। बूढ़े-बूढ़ी की करतूत देख।

हँसकर अहीन्द्र बोला—तुम्हें क्या हुआ है? छिः माँझिन, बूढ़ी दादी से झगड़ा करती हो?

बुढ़िया खूब खुश हो गयी—देख, बाबू, देख।

अहीन्द्र बोला—जा माँझिन, घर जा, गाँव में नाच हो रहा है, गाना हो रहा है; जा, नाच-गान कर।

क्यों गान करूँगी? क्यों नाचूँगी? ये बूढ़े-बूढ़ी नाच-गान करेंगे। इन्हें जमीन मिली है, ये नाचेंगे। हमें क्यों नहीं दी?

अहीन्द्र ने बुढ़िया से पूछा—क्या हुआ माँझिन, मुझ से कहो तो?

बुढ़िया ने जो कुछ कहा, उसका अर्थ यह है।—लड़की का जल्द व्याह होगा। सरदार कहता है—तुम लोग मेरे यहाँ रहो, मिहनत करो, खाओ, मैं तुम लोगों का पालन-पोषण करूँगा; किन्तु लड़की यह बात किसी प्रकार सुनती ही नहीं। वह स्वतंत्र घर बनाना चाहती है, अपनी भूमि चाहती है। जमीन न पाने से उसने ऐसा क्रोध किया है, झगड़ा कर रही है।

युवती नातिन, अब दोनों हाथ चमका, बोल उठी—तू जमीन लेगी,

तुम्हारे यहाँ धान होगा, मटर होगी, मक्का होगा, तू घर भरेगी ! तब हमलोग क्या करेंगी ? हमारा घर नहीं होगा ? बेटे-बेटियाँ न होंगी ? वे क्या खायेंगे ? क्यों, हम तुम्हारी भूमि में मिहनत करेंगी ?

अहीन्द्र को हँसी आयी और अच्छा भी लगा। यह स्त्री तो अभी युवती है, अभी विवाह भी नहीं हुआ है, होने की आशा में ही घर-द्वार, भूमि-सम्पत्ति, लड़के-बाले के आयोजन में मतवाली हो गयी है। मीठी हँसी हँसकर वह बोला—ओह, माँझिन, देखता हूँ, तुम पक्की मालिकिन होगी। अभी से ही घर-बार की चिन्ता में पागल हो गयी हो ?

बूढ़िया ने अहीन्द्र के स्वर में स्वर मिलाकर कहा—हाँ, देखो तो ! इसे एकदम शर्म नहीं है।

युवती अब और क्रोधित हो उठी, झट-झट अनेक बातें कह डालीं। अहीन्द्र ने बड़े कष्ट से उनका अर्थ समझा। वह कह रही थी—शर्म तुम्हें नहीं है बूढ़े-बूढ़ी, तुमने सब को जमीन न दे अधिक अंश स्वयं हड़प लिया है !

अहीन्द्र को थोड़ा अचरज हुआ, कमल माँझी के अपने नाम जमीन लिखाने में इस प्रकार के उद्देश्य की उसने कल्पना भी नहीं की थी। उसने बुढ़िया से कहा—ना-ना। छि, छि, ऐसा कैसे किया तुम लोगों ने माँझिन ?

वृद्धा ने विनय से कहा—जमीन सब वयस्क माँझियों को दी गयी है। इन युवा-युवतियों को नहीं मिली। ये अभी जमीन लेकर क्या करेंगी ? इनकी जवानी है, परिश्रम से पैसा पैदा करने का समय है। इसके बाद उसी पैसे से जमीन खरीदेंगी, बूढ़ों के मरने पर पायेंगी। यही तो नियम है। उस बूढ़े ने जमीन अधिक ली है—यह भी है सत्य। किन्तु लाल बाबू, वे हैं मण्डल-सरदार, अधिक न होने से चलेगा कैसे ? सम्मान कैसे रहेगा ? और लाल बाबू ने बहुत-सी भूमि अपने लिये रख ली, नहीं तो सब को मिलती। यह थोड़ी-सी जमीन टुकड़े-टुकड़े कर कैसे बहुत लोगों को दी जाय ?

उस युवती का मालिकिन बनने का आग्रह अहीन्द्र को बहुत अच्छा लगा। उसने थोड़ा सोचकर कहा—एक काम करो, माँझिन, तू अपने होनेवाले पति को भेज दे। जो जमीन मैंने अपने लिये रखी है, उसका कुछ भाग उसको लिख दूंगा। और जो चाहेंगे, उन्हें दूंगा।

वह इसके बाद हँसकर बोला—क्यों, अब तो तुम्हारा झगड़ा मिट गया न?

बुढ़िया बोली—हाँ, बाबू, मिट गया। सब माँझी बड़े खुश होंगे। कल सब आपके पास जायँगे—जिनको जमीन देना, उनके नाम लिख लेना।

युवती ने कहा—हमलोगों को भागीदारों का सरदार बना देना, बाबू।

वह मर्द आपका सब काम कर देगा। मैं तुम्हारे घर का काम कर दूंगी। ठीक है?

युवती के आनन्दित होने से अहीन्द्र खुश हो गया। वह बोला—जा, अब घर जा; जाकर नाच-गा।

आप नहीं चलेंगे बाबू?

नहीं, अधिक रात हो गयी, मैं घर जाता हूँ।

अहीन्द्र नदी की धारा पारकर इस पार हो गया। इसी समय किसी ने पीछे से पुकारा—'बाबू! लाल बाबू!' अहीन्द्र घूमकर खड़ा हो गया। देखा, एक मूर्ति भागती हुई उसी की ओर आ रही है, वही युवती दौड़ी आ रही है।

फूल ले जा बाबू। तेरे लिये फूल लायी हूँ। अंचल में कुरची का फूल लेकर वह सामने खड़ी हो गयी।

सरल-अशिक्षिता युवती की कृतज्ञता के आनन्द से अहीन्द्र का मन भर गया। उसने दोनों हाथ फैलाकर कहा—दे दो। युवती ने अंचल

से फूल ढाल दिये। अहीन्द्र के हाथ की अंजलि में इतने फूलों के लिये स्थान नहीं था। अञ्जलि भर जाने पर कुछ फूल बालू पर गिर पड़े।

युवती बोली—ये फूल गिर पड़े?

अहीन्द्र ने कहा—उन्हें तू ले जा। केश में गूँथना!

युवती निस्संकोच होकर अपने सिर में फूलों के कई गुच्छे गूँथ नाचते-नाचते चाँदनी-सी उज्ज्वल बालू पर से चली गयी। टिटिहिरियों का दल युवती की चाल की तेजी देख चिल्लाते हुए कुछ दूर पर जा बैठा।

अहीन्द्र स्नेहपूर्ण दृष्टि से युवती की ओर देखता रहा। अब उसके मन की सारी उदासी कट गयी। तीसरे पहर दुःख की अधिकता से उसका अन्तर-बाहर भाटे वाली नदी के समान तरंग-रहित हो गया था; अकस्मात् जैसे उसी ग्लानि तथा उदासी को बाढ़ के रूप में बदलने के लिये आनन्द का एक पूर्ण ज्वार आ गया।

अद्भुत् युवती है! सन्थालों द्वारा ताँत से बुना मोटे दूध की तरह सफेद कपड़ा उसे कितना फबता है! लाल रेलिंग की तरह नक्शा कढ़ा हुआ पाढ़ उसने कपड़े के किनारों पर लगाया है। युवतियाँ चोटी न बना केवल बाँध देना पसन्द करती हैं। सरल बर्बर जाति, अपना स्वार्थ छिपाना नहीं जानती और स्वार्थ में बाधा पड़ने पर अपनों से भी झगड़ा करने में दुविधा नहीं करती। इस कुमारी युवती को स्वामी-सन्तान तथा सम्पत्ति की कामना द्वन्द्व कर घोषित करने में भी संकोच नहीं है। विचित्र जाति है!

बालू के दियारे पर वह युवती बहुत दूर पर अब भी दिखलायी दे रही है। वह मनुष्य नहीं जान पड़ती, दूध की तरह उसका कपड़ा चाँदनी मिलकर एक हो गया है। केवल खुले हाथ और पीठ का थोड़ा भाग, और सिर के काले केश, पतली सफेद चादर-जैसी, चाँदनी में काले रङ्ग के समान, दिखायी दे रहे हैं। वह काली परछाईं की तरह भागती जा रही है।

तेरह

जेठ के अन्त में कई बार पानी बरसने से मिट्टी भींगकर सरस हो गयी है। कुछ ही दिनों में वह दियारा खूब हरा हो गया।

किसान हल-बैल लेकर खेत में पहुँच गये। धान की खेती का समय एकदम सिर पर आ गया। अतः रङ्गलाल तथा नवीन धान की जमीन के लिये उतावले हो उठे, दियारे की ओर ध्यान न दे सके। धान के बीज बोने के लिये कुछ भूमि पहले से ही जोती गयी थी, अब फिर उसे दो बार जोत, खेत की मिट्टी बारीक कर, बीज बो दिया गया। दूसरी भूमि से बीज की भूमि अलग रखने के लिये ताड़ का एक पत्ता काटकर उसमें गाड़ दिया गया। इसी चिह्न को देख रखवाले सावधान होंगे, वे इस भूमि में गाय-बछड़े को आने नहीं देंगे।

आषाढ़ के बीच में फिर एक बार जोरसे पानी बरसा ; अतः मिट्टी बहुत गीली हो जाने से खेती बन्द हो गयी। नवीन ने आकर कहा—सरदार, अब दियारे के ऊपर जुटकर चलना चाहिये। अभी एक बार जोत-जात न करने से क्वार-कार्तिक में क्या वहाँ जा सकेंगे ? वहां सिर से ऊँचे जंगली पौधे उठ आयँगे।

रङ्गलाल बैठकर तम्बाकू पी रहा था। उसने कहा—बैठे-बैठे मैं भी इसी पर विचार कर रहा था। वहाँ अकेले अकेले काम करने में

सुविधा नहीं होगी। एक साथ काम करना होगा। एक बार पाँचों आदमियों के हल—मेरे दो, तुम्हारे दो, और उन तीनों के एक-एक,—सातों को—लेकर एक साथ टूट पड़ना होगा। उनकी जमीन पर एक-एक दिन, और हमलोग अपनी जमीनों पर दो-दो दिन करके लेंगे।—इतना कहकर उसने हुक्के से चिलम उतारकर नवीन को दी और कहा—लो, पिओ।

चिलम में कश लगाते ही नवीन खाँसने लगा। खाँसते-खाँसते वह बोला—बाप रे, ऐसी विषैली हुत अधिक तेज हो गयी है!

हँसकर रङ्गलाल बोला—हुँ-हुँ, वर्षा के लिये तैयार कर रखी है। पानी में भींग जाने से जब कँपकँपी लगेगी, तब एक कश खींचते ही शरीर गर्म हो जायगा।

यह तो ठीक है; किन्तु अभी तो विष बन गयी है।—इतना कह उसने चिलम रङ्गलाल को लौटा दी।

रङ्गलाल बोला—तो कल ही सब जुटकर चलें। खेतों में तो अभी चार-पाँच दिन हल नहीं चलेंगे।

इसीसे तो तुम्हारे पास आया हूँ। सोचा कि सरदार की एक बार नींद तोड़ आऊँ। ऐसी नर्म भूमि में जंगली काँस बिलकुल खतम हो जायगी।

किन्तु एक बात मैं सोचता हूँ। सोचता हूँ, चक्रवर्ती-घर से झगड़ा-तकरार हो तो क्या होगा! भूमिका बन्दोबस्त तो नहीं हुआ है!

पागल हो गये हो! झगड़ा-तकरार करेगा कौन भैया? मालिक तो पागल हो गये हैं और सुनता हूँ, उनको बहुत से रोग हो गये हैं। बड़ा लड़का कालेपानी में है और कई दिन हुए, छोटा पढ़ने चला गया। मजुमदार को जवाब हो गया है। और मजुमदार ने ही तो हजम किया है, और कुछ मिलने से ही काम चल जायगा। रहनेवालों में मालिकिन

तथा मानदा नौकरानी हैं। हुक्म देंगी मालिकिन और लड़ेगी मानदा नौकरानी ?—कहकर रङ्गलाल हा—हा हँसने लगा।

नवीन ने धीरे-धीरे गर्दन हिलाकर कहा—उहुँ, छोटा बड़ा होशियार है। वह एक बड़ी भारी चाल चल गया है। वह पचास बीघे भूमि, उसने न तो हमें दी और न सन्थालों को, उसका बन्दोबस्त कर दिया है—सब युवक माँझियों के हाथ। इस समय ऐसी स्थिति है, मालिकिन के हुक्म देते ही सन्थालों का सम्पूर्ण गाँव टूट पड़ेगा।

रङ्गलाल अब कुछ विचार में पड़ गया—चुपचाप बैठ सिर के केशों में उँगली डाल ली और उन्हें मुट्ठियों में पकड़कर नोचना शुरू कर दिया।

नवीन अपने पैर के अंगूठे से नख दबाने लगा। कुछ देर के बाद उसने पुकारा—सरदार !

उँ ?

तो फिर ?

वही सोचता हूँ।

मैं कह रहा हूँ कि, मालिकिन के पास जाकर इस बन्दोबस्त के झगड़े को तय कर लेना ही अच्छा है। दूसरों का न्यायोचित हक मारने से क्या लाभ है ? इसके बाद जमींदार ब्राह्मण हैं।

ऐसा नहीं होगा। जब कह दिया—नजराना नहीं दूँगा—तब नहीं ही दूँगा।

तो फिर ?

तो फिर क्या होगा ! हल-बैल लेकर कल चलें। फिर जो होगा, देखा जायगा।

भगा देने पर मान नहीं रह जायगा, इस बात पर विचार करो।

रङ्गलाल तनिक-सा मुस्कुराकर बोला—उस समय मजिस्ट्रेट के यहाँ दरख्वास्त दूँगा, हमें हमारी जमीन से जमींदार ने बलपूर्वक हटा दिया है।

नवीन चक्रवर्ती-घराने का बहुत पुराना नौकर है। इस समय नौकरी न रहने पर भी वह इस पुराने मालिक के घर से कुछ ममता रखता है। उसी मालिक के घराने से इस प्रकार के विरोध के लिये उसके मन ने हामी नहीं भरी। वह सिर नीचा किये बैठा रहा।

रङ्गलाल बोला—क्या हुआ, चुप क्यों हो गये? चलो, जुट-जाटकर देखा ही जाय, क्या होता है!

नवीन अब बोला—भाई, ऐसा मैं नहीं करूँगा। लोग क्या कहेंगे, सोचो तो!

रङ्गलाल हँस पड़ा, इसके बाद दोनों हाथों के दोनों अँगूठों को एकत्र कर और उसे नवीन के मुँह के पास ले जाकर बोला—कच्चू। लोग कहेंगे—कच्चू! तुम घर में भरोगे आलू, गेहूँ, मटर, गुड़ और लोग कहेंगे कच्चू।

नवीन फिर भी चुप रहा। रङ्गलाल ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा—चलो, एक बार घूम-फिरकर रंग-ढंग तो देख आयें। सन्थालों को कैसा हुक्म-टुक्म दिया गया है, जाने से इसका पता चल जायगा। इसके बाद जमीन की हालत देख लेंगे। चलो, चलो।

नवीन ने इस पर आपत्ति नहीं की, उठ पड़ा।

काली नदी का जल इसी बीच थोड़ा बढ़ गया है। अब घुटने तक पानी है। कई दिन पहले जल बहुत बढ़ गया था, ऊपर की बालू के दियारे पर भी लाल जल फैल गया था। जल अब घटा है। बालू पर पतली लाल मिट्टी की एक तह जम गयी है। धूप की गर्मी से वह तह फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी है, पैर रखते मुरमुरकर टूटती और बालू में मिल जाती है, फिर इन लाखों भागों में बँटी हुई इस पतली मिट्टी की तह पर इस समय कितने विचित्र चित्र बन गये हैं। गीली मिट्टी पर पक्षियों के पैरों के दाग टेढ़ी-मेढ़ी कतारों में पड़ गये हैं। उनकी चित्रकारी किये हुए कपड़े

से भी विचित्र शोभा हो गयी है ! इसी के बीच मनुष्य के पैरों की दो छापें चली गयी हैं, जान पड़ता है उसी कमल माँझी के पैरों के दाग हैं। एक बहुत बड़े साँप के चलने की टेढ़ी और हल्की रेखा एकदम दियारे के अन्त तक चली गयी है। इसके भीतर तेज दृष्टि से देखने पर लाखों पतंगों के पैरों की पतली-पतली निशानियाँ दिखायी पड़ती हैं।

इसी बीच घास तथा काँस के पौधों में खूब हरे-हरे पत्ते निकलकर भीड़-भाड़ किये हुए हैं, जंगली लताओं में नये तने दिखलायी पड़ रहे हैं, बीच-बीच रेशों से कितने नये पौधे निकल आये हैं। कुश के अंकुर नुकीले हो गये हैं।

नुकीले कुशों पर चलते-चलते चिढ़कर रङ्गलाल बोला—ये सब भी बाबू बन गये हैं नवीन। देखो, रास्ता कैसा कर रखा है !

नवीन ने कहा—उनके पैर हमारे पैरों की अपेक्षा कड़े होते हैं।

वे गाँव के पास सन्थालों की जमीन देख अवाक् हो गये। इसी बीच सारी जमीन हरी फस्ल से भर गयी है। जोत, खोद और निराकर उन्होंने मक्का, सन, अरहर आदि की बुआई खतम कर डाली है। खेत के चारों ओर पौधों की पंक्तियाँ हैं। उसमें सेम, खीरे, ककड़ी के अंकुर निकल आये हैं। धान के खेत जोत तथा सरावन देकर तैयार हो गये हैं। झोपड़ियों की छतों पर नई घास बिछा दी गयी है, कच्चे सोने के समान नयी घास की बिछावन तीसरे पहर की धूप में चमक रही है। उनके प्रति तीव्र घृणा होने पर भी रङ्गलाल तथा नवीन मुग्ध हो गये। रङ्गलाल बोला—वाह ! वाह ! वाह ! इन्होंने थोड़े ही दिनों में क्या कर डाला ! घास-पात निकालकर बीस वर्षों से जुती जमीन के समान साफ कर दिया है !

नवीन झुककर फस्ल के अंकुर देख रहा था। देखो, अरहर कैसी जमी है ! एक भी बीज बाद नहीं गया। इसके बाद लम्बी साँस छोड़कर बोला—शायद हमारी जमीन में हम घुस भी नहीं पायँगे। देखते

हो न, घास और काँस कितनी बढ़ गयी हैं, जैसे वे अभेद्य हो उठी हैं, घास तथा काँस इतनी बढ़ गयी हैं कि मनुष्य की छाती डूब जाती है। इस जंगल में हल किस प्रकार चलेगा?

नवीन बोला—घास न कटने पर और उपाय नहीं है, सरदार।

रङ्गलाल चिन्ता के साथ बोला—मैं भी ऐसा ही देखता हूँ।

नवीन ने कहा—एक बात करने से काम नहीं चलेगा सरदार? सन्थालों को ही इस वर्ष के लिये हिस्सेदार बना लिया जाय। एक बार वे काट-कूटकर साफ करें, जोत-खोदकर ठीक करें, इसके बाद अगले साल से हमलोग स्वयं काम करेंगे।

यह उपाय रङ्गलाल को भी बुरा नहीं जँचा। वह बोला—ऐसा ही सही। चलो, देखें, वे क्या कहते हैं?

ऐसा विचारकर उन्होंने सन्थालों के गाँव में प्रवेश किया। झक-झक, चमचम गाँव, पथ अथवा आँगन में कहीं भी गन्दगी का नाम नहीं है। इस समय भी गाँव के आसपास गायें, भैंसें और बकरियाँ चरती-फिरती हैं। खाद के ढेर पर मुर्गियाँ दाने चुगने में व्यस्त हैं। आँगन के आसपास लकड़ियों पर सेम, लौकी तथा कुम्हड़े के पौधे वासुकी के समान हजारों फन फैलाकर बढ़ते चले गये हैं। घरों के चारों ओर, सरल रेखा की तरह सीधा बाँध तैयार किया गया है। उसी के ऊपर पंक्ति बाँधकर काँटे लगाये गये हैं। इसके भीतर आम, कटहल और महुये के पेड़ लगाये गये हैं। बीच-बीच में सहिजन की डाल और जड़-समेत बाँस लगाकर उन्हें काँटों से घेर दिया गया है।

रङ्गलाल बोला—इन लोगों ने कुछ भी बाकी नहीं रखा—फल, फूल, सहिजन, बाँस—एकदम इन्द्रलोक बना दिया है, अद्भुत् जाति है!

कठपुतलियों के नाच के उस्ताद चूड़ा माँझी का घर सबसे आगे पड़ता है। माँझी बढ़ई के औजार लेकर चबूतरे पर बैठ हल तैयार कर

रहा था और एक छोटा लड़का उसकी सहायता कर रहा था। एक प्रायः तैयार हल पर औजार चलाते-चलाते मांझी गुनगुनाकर गा रहा था। नवीन हल की ओर उँगली से इशाराकर बोला—देखते हो न, कितना पतला और कितना लम्बा है ?

रङ्गलाल ने मुँह बिचकाकर कहा—फालतू है। ऐसे पतले हल से मिट्टी कैसे कटेगी ? इससे हमलोगों का अच्छा है। जाने दो। अब काम की बातें हों। हे मांझी, तुम्हारा सरदार कहाँ है ?

उस्ताद ने कुछ उत्तर नहीं दिया, अपना काम करता ही रहा।

रङ्गलाल चिढ़कर बोला—अरे, सुनता है ?

मुँह न उठाकर अब उसने कहा—क्या ?

सरदार ?

हाँ।

सरदार ?

हाँ, हाँ।

चूड़ा ने अब अपने औजार रख किसी चीज के लिये अपने कपड़े के किनारे तक खोजना शुरू किया। किन्तु उसे न पाकर उसने हताश होकर कहा—पाया नहीं।

रङ्गलाल ने विस्मय के साथ कहा—यह कहता क्या है ?

चूड़ा ने करुणाभरे मुँह से कहा—रखा था तो बाँधकर। कहीं गिर गया है।

रङ्गलाल अत्यन्त क्रोध के साथ बोला—देखो इसका साहस ! हँसी-मजाक आरम्भ कर दिया है।

चूड़ा अब खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला—आदमी अपने घर रहता है, तुमलोग उसके घर जाओ। मुझ से क्यों पूछते हो ?

रङ्गलाल कुछ बोला नहीं, वह नवीन का हाथ पकड़ क्रोध के साथ

आगे बढ़ा। चूड़ा ने पीछे से मीठे स्वर में पुकारा—सरदार, ओ सरदार।

रङ्गलाल ने सोचा कि इसको दुःख हुआ है, उसने घूमकर पूछा—क्या है?

चूड़ा कुछ बोला नहीं, उसके शरीर की कोई पेशी हिली नहीं, केवल अधपकी मूँछें विचित्र ढंग से नाच उठीं। मूँछों के नाच का वह ढंग जैसा विचित्र था, वैसा ही हास्यकर भी। यह देख रङ्गलाल हँस पड़ा, बोला—देखता हूँ, यह रसिक है।

चूड़ा अब बोला—क्रोध मत करना।

सरदार माँझी के बरामदे में खटिया पर एक-आध भलेमानुष बैठे हैं, कमल भूमि पर बैठकर बातें कर रहा है। उसके शरीर पर है एक चादर, पैर में एक जोड़ा चट्टी, हाथ में बाँस की एक मोटी छड़ी, आँखों पर एक जोड़ा चश्मा, जो डोरे से लगाकर सिर से बँधा हुआ है। चश्मा लगायी हुई आँखों को एकदम आकाश में उठा रङ्गलाल तथा नवीन को देख उसने कहा—ओह, पाल महाशय हैं? लोहार भी साथ में हैं? क्या समझाते हो?

रङ्गलाल थोड़ा हँसकर बोला—क्या समझते हो जी?

उसने कहा—और क्या कहूँ, भाई, ये कहते हैं कि वर्षा-काल में धान देना होगा। यही देखने-सुनने आया हूँ। यह अच्छा करते हैं जी, इसी बीच इन्होंने गाँव को अच्छा बना दिया। इसके बाद सुना है, आपलोगों ने भी जमीन ली है। क्या हमसे कहते, तो आपलोगों को जमीन हम निकाल लेते? मैं भी थोड़ी-बहुत लेता और क्या?

नवीन बोला—अच्छा, पाल महाशय ठीक कहते हैं! हमें ही क्या जमीन देता था, किसी प्रकार हाथ-पैर पकड़कर लिया? इस पर कौन चन्द राजा, कौन चन्द मंत्री, कोई कागज ही नहीं है।

उस आदमी ने हँसकर कहा—यह तो देख रहा हूं। चारों कोने

चार खूँटे गाड़ना ही काफी है, बस, जमीन दखल हो गयी। किन्तु आप लोगों ने तो अभी तक कुछ किया भी नहीं। अब तक हाथ भी नहीं लगा सके। इधर फिर धान की खेती का समय सिर पर आ पहुँचा।

रङ्गलाल बोला—सोचता हूं कि इस बार सन्थालों को ही हिस्सा दे दूं। वे ही जोतें-खोदें; जो चाहें, लगायें; जो खुशी हो, हमें देंगे, इसीलिये सरदार के यहाँ आये हैं। सुनत हो न, सरदार!

कमल माँझी दोनों हाथों से सिर पकड़कर बैठा था, बोला—यह तो मैंने सुन लिया।

तो क्या कहता है?

उँ-हुँ, हम मिहनत करेंगे, तुमलोग पीछे निकाल लोगे। हम क्यों तुम्हारी जमीन ठीक करें? हमें पैसे देकर मिहनत क्यों नहीं कराते?

क्यों? गरजमन्द समझते हो क्या?

तुमलोग ही तो ऐसा करते हो। हम मिहनत करेंगे, जमीन तैयार करेंगे और तुमलोग उसे निकाल लोगे।

नये आदमी ने कहा—मैं जाता हूँ मांझी। तो वही बात पक्की रही।

मांझी—हाँ, वही ठीक है, आप आयेंगे न?

हाँ, ठीक आऊँगा मैं। इसके बाद रङ्गलाल और नवीन से बोला—अब आप लोग बातें कीजिये। मैं जा रहा हूँ।

उसके चले जाने पर रङ्गलाल बोला—हाँ मांझी, तुमलोग उससे धान लोगे? वह तुम्हारा गला काट लेगा। खबरदार, खबरदार! एक मन धान का आधा मन सूद लेता है! खबरदार!

मांझी ने गर्दन हिलाकर कहा—उसने कहा है कि सूद नहीं लेगा। उसने हमारे गाँव में दूकान खोली है। उसने हमें भाग पर जमीन दी है, हम उसकी भूमि काट-जोतकर ठीक कर देंगे।

रङ्गलाल हँसकर बोला—पाल ने यहाँ जमीन ली है क्या?

हाँ जी, उसने तुम्हारी जमीन ली है। बाबुओं को रुपये दिये, कागज लिखा लिया, रसीद ले ली। कल हीं हम सब उसकी जमीन में काम करेंगे। वह आदमी लेकर आयेगा।

रङ्गलाल तथा नवीन—दोनों—विस्मय के आघात से सन्न हो गये और मिट्टी की पुतली की तरह खड़े रहे।

कमल गाँव के सिरेपर फूस की एक बड़ी छावनी दिखाकर बोला—उसने वहाँ दूकान की है। उसके पास तुमलोग जाते क्यों नहीं?

रङ्गलाल और नवीन—दोनों—निराशा तथा क्रोध से अस्थिर होकर दूकान की ओर बढ़े। वह आदमी सीधा नहीं है। ग्वालों में श्रीवास पाल नामो है। बहुत खेती तो होती ही है, इसके बाद नकद रुपये और धान की महाजनी भी करता है। बड़े लड़के ने मनिहारी की दूकान खोली है, सन्थाल-बस्ती के एक कोने में एक बहुत बड़ी छावनी बनायी है और इसके चारों ओर बेड़े की दीवार बनाकर श्रीवास ने कई दिनों में ही दूकान खोल ली है। एक ओर मोदीखाना, बीच में एक तख्ते पर जस्ते के गहने, रंगीन नकली रेशम की गुच्छी, लकड़ी की कंघी, आईना—कुछ मनिहारी भी सजायो गयी है। एक ओर तेल की चीजें बिकती हैं।

रङ्गलाल ने पुकारा—पाल महाशय!

पाल के छोटे लड़के ने मुँह निकालकर उन दोनों को देख, कहा—पिताजी तो घर चले गये हैं।

रङ्गलाल तुरन्त लौटा, रास्ते से नहीं, जंगल से होकर गाँव।

पाल के लड़के ने कहा—इसी रास्ते से जाइये, नदी तक बराबर रास्ता बना हुआ है।

वास्तव में हरी घास के ऊपर एक गाड़ी के पहिये का दाग अच्छी तरह बना हुआ है और इसी बीच कुछ जंगल भी काट डाला गया है। रङ्गलाल जंगल में से होकर ही गाँव की ओर बढ़ा।

चौदह

रङ्गलाल मन में क्रोधकर, आँखें लाल किये हुए, श्रीवास के घर पहुँचा। श्रीवास उस समय पास के गाँव के कई मुसलमानों से बात कर रहा था। वे इस ओर के बड़े जबर्दस्त आदमी हैं—किन्तु हैं श्रीवास के आसामी। वर्षाकाल में धान और आवश्यकता पड़ने पर दो-चार रुपये श्रीवास इन्हें उधार देता है, सूद नहीं लेता; क्योंकि मुसलमानों के धर्म-शास्त्र में सूद लेना महापाप है।

कोई-कोई तो हँसी के साथ श्रीवास से कहता है—घर पर टिन लगा है पाल महाशय! इनसे सूद लेते क्यों नहीं?

श्रीवास उत्तर देता है—किन्तु दरवाजा तो लकड़ी का ही है भाई, रात को तोड़कर घुस जाने पर रक्षा कौन करेगा? इसके अतिरिक्त इस प्रकार के दस-पाँच आदमियों का रहना अच्छा है। पुकारने पर बहुत काम हो जाता है उनसे।

रङ्गलाल की मूर्त्ति देख श्रीवास हँसा, किन्तु तनिक भी निरादर अथवा क्रोध प्रकट नहीं किया। वह मीठी हँसी के साथ स्वागत करते हुए बोला—आइये, आइये। काम था, तो उसी जगह क्यों नहीं कह दिया? अरे तम्बाकू भर लाओ, तम्बाकू भर लाओ।

बिना देर किये ही रङ्गलाल ने पूछा-इसका अर्थ क्या है पाल महाशय?

श्रीवास एकदम जैसे आकाश से गिर पड़ा, बोला—क्या आप लोगों ने वह जमीन लेने के लिये खूँटे गाड़ रखे हैं ? किन्तु हमारा बन्दोबस्त तो आप लोगों से पहले का है, पाल महाशय ! आपलोग तो मेरी ही जमीन ले गये थे न ?

रङ्गलाल ने विस्मय के साथ कहा—इसका अर्थ ? हमने छोटे भैया के सामने—

वाधा देकर श्रीवास बोला—मेरा बन्दोबस्त है बड़े भैया से, पाल महाशय ! नैनी का जिस रोज खून हुआ, उसी दिन सवेरे मैंने बन्दोबस्त लिया। केवल समझते हैं न—इसी झगड़े, मारपीट के लिये ही उसमें मैंने हाथ नहीं लगाया।

रङ्गलाल उत्तेजित हो उठा—क्या लड़के को भुलावा दे रहे हो पाल, अथवा पागल को समझा रहे हो ? क्या मैं लड़का हूं, अथवा पागल ? बड़े भैया आपको जमीन बन्दोबस्त कर गये हैं ?

श्रीवास शान्तभाव से बोला—बैठिये। आप लिखना-पढ़ना तो जानते हैं। कहाँ है ? चेक रसीद तो देखिये। तारीख देखिये, सन्-साल देखिये, उसकी उल्टी पीठ पर जमीन की चौहद्दी देखिये। उस समय के नायब हमारे मजुमदार महाशय का हस्ताक्षर देखिये। इसके बाद, वे अभी जीवित हैं, उनके पास चलिये। वे क्या कहते हैं, सुनिये।—इतना कहकर श्रीवास ने जमींदार की एक रसीद निकालकर रङ्गलाल के सामने रख दी।

श्रीवास की बात अक्षरशः सत्य है। इस रसीद से तो इसीका प्रमाण मिला। किन्तु रंगलाल बोला—हम भी धान के चावल का ही भात खाते हैं पाल, यह आपने मजुमदार के साथ जाल करके लिखवाया है। यह रसीद जाली है। हम वह जमीन नहीं छोड़ेंगे, आप इसे याद रखिये।

श्रीवास हँसकर बोला—आपके न कहने से भी मैं जानता हूँ, पाल महाशय ! तो कल ही चलियेगा दियारे के ऊपर, कल घास काटकर जमीन साफ करने मेरे आदमी जायँगे। यदि उन्हें भगा सकें, तो भगा दीजियेगा। इसके बाद अपने दल के कई मुसलमानों को सम्बोधितकर कहा—सुना न मसऊद, तो खूब सवेरे ही तुम लोग आना, समझते हो न, मुझे तुम्हारा ही भरोसा है।

मसऊद ने श्रीवास को कुछ उत्तर न दे, रङ्गलाल से कहा—अच्छा तो, मैं आऊँगा पाल। भय नहीं, बड़ी-बड़ी घास पर गिरने से शरीर में चोट नहीं लगेगी।—इतना कहकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

रङ्गलाल चुप हो गया, किन्तु नवीन अब हँसा।

× × × ×

नवीन अब तक चुपचाप रङ्गलाल के पीछे चल रहा था। श्रीवास के घर से बाहर आकर उसने कहा—पाल, मैं तुम्हारे इन सब झगड़ों में नहीं हूँ।

रङ्गलाल की छाती में रुका हुआ क्रोध धधक रहा था, श्रीवास तथा मजुमदार की चालबाजी का क्षोभ, साथ ही साथ दियारे की उर्वरा जमीन का असीम लोभ—इन दोनों के कारण वह जैसे ज्ञान-रहित हो गया।

उसने मुँह बिचकाकर कहा—हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ। जा, ना बेटा ! घर में बागदी स्त्री की आंचल में छिपकर बैठ।

नवीन है जाति का बागदी। आज तीन पीढ़ियों से जमींदार की नौकरी में लाठी हाथ में लेकर समय बिताते आ रहा है। यह बात उसके शरीर में तीर की तरह लगी। वह कड़ी नजर से रङ्गलाल की ओर देखकर बोला—मैं स्त्री की आंचल में छिपूँ या जो करूँ, तुम जाते हो, तो जाना, दियारे पर ही मुझसे भेंट होगी। समझे न ? केवल मैं ही नहीं, सारा बागदी-पाड़ा वहाँ रहेगा। इतना कहकर वह तेजी से जाने लगा।

क्रोध से बात कह देने के बाद रङ्गलाल को अपनी भूल मालूम हो गयी थी। अब उसे इसी नवीन के ही बाहुबल का सारा भरोसा था। मुसलमानों के सामने खड़े होने के लिये बागदियों को छोड़ दूसरा उपाय नहीं था। नवीन सारे बागदीपाड़े का सरदार है। उसकी बात पर वे सब कुछ कर सकते हैं। क्षणभर में रङ्गलाल जैसे अपने आप बदल गया। एकदम स्वर बदलकर उसने पुकारा—नवीन, नवीन! ओ नवीन! सुनो भाई!

भौंहें टेढ़ीकर नवीन लौटकर खड़ा हो गया और बोला—कहो, क्या कहते हो!

हँसी करके परिस्थिति ठीक कर लेने के विचार से रङ्गलाल ने कहा—अपने क्रोध की चोट से अब रास्ता ही भूल गये! उधर कहाँ जाओगे?

अपने मालिक के घर जाऊँगा। मैंने बहुत नमक खाया है, उनका अपमान और हानि मैं नहीं देख सकता। मैं हुक्म लाने जा रहा, तुम्हें भी जमीन जोतने नहीं दूँगा, और श्रीवास को भी नहीं। सारा बागदीपाड़ा कल मालिक की ओर से जायगा। यह बात तुम लोग समझ रखो।

रङ्गलाल कुछ सोचकर बोला—चलो, मैं भी चलूंगा। रुपये देकर ही हम बन्दोबस्त कर लेंगे। तब तो होगा न?

नवीन खुश होकर बोला—यह तो मैं कभी से कह रहा था!

नवीन चक्रवर्ती-घराने का पुराना नौकर है। केवल वही नहीं, उसके घरवाले उसके दादा के समय से चक्रवर्तियों के घर काम करते आ रहे हैं। इस जमीन के बन्दोबस्त में वह आरम्भ से ही मन-ही-मन एक दुविधा अनुभव कर रहा था, नजराना न देकर जमीन का बन्दोबस्त पाने में उसका कुछ दावा था, किन्तु जब अहीन्द्र उससे सहमत न हुआ और रङ्गलाल ने कानूनी दाव-पेंच का विचार किया, तब से उसके मन में ऐसा करना एक

अपराध जान पड़ता था, किन्तु दल के भय से यह बात वह साफ-साफ नहीं कहता था। रङ्गलाल तथा अन्य कई किसानों ने जब ऐसा ही विचार कर लिया, तब वह अकेले विरोध करने में सङ्कोच करने लगा। उस समय साथ-साथ थोड़ा लोभ भी था। दूसरों को धोखा देने में आनन्द न आने पर भी, उन लोगों की खातिर अथवा स्नेह से ऐसा किया है, इसमें जो प्रसन्नता है, उसके प्रति उसके मोह ने अपराध-ज्ञान को थोड़ा कम कर दिया था। अन्त में रङ्गलाल ने जब कहा—क्या इन सन्थालों की अपेक्षा भी हम चक्रवर्ती-घराने के पराये हैं?—तब मन-ही-मन उसने क्रोधभरे अभिमान का अनुभव किया। उसके भार से उसका सङ्कोच अथवा दुविधा एकदम गायब हो गयी। इसीलिये वह रङ्गलाल के दल में शामिल होकर, ऊँचे स्वर से नहीं, किन्तु प्रकट भाव से विद्रोह की घोषणा कर उठा था। किन्तु धीरे-धीरे वही दुविधा फिर उसके मन में उत्पन्न हो गयी। इसीलिये मामले-मुकदमे की राय वह नहीं दे सका। इसके बाद श्रीवास के इस षड्यन्त्र के ज्ञात हो जाने के साथ ही उसने देखा कि चारों ओर से चक्रवर्ती-घराने को धोखा देने का ही आयोजन हो रहा है। वे सब—श्रीवास, मजुमदार—धोखा देना चाहते हैं उस असहाय चक्रवर्ती-घराने को, उसके पुराने मालिक को। एक ही क्षण में उसके मन के द्वन्द्व का फैसला हो गया। अपनी तीन पीढ़ियों के मालिक की ओर से, सारी बागदी-सेना के साथ, लड़ाई करने के लिये, उसके लठैत जीवन ने सिर उठा लिया।

चक्रवर्ती-घराने के पुराने नौकर के नाते उसके अन्दर आने-जाने में बाधा नहीं थी। उसने एकदम सुनीति के पास जाकर सच्चा-सच्चा सारा वृत्तान्त सुना दिया और सिर नीचा करके खड़ा हो गया। हृदय के आवेग से उसके दोनों होंठ थर-थर काँप रहे थे। रङ्गलाल दरवाजे के बाहर रास्ते के घर में खड़ा था।

सारी बातें सुनकर सुनीति कठपुतली की तरह खड़ी रह गयीं, वे एक बात भी न बोल सकीं, बात बोली मानदा। वह तेज आवाज में बोल उठी—छिः बागदी, छिः, गले में जाकर रस्सी डाल लो !

सुनीति अब बोलीं—मानदा, ना-ना, दोष अकेले नवीन का ही नहीं है, दोष अहि का भी है। सन्थालों को जब बिना नजराना लिये ही उसने जमीन दी, तो नवीन को भी देना उचित था। सच्ची बात है, क्या नवीन हमारे लिये सन्थालों से भी पराया है ?

नवीन अब छोटे बालक की तरह रो उठा। द्वार के उस पार से रङ्गलाल ने आवेग के साथ ही कहा—कहिये माँ, आप ही कहिये। हमें रंज होगा कि नहीं, आप ही कहिये। याद कीजिये, मैंने ही सब से पहले कहा था—यह दियारा आपका ही सोलहो आने है। यदि धर्म की बात रखिये, तो हम पा सकते हैं। आपने कहा था, धर्म को छोड़कर कुछ नहीं किया जा सकता, तुम लोग निश्चिन्त रहो। इसीसे माँ, उसी दावे से हमने कहा था—हम नजराना नहीं दे सकेंगे।

सुनीति ने एक लम्बी साँस छोड़कर कहा—सब जानती हूँ, भैया, किन्तु अब मैं क्या करूँ ?

नवीन बोला—हमें हुक्म दीजिये माँ, हमलोग किसी को जमीन जोतने नहीं देंगे। सारा बागदीपाड़ा हाथों में लाठियाँ लेकर पहुंच जायगा। रहे जमीन अभी खास दखल में ही।

रङ्गलाल बाहर से बड़ी व्यग्रताभरे स्वर में बोल उठा—अभी मैं ढाई सौ रुपये हाजिर करता हूँ, नवीन ! जमीन का बन्दोबस्त हमारे साथ कर दें माँ जी।

नवीन बोला—यही अच्छा है, माँ; झंझट झेलना होगा, तो हमीं झेलेंगे, आपको कुछ विचारना नहीं पड़ेगा।

सुनीति बहुत कुछ सोच रही थीं। उनमें जो बात उन्हें सबसे अधिक

दुःख दे रही थी, वह नवीन और रङ्गलाल की बात थी। अपने स्वार्थ के लिये कैसे वे इन गरीब किसानों को खून-खराबी और झगड़े में डाल दें! उनके मन तथा विचार से स्वार्थ तो सोलहो आने केवल अपना ही जान पड़ा।

किन्तु मानदा ने हँसकर कहा—सस्ती किश्ती मिलने पर झंझट दूर करने में हानि नहीं है। क्यों बागदी? मैं भी पाँच बीघे जमीन लूँगी, माँ। मेरा भी तो अन्त समय आयेगा। मैं भी रुपये दूँगी; बागदी जो देगा, वही दूँगी। बागदी से तो मैं परायी नहीं हूँ, माँ।

मानदा की बात का ढंग केवल धारदार ही नहीं था, वरन् कुछ टेढ़ा भी था। नवीन बिगड़ उठा। दरवाजे की उस ओर दाँत-में-दाँत दबा कर रङ्गलाल घने अन्धकार में ही उसको कोसने लगा। सुनीति कुछ कहना चाहती थीं, किन्तु इसके पूर्व ही किसी ने दरवाजे की उस ओर अपनी आवाज से संकेत देकर अपना आगमन बतला दिया। गले का संकेत सभी का सुपरिचित है। सुनीति चञ्चल हो उठीं, मानदा ने विस्मय से कहा—अरे माँ, नायब बाबू हैं।

दूसरे ही क्षण शान्त तथा विनीत स्वर से मजुमदार ने बाहर ही से पुकारा—बहू जी हैं क्या?

नवीन थोड़ी दुर्बलता अनुभव कर चंचल हो गया। दरवाजे की आड़ में रङ्गलाल का मुँह सूख गया। मानदा ने मीठे स्वर में सुनीति से पूछा—माँ?

सुनीति मीठे स्वर में बोलीं—आने को कह दे।

मानदा ने पुकारा—आइये, भीतर आइये।

योगेश मजुमदार ने हँसते हुए भीतर आकर विनय के साथ कहा—अच्छी हैं न बहूजी? मालिक अच्छे हैं न?

अपना घूंघट थोड़ा खींचकर सुनीति बोलीं—वे उसी तरह हैं। सिर की गड़बड़ जैसे दिन-दिन बढ़ती जा रही है, देवर।

मजुमदार ने एक लम्बी साँस छोड़कर कहा—आह हा ! कण्ठस्वर से जितनी सम्वेदना प्रकट की जा सकती थी, उतनी प्रकट हो रही थी। इसके बाद मजुमदार ने कहा—एक बार कोढ़ के विशेषज्ञ कविराज को दिखाना चाहिये। चर्मरोग, विशेषतः कोढ़ के, तो वे धन्वन्तरि ही हैं।

सुनीति के मुँह का रंग क्षणभर में ही उड़ गया। सारा शरीर झनझना उठा। मजुमदार की बात से उन्हें गहरी चोट लगी। किसी प्रकार अपने को संभालकर उन्होंने कहा—नहीं-नहीं, देवर, यह बात सत्य नहीं है। यह उनके सिर का ही भ्रम है।

इसके उत्तर में मजुमदार के कुछ कहने के पहले ही मानदा ने झट प्रणामकर कहा—अच्छा है, नायब बाबू का दर्शन मिला। मैं कहती हूँ—मथुरा में राजा बनकर नन्द के वादे की बात भूल ही गये। किन्तु ऐसा नहीं है, पुराने मालिक पर अभी कृपा है।

मजुमदार का मुँह और नेत्र लाल हो उठे। उन्होंने दो बार अस्वाभाविकता के साथ गला साफ कर लिया। मानदा कहती गयी—नायब बाबू हमें भूले नहीं हैं। मालिक की खबर-खोज रखते हैं !

सुनीति लज्जा से जैसे गड़ गयीं—बकवादिनी मानदा क्या कह रही है ? किन्तु किस प्रकार उसको ये चुप ही करायें ? मुँह की ओर तो वह देखती ही नहीं कि इशारे से उसे मना किया जाय। मजुमदार ने स्वयं बात बदल दी। फिर एक बार गला साफकर बोले—एक बहुत जरूरी बात कहने आया हूँ, बहूजी।

सुनीति ने शान्ति की साँस लेकर हँसते हुए कहा—कहिये।

उसी दियारे की बात कह रहा हूं। उस दियारे की एक सौ बीघे जमीन का मही बाबू ने श्रीवासपाल के साथ बन्दोबस्त किया है। उनके कहने से मैंने रसीद भी काट दी है। रुपये उन्होंने ही लिये हैं छः सौ— पाँच सौ नजराना, एक सौ लगान।

सुनीति ने मीठे स्वर में लज्जा के साथ कहा—मैं तो यह बात जानती नहीं, देवर।

एक लम्बी साँस छोड़ मजुमदार बोले—जानियेगा कैसे? यह क्या आपके जानने की बात है? इसके अतिरिक्त उसी दिन तीन बजे नैनीपाल का खून हो गया। कहने का समय ही कहाँ मिला? इस समय उसी जमीन में से पचास बीघा जमीन रङ्गलाल, नवीन—ये सब—दखल करना चाहते हैं। यह इनकी जबर्दस्ती है। इन लोगों ने नजराना भी नहीं दिया।

सुनीति बोलीं—नहीं, देवर, उन्हें जमीन देने के लिये मैंने कहा था।

ठीक तो है, दियारे में और जमीन है, उसमें से वे ले सकते हैं।

अकस्मात् मानदा बाधा देकर बोल उठी—आह, हाय, हाय रे! छः सौ रुपये चील झपट्टा मारकर ले गयी। मुझे याद आ रहा है नायब बाबू, भैयाजी के हाथ में भी उसने नख मार दिया था? वे ही रुपये न?

क्षणभर के लिये मजुमदार सन्न हो गये, किन्तु दूसरे ही क्षण बोले—रुपये तो मुझे ही दिये थे महो ने, वह भी मामले में ही खर्च हो गये। समझती हैं न बहूजी, जमा खर्च के खाते—खसरा, रोकड़, खतियान—तीनों जगहों में है, आप देख सकती हैं। इसके अतिरिक्त उसको रसीद भी दे दी गयी है, मैंने अपने हाथ से लिखकर दी है। श्रीवास आया है, वही रसीद लेकर बाहर खड़ा है। वह इस वर्ष की लगान भी देना चाहता है। साथ-साथ बाहर से श्रीवास का भी संकेत मिला—लगान के रुपये मैं ले आया हूं, मजुमदार महाशय! एक सौ रुपये मैं अभी दे दूँगा। ऐसा कह वह दरवाजा पारकर एकदम भीतर आकर खड़ा हो गया।

सिर का घूंघट और थोड़ा बढ़ाकर सुनीति ने परेशानी का अनुभव

किया। केवल यही नहीं, उनके नेत्रों में आँसू आ गये। इस प्रकार कोई अपनी इच्छा से अन्दर आ सकता है, इसकी कल्पना भी अब से एक क्षण पूर्व वे नहीं कर सकती थीं। श्रीवास का भीतर प्रवेश करना जिस प्रकार कल्पना से बाहर था, उसी प्रकार उस एक सौ रुपये की गर्मी भी दुःखदायिनी थी। वे और सहन न कर सकीं। अपने एक मात्र आश्रय स्वामी के घर की उन्हें याद आ गयी, वे तेजी के साथ स्वामी के घर की ओर चली गयीं।

कुछ क्षण के लिये इस घटनाचक्र में अकस्मात् जटिलता आ जाने से सभी मौन हो गये। मानदा क्रोधभरी क्रूर साँपिन की तरह फूल उठी। उसके पहले ही मजुमदार मौन-भंगकर बोले—बहू जी चली गयीं।

मानदा ने उसने का अवसर पा खुश होकर कहा—मैं भी तो हूँ; कहिये, क्या कहते हैं?

हँसकर मजुमदार बोले—तू सुनकर क्या करेगी?

क्यों, जो हुक्म देना होगा, मैं ही दूँगी। भीतर ही जब कचहरी हो गयी, तब मुझे नायब होने में हर्ज क्या है?

तोभी मजुमदार के मुँह की हँसी नहीं मिटी। उसने कहा—मानदा के दाँत जितने ही चमदार हैं, उतने ही पतले और तेज भी। तुम सान देकर दाँत साफ करती हो न?

मानदा ने हँसकर कहा—यह देखिये, नायब बाबू, क्या कह रहे हैं? नेवले के दाँत में सान लगती है, कि सिल होती है? साँप को काटने के लिये धार उसको भगवान ही दे देते हैं। वह और कुछ कहने जा रही थी, किन्तु ठीक इसी समय सामने ऊपर के बरामदे से सुनीति ने पुकारा—मानदा!

मानदा का रूप बदल गया। आदर और ममता के साथ उसने कहा—क्या है माँ?

सुनीति बोलीं—मजुमदार देवर को कल के दिन इन्तजार करने के लिये कह दे। कह, छोटे घराने के भैया के यहाँ इसका फैसला होगा। जैसा होगा, वे ही कर देंगे।

मजुमदार उठ खड़े हुए। मानदा ने कहा—सुना न आपने? अब क्या कहते हैं?

मजुमदार बोले—अपने असामी श्रीवास से कहो मानदा। जैसा होगा, वही उत्तर देगा।

मानदा बोली—वकील के समझाने पर ही तो मुवक्किल बोलेगा नायब बाबू, इसी लिये खुद वकील से ही पूछती हूँ।

किन्तु श्रीवास ने बिना सलाह लिये ही उत्तर दिया। उसने कहा—इन्तजार मैं नहीं कर सकता, तू मालकिन से कह दे। इसमें खून-खराबी होगी तो। बरामदे की रेलिंग पर सिर रखकर सुनीति खड़ी रहीं। वह एक गहरी सनसनी अनुभव कर रही थीं, किन्तु उसे सहन नहीं कर पाती थीं। कल सवेरे के दियारे का चित्र जैसे उनकी आँखों के सामने नाच रहा था।

दियारा लाल रक्त से डूब गया है, और उसी पर रङ्गलाल, नवीन, श्रीवास तथा और कई मनुष्य तैर रहे हैं। उनके नेत्रों से आँसू झरने लगे। उनके मन में आया—इन सब के लिये परलोक का हिसाब-किताब उनके स्वामी पर, उनकी सन्तानों पर पड़ेगा। अस्थिर होकर वे स्वामी के घर में चली गयीं।

रामेश्वर शान्त होकर खाट पर पत्थर की मूर्त्ति की भांति बैठे हुए हैं खुली खिड़की से रात के अँधेरे की ओर उनकी दृष्टि लगी है। सुनीति ने बड़ी चेष्टा से अपने को संभालकर बिना उच्छ्वास के ही कहा—एक बात कहती हूँ। इसको बिना कहे मुझसे रहा नहीं जाता।

रामेश्वर ने धीरे-धीरे दृष्टि फेरकर सुनीति के मुँह की ओर देखा, जैसे किसी अज्ञात लोक से वे इस वास्तविक सीमा में लौट आये। इसके बाद मीठे स्वर में बोले—कहो, क्या कहती हो।

खूब अच्छी तरह विचारकर, एक-एक कर, सारी बात सुना, सुनीति ने कहा—तुम एक बार मजुमदार को बुलाकर कहो। तुम्हारा अनुरोध वे कभी टाल नहीं सकेंगे।

कुछ देर चुप रहने के बाद वे धीरे-धीरे गर्दन हिला अस्वीकार कर बोले—नहीं।

सुनीति फिर अनुरोध न कर सकीं, केवल एक गहरी साँस ली। रामेश्वर अपने अभ्यास के अनुसार स्वाभाविक स्वर में बोले—'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे—नाधमे लब्धकामा'—'सुनीति, यदि श्रेष्ठ व्यक्ति से प्रार्थना व्यर्थ हो जाय, तोभी अच्छा, किन्तु अधम से भिक्षा कर कृतकार्य होना भी अच्छा नहीं।' वे मौन हो गये, दीपक के प्रकाश से प्रकाशित घर में बहुत अधिक सन्नाटा हो गया। उसमें स्वामी और स्त्री मिट्टी की मूर्त्तियों के समान एक बैठा और दूसरी खड़ी रही। फिर कुछ देर बाद रामेश्वर ने कहा—सुनीति, मेरे सिर पर थोड़ी हवा करोगी? थोड़ा जल दोगी? सुनीति परेशान हो गयीं, एक ग्लास जल झटपट रामेश्वर के हाथ में देकर बोलीं—शरीर क्या खराब जान पड़ता है?

आँखें बन्दकर सोते हुए रामेश्वर ने कहा—सिर में जैसे आग जलती है, सुनीति।

जल से सिर धो दूँ?

धो दो।

सुनीति ने सावधानी से सिर धोकर अपने आँचल से पोंछ दिया। इसके बाद जोर-जोर से पंखा झलने लगीं। उनकी चिन्ता की सीमा न रही। उन्माद से पागल हो जाने पर वे क्या करेंगी?

सहसा रामेश्वर बोले —'श्रीवास पाल भीतर चला आया था, सुनीति !' वे उठकर बैठ गये।

ना, ना, दरवाजे के सामने खड़ा था !

दरवाजे के सामने ?

फिर कुछ देर बाद वे बोले—संध्या के बाद मैं एक बार बाहर जाऊँगा, दिन में न जा सकूँगा। आँखों से प्रकाश सहन नहीं होता। इसके अतिरिक्त हाथ में यह कुरोग लोग देखेंगे, किन्तु सन्ध्या के बाद मैं थोड़ा-थोड़ा काम-काज देखूँगा।

सुनीति की आँखों से पानी निकल रहा था, बड़ी सावधानी से आंचल द्वारा उन्होंने वह जल पोंछ दिया।

किन्तु सुनीति को सारी रात नींद न आयी। उनका चित्त इतना कोमल अथवा दुर्बल है कि बिना सम्बन्ध के दूसरों के दुःख की बात सुनने से वे कांप जाती और उनके दुःख से वे चिन्तित हो जाती हैं। अपने दुःख में तो वे पत्थर की तरह अचंचल रहती हैं, किन्तु दूसरों के लिये बिना रोये रह नहीं सकतीं। आज जब वे कलके दंगे की बात सोचने लगीं, तब उनके दुःख की सीमा न रही ! सवेरा होते ही वे छत पर चढ़ गयीं। छत पर से दियारा भली भाँति दिखायी देता है। उन्होंने ध्यान से देखा, किन्तु घास के घने जंगलों का लम्बा हरा वेश, और उन्हीं के बीच सन्थालों के घरों की छतों की पीली घासों की छाजनों के अतिरिक्त कुछ दिखायी नहीं पड़ा।

वे व्याकुलचित्त हो यथासम्भव अपनी दृष्टि तेज कर देखती रहीं। पूर्व की ओर से सुनहली किरणें फैलकर दियारे की सुन्दरता क्षण-क्षण बढ़ा रही हैं। धीमी हवा में घासें अपना सिर नचा-नचाकर हिल रही हैं।

सहसा जान पड़ा, एक क्रोधभरे झगड़े का शोर वे सुन रही हैं।

थोड़ी ही देर में बहुत जोर-जोर से आवाजें आने लगीं। उनका हृदय काँप उठा, आँखों में पानी भर आया। आँखों का जल पोंछ फिर उन्होंने देखा, अब की बार दिखाई पड़ा—काँस का वन, जैसे एक तेज बवण्डर से हिल रहा है। दियारे के भीतर से दल के दल पक्षी भयभीत शब्द करते हुए आकाश में उड़ गये। कितने जानवर, कई सियार, और भी कितने अज्ञात जानवर, घास-वन से बाहर निकल, नदी की बालू पर से भागे जा रहे हैं। सुनीति ने घर के भीतर की रेलिंग पर झुककर मानदा को पुकारा—खबर लो तो मानदा, जान पड़ता है कि दियारे के ऊपर भयंकर मारपीट हो रही है।

मानदा भी दौड़ती हुई बाहर आयी, किन्तु कुछ खबर नहीं मिली। लोग नदी की ओर भागे जा रहे हैं, दियारे पर दंगा हो रहा है, इससे अधिक किसी को कुछ मालूम नहीं है। दरवाजे पर मानदा उत्कण्ठा-उत्सुकता के साथ खड़ी रही।

कुछ देर बाद एक दुर्बल मनुष्य को चिल्लाते-चिल्लाते लौटते देख मानदा थोड़ा आगे बढ़कर रास्ते के पास खड़ी हो गयी।

वे अचिन्त्य बाबू थे, शक्तिभर तेजी से घर की ओर भाग रहे थे। वे बहुत जोर से हाँफ रहे थे और मुँह से कह रहे थे—ओह! बाप रे बाप! भीषण काण्ड! मानदा को देख उनकी बात लम्बी हो गयी। उन्होंने कहा—भीषण काण्ड! भयंकर दंगा! खून, खून! एक मुसलमान का खून हो गया। नवीन लोहार भंयकर लठैत है, सिर के दो टुकड़े कर दिये। अपनी बात पूरी करने के पहले ही वे मानदा को पीछे छोड़ बहुत आगे बढ़ गये।

ऊपर से सुनीति ने स्वयं सब सुन लिया। आँखों से टपटप पानी गिरने से उनकी छाती और मुँह भींग गये। उस अभागे के लिये उनके दुःख की सीमा न रही।

पन्द्रह

यह सर्वनाशी दियारा है !

इसकी छाती में कहीं खूनी विप्लव का बीज छिपा हुआ है। दंगे में एक खून हो गया और इसके अतिरिक्त बहुत से घायल हो गये। दियारे की घास पारकर खून की धारा मिट्टी में गिर पड़ी।

सुनीति जैसे ज्ञानहीन की तरह हताश हो गयीं। खून से सने हुए दियारे की बात सोचते-सोचते और खून से सनी हुई जमीनों की बातें उन्हें याद पड़ गयीं।

चक्रवर्ती-घराने की कचहरी का आँगन खून से सना है। अभागा नैनीपाल ओह ! वह रक्त की कैसी धारा ! क्या वही रक्त-धारा उस पार के दियारे की ओर प्रवाहित हो रही है ? दियारे की रक्त-धारा के साथ क्या नैनी की रक्त-धारा मिल गयी ? निराश दृष्टि डालकर वे नीले आकाश की छाया के उस पार आश्रय खोजती फिरती हैं।

उधर इसके बाद मामला-मुकदमा शुरू हो गया।

पहले दोनों ही पक्षों का चालान हुआ ; श्रीवास और उसके पक्ष के कई लठैतों और इस पक्ष के रङ्गलाल, नवीन तथा चार-पांच लोगोंपर मुकदमा चला। किन्तु मजुमदार की तदवीर तथा श्रीवास की थैली के द्वारा श्रीवास का पक्ष ही कानून की दृष्टि में निर्दोष सिद्ध हुआ।

श्रीवास के न्यायोचित अधिकार पर चढ़ाई कर नवीन के दल ने दंगा किया है और उसके फलस्वरूप नर-हत्या तक हो गयी है—इस अपराध में उनको दौरा सुपुर्द हो गया। रङ्गलाल बहुत दिनों तक दृढ़ रहा, किन्तु अन्त में विचल गया। उसने सरकारी गवाह के रूप में श्रीवास का न्यायोचित अधिकार स्वीकार कर नवीन के विरुद्ध गवाही दे दी। फिर भी घर में मुँह छिपाकर बार-बार भगवान से प्रार्थना करता—'भगवान नवीन को बचा दो। श्रीवास का अन्याय प्रकट कर दो।' किन्तु भगवान बहरे, नहीं तो गूँगे, हैं।

समाचार सुनकर सुनीति रोने लगीं। नवीन के लिये उन्हें हार्दिक पीड़ा हुई।

इस घर के तीन पीढ़ियों के नौकर नवीन के वंश ने उन्हें नहीं छोड़ा। नवीन ही था इस घराने का अन्तिम बाहुबल। वह भी चला जायगा। नवीन को जाना पड़ेगा, इसमें उन्हें सन्देह नहीं है। उनके मन में बार-बार यही बात आ रही है। सर्वनाशी दियारा!

दियारे की बात सोचते-सोचते सुनीति कभी-कभी सिहर उठती हैं; मन की दृष्टि से एक निष्ठुर षड्यन्त्र का चक्र दियारे और इस घराने को केन्द्र बनाकर घूमते हुए देखती हैं। इस चक्र से छूटने का जैसे कोई मार्ग नहीं है। वे मही का बलिदान कर भी इससे निकल न पायीं। शक्तिभर चेष्टा करने पर भी इससे हट नहीं पातीं। धीरे-धीरे षड्यन्त्र के चक्र घूमने की परिधि जैसे बढ़ती जा रही है। इस घराने के लोगों को चक्र में डाल, उन डूबते हुए लोगों के साथ बन्धन-सूत्र को और खींचकर इस घर को भी चक्र में डाल दिया है। नवीन के मामले में सुनीति स्पष्ट देख रही हैं। दौरे के मुकदमे में उनको भी खुली अदालत में जाकर गवाह के कठघरे में खड़ा होना पड़ेगा। अहीन्द्र को भी गवाही देनी पड़ी है। रामेश्वर की हालत उसी दिन से बहुत

शोचनीय हो गयी है। इस समय वे प्रायः पागल हो गये हैं। सोचते-सोचते सुनीति को इसका ओरछोर नहीं दीख पड़ा। वे अपने को भूल कर थर-थर काँपने लगीं।

भविष्यत् की एक कराल छाया जैसे इस कल्पित भँवर में से समुद्र-मथन के अन्तिम फल, विष, की भाप की तरह घेरा बाँध-बाँधकर निकल रही है। उस विष की भाप की तीखी गन्ध का अनुभव जैसे उन्हें प्रत्यक्ष हो रहा है।

जीवन में उनकी स्मृति का भाण्डार अक्षय है, किसी को भूलने का उपाय नहीं है।

अदालत का चपरासी एकदम भीतर के दरवाजे के सामने आकर सम्मन जारी कर गया। मानदा बहुत क्रोध के साथ आगे बढ़ी, किन्तु सरकारी चपरासी के साथ उस आदमी को देख चुपचाप खड़ी हो गयी। इतनी बोलनेवाली होकर भी वह कुछ बोल न सकी। चपरासी ने ही कहा—दौरे के मुकदमे में गवाह बनाया गया है सुनीति देवी को। सात दिन बाद अठारह जुलाई को तारीख है। हाजिर न होने पर वारण्ट होगा।

वह चला गया। मानदा कुछ देर बाद ही अपने को संभाल तेजी से बाहर निकली। उसका अनुमान सत्य है—घर के फाटक के बाहर वह आदमी दो और आदमियों के साथ चला जा रहा है! उनमें एक योगेश मजुमदार हैं, दूसरा श्रीवास। वह प्रतिहिंसा-परायणा साँपिनी की भाँति शत्रुओं को डँसने के लिये अँधेरी रात जैसे किसी मौके की अभिलाषा करते-करते लौट आयी।

गवाही का सम्मन पाकर सुनीति विह्वल हो गयीं। उनकी अवस्था भयंकर अन्धेरी रात में दिशा भूल जानेवाले पथिक की भाँति हो गयी! अब वे क्या करें? कैसे खुली अदालत में सैकड़ों नेत्रों के सम्मुख खड़ी

होंगी ? वे अपने भाग्य को धिक्कारने लगीं। इसको पार करने का उपाय नहीं है। न मानने पर वारण्ट निकलेगा। इस प्रकार गिरफ्तार होकर मुझे हाजिर होना पड़ेगा। अदालत के चपरासी की बात उनके कानों में जैसे अब भी गूँज रही है।

छिः, छिः, छिः ! अपने दुर्भाग्य की बात सोचकर उन्होंने अपने को धिक्कारना शुरू किया। एक उपाय, उनके लिये केवल एक ही उपाय है, किन्तु वह भी उनके लिये बन्द है—मरकर भी मुक्ति पाने का उपाय नहीं है। अन्धेरे में बन्द अपने असहाय स्वामी की बात यादकर प्रतिदिन देवता के सामने उनको यही प्रार्थना करनी पड़ती है—हे देवता, इस अभागिनी के भाग्य में तुम विधवा होने का प्रबन्ध करो, सिर में सिन्दूर और हाथ में कंगन लेकर मैं मरना नहीं चाहती, नहीं चाहती, नहीं चाहती। यही अभाग्य उनके जीवन की एकमात्र कामना है। मानदा के क्रोध से कठोर होकर आते ही पथ भूले हुए की तरह उन्होंने कहा—मैं क्या करूँ मानदा ?

मानदा उत्तर नहीं दे सकी। अत्यन्त दुःख और क्रोध से वह सिसककर रोने लगी। कुछ देर बाद आँखों का जल पोंछकर ऊपर की ओर देखते हुए बोली—तुम वज्र गिराओ। निर्वंश करो। तभी जानूँगी तेरा न्याय, नहीं तो तुम हो अन्धा, अन्धा, अन्धा !

सुनीति इतना दुःखी होने पर भी सिहर उठीं, बोलीं—छिः, मेरा अभाग्य ! क्यों दूसरों को व्यर्थ शाप दे रही हो ?

व्यर्थ ? मेरे सिर में तो आँखें हैं माँ, मुँहजले भगवान की तरह नहीं, मैं तो अपनी आँखों देख आयी हूँ।

क्या ? किसकी बात कह रही हो ?

मजुमदार और श्रीवास किसान की। दोनों बाहर खड़े थे। यही तो उनकी करनी है ! मजुमदार देवर ! ना, ना, इतना भी छोटा मनुष्य हो सकता है ?

मानदा क्रोध से अपने को संभाल न सकी। वह दोनों हाथ नचाकर बोल उठी—दोनों हाथ उठाकर मजुमदार को आशीर्वाद दो! वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी।

सुनीति उदास दृष्टि से आकाश की ओर मूर्त्तिमती निराशा की तरह देखने लगीं। सर्वनाशक दियारा! अकस्मात् उनको ऐसा लगा, उस ओर मन्दिर के दरवाजे पर आघात कर कोई अपने आने का संकेत कर रहा है। निश्चय ही कोई स्त्री है; क्योंकि इस ओर आने-जाने का अधिकार केवल स्त्रियों को ही है। वे बोलीं—देखो तो मानदा, कौन पुकारता है।

मानदा ने भी सुन लिया था, उसे अच्छी तरह समझ लिया था कि आयी हैं राय-घराने की कोई बहू अथवा कन्या। वे आज की इस घटना के लिये माँ को लजवाने आयी हैं। वह बोली—और कौन पुकारेगा! रायवंश की कोई आयी हैं। तुमको कहने आयी हैं—छिः, छिः, छिः! तुमको अदालत में गवाह माना है! कितनी घृणा की बात है! मैं दरवाजा नहीं खोलूँगी, तुम चुपचाप रहो।

उत्तेजना के कारण मानदा ने इस तरह ज्ञान खो दिया था कि उसने सुनीति को कई बार "तुम" कहकर सम्बोधित किया।

सुनीति बोलीं—नहीं, दरवाजा खोलकर देखो, कौन आया है। खबरदार, कुछ खरी-खोटी न कहना। भुनभुनाते हुए मानदा ने दरवाजा खोला, पर वह विस्मय तथा आदर से डर-सी गयी। इस सूनसान दोपहरी में उनके दरवाजे पर खड़ी हैं छोटे राय की पत्नी—हेमांगिनी, और साथ है बारह-तेरह वर्ष की उनकी कन्या उमा।

मानदा प्रसन्न न हो सकी। सुनीति को बड़ा आश्वासन मिला, उन्होंने कहा—बहिन, मन ही मन जैसे मैं आपको ही ढूँढ़ रही थी।

हेमांगिनी सुन्दर हँसी हँसकर बोलीं—किन्तु मैं तो कुछ नहीं जान

पायी। देवता-टेवता कहो मत। आज मैं तुम्हारे भैया को दूती बनकर आयी हूं। उन्होंने मुझे भेजा है।

सुनीति कुछ शंकित हो उठीं, बोलीं—क्यों दीदी!

कहती हूं। अरे, उमा कहाँ गयी? उमा! उमा!

उमा ने अब तक घर की इस ओर उस ओर देखना आरम्भ कर दिय था। कहीं कोने से उसने उत्तर दिया—क्या?

हेमांगिनी ने चिढ़कर कहा—क्या करती है? यहाँ आकर बैठ।

उत्तर मिला—मैं सब चीजें देखती हूं।

सुनीति ने हँसकर कहा—उमा बिटिया, यहाँ आओ न, एक बार तुम्हें देखूं तो।

उमा आयी, और दरवाजे पर दोनों हाथ रखकर बोली—मुझे पुकारती हैं?

सुनीति बोलीं—वाह! उमा देखने में बड़ी सुन्दरी है। इसी बीच बहुत बड़ी हो गयी है! इसको कलकत्ता में अपने बाप के घर रखा है न दीदी?

हाँ, यहाँ की पढ़ाई-लिखाई पर मेरा बिलकुल विश्वास नहीं। लड़के को वहाँ मैंने बहुत दिनों से रख दिया है। लड़की को भी वहाँ एक वर्ष पहले कर दिया है। इसके बाद लड़की के मुँह की ओर देखकर बोलीं—यह बड़ी चंचला और हठी है। वहाँ जाकर केवल घर आने पर जोर देती है। अमल खूब अच्छा लड़का है, वह यहाँ आना ही नहीं चाहता—कहता है, यहाँ अच्छा नहीं लगता।

उमा गर्दन हिलाकर हँसते-हँसते बोली—उसे क्यों अच्छा लगेगा? दिन-रात वह कलकत्ता में घूमता रहता है। वहाँ उसके कितने मित्र हैं। और मुझे अकेले मुँह बन्द करके रहना पड़ता है। क्या ऐसा किसी को अच्छा लगेगा?

सुनीति हंसकर बोलीं—आप बहुत कठोर हैं, दीदी। इन बाल-बच्चों को भेजकर रहती कैसे हैं? लड़के का तो भेजना ठीक है, किन्तु इस दुधमुँही बालिका को भी भेज दिया है?

हेमांगिनी ने कुछ उत्तर नहीं दिया, केवल एक लम्बी साँस ली। लड़की से बोलीं—जा तू, देख आ, इनका मकान बड़ा सुन्दर है। किन्तु कल दोपहर की तरह बाहर न चली जाना।

उमा चली गयी। इसके बाद हेमांगिनी ने सुनीति से कहा—जानती हो सुनीति, इसी घर की बात मुझे रह-रहकर याद आती है। इसे मैं किसी प्रकार भुला नहीं सकती। ननदोई की इस अवस्था का कारण, इस घराने की ऐसी दुर्दशा का एक मात्र कारण हैं राधारानी — छोटे रायघराने की कन्या। इससे अधिक घमण्डी तथा मुँहजोर परिवार मैंने देखा नहीं। अपने बाल-बच्चों, विशेषतः लड़की, को इससे बचाना चाहती। राधारानी के दुर्भाग्य की बात सोच[illegible]पहर उठती हूं।

नीति चुपचा[illegible] रहीं, हेमांगिनी थ[illegible]र-उधरकर बोलीं—तुम्हारे भैया ने ही मुझे भेजा है, तुम्हा[illegible] पास भेजा है।

सुनीति इन्द्रराय का सन्देश सुनने के लिये उत्कण्ठा के साथ हेमांगिनी का मुँह देख रही थीं। हेमांगिनी ने कहा—दौरे के मुकदमे में मजुमदार की धोखेबाजी से जो तुम्हें गवाह माना गया है, इसे उन्होंने सुना है।

अब सुनीति रोने लगीं। उस रोने में कुछ आग्रह नहीं था, केवल दोन[illegible] आँखों के कोनों से आँसुओं की दो धारायें बह चलीं। हेमांगिनी ने स्नेह के साथ अपने आँचल से सुनीति का मुँह पोंछकर कहा रोती क्यों हो? यही बात तो तुम्हारे भैया ने कहलायी है, सुनीति जिससे भय न खाय, कोई लज्जा-संकोच न करे। राजा की अदालत में पुकार हुई है, जाना पड़ेगा, इसमें लज्जा कैसी?

सुनीति का मुँह फिर आँसुओं से भींग गया, अपने को संभालकर बोलीं—किन्तु उन्हें किसके पास छोड़ जाऊँगी, दीदी ? यही है मेरी सबसे बड़ी चिन्ता। इसके बाद मैं जाऊँगी भी किसके साथ ?

हेमांगिनी ने चिन्तित होकर कहा—पहली बात तो हमने सोची ही नहीं थी सुनीति। अन्तिम के लिये हर्ज नहीं। यह तो तुम्हारे पुत्र को आने के लिये लिखने से ही ठीक हो जायगी। अहि ही तुम्हारे साथ जायगा। किन्तु—

सुनीति बोलीं—और क्या सोच रही हूं, जानती हैं ? उनको इस सिर की गड़बड़ी में यह खबर मालूम हो जाने पर जो कुछ होगा, वही मेरी सबसे बड़ी चिन्ता का विषय है। इस दंगे के आगे के दिन मजुमदार देवर उस श्रीवास को साथ लेकर एकदम घर में चले आये, मैं समझ न सकी, क्या करूँ, भागी उनके पास। सब कहकर उन्हें सुना भी दिया। उसे सुनकर वे कैसे तो हो गये, बोले—मुझे थोड़ा पानी दे सकती हो सुनीति ? मैं समझ गयी, सिर धो दिया, पंखा झला ; किन्तु तोभी उन्हें सारी रात नींद न आयी। यही सोच रही हूं, यह बात उनके कान में जाने पर वे क्या और सहन कर सकेंगे।

हेमांगिनी चुपचाप बैठी रहीं, वे इसका उपाय खोज रही थीं। कुछ देर बाद वह बोलीं—तुम अभी से कह रखो, तुम व्रत कर रही हो, तुम्हें गंगास्नान करने जाना पड़ेगा। ननदोई की सेवा-शुश्रूषा का भार मुझे तुम निश्चिन्त होकर दे सकोगी न ?

सुनीति विस्मय तथा आनन्द से मौन होकर हेमांगिनी के मुँह की ओर देखती रहीं। फिर अजस्रधारा से उनकी आँखों से जल बहना शुरू हो गया। हेमांगिनी बोलीं—अहि को आने के लिये पत्र लिख दो। रात में वह उनके पास रहेगा। मैं यह और वह दोनों घर देख सकूँगी। और तुम्हारे साथ अपने अमल को भेज दूँगी। क्यों है न ठीक ?

सुनीति की आँखों में आँसुओं को विश्राम नहीं। हेमांगिनी ने सावधानी के साथ फिर आँख-मुँह पोंछकर कहा—रोओ न सुनीति। मैं भी आँखों में जल रोक नहीं पाती हूँ। और थोड़ी देर चुप रहकर हेमांगिनी ने पुकारा—उमा, उमा। किन्तु उमा का पता कहीं नहीं है। हेमांगिनी चिढ़कर बोलीं—वंश का स्वभाव कभी नहीं छूटता। मुँहजली कलकत्ता से आकर घूमने लगी है! कहती है—कलकत्ता में ऐसा मैदान कहाँ? आकाश में बादल छाये हैं, अभी वर्षा होगी—लड़की को इसकी चिन्ता नहीं।

सुनीति ने पुकारा—मानदा, उमा कहाँ गयी? देखो तो।

मानदा का संकेत नहीं मिला। सुनीति ने घर से बरामदे में आकर देखा, दिन के समय सोकर मानदा सुखपूर्वक नाक बजा रही है। अकस्मात् उनको मालूम हुआ, ऊपर कोई मीठे स्वर में गाना गा रहा है। हेमांगिनी भी बाहर निकल आयीं, उनके कान में भी स्वर गया, उन्होंने कहा—वही तो है।

सुनीति बोलीं—उनके घर में है।

सावधानी के साथ दोनों ने रामेश्वर के घर में प्रवेश किया—देखा, उमा बड़ी एकग्रता के साथ हाथ नचा-नचाकर मधुर कंठ से कविता पाठ कर रही है—

नयने आमार सजल मेघेर,
नील अंजन लेगेछे
नयने लेगेछे।
नवतृणदले घनवनछाये
हरष आमार दियेछि बिछाये,
पुलकित नीप-निकुंजे आजि
विकशित प्राण जेगेछे।

नयने सजल स्निग्ध मेघेर,
नील अंजन लेगे छे।

सामने रामेश्वर आँखें फाड़कर विमुग्ध दृष्टि से गाने में रत उमा की ओर देख रहे हैं। हेमांगिनी तथा सुनीति ने घर में प्रवेश किया, वे यह जान भी न पाये। बालिका के मधुर स्वर की झंकार, मधुर गाने के शब्दार्थ से उत्पन्न रूप के स्वप्न, कविता के छन्द में छिपे हुए संगीत, के माधुर्य से एक अपूर्व भावावेश ने घर को वर्षा के जल से भरे हुए मेघ-मण्डल के नीचे के हरित श्यामल कृषि से परिपूर्ण खेत की तरह भर दिया है। वे भी चुपचाप खड़ी रहीं। पद-पद दुहराकर उमा ने, अन्तिम पद गाया—

हृदय आमार नाचे रे आजिके
मयूरेर मतो नाचे रे
हृदय नाचे रे।
झरे घन-धारा नवपल्लवे,
काँपिछे कानन झिल्लीर रवे,
तरि छापि' नदी कल-कल्लोले,
एलो पल्लीर काछे रे।
हृदय आमार नाचे रे आजिके,
मयूरेर मतो नाचे रे
हृदय नाचे रे।

गाना समाप्त हो गया। घर में वही आनन्दमय आवेश उस समय भी जैसे नीरवता के बीच कण-कण में अनुभूत हो रहा था। रामेश्वर ने अपने आप ही कहा—नाचे, नाचे हृदय, सत्य में मयूर की तरह नाचता है।

हेमांगिनी ने अब प्रीतिभरे कण्ठ में कहा—अच्छे हैं चक्रवर्ती महाशय?

कौन ?—स्वप्न से जगे हुए की भाँति रामेश्वर बोले—कौन ? इसके बाद अच्छी तरह देखकर बोले—राय-पत्नी, आइये, आइये, मेरा बड़ा भाग्य है !

हेमांगिनी बोलीं—इस प्रकार बोलने से मुझे लज्जा लगती है, चक्रवर्ती महाशय ! मैं आपको देखने आयी हूं। इसके बाद कन्या से बोलीं—तुमने प्रणाम किया है उमा ? अवश्य ही नहीं किया। तुम्हारे फूफाजी हैं।

आश्चर्य के साथ रामेश्वर ने पूछा—आपकी कन्या है ?

हाँ।

साक्षात् सरस्वती। अहा ! "मयूरेर मतो नाचे रे, हृदय नाचे रे" कैसा मधुर है !

उमा ने इसी बीच झट रामेश्वर के पैरों को छूकर प्रणाम कर लिया। स्पर्श अनुभव कर जब रामेश्वर ने उमा को प्रणाम करते देखा, तब चौंक उठे, करुण कण्ठ से बोले—नहीं, नहीं, मुझे प्रणाम न करो, मेरे हाथ में—

हेमांगिनी ने बाधा देकर करुणापूर्ण विनय के साथ कहा—चक्रवर्ती महाशय, ना-ना, ऐसा न कहिये।

रामेश्वर चुप हो गये। कुछ देर बाद मलीन हँसी हँसकर बोले—खिड़की में से देखा—आकाश में बादल छाये हैं—दिशाओं के हाथी के समान काले बलशाली जल से भरे मेघ छाये हुए हैं। महाकवि कालिदास का स्मरण हो आया। अपने मन से ही मेघदूत के श्लोक पढ़ रहा था। इसी समय आपकी लड़की ने घर में प्रवेश किया। मैंने क्या समझा, जानती हैं ? जान पड़ा, चक्रवर्ती-घराने की लक्ष्मी चिर दिन के लिये घर से जाने के पूर्व मुझे दर्शन देने आयी हैं। मैंने पाठ बन्द कर दिया। आपकी लड़की का नाम क्या है ?

हेमांगिनी के उत्तर देने के पूर्व उमा ने ही उत्तर दिया—उमा देवी।

उमा देवी ! हाँ, तुम तो उमा भी हो, देवी भी हो। उमा ने मुझ से

पूछा—आप किसका मंत्र पढ़ रहे हैं ? एक बार उसे फिर पढ़िये। मैंने कहा, मंत्र नहीं है, श्लोक—संस्कृत कविता—है। कवि कालिदास ने मेघदूत में वर्षा का वर्णन किया है, उसी का पाठ कर रहा हूं। उमा ने मुझ से कहा—क्या आप बंगला की कविता नहीं जानते ? कवि रवीन्द्रनाथ ने कौन-सा पुरस्कार पाया है ? उनकी कविता खूब अच्छी है। मैंने पूछा, तुम जानती हो ? उसने मुझे कविता सुनायी। बड़ी सुन्दर कविता, बड़ी सुन्दर, बड़ी सुन्दर ! बंगला में ऐसी कविता रची गयी है ! भाग्य, मेरा भाग्य—पृथ्वी पर जीना ही है मेरा भाग्य। वाह, नील अंजन लेगेछे, नयने लेगे छे !

सब लोग चुप हो रहे। किन्तु उमा चंचल हो गयी थी। कई मिनट तक किसी प्रकार अपने को रोकने के बाद वह बोली—आपने संस्कृत श्लोक मुझे सुनाने को कहा था।

रामेश्वर हँसकर बोले—तुम्हारे समान सुन्दर ढंग से क्या मैं सुना पाऊँगा ?

उमा ने हँसकर कहा—उसे मैंने पाठ-प्रतियोगिता के लिये सीखा था न। किन्तु आप भी तो खूब अच्छा पाठ कर रहे थे, पढ़िये आप।

रामेश्वर ने कई मिनट सोचने के बाद कहा—पढ़ता , सुनो—

तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना, बन्धुप्रियां बन्धुजनो जुहाव।
उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा, पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम॥
महीभृतः पुत्रवतोऽपि दृष्टिस्तस्मिन्नपत्ये न जगाम तृप्तिम्।
अनन्त पुष्प्य मधोर्हि चूते, द्विरेफमाला सविशेषसंगा॥

इसका अर्थ जानती हो ? पर्वतराज हिमालय के एक कन्या हुई, गोत्र तथा उपाधि के अनुसार आत्मीयों तथा बन्धुओं को प्यारी उस कन्या का नाम रखा गया था—पार्वती। इसके बाद हिमालय की स्त्री उस कन्या को तपस्या-परायण देख बोलीं—ओ मा ! अर्थात् पुत्री, करो

मत, तपस्या करो मत। उसी समय से सुमुखी कन्या का नाम हुआ उमा। इसके बाद कवि कहते हैं—पर्वतराज के और भी अनेक पुत्र-कन्यायें थीं, किन्तु वसन्त ऋतु में अनेक फूलों में जैसे भौंरा आम के फूल पर ही अनुरक्त होता है, उसी प्रकार पर्वतराज की दृष्टि उमा पर ही अधिक आकृष्ट होती। वहीं उनको पूर्ण परितृप्ति होती। तुम हो मेरी वही उमा। मैं अच्छी प्रकार कह सकता हूं, तुम बड़ी विवेकी होगी। आज तुमने जो सुनाया—अहा! उसी उमा की तरह तुम्हें विद्या प्राप्त होगी।

तां हंसमालाः शारदीव गंगां, महौषधिं नक्तमिवात्मभासः।
स्थिरोपदेशामुपदेशकाले, प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः॥

हेमांगिनी तथा सुनीति के नेत्रों में आंसू भर गये। यह एक मनुष्य हैं ही, क्षणभर बाद ऐसे आत्म-विस्मृत असहाय बन जायँगे और अपने प्रति ही अकारण ऐसी घृणा उत्पन्न करेंगे कि, औरों की इच्छा होगी आत्महत्या करने की।

उमा बोली—मुझे संस्कृत कविता सिखायेंगे आप? जब तक मैं यहाँ हूं, रोज आपके पास आया करूँगी।

आओगी? तुम आओगी उमा?

हाँ। किन्तु इस प्रकार घर में खिड़की-दरवाजा बन्द कर आप क्यों रहते हैं? उन सब को किन्तु खोल देना होगा।

क्षणभर में रामेश्वर के मुँह का रंग उड़ गया, वे थर-थर काँपने लगे। बहुत कष्ट से अपने को संभालकर बोले—राय-पत्नी, आपको देर हो रही है न?

सोलह

ऐसा ही बन्दोबस्त हुआ।

अहीन्द्र कालेज से गैरहाजिर होकर आया। सुनीति उसके सम्बन्ध में कुछ शंकित थीं। रामेश्वर की सन्तान, महो का भाई है वह। किन्तु अहीन्द्र हंसकर बोला—इसके लिये तुम इतनी लज्जा क्यों करती हो मा? इस संसार में सत्य को खोज निकालने में सहायता करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। इसमें राजा-प्रजा, धनी-दरिद्र का विचार नहीं है। विचारक, मनुष्य होने पर भी, उस समय, विधाता के आसन पर बैठता है।

सुनीति ने सन्तोष की साँस ली। केवल यही नहीं, इससे उनके हृदय में बल आया, साथ ही साथ वह पुत्र-गौरव से भी भर गया। वे पुत्र के केशों के बीच उँगली चलाते-चलाते बोलीं—हाथ-मुँह धो डालो बेटा, में दो गर्म निमकी तैयार कर दूँ। मैदा तो गूँधा ही हुआ है।

मानदा चुपचाप खड़ी थी। वह अब बोल उठी—आपने ठीक कहा भैयाजी, किन्तु मेरा मन शीतल नहीं हुआ। बड़े भैयाजी होते—। अकस्मात् क्रोध से दांत पीसकर बोली—बड़े भैयाजी होते, तो उस मजुमदार और श्रीवास के सिर नख से फाड़कर ले आते।

सुनीति शंका से सन्न हो गयीं, किन्तु अहीन्द्र मीठी हँसी हँसकर बोला—मैं भी ले आता रे मानदा, यदि उन सिरों को फिर जोड़ सकता। नहीं तो वे समझेंगे कैसे कि, हमारे सिर फाड़ ले गया था। फिर ऐसा काम नहीं करूँगा।

सुनीति के नेत्रों में जल भर आया। अहीन्द्र ने मर्म समझ लिया है। संसार में दुःख क्या किसी के देने से आता है? अहा, मनुष्य का मुँह देखकर भी माया नहीं लगती।

मानदा उत्तर देने जा रही थी, किन्तु रसोईघर में किसी के जूते के शब्द से शान्त होकर दरवाजे की ओर देखने लगी। केवल मानदा ही नहीं—सुनीति, अहीन्द्र—सभी। दूसरे ही क्षण सोलह-सत्रह वर्ष का एक किशोर बालक घर में आ ठिठककर खड़ा हो गया। स्वच्छ-गौर शरीर का रंग, पेशियों से भरा हुआ शरीर, सब अंगों तथा वस्त्रों से छिपी हुई जवानी का एक उज्ज्वल-लावण्य जैसे झलक रहा है।

सुनीति ने प्रेम के साथ आह्वान करते हुए कहा—आओ अमल, आओ।

सुनीति की बात समाप्त होने के पहले ही अमल ने अहीन्द्र के दोनों हाथ पकड़कर कहा—अहीन्द्र?

अहीन्द्र ने हँसते-हँसते कहा—हाँ अहीन्द्र। तुम अमल?

अमल बोला—ओह! कितने दिनों बाद तो भेंट हुई है! वही बचपन के समय पाठशाला में! कितने दिन मैंने तुम्हें पत्र लिखने का विचार किया था, किन्तु इंगलैण्ड के राजा और फ्रांस के राजा में युद्ध हुआ; फलतः दोनों देशों के निवासी अकारण परस्पर शत्रु बनने पर बाध्य हुए।—इतना कहकर वह हँसने लगा।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—You talk very nice. (तुम बहुत अच्छा बोलते हो।)

अमल बोला—You look very nice. (तुम बहुत सुन्दर दीख ड़ते हो ।) Bright blade of a sharp sword. (कविता की भाषा में ुली तलवार की चमकीली धार के समान ।)

सुनीति विमुग्ध नेत्रों से दोनों किशोरों की मित्रता की लीला देख ही थीं । अब उन्होंने मानदा से कहा—मानदा, एक छोटी दरी बिछा ा तो । तुम लोग बैठो । मैं निमकी तैयार करूँगी, तुम दोनों खाना । ुमा को क्यों नहीं लाये बेटा, अमल ?

उसकी बात न कहिये बुआजी । अकस्मात् काव्य लेकर, जिसको कहते हैं भयानक मत्त हो जाना, वही भयानक मत्त हो गयी है । बराबर वीन्द्रनाथ की कविता याद करती है, पाठ करती है । खेल में तो मुझे ंग कर देती है ।

सुनीति को उस दिन का चित्र याद हो आया । उन्होंने एक लम्बी साँस छोड़ी—अहा, यदि उनके ऐसी एक कन्या होती, तो इसी प्रकार कविता पाठकर उन्हें भुला रखती ।

अमल बोला—देखिये, बुआजी, कल तो मैं आपको लेकर सदर जा रहा हूँ, किन्तु वापस आने पर ही अहीन्द्र भाग जायगा, ऐसा नहीं हो सकता ।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—प्रैक्टिकल क्लास में मेरी गैरहाजिरी होगी, यही चिन्ता है—

अमल बोला—जान पड़ता है, तुम विज्ञान के विद्यार्थी हो । I see.

सुनीति कठघरे में खड़ी होकर काँपने लगीं । अदालत में काफी भीड़ थी, अमल उनके पास ही खड़ा था । उसने कहा—भय क्या बुआजी, कुछ भय मत कीजियेगा । दूसरे ही क्षण वह अपने आप बोल उठा—अरे, यह तो पिताजी भी आ गये !

सुनीति ने दृष्टि फेरकर देखा—पसीने से तर कपड़ा, रूखे केश, सूखा मुँह, बिना स्नान किये, बिना खाये, इन्द्रराय अदालत में प्रवेश कर रहे हैं। उनके साथ एक वकील है। वकील ने आते ही जज से प्रार्थना की—महामान्य विचारक की दृष्टि मैं एक विशेष विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। अदालत के गवाहों के कठघरे में यह जो गवाह है—ये हैं इस जिले के एक प्राचीन सम्भ्रान्त वंश की बहू। दोनों पक्षों के लोग उनकी मर्यादा की ओर लक्ष्य रखकर उनसे प्रश्न तथा जिरह करें। यदि महामान्य विचारक इसका संकेत कर दें, तो साक्षी एवं हमलोग—केवल हमीं लोग क्यों—सर्वसाधारण उनका चिरकृतज्ञ रहेगा।

इन्द्रराय सुनीति के कठघरे के पास आकर बोले—तुम्हें कुछ भय नहीं है बहन, मैं यहाँ खड़ा हूँ, तुम्हारे पीछे।

थोड़े में ही गवाही समाप्त हो गयी, विचारक ने सुनीति की ओर देखकर ही वकील के आवेदन की सचाई जान ली। उन्होंने अत्यन्त आवश्यक दो-चार प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों को अस्वीकार कर दिया। कठघरे से बाहर होकर सुनीति ने उस खुली अदालत के हजारों नेत्रों के सामने ही पैर छूकर इन्द्रराय को प्रणाम किया। राय ने गद्‌गद् कण्ठ से कहा—उठो, बहन, उठो। इसके बाद अमल से बोले—अमल, ले जाओ बुआजी को। एक गाड़ी ठीककर रखी है, मैं उसे देखूँ।

किन्तु देखने की आवश्यकता नहीं थी। राय का कर्मचारी मित्तिर गाड़ी लेकर बाहर इन्तजार कर रहा था। सुनीति तथा अमल को गाड़ी में बैठाकर राय ने अमल से कहा—तुम बुआजी को लेकर घर चले जाओ। मुझे कुछ काम करना है, उसको समाप्त कर कल आऊँगा।

सुनीति ने लज्जा नहीं की, बिना संकोच आधा घूँघट खोल उन्होंने राय से कहा—मेरा अपराध क्या क्षमा नहीं हो सकता भैयाजी?

राय सन्न हो गये, इसके बाद थोड़ा काँपते हुए स्वर में बोले—पृथ्वी
सब अपराध क्षमा हो सकते हैं बहन, किन्तु लज्जा किसी भी दशा
भूली नहीं जा सकती।

× × × ×

सलाह करके बड़ी सावधानी से यह समाचार रामेश्वर से छिपा रखा
ा। उनसे झूठी बात कह दी थी हेमांगिनी ने। उन्होंने कहा
—सुनीति ने एक व्रत किया है, एक बार गंगा-स्नान करना होगा,
न्तु आपको छोड़ किसी प्रकार नहीं जा सकतीं। मैं कहती हूं कि, मैं
पकी सेवा-शुश्रूषा का भार ले लूँगी। व्रत क्या कभी नष्ट किया जाता
? आप उनसे कह दीजिये, चक्रवर्ती महाशय।

रामेश्वर ने कहा—ना, ना, ना। राय-पत्नी ठीक कह रही हैं सुनीति—
। भी खण्डित किया जाता है ? मैं अच्छी तरह रहूंगा।

सन्ध्या समय सुनीति अमल के साथ रवाना हुई। रात में खाने-
ने का इन्तजाम सुनीति स्वयं कर गयी थीं। अहीन्द्र रामेश्वर के पास
ा। दूसरे दिन हेमांगिनी ने सारी व्यवस्था कर दी, दोपहर के समय
ाजन की थाली सामने रखते ही रामेश्वर ने मुस्कराकर कहा—सुनीति
व्रत सार्थक हो, रायपत्नी, उसके गंगा-स्नान के पुण्य से ही जान
ता है, आपके हाथ का अमृत मेरे भाग्य में आया है।

हेमांगिनी करुणापूर्वक हँस पड़ीं। सचमुच उस समय रामेश्वर
ांगिनी के हाथ के भोजन की बड़ी प्रशंसा करते। आज राधारानी
। गये हो गये बाईस-तेईस वर्ष—इन बाईस-तेईस वर्षों के बाद आज
र इन्होंने रामेश्वर को भोजन बनाकर खिलाया। भोजन कर लेने
हेमांगिनी को बर्तन उठाने के लिये तैयार देख रामेश्वर ने हाथ
ोड़कर कहा—नहीं, नहीं, राय-पत्नी, नहीं।

अहीन्द्र बोला—मैं मानदा को बुला देता हूं।

मानदा के जूठे बर्तन उठा ले जाने के बाद हेमांगिनी बोलीं—तो अब मैं जाती हूं, चक्रवर्ती महाशय।

रामेश्वर करुणापूर्ण हँसी हँसकर बोले—चली तो गयी थीं ही राय-पत्नी! इस घर में आपका फिर कभी आगमन होगा, ऐसा स्वप्न में भी ख्याल नहीं था। और जब दयाकर आ गयीं, तब 'जाती हूँ' कहकर क्यों जाती हैं, कहिये—'आती हूं।' यदि आप न आयें तो भी आशा कर सकता हूं कि आयेंगी, राय-पत्नी एक न एक दिन आयेंगी।

इस बात को केवल हँसी और हल्की करने के विचार से राय-पत्नी बोलीं—आपके साथ स्त्रियों के समान बातें करने में कोई जीत नहीं सकता चक्रवर्ती महाशय! अच्छा, वही कहती हूं—"आती हूं।" क्यों, हुआ न? इसके बाद उन्होंने अहीन्द्र से कहा—तुम अब मेरे साथ आओ बेटा, अहीन्द्र, भोजन कर लो।

दोनों ने नीचे आकर देखा, उमा और मानदा की बातचीत चल रही है।

हेमांगिनी बोलीं—पहचानती है अहीन्द्र भैया को?

उमा बोली—हाँ, अहीन्द्र भैया ने मैट्रिक में स्कालरशिप पायी है।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—इसीलिये पहचानती हो मुझे? किन्तु वह तो माथे पर लिखा नहीं रहता।

मीठी हँसी हँसकर उमा बोली—रहता है।

कहती क्या हो?

हां। गोरों की तरह जैसा गोरा रंग आपका है; देखने से जान पड़ता है कि, इन्होंने स्कालरशिप पायी है। वह खिलखिलाकर हँसने लगी।

अहीन्द्र इस धृष्टा बालिका की बात से लज्जित हुए बिना रह न सका। हेमांगिनी ने खाने की थाली रखकर कहा—उसके साथ बात में तुम

नहीं जीत सकोगे बेटा, तुम भोजन करने बैठो। उसके वंश के—(बात कहते-कहते वे रुक गयीं)। उमा थोड़ी देर बैठने के बाद झट रामेश्वर के घर का दरवाजा खोलकर उसमें चली गयी। उसके इस प्रकार अकस्मात् आ जाने से रामेश्वर हर्षित हो गये। अपने खराब मस्तिष्क से उत्पन्न रोग की कल्पना भी वे भूल गये, बोले—उमा, आओ बेटी, आओ।

उमा आकर अत्यन्त आत्मीय के समान समीप बैठकर बोली—संस्कृत की कविता सुनाइये।

रामेश्वर थोड़ा हँसकर बोले—तुम पाठ करो बेटी, बंगला कविता, मैं सुनूं। उन्हीं रवीन्द्रनाथ की एक कविता सुनाओ तो। अहा! तुम्हारे मुंह से बड़ी सुन्दर लगती है! जानती हो बेटी, मधुर-भाषिणी गिरिराजतनया जब अमृत बरसानेवाले स्वर से बात कहतीं, तब कोकिलों के स्वर भी बिगड़ी हुई वीणा के कर्कश स्वर के समान जान पड़ते।

स्मरेण तस्याममृतस्रुतेव, प्रजाल्पितायामभिजातवाचि।
अपन्यपुष्टा प्रतिकूल शब्दा, श्रोतुर्वितन्त्रीरिव ताड्यमाना॥

इसलिए तुम कहो, मैं सुनूं।

उमा से फिर अनुरोध नहीं करना पड़ा, उसने आज कई दिनों से इसी लिये सीखी हुई कविताओं का अभ्यास कर रखा है।

रुद्र तोमार दारुण दीप्ति
एसेछे दुयार भेदिया;
वक्षे बेजेछे विद्युत्-बाण
स्वप्नेर जाल छेदिया।

\+ + + +

भैरव तुमि कि वेशे एसेछो;
ललाटे फुँसिछे नागिनी;

रुद्र वीणाय एइ कि बाजिलो
छ - प्रभातेर रागिनी ?
मुग्ध कोकिल कई डाके डाले,
कई फोटे फूल बनेर आड़ाले !
बहुकाल परे हठात् जेनो रे
अमानिशा गेलो काटिया
तोमार-खड्ग आंधार-महिषे
दुखाना करिलो काटिया।

रामेश्वर आँखें फाड़कर उमा के मुंह की ओर देखते हुए सुन रहे थे। पाठ समाप्त कर उमा बोली—कहिये, कैसा लगा ?

रामेश्वर उस समय भी जैसे आवेश से भर गये थे, फिर भी अस्पष्ट स्वर से बोले—अपूर्व ! अपूर्व ! वाह ! "तोमार खड्ग आंधार-महिषे दुखाना करिलो काटिया !" उन्होंने एक लम्बी साँस छोड़ी।

उमा बोली—मैं तो अधिक नहीं जानती, केवल दो-चार ही सीखी हैं। मेरे भैया खूब जानते हैं। रवीन्द्रनाथ एकदम कण्ठस्थ हैं। और वे खूब अच्छा पाठ करते हैं। आपने उन्हें नहीं देखा है न ?

ना, वह तो आता नहीं, उसे कैसे देखूंगा ?

रहिये, बुआजी को लेकर आ जायँ। मेरी बुआजी को जानते हैं न ?

तुम्हारी बुआजी, तुम हो इन्द्र की कन्या। तुम्हारी बुआजी !

हाँ, अहि भैया की माँ हैं हमारी बुआजी। उन्हींको हम बुआजी कहती हैं।

ओह ! ठीक, ठीक, मुझे याद नहीं था।

मेरे भैया ही तो उन्हें लेकर सदर में गये हैं। अच्छा, बुआजी को गवाह क्यों बनाया ? किसी ने कहीं दियारे के ऊपर दंगा किया है, वे उसमें क्या करेंगी ? वह जो मजुमदार है, वही है बड़ा शैतान, वही यह

सब कर रहा है। यह क्या, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ? फूफाजी, फूफाजी !

रामेश्वर की आँखें उस समय फैली हुई थीं, सारा शरीर थर-थर काँप रहा था। दोनों मुट्ठियों से खाट का सिरा दबाकर उन्होंने कहा—थोड़ा पानी दे सकती हो बेटी, थोड़ा पानी !

दूसरे ही क्षण क्रोध के कारण बेहोश होकर वे फर्श पर गिर पड़े। उमा एकदम परेशान होकर भागती हुई बरामदे में गयी और पुकारा—माँ, ओ माँ ! फूफाजी फर्श पर गिर पड़े। अहि भैया !

ज्ञान होने पर रामेश्वर ने हेमांगिनी की ओर तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखकर कहा—आपने मुझसे झूठी बात कही राय-पत्नी !

हेमांगिनी बात न समझ पायी। रामेश्वर ने स्वयं कहा—मजुमदार ने सुनीति को दौरा अदालत के कठघरे में अन्त में खड़ा करा ही दिया !

हेमांगिनी चौंक उठीं, फिर भी अपनेको सम्भालकर कहा—नहीं तो, आपसे किसने कहा ?

रामेश्वर ने उमा की ओर देखा। उमा का मुँह फीका, उदास हो गया। उन्होंने दोनों नेत्र बन्दकर सोचकर कहा—इस ओर नीचे कचहरी के बरामदे में कोई कह रहा था, मैंने सुन लिया है !

हेमांगिनी चुप रह गयीं। अहीन्द्र पंखे से पिता को हवा कर रहा था। रामेश्वर ने अकस्मात् उसके मुँह की ओर देखकर कहा—देखो तो अहीन्द्र, मेरी बन्दूक ठीक है कि नहीं, देखो तो।

अहीन्द्र चुपचाप पंखा झलता ही रहा। रामेश्वर फिर बोले—देखो अहि, देखो।

अहीन्द्र ने मीठे कण्ठ से कहा—बन्दूक नहीं है।

क्या हुई ? अकस्मात् उनको स्मरण हो आया। उन्होंने कहा—महो, महो, हाँ, हाँ, ठीक है। जानते हो अहि, महो कालेपानी से कब लौटेगा ?

हेमांगिनी ने उन्हें बलपूर्वक सुलाकर कहा—आप थोड़ा सो जाइये। जा तो उमा, बक्स से ओडिकलोन की शीशी ले आ।

सेवा करने से रामेश्वर शान्त होकर सो गये। जब जगे, तबतक सुनीति लौट आयी थीं।

सन्ध्या बीत चुकी थी। रामेश्वर ने तेज दृष्टि से सुनीति की ओर देखकर पूछा—तुम राधारानी हो कि सुनीति ?

आँखों से जल झर-झर झरने से सुनीति का मुँह भींग गया।

रामेश्वर ने गर्दन हिलाकर कहा—तुम सुनीति हो, सुनीति। वह ऐसे न रोती ! उसे रोना आता ही नहीं था !

अकस्मात् फिर बोले—सुनो, सुनो, खूब चुपचाप होकर सुनो। जज साहब ने क्या मुझे पूछा था ? मुझे पकड़ ले जायंगे ?

सुनीति ने कुछ सान्त्वना नहीं दी, इस बात का प्रतिवाद भी नहीं किया, उन्होंने चुपचाप खिड़की खोल दी।

हल्के अन्धकार में भी दियारा दिखायी पड़ता है। पड़ेगा ही, भँवर-चक्र की तेजी में वह इसी घर को घेरकर घूम रहा है।

सत्रह

और आठ मास के बाद मामले का फैसला हुआ। लम्बे दो वर्षों तक मुकदमा चला। दौरा अदालत के फैसले में दंगा और खून के अपराध में नवीन बागदी तथा उसके साथी दो अन्य बागदियों को कठिन सजा मिली। नवीन को दण्ड मिला छः वर्ष के लिये कालेपानी का; और उसके दोनों साथियों को हुआ दो-दो वर्षों के लिये सश्रम कारावास का आदेश। दौरे का मुकदमा; गवाहों की संख्या सौ से अधिक, उन सबके बयान, जिरह और इन बयानों-जिरहों का विश्लेषण कर दोनों पक्षों के वकीलों के सवाल-जवाब समाप्त होने में बहुत दिन लग गये—दंगा होने के दिन से प्रायः दो वर्ष।

फैसला होने के दिन गाँव के बहुत लोग कचहरी गये थे। नवीन बागदी के परिवार में कोई लायक आदमी नहीं था, उसका पुत्र मर गया था। उसके परिवार में हैं एक नाबालिग पोता, पतोहू और उसकी स्त्री मोती बागदिन। मोती स्वयं ही पोते को गोद में लेकर अदालत में हाजिर हुई। किन्तु रङ्गलाल न जा सका, बहुत दिनों से उसने गाँव से बाहर निकलना छोड़ दिया है। वह बहुत आवश्यकता पड़ने पर निकलता है, तब सिर नीचाकर चलता है। बड़े रास्ते को छोड़ वह सूनसान मार्ग पर चलता है। आज वह घर में गुमशुम बैठा है। उसकी स्त्री बोली—हाँ जी,

सवेरे से ही बैठे हो, आलू रखो, फेंक देने पर कब रखा जायगा ? किसी दिन पानी पड़ने पर एक भी आलू नहीं रहेगा। सब सड़ जायंगे।

रङ्गलाल बोला—हुं।

हुं तो कर रहे हो, किन्तु राजा के वजीर की तरह बैठे ही रह गये—ऐसा कहकर रङ्गलाल की स्त्री हँसे बिना रह न सकी।

अकस्मात् रङ्गलाल अत्यन्त क्रोध के साथ बोल उठा—भगवान, इतने लोग मर रहे हैं, किन्तु मैं क्यों नहीं मरता ? संसार के झंझट में सहन कर रहा हूं—

कहते-कहते वह फफककर रो पड़ा। उसकी स्त्री अवाक् हो गयी। वह क्या कहे, इसे जान न सकी। वह यह समझ भी न सकी कि संसार की किस यंत्रणा के कारण रङ्गलाल अकस्मात् ऐसा अधीर हो गया। दुःख तथा मान के कारण उसकी आँखों में भी जल आने लगा।

रङ्गलाल ने दोनों उँगलियों से सिर की दो रगें दबाकर कहा—सिर मेरा फट रहा है। आज मैं कुछ न खाऊंगा।—ऐसा कहकर वह घर में चला गया और पेट के बल फर्श पर सो गया।

और भी एक आदमी अधीर उत्कण्ठा के उद्वेग और मन की पीड़ा से दुःखित हो रहा था। अत्यन्त कोमल हृदय की स्वाभाविक ममता से सुनीति अभी से नवीन तथा उसके कई साथियों के लिये गम्भीर पीड़ा अनुभव कर रही थीं। उत्कण्ठा के आवेग के कारण उनके शरीर से जैसे सारी शक्ति चली गयी है। चूल्हे पर एक तरकारी चढ़ाकर वे उसी बात की चिन्ता कर रही थीं। शोर-गुल करते-करते मानदा ने आकर कहा—जलने की गन्ध आ रही है। आप यहीं बैठी हैं और तरकारी जल रही है ! मैंने समझा, माँ ऊपर गयी हैं। उतारिये, उतारिये।

अब चौंककर सुनीति गन्ध की कटुता का अनुभव कर परेशान हो

गयीं। चारों ओर देखकर बोलीं—अरे सँड़सी तो लायी ही नहीं। ला तो मानदा।

मानदा ने कुछ चिढ़कर कहा—वही है सँड़सी, बायें हाथ के नीचे।

सुनीति अब देख पायी, सँड़सी पर ही बाँया हाथ रखकर वे बैठी हैं। झटपट उन्होंने कड़ाही उतार डाली, किन्तु हाथ में जैसे शक्ति नहीं है, हाथ थर-थर काँप उठा। मानदा की तेज दृष्टि से यह छिप न सका, वह इस बार उत्कण्ठित हो उठी—मालिक आज कैसे हैं माँ?

मलीन हँसी हँसकर सुनीति बोलीं—उसी तरह

कुछ बढ़ तो नहीं गया, इसीसे पूछ रही हूँ।

ना। पिछले दिनों से तो कुछ शान्त ही हैं।

तो फिर?—मानदा ने अचरज के साथ पूछा।

सुनीति ने अब विस्मय के साथ पूछा—क्या रे? तू क्या कहती है?

मानदा बोली—इस प्रकार मिट्टी की मूर्त्ति के समान बैठी हुई हैं आप।

एक लम्बी साँस छोड़कर सुनीति ने कहा—नवीन आदि के मामले का आज फैसला सुनाया जायगा मानदा। उनको क्या होगा? यदि सजा हो जाय! वे और कुछ बोल न सकीं, उनके लाल-लाल दोनों होंठ फीके पड़कर थर-थर काँपने लगे। दोनों नेत्रों में आँसू भर आये और वेदना के दो समुद्रों के समान वे लबालब हो गये।

मानदा ने भी लम्बी साँस ली। लम्बी साँस लेकर वह बोली—इसमें मैं और आप क्या कर सकती हैं? मनुष्य का अपना-अपना भाग्य है! भाग्य का लिखा क्या कोई मिटा सकता है माँ?

असहाय मनुष्य के लिये साधारण सान्त्वना देने के अतिरिक्त मानदा कुछ न कर सकी, किन्तु सुनीति के हृदय की स्वाभाविक ममता सब

दिन की तरह आज भी इतने से ही शान्त न हो सकी। आँसूभ
नेत्र तथा उदास दृष्टि से देखते-देखते उन्होंने कहा—मनुष्य मर जाता है
मैं समझ रही हूं मानदा, इसमें मनुष्य का हाथ नहीं है। किन्तु यह दुः
कैसा है? एक टुकड़ा जमीन के लिये मनुष्य ने मनुष्य का खून क
डाला, और इसी लिये खूनी को जानवर की तरह सींकचे में बन्द रख
जायगा, अथवा गले में फाँसी लटकेगी—। बात पूरी न हो सकी
आँखों के जल के समुद्र में सारे शरीर में व्याप्त प्रगाढ़ वेदना व
अमावस्या के स्पर्श से उच्छ्वास आ गया। झर-झर आँसू झरने से मुँ
और छाती भींग गयी।

मानदा की आँखें भी सूखी न रह सकीं। उसके नेत्रों के कोने भ
भींग गये। कुछ देर चुप रहकर वह उत्तेजना के स्वर में बोल उठी—तु
चिन्ता न करो माँ, भगवान इसका विचार करेंगे ही, करेंगे ही—घर
आग लगेगी, निर्वंश होंगे—

रोककर सुनीति ने कहा—ना, ना, मानदा, शाप-वाप मत दे
मैंने कितनी बार तुम्हें मना किया है!

मानदा अब सुनीति पर ही क्रोधित हो गयी; सुनीति की इतन
कोमलता वह किसी प्रकार भी सहन न कर पायी। क्रोध नहीं
उत्तेजना नहीं, यह कैसी स्त्री है! वह क्रोधकर वहाँ से दूसरी जग
चली गयी।

सुनीति दुःखित चित्त से ही फिर भोजन बनाने में लग गयी
रामेश्वर के स्नान तथा भोजन का समय आ पहुंचा है। उसी घटन
के बाद से रामेश्वर और भी सन्न हो गये हैं। इसके पहले अपने मन
ही कविता पाठ करते, घर में टहला भी करते, किन्तु अब अधिकां
समय उसी खाट पर बैठे रहते हैं, और उँगली घुमा-घुमाकर दीपक व
प्रकाश देखा करते हैं। कभी-कभी सुनीति से बात करते-करते आनन

में आकर खाट से उतरना चाहते हैं, तो सुनीति हाथ पकड़कर सहायता देती हैं। अन्धेरी रात में खिड़की के पास खड़े होकर बड़ी सावधानी से मुक्त पृथ्वी के साथ छिपा हुआ एक सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा वे करते हैं। अपने अभाग्य की बात स्मरणकर सुनीति एक मलीन हँसी हँसती हैं, उस समय उनके नेत्रों में आँसू नहीं आते।

पीतल की एक छोटी कटली में स्वामी के लिये एक मुट्ठी सुगन्धित चावल छोड़कर उनको स्नान कराने के लिये सुनीति उठ पड़ीं। इस विशेष चावल को छोड़कर अन्य चावल रामेश्वर खा नहीं सकते।

तीसरे पहर सुनीति के मन का उद्वेग जैसे और बढ़ने लगा; समाचार जानने के लिये उनका मन चंचल हो उठा। दूसरे दिन वे खाना-पीना समाप्त करने के बाद अपने स्वामी के पास गप-शपकर अपने अस्वाभाविक जीवन में समय के अनुसार स्वाभाविकता लाने की चेष्टा करतीं, और किसी-किसी दिन रामायण अथवा महाभारत पढ़कर उन्हें सुनाया करतीं। किन्तु वे आज वहाँ भी स्थिर होकर बैठी न रह सकीं। आज भी वे पुस्तक लेकर हो बैठी थीं, किन्तु पाठ करते समय पाठक की जिस तन्मयता के कारण श्रोता का हृदय भी तन्मयता से विभोर हो जाता है, ऐसी तन्मयता आज वे किसी प्रकार भी उत्पन्न न कर सकीं।

एक अध्याय समाप्त करते ही रामेश्वर ने कहा—यदि तुम संस्कृत सीख लेती, सुनीति, तो तुम्हारे मुँह से मूल महाकाव्य सुन पाता। अनुवाद है न, इसमें काव्य का आनन्द नहीं मिलता।

सुनीति ने अपराधिनी की भाँति स्वामी के मुँह की ओर देखकर कहा—तो आज यहीं तक रहने दो।

रामेश्वर ने सदा की भाँति मृदु कण्ठ से कहा—रहने दो। वे इसके बाद मिट्टी के पुतले की तरह अपलक दृष्टि से देखने लगे। सुनीति ने

एक लम्बी साँस छोड़ी। सहसा रामेश्वर बोल उठे—अहीन्द्र—अहीन्द्र कहाँ पढ़ता है ?

बहरमपुर—मुर्शिदाबाद—में। कल ही तो तुमने मुर्शिदाबाद की बातें कही थीं, और कहा था—अहीन्द्र अच्छे स्थान में है। हमारे देश का इतिहास मुर्शिदाबाद न देखने से जाना नहीं जा सकता।

'हाँ, हाँ।' अब रामेश्वर को स्मरण हो आया। वे सम्मति-सूचक सिर हिलाते-हिलाते बोले—हाँ, हाँ। आज सुनीति, यह—

कहो।

यह बात कि, मनुष्य का सबसे बड़ा अपराध है मनुष्य की हत्या करना। इस अपराध को भगवान कभी क्षमा नहीं करेंगे। मुर्शिदाबाद के चारों ओर इसी अपराध के चिह्न हैं। आज वही बन गया है उसके पतन का कारण। ओह ! फैजो को नवाब ने दीवार में चुनवाकर मार डाला था। एक छोटे अन्धे कुँएँ के समान घर में डाल उसका दरवाजा बन्द करा दिया था। इसी प्रकार अनारकली को मारा था—

उफ ! रामेश्वर चंचल हो उठे—हे भगवन् ! हे भगवन् !

सुनीति के नेत्र सजल हो गये। नीरव, सिर नीचाकर बैठने के कारण वह जल झर-झरकर फर्श पर गिरने लगा। उनको स्मरण आ गया था—नैनीपाल का—अभागा महीन्द्र—अपने महीन्द्र का—दियारे के दंगे में मारे गए उस अनजान और बिना पहिचान के अभागे का—अभागे नवीन और उसके कई साथियों का। उन्होंने छिपाकर आँखें पोंछ लीं और घर से निकलने के लिये खड़ी हो गयीं। वे मानदा को समाचार लेने के लिये भेजेंगी।

रामेश्वर ने पुकारा—सुनीति ! कण्ठस्वर सुनकर सुनीति चौंक पड़ीं। रामेश्वर का स्वर था अत्यन्त म्लान, उससे कातरता स्पष्ट प्रकट हो रही थी। सुनीति उद्विग्नता के साथ ही लौट पड़ीं—क्या कहते हो ?

रामेश्वर ने कातर दृष्टि से स्त्री की ओर देखकर कहा—देखो, मेरा शरीर देखो, मुझे थोड़ा सुला दो।

सावधानी के साथ स्वामी को सुलाकर सुनीति ने उत्कण्ठा के साथ पूछा—शरीर क्या खराब जान पड़ता है ?

उनकी बात का उत्तर न देकर रामेश्वर बोले—मेरे शरीर पर एक पतली चादर डाल दो और वह प्रकाश हटा दो।—कहते-कहते वे उत्तेजित हो उठे, कुछ उत्तेजित स्वर में तिरस्कारकर बोले—तुम जानती हो कि प्रकाश से मेरी आँखों में पीड़ा होती है, तब भी उसे जलाकर सामने रख देती हो ?

प्रतिवाद करना व्यर्थ है, सुनीति इसे अच्छी तरह जानती हैं। उन्होंने चुपचाप प्रकाश को कोने की ओर हटा दिया। एक पतली चादर स्वामी के शरीर पर डालकर घर से बाहर आ गयीं। उनका मन बार-बार बाहर भाग जाना चाहता था। घर के बरामदे में आकर उन्होंने पुकारा—मानदा !

मानदा दिन की निद्रा पूरीकर झाड़ू दे रही थी, बोली—क्या है माँ ?

अब एक काम करोगी ?

कहिये।

एक बार गाँव में जाकर पता लगा आ—सदर से कुछ खबर-वबर मिली है ?

मानदा सिर हिलाकर बोली—इस बीच कौन आयेगा ; और लौटेगा भी कैसे ? लौटते-लौटते रात के आठ-नौ बज जायँगे।

यह बात सुनीति स्वयं जानती थीं, फिर भी बोलीं—अरे, बात हवा से भी आगे आती है। लोग न आये हों, शायद खबर आ गयी हो। देखो न एक बार। माँ की बात मानने से तो पुण्य ही होता है !

झाड़ू वहीं पटककर मानदा चिढ़कर बाहर चली गयी। सुनीति सन्न होकर बरामदे में खड़ी रहीं। सहसा याद आ गया, यदि बागदी-पाड़े में कोई रोये, तो वह रुलाई छत पर से सुनायी देगी। काँपते हुए पैरों से छत पर जाकर कान उठा खड़ी हो गयीं। कुछ देर बाद शान्ति की साँस छोड़ बोलीं—नहीं, कोई नहीं रोता। इस समय उनकी दृष्टि तेज हो गयी, अपनी कचहरी के सामने के मकान की ओर वे देख रही थीं। एक आदमी धान के गोले के पास खड़ा होकर कुछ कर रहा था! वह उन्हीं का नौकर महिन्दर था, अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ कि वह घास के बेड़े में लाठी घुसेड़कर धान चुरा रहा है। वे लजा गयीं। ऊपर नजर उठाते ही वह उन्हें देख लेगा। वे बड़ी सावधानी के साथ वहाँ से हटकर छत की उस ओर जाकर खड़ी हो गयीं। गाँव के टूटे हुए किनारे के पास काली का बालू से भरा हुआ पेटा चैत के तीसरे पहर उदास हो गया था। काली के उस पार का दियारा है सर्वनाशी दियारा! किन्तु दियारे ने आज उसकी दृष्टि शीतल कर दी। चैत के प्रारम्भ में कोमल-कोमल घास की पत्तियों ने निकलकर दियारे पर जैसे हरा मखमल बिछा दिया है।

हल्की हरियाली के बीच सन्थालों के गाँव में गोबर और मिट्टी से लिपे-पुते, चूने से रँगे हुए घर जैसे चित्र की तरह सुन्दर हैं। ओह! थोड़े ही दिनों में बस्ती कितनी बड़ी हो गयी है! वह पूरा एक गाँव ही बन गयी है। बस्ती से होकर एक सुन्दर रास्ता है, हरियाली के बीच एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा, नदी के किनारे से निकल, सन्थालों की बस्ती पार करती हुई, मैदान से होकर, उस पार के गाँव की घनी वन-रेखा से मिल गयी है। सन्थालों की बस्ती के आस-पास अनेक नये वृक्षों के नये पत्ते दिखाई दे रहे हैं। उनके नेत्र जैसे शीतल हो गये। किन्तु; वे एक लम्बी साँस छोड़ने से अपने को रोक न सकीं। इतना सुन्दर

दियारा, इतना कोमल—जैसे यहीं से उसकी कोमलता का अनुभव कर रही हैं—इसको लेकर लोग क्यों इतनी चढ़ा-ऊपरी कर रहे हैं ? और कहीं पर—इसी दियारे में किसी स्थान पर—छिपा हुआ है ऐसा सर्वनाशी षड्यंत्र !

नीचे से मानदा पुकार रही है, सुनीति डरकर दोतल्ले के बरामदे में उतर आयीं। नीचे के तल्ले से मानदा बोली—कभी-कभी आप बच्चों की तरह अज्ञान हो जाती हैं माँ। मैंने कहा था—रात आठ-नौ बजे के पहले कोई लौटेगा नहीं, और न आने पर खबर आयेगी नहीं। आपके ससुर के गाँव में तार तो नहीं है माँ, कि उससे खबर आ जाय।

'सुनीति !'—घर में रामेश्वर पुकार रहे थे। शान्त मन से ही सुनीति ने घर में प्रवेश किया। देखा, रामेश्वर तकिये के सहारे आधे सोये हुए की तरह बैठे हैं। सुनीति को देख वे स्वाभाविक शान्ति के साथ बोले—अहीन्द्र को लिख दो तो, रवीन्द्रनाथ नामक जो बंगला भाषा के कवि हैं, उनके काव्य-ग्रन्थ लेता आये। उसको तुम पूरा पढ़ोगी, तो काव्य का सुन्दर आनन्द मिलेगा। हाँ, और कादम्बरी का अनुवाद भी रहे। समझा तुमने ?

समाचार समय पर आया और श्रीवास तथा मजुमदार की कृपा से तुरन्त ही ऊँचे स्वर से घोषित भी हो गया। उसी रात सर्वरक्षादेवी की पूजा के लिये गांव के रास्ते पर ढोल-मृदंग बजाते-बजाते वे निकल पड़े। इन्द्रराय अपनी कचहरी में गम्भीर मुद्रा में खड़े थे। अपनी कचहरी के पास जुलूस आते ही वे निकलकर हँसते हुए रास्ते के पास खड़े हो गये।

जुलूस की गति शान्त हो गयी।

राय ने कहा—कलियुग में जनार्दन ने करवट बदली है। अतः वे तुम्हारे पक्ष में हैं। यह मैं जानता था मजुमदार। इसके बाद नवीन को लटका दिया ?

मजुमदार ने विनय के साथ हँसकर कहा—जी नहीं, नवीन को छः वर्ष का कालापानी हुआ और—और दोनों को दो-दो वर्ष की जेल।

राय ने हँसकर कहा—तब तुमने किया क्या? आओ, आओ, जरा भीतर आओ, सुनूँ सब विवरण। श्रीवास कहाँ है? आओ पाल, आओ, बनावटी श्रद्धा और आदर देखकर श्रीवास तथा मजुमदार दोनों सूख गये।

मजुमदार ने भय के साथ कहा—जी, आज माफ कीजिये, पूजा करने जा रहा हूँ।

ढोल बजाकर पूजा करने जा रहे हो, किन्तु वलि कहाँ है? दियारे में वलि होने से क्या सर्वरक्षा के स्थान पर वलि न दोगे? माँ की जिह्वा लपलपा रही है, मैं इसे दिव्य-नेत्र से देख रहा हूँ।

मजुमदार और श्रीवास के मुख क्षणभर में बदरंग हो गये। बाजेवालों और साथियों का दल भय के साथ साँस रोककर खड़ा रहा। राय अधिक खड़े नहीं रहे, एक बार हँसे और 'अच्छा' कहकर कचहरी के फाटक में चले गये।

कुछ देर सन्न मजुमदार तथा श्रीवास ने अनुभव किया, प्रकाश जैसे कम हो गया है। मजुमदार ने पीछे फिरकर देखा; श्रीवास के हाथ के प्रकाश को छोड़ और किसी के हाथ में प्रकाश नहीं है। बाजा बजानेवाले तथा अन्य लोग चुपचाप कहीं चले गये हैं।

वहाँ चक्रवर्ती के घर सुनीति चुपचाप ड्योढ़ी पर बैठी हैं। अँधेरे के परदे में आँखों से जल झर रहा है। उनके सामने अपने नाती को गोद में लेकर नवीन की स्त्री खड़ी है। वह भी चुपचाप रो रही थी। बहुत देर के बाद उसने कहा—सब लोगों ने हाईकोर्ट में दरख्वास्त देने के लिये कहा है।

सुनीति किसी प्रकार अपने को सम्भाल कर बोलीं—दरख्वास्त नहीं, अपील।

यदि छूट जाय, रानी माँ, तो हम आपको छोड़ किसी को जानेंगी नहीं।

किन्तु खर्च बहुत लगेगा। क्या तुम उसका प्रबन्ध कर सकोगी ?

नवीन की स्त्री चुपचाप खड़ी रही। बहुत देर तक चुप रहने के बाद सुनीति ने कहा—इसके लिये मैं परामर्श कर देखूँगी बागदी बहू, अहीन्द्र को आने दो, और पाँच-सात दिनों में परीक्षा समाप्त हो जाने के बाद वह आयेगा।

मोती बागदिन ने जमीन छूकर प्रणाम करते हुए कहा—आप लोगों ने उन्हें काम से जवाब दिया था, किन्तु मुझे आप नहीं रखेंगी, तो कोई नहीं रखेगा, रानी माँ।

\+ + + +

अहीन्द्र के घर आते ही सुनीति ने उसे इन्द्रराय के पास भेजा। मन में सोच रखा था यदि चालीस-पचास ही रुपयों का खर्च हो, तो अपने बचे-खुचे गहने बेचकर उसका प्रबन्ध कर दिया जाय। किन्तु राय ने मना किया। उन्होंने कहा—खर्च अधिक है, सौ से भी पूरा नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त—अकस्मात् वे हंसकर बोले—तुम लोग आजकल के हो, तुम लोग सोचोगे कि हम सब प्राचीन काल के दानव हैं। किन्तु हम-लोग क्या कहते हैं ? छः वर्ष जेल भुगतने में नवीन की तरह लठैत को कष्ट नहीं होगा। पीढ़ी-दर-पीढ़ी से उसको इन सब का अभ्यास है।

अहीन्द्र चुप हो गया। राय ने हँसकर कहा—तुम तो चुप हो गये, किन्तु अमल रहता तो मुझे एक लम्बा व्याख्यान ही सुना देता। परीक्षा कैसी दी ?

इस बार हँसते हुए अहीन्द्र ने कहा—आपके आशीर्वाद से परीक्षा अच्छी तरह दी है।

राय ने एक लम्बी साँस छोड़कर कहा—मैं तुम्हें बार-बार आशीर्वाद देता हूँ, कभी-कभी इच्छा होती है—

अहीन्द्र बात समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहा था। राय बोले—इस समय रामेश्वर को तुमने कैसा पाया ?

अहीन्द्र ने मुँह मलीन कर कहा—मैं तो देख रहा हूँ, सिर का गोलमाल बढ़ता ही जा रहा है।

कुछ देर चुप रहकर राय बोले—जाओ, घर में जाओ, तुम्हारी—अर्थात् अमल की माँ ने अभी चार-पाँच बार तुम्हारा नाम लिया है।

अहीन्द्र को घर में देखकर हेमांगिनी जैसे आनन्द से अधीर हो उठीं, उसके प्रणाम करते ही उन्होंने प्रसन्नता के साथ पूछा—परीक्षा कैसी दी बच्चा ?

अच्छी तरह ही दी है, मामीजी, आपके आशीर्वाद से।

अमल ने क्या लिखा है, जानते हो ? उसने लिखा है कि अहीन्द्र को इस बार फर्स्ट होना उचित है।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—उसने मुझे भी लिखा है। उसने छुट्टी में न आने को भी लिखा है।

ना। वह विचित्र लड़का है, बच्चा ! उसके कालेज के लड़के दल बाँधकर कहीं घूमने जायँगे, वह भी उसी उत्साह में पागल हो गया है। उसी के लिये उमा भी न आ सकेगी।

किन्तु एक दिन अकस्मात् अमल आकर हाजिर हो गया। आषाढ़ के प्रारम्भ में बादलों से आकाश परिपूर्ण था और पानी बरस रहा था। उसी वर्षा की गम्भीर रात में स्टेशन से बैलगाड़ी पर सवार होकर वह सीधे अहीन्द्र के दरवाजे पर जाकर पुकारने लगा—अहीन्द्र ! अहीन्द्र।

आँधी और वर्षा से उस रात अद्‌भुत् सनसनाहट थी ! सन्ध्या से ही यह सुनायी पड़ रही थी। अहीन्द्र की नींद टूट गयी। उसने कान लगाकर सुना—सचमुच कोई उसे पुकार रहा है।

उसने खिड़की खोलकर पूछा—कौन ?

मैं हूँ अमल। भींगकर मर गया और तुम बड़े मजे में सो रहे हो! वाह, अच्छा रहा!

झटपट दरवाजा खोल उसने पूछा—तुम? इस प्रकार?

अमल ने अहीन्द्र का हाथ हिलाकर कहा—कांग्रेचुलेशन्स! तुम फोर्थ हुए हो।

अहीन्द्र ने सराबोर अमल को आनन्द तथा कृतज्ञता से छाती में लिपटा लिया। आवाज सुनकर सुनीति बाहर निकल आयीं, सारी बातें सुनकर चुपचाप खड़ी रहीं। उनके नेत्रों में जल भर आया। उनके नेत्र समुद्र के समान आनन्द की पूर्णिमा तथा वेदना की अमावस्या में समान भाव से ही उबल उठते हैं।

अहीन्द्र बोला—अमल को खिलाओ, माँ।

सुनीति चंचल हो उठीं, किन्तु अमल ने कहा—नहीं बुआजी, स्टेशन पर भरपेट खाया है, इस समय और खिलाना एक प्रकार से दण्ड देना होगा। नहीं तो एक प्याला चाय तैयार कर दीजिये। और अहीन्द्र, प्रकाश लाओ तो; बैग से कपड़े निकालकर बदल डालूँ। रात में घर नहीं जाऊँगा, कल सवेरे जाऊँगा।

सुनीति ने चाय तैयारकर अमल तथा अहीन्द्र को पिला दी। इसके बाद उन्होंने आनन्द से अधीर होकर स्वामी के घर में प्रवेश किया। उस समय रामेश्वर खुली खिड़की के पास खड़े होकर बाहर के उत्पात की ओर देख रहे थे। क्षण-क्षण पर बिजली चमक रही थी, किन्तु वे उस तेज प्रकाश में भी एकटक देख रहे थे। बिजली चमकने के प्रकाश में सुनीति ने देखा—गाँव के किनारे से लेकर काली नदी तक एक बहुत बड़ी सफेद चादर किसी ने बिछा दी है। आँधी तथा वर्षा में जो अद्भुत गर्जन सुनाई पड़ रहा है, वह आँधी का नहीं है, वर्षा का भी नहीं है, वह है काली का क्रोधभरा गर्जन। काली में बाढ़ आ गयी है।

अठारह

आषाढ़ के प्रथम सप्ताह में काली में बाढ़ आ गयी।

एक ओर रायहाट और दूसरी ओर संथालों के लालदेव के चर—इन दोनों के बीच लाल जल के फेनिल भँवरों में फूल-फूलकर तेज जलधारा बह रही है। भँवरों में कल-कल शब्द सुनने से जान पड़ता है, जैसे सचमुच काली खिलखिलाकर हँस रही है। काली बहुत भयंकर हो गयी है।

पिछले कई वर्षों में कालिन्दी में कभी इससे अधिक बाढ़ नहीं आयी थी, किन्तु इस बार आषाढ़ के प्रारम्भ में ही, बहुत भयंकर बाढ़ के कारण वह राक्षसी बन गयी है। वर्षा भी आषाढ़ के प्रारम्भ में ही शुरू हो गयी है। जेठ की संक्रान्ति के ही दिन आकाश में भागते हुए बादलों ने अड्डा बना लिया, तीसरे पहर से पानी बरसना भी प्रारम्भ हो गया। दूसरे दिन प्रातःकाल—अर्थात् आषाढ़ के प्रातःकाल देखा गया, मैदान-घाट—सर्वत्र जल-ही-जल है। धान की कटनी लग गयी है। किन्तु बादल इतने से ही शान्त नहीं हुए, लगातार तीन-चार दिन तक बरसते रहे! कभी प्रबल धारा में और कभी रिमझिम, और कभी अत्यन्त छोटे फुहारे की भाँति, जो हवा में कुहासे की तरह उड़ रहे थे। बहुत पुराने लोगों

ने भी कहा—ऐसी सर्वनाशी वर्षा उन्होंने जीवन में कभी नहीं देखी! इस वर्षा को न तो समय का ज्ञान है और न मात्रा का!

देखते-देखते काली की बाढ़ भयंकर तूफान बन गयी। इस समय, उस समय बढ़ते-बढ़ते काली रायहाट के ताड़ के पेड़ जैसे ऊँचे टूटे करार के बराबर-बराबर आ गयी। टूटे किनारे के पास-पास काली का लाल जल, सूर्य के प्रकाश में, खून से भरी हुई छुरी के समान चमककर, तीर की तरह भागा जा रहा है। बीच-बीच में रायहाट का तट कटने से धम-धम शब्द सुनाई पड़ता है।

रायहाट के किसान कहते—काली राक्षसी की तरह जीभ लपलपा रही है, सौभाग्य से हमारी मिट्टी कंकरीली है!

सचमुच बात ठीक है। रायहाट का भाग्य अच्छा है; रायहाट की भूमि, संथाल परगने की भूमि की भाँति, कठोर लाल मिट्टी और कंकड़ से बनी हुई है। मिट्टी नर्म होती, तो काली की तेज जीभ की लपलपाहट से किनारे की नर्म मिट्टी, कोमल शरीर के मांस-पिण्ड के समान, खिसक पड़ती, और इसी बीच रायहाट कंकाल के समान हो गया होता। दो-तीन वर्षों में काली ने रायहाट का केवल चार-पाँच हाथ किनारा खाया है। किन्तु इस बाढ़ में ही उसने दो हाथ काट डाला है और इस समय भी भूख की तेजी से जीभ लपलपा रही है। उस पार का दियारा भी चारों ओर से पानी से घिरकर एक छोटे द्वीप की भाँति किसी तरह बचा हुआ है। दियारे के ऊपर इस समय काली नदी का नौकाघाट है, और घाट से ही एक पंगडण्डी गाँव तक चली गयी है। उस पार यही रास्ता बचा हुआ है।

दियारे के ऊपर श्रीवास पाल ने जो दूकान की है, उसी दूकान के बरामदे में सन्थालों के कई मुखिया बैठकर आलस्यभरी उदास दृष्टि से तूफानी आकाश की ओर चुपचाप देख रहे हैं। कमल माँझी और वह

रहस्य-प्रवण काठ-मिस्त्री चूड़ा माँझी भी बैठा है। और भी, कई एक आदमी चुटी पी रहे हैं। शाल-पत्ते से बनी हुई कड़ी तम्बाकू की बीड़ी वे तैयार करते हैं, उसे वे 'चुटी' कहते हैं। कड़ी तम्बाकू की कड़ी गन्ध से वाष्पपूर्ण भारी हवा और भारी हो रही है। बीच-बीच में दो-चार राही नौका-घाट जाते अथवा नौकाघाट से आते हैं।

दूकान के तख्तपोश पर श्रीवास स्वयं एक बहीखाता खोलकर गम्भीर मुद्रा में बैठा है। उस ओर उसका छोटा पुत्र एक चटाई पर दूकान फैलाकर बैठा हुआ है। उसके पास है एक लकड़ी का बक्स, एक ओर एक तराजू और वजन के बटखरे—सेर पर आध सेर, उसपर पौवा—इसी क्रम से अधछटंकी तक को सबके ऊपर रखकर मन्दिर की तरह सजाकर रखा है। अकस्मात् इस सन्नाटे को तोड़ श्रीवास बोला—क्यों रे, तुम सभी चुप हो गये! क्या कहते हो, कहो, मेरी बातों का जवाब दो।

कमल ने निर्लिप्त भाव से उत्तर दिया—हे, क्या कहेंगे हम? आप तो अंड-बंड बोल रहे हैं।

श्रीवास का माथा एकदम चोटी तक ठनक गया। विस्मय के साथ वह बोल उठा—मैं अंड-बंड बोलता हूँ! अपना पावना माँगना ही जैसा-तैसा कहा जाता है तो, इसमें तुम्हारा क्या दोष है, बोलो।

सन्थालों में से किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया। श्रीवास ही फिर बोला—बाकी तो एक वर्ष का हो नहीं है, कुल मिलाकर तीन वर्षों का बाकी है। जिस साल दंगा हुआ था, उसी साल से धान ले रहे हो। हिसाब करके देख लो। दंगा हुआ, मामला हुआ, मामला ही चला दो साल। इसके बाद नवीन को एक साल जेल काटते हो गया। है कि नहीं?

कमल ने अस्वीकार न कर कहा—हाँ, यह तो है हो, धान तीन बार हो गया, अबकी तुम्हारा चौथी बार होगा।

तो फिर ?

माँझी "तो फिर" का उत्तर न दे सका। चुपचाप हो फिर सोचने लगा। सन्थालों के साथ श्रीवास की गड़बड़ी चल रही है। दंगे के साल से ही उसने संथालों को धान कर्ज देना शुरू किया है। वर्षा में जब वे खेती के काम में लग जाते हैं, तब मजदूरी नहीं कर पाते। उसी समय वे धान के महाजनों से सूद पर धान लेते हैं, और माघ-फाल्गुन में धान तैयार कर सूद समेत देना दे आते हैं। इस साल अकस्मात् वर्षा आरम्भ हो जाने से इसी बीच सन्थालों के यहाँ उपवास शुरू हो गया है। उधर खेती का समय भी आ गया है। वे श्रीवास से धान उधार लेने आये हैं। किन्तु श्रीवास कहता है कि उनका पहले का कर्ज अब भी नहीं मिटा है। उस कर्ज की व्यवस्था न करने पर वह नया कर्ज किस प्रकार देगा ? किन्तु उसकी बात वे अच्छी तरह समझ नहीं रहे हैं। और अस्वीकार भी नहीं कर रहे हैं। वे चुपचाप बैठकर केवल सोच रहे हैं।

इतने में कई दस-बारह वर्षों के नंगे लड़के चिल्लाते-चिल्लाते दौड़े आये—मारां गाड़ो, मारां गाड़ो, खिकड़ी ! अर्थात् बड़े चूहे, बड़े चूहे, खरगोश ! बात कहते-कहते आनन्द के मारे उनके नेत्र लम्बे हो गये, काली-काली मूर्तियों के फैले हुए नेत्रों के सफेद भाग में छोटी-छोटी काली पुतलियाँ जैसे काँप रही हैं।

लकड़ी का उस्ताद सबसे पहले व्यग्रता से चञ्चल हो उठा, उसने कहा—कहाँ रे, कहाँ है रे ?

बाढ़ के जल के पास, जमीन से, दल-के-दल निकल रहे हैं।

दो-तीन आदमी चिल्ला उठे—गोडा, भूग्यारे, कोचों-चोचाते। अर्थात् बिलमें सब चूँ-चूँ कर रहे हैं।

सबने अपनी भाषा में कमल से कुछ कहा-सुना, इसके बाद सब उठ

पड़े। श्रीवास चिढ़कर बोला—चूहे का नाम सुनकर कूदने लगे? मेरे कर्ज का क्या करोगे? कर दो।

उस्ताद ने कहा—हम क्या कहें? यही हमारा सरदार कहेगा। न जायँगे तो खायँगे क्या? तुम धान दोगे नहीं। घर में चावल नहीं है, बाल-बच्चे क्या खायँगे? उन्हीं को भुनकर खायँगे।

बस्ती के भीतर से युवकों तथा युवतियों का दल पंक्ति बाँधकर बरसते हुए पानी में ही निकल पड़ा—चूहों और खरगोशों की खोज में। बालकों का दल और भी चंचल हो उठा, एक साथही चिल्ला उठा—देला, देला! चलो, चलो।

बूढ़ों का दल उनके पीछे-पीछे उन्हींकी तरह नाचता-नाचता जा रहा था। श्रीवास को भी अकस्मात् लालच हो आया। उसने कमल से कहा—सरदार, कह दो, यदि खरगोश मिले, तो एक मुझे भी दे जायँ।

असली बात बिलकुल सीधी है, सन्थाल उसे अच्छी तरह समझ जाते हैं। किन्तु असली सत्य पर जाल बुनकर श्रीवास ने जो एक परदा तैयार कर डाला है, वह खूब जटिल है—उसकी गुत्थी वे किसी प्रकार सुलझा नहीं पा रहे हैं। श्रीवास बहुत परिश्रम से तैयार सन्थालों की जमीन लेना चाहता है। यह बात वे मन-ही-मन अच्छी तरह समझ रहे हैं, किन्तु ऋण और सूद के हिसाब का आदि-अन्त वे बिलकुल ही नहीं पा रहे हैं। इन तीन वर्षों में उन्होंने अपनी जमीन को प्रथम श्रेणी की जमीन बना डाली है। भूमि का धरातल समतल कर डाला है, चारों ओर मेंड़ बना खोद-जोतकर उन्होंने उस भूमि को सोना उगलनेवाली बना दी है, दियारे के पास ही चक्रवर्ती घराने की जो भूमि खास दखल में रखकर खेती करने के लिये उनमें बाँट दी गयी है, उसको भी सुन्दर खेत बना दिया है। श्रीवास की जमीन को भी वे ही भोगते हैं, वह भी प्रायः तैयार हो गयी है। बिना

बन्दोबस्त वाली जमीन से भी जलाने के लिये लकड़ी, झाड़ी तथा घर छाने के लिये जंगली घास काटकर उन्होंने उसे भी साफ कर दिया है। उनकी अपनी बस्ती के आस-पास आम, कटहल और महुए के पेड़ मानुष-भर हो गये हैं। सहिजन की डालों की कलमों में पिछले साल से ही फूल लग रहे हैं। बाँस की झाड़ियों में चार-पाँच बाँस हो गये हैं। श्रीवास ने हिसाब किया है। यदि एक-एक बांस की झाड़ी में तीन-तीन नये बाँस निकलें, तो इसी बरसात में हर झाड़ी में पन्द्रह-बीस बाँस हो जायंगे।

यह स्थान भी पहले की भाँति दुर्गम नहीं है। श्रीवास की दूकान के सामने जिस रास्ते पर केवल गाड़ियों के पहियों की लीक थी, वही एक सुन्दर साधारण चालू रास्ता बन गया है। रास्ता सन्थाल बस्ती से निकलकर सीधे नदी के किनारे जहाँ पहुंचता है, वहीं इस समय नावें लगी रहती हैं। यही है इस समय इस पार का खेवाघाट। पार जानेवाले लोग इधर से ही आते-जाते हैं। गाड़ियाँ भी इसी मार्ग से जाती हैं। रास्ते का यह भाग उन्हीं गाड़ियों के पहियों के दागों से एकदम उस पारके चक अफजलपुर की पक्की सड़क से मिल गया है। इसी पक्की सड़क पर जाते-जाते मुर्शिदाबाद के व्यापारियों की मटर, मिर्च आदि की गाड़ियाँ यहाँ भी आने लगी हैं। वे मटर, मिर्च आदि बेचकर धान खरीदते हैं। यहाँ मटर-मिर्च आदि बेचने को तो सुविधा नहीं है, किन्तु सन्थाल कुछ अधिक दाम देकर धान खरीदते हैं। गाय-बकरियाँ खरीदने के लिये मुसलमान व्यापारियों के आने का तो अन्त ही नहीं है। दो-चार घर-गृहस्थों के आने क ' बात भी श्रीवास ने सुनी है। उस ओर के बन्दोबस्ती दियारे पर उनकी नजर लगी है। लकड़ी तथा घास काटकर सन्थालों ने ही उसे देखने लायक बना दिया है।

अब उनके जानवरों के पैरों तथा घास एवं लकड़ी ढोनेवाली

गाड़ियों के आने-जाने से इस जंगल में भी रास्ता बन जाने में अधिक देर नहीं है। नवीन तथा रंगलाल के साथ दंगा करके श्रीवास मन-ही-मन अफसोस करता है। इतने रुपये खर्च कर एक सौ बीघे जमीन पाने में क्या लाभ हुआ ? लाभ की तुलना में हानि ही अधिक हुई है। अब चक्रवर्तियों के यहां जाकर जमीन लेने का रास्ता सदा के लिये बन्द हो गया। मामले में उसका समस्त रुपया तो खर्च हो ही गया, मजुमदार से ऋण भी लेना पड़ा। मुकदमा न कर यदि वह बाकी दियारा ले लेता, तो कैसा होता ? अब छिपकर भी दखल करने का उपाय नहीं है। छोटे राय—इन्द्रराय—की इस पर बाज की तरह आँख लगी हुई है। राय अब चक्रवर्तियों की सम्पत्ति के प्रबन्धकर्त्ता हैं। उस आँख तथा उस पंजे की चोट के सामने जाने का श्रीवास को साहस नहीं है। उस दिन की उस सर्वरक्षा देवी की वलि की बात यादकर मन अब भी ठण्डा हो जाता है। इस समय एक ही रास्ता है—इन संथालों को हटाकर उन्हें उस ओर करके किसी प्रकार उनकी भूमि हड़प ली जाय। जमीन, बाग, बाँस लेकर, इधर कम भूमि होने पर भी, एकदम खरा सोना है।

बहुत सोच-विचारकर श्रीवास ने जाल तैयार करना शुरू कर दिया है। जिस प्रकार मकड़ी जाल तैयार करती है, उसी प्रकार उसने कलम की नोक से स्याही के डोरे खींच-खींच, जोड़ दे, गुणा कर जाल, पूरा करना प्रारम्भ कर दिया है। इसीसे वह कहता है—मेरे खाते में निशानी देकर बाकी का एक आधार बना दो। इसके बाद धान लेते क्यों नहीं ?

अकेले बैठ बहुत सोचकर कमल बोला—हाँ, पाल महाशय, यह कैसे हुआ ? हमलोगों ने हर साल धान दिया है, तुम्हारे लड़के ने लिया है।

श्रीवास हँसकर बोला—तुम लोगों ने नहीं दिया, यह मैं कहाँ कहता हूँ ?

तो फिर ; बाकी कैसे निकाल रहे हो ?

यह देखो—बोगां जाति को कैसे समझाऊँ ? अच्छा सुनो, अच्छी तरह सुनो। जो धान तुमने लिया है, उसीका हिसाब निकालता हूँ। यह देखो, पहले साल तुमने लिया तीन बीस धान। तीन बीस की बढ़ती यानी सूद जोड़ो—डेढ़ बीस। कुल मिलाकर साढ़े चार बीस हुआ। हुआ न ?

कमल ने हिसाब निकालने में कुछ स्थान न पाकर कहा—हुं, यह तो हुआ।

पाल ने फिर आरम्भ किया—इसके बाद उस साल तुमने दिया, तीन बीस आठ पल्ला पाँच सेर। बाकी रहा बाईस पल्ला पाँच सेर, माने एक बीस दो पल्ला पाँच सेर। इसके बाद के साल तुमने लिया, तीन बीस चौदह पल्ला और पिछले साल का बाकी एक बीस दो पल्ला पाँच सेर और सूद हुआ दो बीस तीन पल्ला ढाई सेर।

कमल ने दिशा का ज्ञान भूलकर कहा—हुं।

पाल ने हँसकर कहा—तो फिर ? तब जो कहते हो, कैसे हो गया ! बेईमान बनाते हो ?

कमल चुपचाप बैठा रहा। श्रीवास ने पुत्र से कहा—बेटा, एक चिलम कड़ी तम्बाकू तैयार कर तो। बादल और हवा से शीत लग गया। कहो तो, मांझी, 'शीत लग रहा है,' तुम्हारी भाषा में कैसे बोला जाता है !

कमल ने कुछ उत्तर नहीं दिया। पाल के पुत्र ने तम्बाकू चढ़ाते-चढ़ाते हँसकर कहा—रवां हो रावां काना, ठीक है न मांझी ?

पाल ने बनावटी हँसी के साथ कहा—तू सीख रहा है रे, सीख ले, सीख ले। सरदार, इसको अपनी भाषा सिखा दो।

किन्तु कमल इस पर प्रसन्न नहीं हुआ, वह गम्भीर चिन्ता में चुप-

चाप बैठा रहा। पाल के लड़के ने तम्बाकू चढ़ाकर आड़ में दो-एक कश खींची, फिर हुक्के पर रखकर बाप के हाथ में दे दिया।

पाल ने दीवार के सहारे बैठ हुक्के से गड़-गड़ शब्द निकालना शुरू कर दिया। दूर पर दियारे के एक भाग में बाढ़ के किनारे-किनारे उत्तेजना में विभोर सन्थालों के आनन्दोन्मत्त शब्द सुनायी पड़ रहे हैं। उस कोलाहल में नदी का गर्जन भी सुनाई नहीं पड़ता। आकाश में सब दिशाओं में फैले हुए बादलों के पास-पास काले बादलों के टुकड़े विशाल पक्षियों की तरह दल बनाकर उड़ रहे हैं। श्रीवास बाहरी उदासीनता के परदे से उत्कण्ठित तीक्ष्ण दृष्टि से कमल के मुँह की ओर बैठा देख रहा था। कमल को प्रसन्न करने के लिये अनेक युक्तियां एक के बाद एक निकालता और फिर उन्हें रद कर देता। पीछे कमल उसकी दुर्बलता पकड़ न ले; सहसा वह एक युक्ति निकालकर खुश हो गया और बनावटी क्रोध से पुत्र को धमकाने लगा—नाम गणेश, किन्तु अक्ल कैसी! सरदार मांझी बहुत देर से बैठे हैं, पानी-बून्दी का दिन, थोड़ा तम्बाकू का पत्ता, थोड़ा चूना तो दे देता?

गणेश ने चञ्चल होकर तम्बाकू का एक पत्ता तथा लकड़ी के चम्मच से चूना लाकर सरदार को दे दिया। सरदार चूना तथा तम्बाकू लेकर सुरती बनाने लगा। अब उसकी चेतना कुछ लौट-सी आयी है, आप से जब धान लिया है, तो कैसे कहूँ, नहीं दूँगा?

पाल ने हँस कर कहा—हाँ। मांझी, मनुष्य सब कुछ बेचकर खा जाता है, किन्तु धर्म नहीं बेचता। तुम लोग नहीं दोगे—यह विचार मुझे एक दिन भी नहीं हुआ। तुम्हारे साथ इतने दिनों से कारबार कर रहा हूँ, तुम्हें मैं खूब जानता हूँ।

फिर भी जानते हो, मुकदमे में फँस जाने से मैं स्वयं कुछ देख नहीं पाया।

लड़के सब बेवकूफ हैं। लड़के हैं न? यदि साल-साल हिसाब कर बता देते कि माँझी, इतना बाकी रह गया, तो ऐसी गड़बड़ी न होती। मैं तो खाता देखकर एकदम अवाक् हो गया!

कमल थोड़ी-सी सुरती होंठ में दबाकर बोला—हमलोगों का भी यही हाल हुआ।

श्रीवास ने क्रोध से कहा—इसके लिये मैंने लड़कों को एकदम मारना ही छोड़ दिया है। इसके बाद कुछ देर चुप रहकर बोला—अब से मैं हिसाब कर तुमलोगों का झंझट मिटा दूंगा, तुमलोग चिन्ता न करो।

कमल बोला—हाँ, यही कर देना, सरदार।

निश्चय। अब एक काम करो। तुम लोग अपनी-अपनी बाकी देन का खाते में अँगूठे का निशान दे दो और किसको कितना धान चाहिये, बतला दो। मैं जोड़कर देख लूँ, कितना धान लगेगा। इसके बाद तुमलोग कल ही धान ले लो।

अंगूठे के निशान का नाम सुन कमल फिर चुप हो गया। अँगूठे के निशान से वे लोग बहुत डरते हैं। उस अनजान काले दाग में जैसे भाग्य की अटल शक्ति अनुभव करते हैं। कर्ज न चुकने पर केवल यहीं दण्ड नहीं मिलेगा, वरन् वह किस प्रकार उनका सर्वस्व हड़प लेता है, इसको कई बार देख चुके हैं। काला दाग काले घोड़े की तरह दौड़ता है।

श्रीवास बोला—तुमलोगों के पूजा-पाठ भी तो हैं? धान रोपने के पहले उन्हें न करने पर तुमलोग खेती नहीं कर पाओगे न?

फिर एक लम्बी सांस छोड़ कमल बोला—हुं।

कौन पर्व कहते हैं? नाम क्या है उस पर्व का?

नाम "बाबुली" पर्व। और "कदलेता" पर्व भी कहते हैं। "रोवा" पर्व भी कहा जाता है। "वाहन" भी कहते हैं। जैसा जिसके मन आता है, कहता है।

तुमलोग पर्व में क्या करते हो ?

कमल अब थोड़ा उत्साह के साथ कहने लगा—जाहर सारने—हमारे देवता के यहाँ पूजा होगी। 'एडियासिम' हमलोग मुर्गे को 'एडियासिम' कहते हैं, वहीं मुर्गा काटा जायगा, देशी शराब देवता को चढ़ायेंगे। दो-तीन तरह के साग देंगे। फिर वही देवता के स्थान पर भोजन बनेगा, सब के खाने-पीने के बाद नाच-गान होगा।

तब तो बड़ा झमेला है रे ? हमें निमंत्रण दोगे न ?

कमल बड़े-बड़े दांत निकाल हँसने लगा, और हँसी के साथ बोला—आप मेरी हांड़ी का मद पियेंगे सरदार ?

श्रीवास बोला—तो न हो, हमें दूकान से पक्की शराब ला देना।

कमल पीछे नहीं हटा, बोला—हाँ, ला दूँगा।

हा-हाकर श्रीवास हंसकर कहने लगा—नहीं, नहीं, मैं तो हंसी कर रहा था।

कमल ने सिर हिलाकर कहा—उँ, हुं, ऐसा नहीं होगा। मैंने जब नेवता दिया, तब तुम्हें लेना होगा।

अच्छा तो दे। वह होगा कब ?

पानी तो बरस गया। धान मिलने पर पूजा करूंगा। इसके बाद खेती में लग जाऊंगा। आप धान देंगे, तभी तो होगा।

अच्छा, सबको ले आओ, आकर अंगूठे की निशानी दे जायँ, परसों धान ले लें। धान तो इसी जगह है।

कमल ने उदास होकर कहा—कल सब दे जायँगे।

गणेश ने कहा—सरदार, सबको सौदा खरीदने के लिये तनिक जल्द भेज देना। आज तो तुम लोगों को बहुत कुछ चाहिये—'चूहा, खरगोश, लोमड़ी मारी है। मसाले आदि लगेंगे न ?'

कमल ने हँसकर कहा—हुं, कहते-कहते अकस्मात् उसे बहुत

आवश्यक बात याद आ गयी। बोला, 'डिबरि सुनुम' लाये हो ? 'करंगा सुनुम' अच्छी तरह नहीं जलता। हाँ, एक टिन किरासिन तेल लाया हूँ, डिबिया भी ले आया हूँ। तुम्हारी नातिन के हाथ में एक लालटेन देखी थी, उसे कहाँ खरीदी ?

कमल बोला—उसे लाल बाबू की माँ ने दिया है। जमाई भाग में खेती करता है, और लड़की उन्हीं के यहाँ काम करती है।

श्रीवास को एक बात अकस्मात् याद पड़ गयी—अच्छा, तेरा नात-जमाई तो धान नहीं लेता सरदार ? वह तुमसे अलग हो गया है न ?

कमल ने लम्बी साँस छोड़कर कहा—विवाह हो जाने पर बेटी परायी हो जाती है। और दामाद होता है दूसरे का पुत्र। हमलोग क्या कहते हैं, जानते हो, यह ; हमन वरि, सिम आपनोरोयाँ अर्थात् जमाई होता है दूसरे का लड़का, जंगली मुर्गी की तरह पोस नहीं मानता।

उधर से शोरगुल करता-करता शिकार करने के बाद सन्थालों का दल लौट रहा था। स्त्री, पुरुष, बालक—कोई भी बाकी नहीं था। अधिकांश के हाथों में लाठियाँ थीं, कइयों के कन्धों पर धनुष और हाथों में तीर थे। जो खाली हाथ थे, वे भी ढेर के ढेर मरे चूहे, कई लोमड़ियाँ, चार जंगली खरगोश, दुम में रस्सी बाँधकर लटकाये हुए ला रहे थे। उस लम्बे शरीरवाली युवती के हाथ में थे दो खरगोश। वह अपने अभ्यास के अनुसार चंचलता के साथ कमल के पास आकर बोली—ये दोनों लाल बाबू को देने होंगे। तुम इन से कह दो, ये कहते हैं, नहीं देंगे। लाल बाबू उस पार के घाट पर बैठे हैं, मैंने उन्हें देखा है।

दल की समस्त युवतियों ने संकेत किया—"हाँ, हाँ। वे नदी के उस पार बैठे हैं, हमने देखा है—हमलोगों के लाल बाबू।

श्रीवास खरगोश के माँस पर लालच करता था। वह झटपट

बोला—हाँ, माँझी, मैंने कहा था, एक खरगोश के लिये, मुझे एक दे दो।

कमल की नातिन ने श्रीवास को जवाब दिया। किसीके कुछ कहने के पहले ही उसने कहा—तुम्हें क्यों दूँगी? तुम्हें दूँगी तो हम लोग क्या खायँगी

श्रीवास ने भौंहें चढ़ाकर कहा—तू तो अच्छी लड़की है! अभी तो लाल बाबू को देने जा रही हो, मुझे देगी नहीं, क्यों?

कमल की नातिन बड़े विस्मय के साथ श्रीवास की ओर एक उँगली दिखाकर अपनी भाषा में बोल उठी—यह आदमी पागल है या मतवाला?

युवतियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं। श्रीवास का पुत्र गणेश सन्थाली भाषा समझ लेता था। उसके मुँह तथा आँखें लाल हो गयीं, वह कड़ी आवाज में बोला—हे सारी, अण्डबण्ड मत बक।

कमल की नातिन का नाम है सारी, शुक-सारी का सारी नहीं—उनकी भाषा में सारो का अर्थ होता है उत्तम। सारो बोली—क्यों नहीं बोलूँगी? यह बात वह क्यों कह रहा है? लाल बाबू की बराबरी क्यों करता है? वे हैं हमलोगों के जमींदार, हमलोगों को जमीन दी है, हमें धान देते हैं, वे तुम लोगों की तरह सूद नहीं लेते।

सारी की बात के ढंग से कमल भी लज्जित हो गया। वह यथासंभव कोमल स्वर में बोला—उनसे सभी प्रेम करते हैं, वे हैं हमारे लाल देव के नाती।

स्त्रियाँ मुग्ध कण्ठ से अपनी भाषा में एक साथ बोल उठीं—उसी तरह आग के समान रंग! आः—य—गो! विस्मय-सूचक यह शब्द उनके कण्ठों में संगीत ध्वनि की तरह बज उठा।

उन्नीस

अकेला अहीन्द्र ही नहीं, अमल तथा अहीन्द्र दोनों ही प्रातःकाल कालिन्दी के घाट पर आकर बैठे थे। वर्षा के जल में भींगने के लिये दोनों घर से निकले थे, नदी के किनारे पहुँचकर काली की बाढ़ देख उसी जगह बैठ गये। खेवाघाट के रास्ते के पास ही है एक पुराना वरगद। इसकी डालियां-पत्तियां इतनी घनी और फैली हुई हैं कि वर्षा का पानी उसके नीचे नहीं पड़ सकता। वृक्ष के पत्ते से गिरा हुआ जल जगह जगह गिर पड़ता है। पेड़ की जड़ के पास मोटी-मोटी टेढ़ी-मेढ़ी जटाएँ निकलकर जमीन में घुस गयी हैं। किन्तु उनके कुछ भाग अजगर-पीठ की भांति भूमि के ऊपर पड़े हुए हैं। उसी जटा के ऊपर बैठकर दोनों काली की तेज धारा में ढेले फेंकते और बातें करते जाते हैं। पेड़ के नीचे उनसे कुछ दूरी पर दो बैलगाड़ियां नौका आने की राह देख रही हैं। वर्षा की हवा के कारण दोनों बैलों के शरीर के रोयें खड़े हो गये हैं, दोनों गाड़ीवान तथा और कई यात्री भींगी हुई लकड़ी की आग के सामने बैठकर तम्बाकू पी रहे हैं और बातें कर रहे हैं।

बहुत दिनों का पुराना वरगद है। इसके नीचे बहुत वर्षों से यात्रीगण आश्रय लेते हैं। इस पेड़ का नाम ही 'आश्रय-स्थल' पड़ गया

है। रास्ते के अपरिचित पथिकों का दल यहाँ आश्रय लिया करता है। इस वरगद के नीचे ही एक बैलगाड़ी की सिरकी के नीचे बैठकर इस घाट का ठेकेदार तम्बाकू पी रहा है।

अपनी बात पर खूब जोर देकर ही अमल बातें कर रहा था। वह अहीन्द्र से आग्रह कर रहा था, कलकत्ता में पढ़ना होगा। वह अहीन्द्र का कोई कारण सुनना नहीं चाहता, वह बार-बार यही कह रहा था कि तुम्हारे जैसे छात्र के लिये मुफस्सिल उपयुक्त स्थान नहीं है।

कौतूहल के साथ अहीन्द्र बोला—कहते क्या हो ?

निश्चय ! कम से कम तीन कदम पीछे हो, वह तो तुम्हारे रीजल्ट से प्रकट हो ही गया इसका अर्थ ?

वेरी ईजी। कलकत्ता रहने पर तुम्हारा नाम रहता सर्वप्रथम—यह मैं निस्संकोच कह सकता हूं। क्षेत्र की उर्वरता तथा अनुर्वरता विज्ञान से प्रमाणित हो चुकी है, बीज के भाग्य को दोष देने के समान मतवाद को अवश्य ही तुम मान नहीं सकते।

इस बार अहीन्द्र कुछ देर तक चुप रहा, इसके बाद बोला – तुम क्यों असल कारण नहीं समझ पाते अमल ?

अमल थोड़ी देर तक चुप रहकर बोला—बहुत से कॉलेज तुम्हें फ्री स्टुडेण्टशिप देंगे, स्टाइपेण्ड देंगे, होस्टल भी फ्री कर देंगे, इसके अतिरिक्त तुम्हें स्कॉलरशिप मिलेगी ; अतः तुम्हें इसमें बाधा कहाँ पड़ती है ?

अहीन्द्र ने गम्भीरता के साथ कहा—तुम्हारी समझ में सारी बातें नहीं आ रही हैं, अमल। किन्तु तुमसे कहने में मुझे आपत्ति नहीं है। अब से प्रतिमास माँ को कुछ न भेजने से काम नहीं चलेगा। नियमित रूप से तो लगान मिलती नहीं, रुपये के अभाव से माँ को कष्ट झेलना पड़ता है। मेरी माँ को भोजन बनाना पड़ता है, नौकरानी मानदा

बिना वेतन काम करती है। कम से कम ये दोनों खर्च तो मुझे चलाने ही पड़ेंगे

अमल चुप हो गया। इन बातों में जो एक दुःखदायक संकोच छिपा हुआ है, उसी से वह संकुचित हो गया। वह सर्वान्तःकरण से अहीन्द्र का मित्र है, किन्तु फिर भी उसे ऐसा लगा, जोर देकर अहीन्द्र के मुँह से यह बात सुनकर उसने अनधिकार कार्य किया है। इधर नाव के उस पार से आ जाने के कारण घाट पर शोरगुल होने लगा। पेड़ के नीचे की गाड़ियों को लेकर गाड़ीवान परेशान होने लगे। जाड़ा खाये हुए बैलों ने गाड़ी में जुतने से पहले ही, काँपना प्रारम्भ कर दिया है, बोलना शुरू कर दिया है; जो यात्री उतर रहे हैं, वे भी कम नहीं चिल्ला रहे हैं।

घाट का ठेकेदार गाड़ी की सिरकी में बैठे-बैठे पैसे वसूल कर रहा है। पैसे वसूल करते-करते ही उसने एक आदमी से झगड़ा शुरू कर दिया, एक लड़के के खेवे के पैसे को लेकर। वह कह रहा था—कम्पनी की रेल में लड़कों से आधा टिकट लिया जाता है, और तुम्हारी नाव में 'नहीं है' कहने से कैसे चलेगा? क्या तुमने अँधेर मचा रखी है?

बैलगाड़ियों के गाड़ीवान अत्यन्त सावधानी से बैलों को हाँकते-हाँकते चिल्ला रहे थे, अ-र्-ह-ह! इधर ही—

अत्यन्त आवश्यक समय पर इस प्रकार एक विषयान्तर उपस्थित हो जाने पर अमल तथा अहीन्द्र दोनों को प्रसन्नता हुई। आधी टिकट वाले यात्री की युक्ति से अत्यन्त कौतूहल हो रहा था, उसकी बात पर अमल हँस पड़ा और बोला—फाइन आरगूमेण्ट है।

यात्री और गाड़ी लादकर नाव फिर उस पार की ओर चली। खेनेवाले माँझी ने एक लग्गी से नाव को जमीन से हटा दिया और जोर से बोला—

हरि, हरि बोलो। मियाँ साहब लोग अल्लाह-अल्लाह बोलें।

हिन्दुओं को ही संख्या अधिक थी, जान पड़ता है सब हिन्दू ही थे।

एक साथ सबके स्वरों से निकल पड़ा—ह-रि-बोल।

घाट पर फिर सन्नाटा हो गया। केवल नदी की भँवरों में कल-कल का लम्बा शब्द सुनाई देता रहा। उस कलकल ध्वनि के होने पर भी उस घाट पर जो दो-एक आदमी बैठे थे, उनके भीतर का सन्नाटा, उससे भंग नहीं हुआ। जनहीन घाट की शान्त उदासीनता में नदी का धीमा स्वर मिल गया था। कान से सुनने पर भी याद रहने लायक ध्वनि नहीं थी।

अमल तथा अहीन्द्र के मनों के दरवाजों पर अकस्मात् आया हुआ कौतूहल समाप्त हो चुका था, फिर वे दोनों गम्भीर हो गये थे। एक लकड़ी से अमल बालू पर एक व्यर्थ चित्र बना रहा था। अहीन्द्र की दृष्टि नदी के ऊपर लगी थी। अमल सहसा बोल उठा—यदि मैं एक ट्यूशन ठीक कर दूँ? एक-डेढ़ घण्टे पढ़ाओगे और वे पन्द्रह-बीस रुपये देंगे। इसमें तो तुम्हें कुछ आपत्ति नहीं है न?

अमल के मुँह की ओर स्थिर दृष्टि से देखकर अहीन्द्र ने कहा—और स्पष्ट कहो न। तुम उमा के पढ़ाने की बात कहते हो न?

अमल ने अहीन्द्र की ओर देखा और थोड़ा हँसकर कहा—ऐसा ही हो तो?

मैं नहीं पढ़ाऊँगा—दृढ़तापूर्वक अहीन्द्र ने उत्तर दिया।

अब अमल ने हँसकर कहा—जानता हूँ। तोभी बात स्पष्ट कर ली। छोड़ो, यह बात नहीं है, मैं कहता हूँ अपने ममेरे भाई के पढ़ाने की बात। लड़का थर्ड क्लास में पढ़ता है, उसके पढ़ाने के लिये मामा मास्टर खोजते हैं। कुछ देर तक विचारकर अहीन्द्र बोला—अच्छी बात है, मैं तैयार हूँ। इसके बाद हँसकर बोला—चलो देखें, तुम्हारा कलकत्ता कैसा है। मुफस्सिल से कितना ऊपर रहते हैं, परखकर देखा जाय।

अमल हँसकर बोला—बहुत—बहुत। बहुत ऊपर अहि! तीन कदम नहीं और अधिक ऊपर। देखते हो न, प्राइवेट ट्यूशन की बात कहते ही तुमने समझ लिया, उमा के पढ़ाने की बात है, अर्थात् यह समझ लिया कि उमा के पढ़ाने के बहाने हमलोग तुम्हारी सहायता करना चाहते हैं। जिस दृष्टि से तुमने मेरी ओर देखा, यदि पुराना समय होता, तो मैं भस्म हो जाता। किन्तु मैं पूछता हूँ, क्यों? मान लो यदि ऐसा ही होता, तो इसमें हानि क्या है? परिश्रम की मज़दूरी लोगे, इसमें सम्मान में कमी कहाँ आती है? यही है तुम्हारी मुफस्सिल की मेंटालिटी (भावना)।

अहीन्द्र ने बुरा नहीं माना, हँसकर ही कहा—इसमें तो कलकत्ता के आदमी की ही हार हुई अमल। मूल्य वाली की अपेक्षा अमूल्य वस्तु का ही दाम अधिक होता है, और मूल्य न लेने पर ही संसार में अमूल्य वस्तु मिलती है—यह सत्य कलकत्ता के लोग जानते नहीं, इससे सिद्ध होता है कि मुफस्सिल वाले ही जानते हैं।

अमल भी हँसते हुए बोला—तुमने एक विज्ञान के छात्र के योग्य बात नहीं कही अहीन्द्र, वैज्ञानिकों के सामने अमूल्य शब्द का अ अक्षर अंक के पहले के शून्य को छोड़ कुछ नहीं है; जितने भी ऊँचे मूल्य की वस्तु हो, वे उसका एक मूल्य अवश्य निश्चित करेंगे। यही है उनके ज्ञान की विशेषता का परिचय।

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—क्या तुम बतला सकते हो, मेरा मूल्य तुम्हारे निकट कितना है?

अमल बोला—तुम्हारे निकट मेरा मूल्य जितना है, उसका दस गुना। मेरे लिये तो तुम अमूल्य हो, बतलाओ अमूल्य के दसगुने का मूल्य कितना है?

तुम हो बोगस, तुममें कूट बुद्धि अधिक है।—अमल ने हँसकर

हार मान ली। इतनी देर में वे प्रसन्न हो उठे। अब उन्होंने बाहर से भीतर प्रवेश किया।

नदी की बाढ़, आकाश में घनघोर मेघ, धारा का धीमा कलरव, हवा की शीतलता, भींगी मिट्टी की गन्ध—अब उन्होंने स्पष्ट अनुभव किया। भँवरदार गेरुये रंग की विशाल जलधारा की ओर देखकर अमल बोला—कालिन्दी हमारी अद्भुत, अनेक रूपवाली और रहस्यमयी हैं! बहुत दिन पहले, जब लड़का था तब देखी थी कालिन्दी की बाढ़। और अबकी बार देखी है।

अहीन्द्र बोला—जानते हो, यहां क्या किम्वदन्ती है? यहाँ के लोग कहते हैं कि, ये हैं यमराज की बहिन अर्थात् यमुना की कहानी का इस पर आरोप करना चाहते हैं। कालिन्दी जिस वस्तु को हड़पने के लिये मुँह फैलाती है, फिर उसकी रक्षा किसी प्रकार भी नहीं हो सकती। वहाँ यमराज आकर बहिन के पास खड़े हो जाते हैं। एक किसान, रंगलाल—ने मुझसे कहा था, बड़े विश्वास के साथ उसने कहा था—उसने जब हाथ बढ़ाया है, तब रायहाट की रक्षा सम्भव नहीं है।

काली के करार की ओर देखकर अमल बोला—उनके संस्कार की बात छोड़ देने पर भी यह सत्य है, करार की ओर देखने से ऐसा ही लगता है।

मीठी हंसी हँसकर अहीन्द्र ने कहा—इधर काटती है, उधर डालती है। उस पार का दियारा प्रतिवर्ष परिधि में बढ़ता जा रहा है। साथ ही साथ मनुष्य के साथ मनुष्य का झगड़ा भी बढ़ता जा रहा है। इस बात, को मैं प्रारम्भ से जानता हूँ। मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ, अमल इस गांव में—केवल इसी गाँव में क्यों, इसके आसपास ऐसा एक भी आदमी नहीं है, जिसको इस दियारे की भूमि का लोभ न हो। दियारे की ओर देख अमल बोला—वास्तव में दियारा लोभ करने योग्य

बन गया है। इसके अतिरिक्त भूमि भी खूब उपजाऊ जान पड़ती है, बहुत उपजाऊ। रंगलाल ने कहा था—यह भूमि सोना उगलती है—चलो, एक दिन देख आयें। कल चलो।.....अरे, अरे ये सब चिल्लाती क्यों हैं, अरे बापरे, दल बाँधकर चढ़ती हैं! नाव डूब जायगी! उस पार दियारे के घाट पर सन्थालों की स्त्रियाँ नाव पर चढ़ते-चढ़ते शोर कर रही हैं! नाव पर चढ़कर उनका दल बैठ गया। उनके भार से चंचल नौका डगमगा रही है। इसीसे वे डरकर चिल्ला रही हैं। इस पार से भी घाट के ठेकेदार ने डरकर चिल्लाना शुरू कर दिया। अरे, अरे यह कर क्या रही है; ह-ई, ह-ई।

किन्तु उसकी आवाज का नदी के कलकल को भेद सन्थाल-स्त्रियों के शोर में सुनाई देना तो दूर रहा, जान पड़ा कि वहाँ पहुंच ही नहीं पाती। अन्त में बेचारा खाँस कर शान्त हो गया। खाँसते-खाँसते ही कहने लगा—मर जाओ, तुम सब डूब कर मर जाओ, काली इनको ले जाओ। बहुत वैराग्य के साथ वह नदी की ओर पीठ कर फिर तम्बाकू भरने लगा।

अहीन्द्र के मुँह पर हँसी छा गयी। वे नौका की सन्थाल स्त्रियों की ओर देख बोला—खड़े हो, एक तमाशा देखो।

अकस्मात् कहाँ से तमाशा आ गया?

यही नौका पर सवार होकर आ रहा है।

क्या कहते हो? क्या मामला है?

मेरी पुजारिनों का दल आ रहा है। मैं हूँ उनका लाल बाबू।

अमल मुग्ध हो गया, बोला ब्युटीफुल। बड़ा अच्छा नाम रखा है। किन्तु इसमें तो एक रोमांस है!

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—रोमांस ही है। दियारे का नाम रखा है, लालदेव का दियारा। मेरे पितामह के सन्थाल-विद्रोह में शामिल होने

की बात जानते हो न ? उनके प्रति इनमें प्रगाढ़ भक्ति थी, उनको वे कहते थे, लालदेव। मैं भी देखने में उन्हीं के जैसा हूँ। वे आँखें बड़ी-बड़ी कर कहती हैं—वैसी आग जैसा रंग।

घाट का ठेकेदार तम्बाकू भरते-भरते कान लगाकर अमल तथा अहीन्द्र की बातें सुन रहा था। वह अपने को और रोक न सका, बोल उठा—जी हाँ, वे ठीक कहते हैं बाबूजी। हमारे चक्रवर्ती घराने-जैसा रंग इस इलाके में नहीं है, इसके अतिरिक्त आप का रंग ठीक आग की लपट जैसा है।

अमल फिसफिसाकर बोला—माई गॉड, यह हमारी बातें सुन रहा है क्या ? अहीन्द्र ने हँसते हुए कहा—असम्भव नहीं, चुपचाप दूसरे की बातें सुनने में मनुष्य को चोरी का आनन्द मिलता है।

ठेकेदार इस बार बाहर आकर अमल और अहीन्द्र के सामने बैठकर बोला—बाबूजी !

अहीन्द्र बोला—कहो।

जी।—कहकर एक बार उसने संकोच से सिर खुजला लिया। इसके बाद बोला—बादल का दिन है, मेरे पास सिगरेट नहीं है। तम्बाकू भी कड़ी है, क्या आप लोग बीड़ी पीते हैं ?

अमल खिलखिलाकर हँस पड़ा। अहीन्द्र भी थोड़ा हँसा और हँस कर बोला—हमलोग बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू, कुछ नहीं पीते। हमें इनकी आवश्यकता नहीं है।

वह लज्जित हो उदास हँसी हँसकर बोला—मैं कहता हूँ—। कुछ देर उदास हँसी हँसकर वह बोला—मैं एक निवेदन करता हूँ।

अमल ने अंग्रेजी में कहा—ह्वाट नेक्स्ट ? ए ग्लास ऑफ वाइन ?

उसने कुछ समझा नहीं, अचरज के साथ पूछा—जी।

गम्भीरता के साथ अहीन्द्र ने कहा—कुछ नहीं। वे मुझ से कह रहे हैं। तुम क्या कहना चाहते हो ?

दोनों हाथ जोड़कर उस आदमी ने कहा—उस दियारमें थोड़ी जमीन के लिये कहता हूँ।

एक मीठी हँसी अहीन्द्र के मुँह पर छा गयी। वह बोला—जमीन ?

जी हाँ। मैं अधिक नहीं चाहता, यही दस-पन्द्रह बीघे।

इसका जवाब तो मैं नहीं दे सकूँगा। जो मेरे संरक्षक हैं, वे जैसा करेंगे, वैसा होगा।

जी। मुझे पाँच बीघे भी मिल जायँ, तो काम चल जायेगा। वह फिर बोल उठा—मैं ने उस पार एक दूकान करने का विचार किया है।

दूकान ! दूकान तो है उस पार। श्रीवास ने किया है।

जी हाँ, मेरी भी इच्छा एक दूकान करने की है। आदमी भी धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं, और श्रीवास गला काटकर लाभ कर रहा है। दर तो बढ़ा नहीं पाता, वजन में मारता है। सेर में आधा पाव कम तौलता है। दो तरह के बटखरे रखता है। जिस बटखरे से धान-चावल लेता है, वह सेर में आधा पाव अधिक है।

अमल बोला—इसी उद्देश्य से तुम भी दूकान करना चाहते हो न ?

जी नहीं। मैं आपलोगों के चरण पर हाथ रखकर कह सकता हूँ, इस प्रकार का पैसा गाय के खून, ब्राह्मण के खून के समान है। मैं सोलह आने वजन दूँगा, सोलह आने पैसा लूँगा। इतना कहकर उसने अँगूठे और बीच की उँगली मिलाकर वजन करने के ढँग पर दाहिना हाथ उठाया जैसे उसी समय वजन कर रहा है। अमल और अहीन्द्र दोनों उसका ऐसा ढँग देखकर हँस पड़े।

इधर सन्थाल स्त्रियों के शोर की भाषा स्पष्ट सुनाई देती है, किन्तु अभी समझ में नहीं आती है। वे अलग-अलग बातें करना नहीं जानतीं, एक साथ पक्षियों के झुण्ड की तरह कलरव करती हैं। अहीन्द्र ने ठेकेदार से कहा—जाओ, जाओ, तुम्हारी नाव आ गयी।

ठेकेदार ने पीछे घूमकर नौका देखी और बोला—सब माझिनें हैं, एक भी यात्री नहीं। सारा भाड़ा नुकसान है। इतना कहते-कहते वह अकस्मात् क्रोध के साथ खड़ा हो गया और बोला—गजब है भाई, दोनों बाट काट और कुछ टोकरियाँ मिट्टी फेंककर ये सोचती हैं कि सिर खरीद लिया। हे माँझिनो, तुमलोग क्या समझती हो? क्या इसी प्रकार दल बाँधकर आने की बात थी?

घाट पर उतरते ही सारी ने ठेकेदार से झगड़ा प्रारम्भ कर दिया, वह बोली—आऊँगी क्यों नहीं? हमने गाँव भर मिलकर तीन दिनों तक काम किया, इस पार और उस पार का घाट ठीक कर दिया। सारी की बातों का समर्थन उसके दल ने अपनी भाषा में किया।

ठेकेदार बोला—इसके लिये तुमलोग दल बाँधकर एक साथ आओगी? इस बार एक भी पैसा नहीं मिला। क्या काम है तुम्हारा? इतनी टोकरियाँ-फोकरियाँ लेकर जाओगी कहाँ?

बेचने जायँगी। घर में धान नहीं, चावल नहीं, खायेंगी क्या हमलोग?

हर एक के हाथों में झाड़ू और टोकरियों का बोझा था। अनेक प्रकार के झाड़ू, कुश का झाड़ू, कूँची का झाड़ू छोटे-बड़े अनेक प्रकार के। झाड़ुओं के बाँधने का ढँग भी विचित्र! टोकरियाँ भी सुन्दर तथा अनेक प्रकार की हैं।

ठेकेदार ने झगड़ा करना छोड़कर मुलायम स्वर में कहा—अच्छा, मुझे दो एक झाड़ू दे दो, तुमलोग।

पैसा, पैसा दो। सारी ने हाथ फैलाकर कहा।

ठेकेदार कुछ देर तक विचित्र ढंग से इस बर्बर स्त्री के मुँह की ओर देखकर बोला—अच्छा जा, इसके बाद फिर कैसे पार जाओगी, देखूँगा।

सारी ने उसकी इस धमकी पर ध्यान भी नहीं दिया। घाट से

ऊपर आकर एकदम अहीन्द्र तथा अमल के सामने खड़ी हो गयी। उस के पीछे स्त्रियों का दल था। अब उनके मुख में चिल्लाहट नहीं थी, उनमें थी, लाज भरी हुई मीठी हँसी और आँखों में अचरज भरी हुई दृष्टि। परस्पर गला पकड़कर जरा टेढ़े ढँग से दल बाँधकर खड़ी हैं। इस ढँग से खड़े होने का उन्हें अभ्यास है। रास्ता भी इसी प्रकार टेढ़े ढङ्ग से गला पकड़कर हिलती-डोलती चलती हैं।

अमल मुग्ध हो गया, बोला—ब्यूटीफुल! जान पड़ता है कि अजन्ता अथवा किसी प्राचीन गुफा की दीवारों के चित्र जैसे शरीर धारण कर आ गये हैं।

वह हँसकर बोला—अरे तुमलगों का दल कहाँ जायगा?

सारी ने कहा—आपके पास आयी हूँ। हमलोगों ने शिकार किया है, इसी से दो खरगोश ले आये हैं, तुम लोग उसे क्या कहते हो?

पीछे-पीछे से तीन-चार स्त्रियाँ बोल उठीं—खरगोश, खरगोश।

खून से लाल दो खरगोश अहीन्द्र तथा अमल के सामने फेंक कर सारी ने कहा—आपके लिये ये खरगोश लायी हूँ।

एक खरगोश का सिर मोटे फलवाले बाण से टूटकर दो टुकड़े हो गया है, और दूसरे के शरीर पर एक गहरा घाव है, उस घाव से अब भी थोड़ा-थोड़ा खून निकल रहा है।

अहीन्द्र अद्भुत दृष्टि से खून से लथपथ दोनों पशुओं को देखता रहा। इस प्रकार खून भरे हुए दृश्य के अकस्मात् उपस्थित हो जाने से वह जैसे सन्न हो गया है। अमल ने एक खरगोश की पूँछ पकड़कर उठा लिया और कहा—इतने बड़े खरगोश यहाँ पाये जाते हैं?

हाँ जी, हमारे दियारे में बहुत हैं। इनसे बहुत नुकसान हुआ है। ये मक्का, सेम तथा अन्य पौधों के तने काटकर खा जाते हैं। केवल सारी नहीं, पाँच-छः स्त्रियाँ एक साथ बोल उठीं—अपने मन से तो

कोई बात उन्हें आती नहीं, पूछने पर उत्तर में कई स्त्रियाँ एक साथ कलरव करने लगती हैं।

अमल उत्साहित हो उठा। उसने अहीन्द्र को धक्का देकर कहा—चलो, कल दियारे में शिकार कर आयें, कहते-कहते अहीन्द्र का मुँह देख कर जचरज में पड़ गया। अहीन्द्र का उज्ज्वल गोरा मुँह कागज जैसा सफेद हो गया है, आँखों में आँसू भर आये हैं, स्वच्छ आँसुओं के नीचे उसकी दोनों भूरी पुतलियाँ मरते हुए मूँगे के कीड़े की तरह थर-थर काँप रही हैं। अमल ने शंका के साथ पूछा, तुम्हें यह क्या हो गया?

अहीन्द्र के दोनों होंठ काँप उठे। उन दोनों को सामने से हटा दो। यह वीभत्स दृश्य मैं सहन नहीं कर सकता।

अमल दोनों खरगोशों के हटाने का संकेत कर बोला—बाबू के घर दे आओ।

अहीन्द्र ने सिहरकर कहा—नहीं, नहीं, नहीं। मेरी माँ इन्हें देख सारे दिन रोती रहेगी।

अमल चुप हो गया। इस प्रकार की बात उसने कभी सुनी नहीं थी। सामने काली-काली स्त्रियों के मुँह की हँसी भी उड़ गयी, वे अपराधिनी की भाँति सूखे मुँह खड़ी रहीं। कुछ देर बाद सारी ने लज्जा के साथ कहा—हाँ बाबू, खरगोश नहीं खाओगे, हमलोग आपके लिये लायी हैं।

अहीन्द्र बहुत संभल गया था, अब उसने मलीन हँसी हँसकर कहा—इस बाबू के घर दे आओ। जानती हो न छोटे राय का घर? ये हैं छोटे राय बाबू के पुत्र।

स्त्रियों ने अपनी भाषा में अमल के सम्बन्ध में आलोचना शुरू कर दी।

अमल ने अहीन्द्र की बात का विरोध कर कहा—नहीं ये इन्हें ले जायँ।

नहीं, इससे इन्हें दुःख होगा, तुम्हारे ही घर दे आवें।

अच्छा, तो तुम्हें भी मेरे ही घर पर खाना होगा।

खा लूँगा।

अमल हँसकर बोला—तो फिर तुम जापानी बौद्ध हो।

अहीन्द्र अब थोड़ा हँसा और हँसकर बोला—दिन में नहीं, रात में खाऊँगा। दिन में पकाते-पकाते देर भी होगी, और माँ का भोजन पकाना हो गया है। स्त्रियाँ बातें तो न समझ सकीं, किन्तु अकारण ही प्रसन्न हो गयीं। सारी ने कहा—तो राय बाबू के ही घर दे आऊँ लाल बाबू?

हाँ।

स्त्रियों का दल शोर करते-करते चला गया। अमल बोला—तो चलो, हम भी चलें।

घाट का ठेकेदार ठीक समय पर आकर वहीं खड़ा था। उसने हाथ जोड़कर कहा—तो बाबू मेरी प्रार्थना पर ध्यान रखियेगा।

बीस

उस दिन तीसरे पहर तूफान अच्छी तरह बन्द नहीं हुआ, वरन् थोड़ा कम हो चला था। वर्षा बन्द हो गयी है। पश्चिमी हवा बन्द है। उसकी जगह दक्षिण ओर से मन्द वायु चल रही है। इस हवा के कारण आकाश के बादल दिशा बदल कर उत्तर की ओर जा रहे हैं।

इन्द्रराय अपनी कचहरी के सामने के बरामदे में भूमि की ओर दृष्टि लगाये इस ओर से उस ओर टहल रहे हैं। उनके दोनों हाथ पीछे की ओर परस्पर बँधे हुए हैं। इसी समय कुछ भुन-भुनाते हुए अचिन्त्य बाबू ने बाग का फाटक खोल प्रवेश किया—भाग गये, अब दुष्ट बादल भाग गये। बाप रे बाप! आज छः दिनों से वर्षा रुकी नहीं, और हवा कैसी? ओह, ठण्डे वात ने पकड़ लिया! उन्होंने आकाश के बादलों की ओर मुँह उठाकर कहा—बाभन बादल बान दक्षिणा पाके जान—दक्षिणी हवा चल रही है। अब जाओ। कहाँ जाओगे?

राय थोड़ा हँस कर बोले—क्या बात है? बहुत दिनों के बाद आये?

अचिन्त्य बाबू ने तुरन्त उत्तर दिया, जी हाँ, बहुत दिनों बाद

आया हूं, शरीर स्वस्थ न रहने पर क्या करता? अन्त में कलकत्ता जाकर—अकस्मात् हो-हो हँसकर बोले—कहिये, क्या बात है?

चिन्तित मनुष्य भौं हैं टेढ़ी कर जिस प्रकार हँसता है, वैसे ही हँस कर राय ने कहा—यह और क्या है?

हँसते-हँसते ही अचिन्त्य बाबू ने कहा—देखिये, अच्छी तरह देखिये, देखकर कहिये। हें, हें, नहीं समझ पाये? ऐसा कहकर अपने दाँतों पर उँगली रख बोले—दाँत-दांत। पर्ल-लाइक टीथ, इस प्रकार मोतियों के समान मेरे दाँत थे। कीड़े से खाये हुए मेरे दाँत हैं न?

अब इन्द्रराय के मन में कौतूहल जग उठा। वे हँसते हुए अचरज से बोले, हाँ ठीक है महाशय, सचमुच ये मोतियों की पांती की तरह दाँत हैं।

गर्व के साथ अचिन्त्य बाबू ने कहा—उखड़वा दिया। डाक्टर ने क्या कहा, जानते हैं? उसने कहा कि तुम्हें दाँतों के कारण ही डिस्पेप्सिया हो गयी है। अब आपको पत्थर भी हजम हो जायगा।

अच्छा, ऐसी बात है!

निश्चय देखिये न, छः महीनों में ही कैसा विशाल काय हो जाता हूँ। एकदम जिसको कहते हैं—यंगमैन। दूसरे ही क्षण उन्होंने दुःख के साथ कहा, किन्तु इसमें कठिनाई क्या है? खाना-पीना अर्थात् जिसको पुष्टिकर भोजन कहते हैं, यहाँ मिलता नहीं है।

राय बोले, यह तो आप हमारे देश की झूठी निन्दा कर रहे हैं। यहां दूध घी तो खूब पाया जाता है।

अत्यन्त क्षुद्रता के साथ दूध घी की तुच्छता बतलाने के ढँग से अचिन्त्य बाबू ने कहा, अरे महाशय, आप जो कह रहे हैं, विशेषकर स्वयं तान्त्रिक होकर, वह ठीक नहीं है। दूध-घी ही यदि पुष्टिकर खाद्य होता, तो गाय-बैल ही होते पशुराज। माँस, माँस-खानी होगी, तभी

होगी शरीर में शक्ति। घी दूध खाने से अधिक से अधिक चर्बी से फूल जायँगे, समझे न ?

राय हँसकर बोले—यह तो है, दूध घी खाने से मनुष्य चर्बी से फूल जाता है, किन्तु पाखण्ड नहीं करता।

अचिन्त्य बाबू थोड़ा रुक-से गये। उदासी के साथ थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बोले--मैंने मूर्खता की, और कुछ दिन कलकत्ता रहना ही उत्तम होता। एक साहब की कम्पनी की जल्दबाजी से चला आना पड़ा। सोचा—सन्थालों को एक-दो पैसे देकर एक हारिल, अथवा तीतर अथवा और कुछ का प्रबन्ध कर लूँगा। इसके अतिरिक्त यहाँ जंगली खरगोश भी तो बहुत पाये जाते हैं। उसके लिये दो-तीन आने खर्च कर दिये जायेंगे। सुनता हूँ, खरगोश का माँस बहुत उत्तम तथा पुष्टिकर होता है ; क्योंकि वे खाते हैं, एकदम फर्स्ट क्लास विटामेन्। चने, मसूर, इनके तने खाने से ही उनकी देह बनती है।

राय बोले—आज मैं आपको खरगोश का माँस खिलाऊँगा। मेरे यहाँ ही रात में खाइयेगा, निमंत्रण देता हूँ। दियारे के सन्थाल आज दो खरगोश दे गये हैं।

अचिन्त्य बाबू हँसकर बोले—मैंने सुना है महाशय, घर बैठे ही उसकी गन्ध मिली है।

राय ने हँसकर उत्तर दिया—सिंह-बाघ न होनेपर भी आप इसी बीच सियार तो हो ही गये हैं। सूँघने की शक्ति बहुत बढ़ गयी है !

अचिन्त्य बाबू अपने होंठ पर थोड़ी हँसी लाकर बैठे रहे। राय बोले--तो रात में आइयेगा।

अचिन्त्य बाबू ने कहा—अब इस गीली भूमि पर कौन लथ-पथ करने जायेगा, कि मैं आऊँगा। अब खा-पीकर एक साथ ही जाऊँगा अम्बल अच्छा होनेपर सर्दी लग जाने दूँ क्या ? इसके अतिरिक्त मैंने

असल बात तो आपसे अभी कहीं ही नहीं। अभी कही है न, साहब की कम्पनी की बात! इस बार जिस व्यापार के सम्बन्ध में बातें तय कर आया हूँ, क्या कहूँ आपसे, एकदम तीन सौ परसेण्ट लाभ! दो सौ परसेण्ट में तो कोई बात ही नहीं।

कौतूहल के साथ दोनों भौंहें चढ़ाकर राय ने कहा—क्या कहते हैं!

जी हाँ। खस की चालान देनी होगी, खस जानते हैं न?

हा जानता हूँ, जंगली घास की जड़।

अचिन्त्य बाबू ने सन्तोष के साथ जोर से कहा—हाँ। सन्थाल दियारे से उखाड़कर फेंक देते हैं। उन्हीं को एकत्र कर सफ़ाई करूँगा। हिसाब कर देखिये न कितना लाभ होता है।

राय ने कुछ उत्तर नहीं दिया, केवल थोड़ा मुस्करा दिया। मकान के अन्दर शंख बज उठा। कुछ चकित हो राय ने चारों ओर देखा—सन्ध्या हो चुकी है, पश्चिम की ओर लालिमा रहने के कारण अभी अँधेरा घना नहीं हो पाया है। गम्भीर स्वर में उन्होंने इष्टदेवता का स्मरण किया—तारा, तारा माँ! इसके बाद अचिन्त्य बाबू से कहा—अब आप नायब के साथ बैठ कर बातचीत कीजिये, मैं सन्ध्या कर्म कर लूँ।

अचिन्त्य बाबू ने कहा—एक गुप्त बात बतला दूँ अर्थात् माँस रहने पर भी मेरे लिये थोड़े से दूध का प्रबन्ध रहना चाहिये। बात क्या है, जानते हैं? डाक्टर ने कहा है—अब हजम में गड़बड़ी नहीं होगी। किन्तु मैंने थोड़ी-सी अफीम खानी शुरू कर दी है, इसलिये गोरस न रहने से नींद नहीं आती।

राय मुस्कराते हुए घर में चले गये। एक नौकर दीपक तथा धूपदानी लेकर कचहरी के द्वार-द्वार पर सन्ध्या दिखाता घूम रहा था। और दूसरे एक नौकर ने दो-तीन लालटेनें लाकर घर के बाहर छोटी तिपाइयों पर रख दीं।

समृद्ध राय-वंश का इतिहास कम से कम दो सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ है। शायद दस-बीस अधिक ही होंगे, कम नहीं। वे प्राचीन काल से ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी तांत्रिक दीक्षा में दीक्षित होते आ रहे हैं। छोटे राय के प्रपितामह भी तन्त्र के मोहमय प्रभाव से प्रभावित थे। आज भी सुना जाता है, अमावस्या तथा अष्टमी आदि पंच पर्वों को, वे श्मशान में जाकर जप-तप करते थे।

इसके पहले कोई लता-साधन में सिद्ध हो गया है। समय के प्रभाव से तन्त्र का वैसा प्रताप तो अब नहीं रह गया है, किन्तु तन्त्र का एकदम बहिष्कार नहीं कर पाये हैं। इन्द्रराय प्रतिदिन सायंकाल तांत्रिक सन्ध्या करने बैठते हैं। उस समय उनके गले में रहती है रुद्राक्ष की माला, कन्धे पर रहती है काली-नामावलि, सामने रहती है नारियल की खोपड़ी और रहती है शराब की एक बोतल तथा कुछ खाना—मछली अथवा माँस। एक बार नारियल की खोपड़ी शराब से भरकर अनेक जप-तप और अनेक प्रकार की मुद्रायें बनाकर उसे शुद्ध करते हैं, फिर पी लेते हैं। इसके बाद फिर ध्यान और जप आरम्भ करते हैं। एक निश्चित संख्या में जप करने के बाद फिर पात्र भरते हैं, और फिर वैसी क्रियायें कर उसे पी जाते हैं। इस प्रकार तीन बार में तीन पात्र समाप्त करने के बाद उनकी सन्ध्या खतम होती है। किन्तु इसीमें डेढ़ से दो घण्टे का समय लग जाता है। वे तीन पात्र से अधिक साधारणतः नहीं पीते।

हेमांगिनी ने स्वामी के सन्ध्या—कृत्य का प्रबन्ध कर रखा था। इन्द्रराय ने आकर कपड़े बदले और जब आसन पर बैठ गये, तब उन्होंने गृहदेवी कालीमाता का प्रसाद—कुछ मछली—लाकर रख दिया। राय बोले—आज मैंने अचिन्त्य बाबू को निमन्त्रण दिया है, उनके लिये दूध थोड़ा गरम कर रखो। उन्होंने अफीम खाना शुरू किया है, गाढ़ा दूध न होने से तृप्ति न होगी।

हँसकर हेमांगिनी बोलीं—अच्छा। और किसी को निमंत्रण नहीं दिया है—न ? तुम्हारा तो नारद जैसा निमंत्रण है !

नहीं। —राय थोड़ा हँस पड़े।

हेमांगिनी बोलीं—आज तुम किस सोच में हो ?

किसी सोच में नहीं। राय की आवाज से थोड़ी थकावट प्रकट हो गयी।

कुछ देर चुप रहकर हेमांगिनी ने कुण्ठितभाव से कहा—अमल लड़का है, उसने लड़कपन में वह काम कर डाला है, वह तो—

भय के साथ रोककर राय ने कहा—वह बात मत कहो हेम ? तुम क्या मुझे इतना संकीर्ण समझती हो ? इसी सन्ध्या के आसन पर बैठकर कहता हूँ हेम, सचमुच मेरे मन में रामेश्वर तथा उनके लड़कों से कुछ द्वेष नहीं है। सुनीति के बड़े लड़के ने राधारानी की मर्यादा की रक्षा के लिये जो किया है, उससे राधा के पेट की सन्तान और इनमें कुछ भेद नहीं रह गया।

हेमांगिनी चुप हो गयीं। कुछ उत्तर देने का मन ने संकेत नहीं दिया।

राय ने हँसकर कहा—मैं सन्ध्या कर लूँ और तुम स्वयं खड़ी होकर रसोई तैयार करा डालो।

हेमांगिनी चली गयीं।

राय ने गहरी साँस छोड़कर बड़ी आन्तरिकता के साथ इष्टदेवी को पुकारा—तारा, तारा ! सब तुम्हारी इच्छा है माँ।—इसके पश्चात् शास्त्र-विधि के अनुसार बैठकर सन्ध्या आरम्भ कर दी।

हेमांगिनी से भूल होने की बात नहीं है। अत्यन्त कूटनीतिज्ञ होने पर भी इन्द्रराय हेमांगिनी के निकट थे शान्त, सरल तथा उदार। एक विन्दु कपट की छाया ने भी उनके मन से निकल कर हेमांगिनी की दृष्टि

को कभी धोखा नहीं दिया। अमल ने अहीन्द्र को निमंत्रित किया है, यह समाचार सुनते ही राय की भौंहें तन गयीं। प्रकाश रूप से सामाजिक निमत्रण बन्द न होने पर भी ये राय-घराने तथा चक्रवर्ती-घराने के बीच राधारानी के लापता हो जाने के बाद से ही स्वभावतः खान-पान बन्द हो गया था। सामाजिक कार्यों में दोनों घराने ब्राह्मण, नौकर अथवा पुजारी भेज दिया करते थे।

इसके पश्चात् जिस दिन इन्द्रराय की सम्मति से नैनीपाल ने चक्रवर्तियों का अपमान करने जाकर रायवंश की कन्या का ही अपमान कर दिया, और उसका बदला लेने के लिये चक्रवर्ती—घराने की सन्तान अहीन्द्र उसकी हत्या कर फाँसी पर लटकने के लिये तैयार हो गया, उसी दिन से इन्द्रराय जो कुछ कर रहे हैं, वह उसी दान के प्रतिदान के हिसाब से करते आ रहे हैं। उनके मन में ऐसी ही धारणा थी। अहीन्द्र आकर यहाँ जलपान कर जाता, अथवा अमल वहाँ जाकर कुछ खा आता, उसका थोड़ा भला ही वे जान पाते ; बाकी अज्ञात रह जाता। जो कुछ जान पाते, उसे साधारण शिष्टाचार मान लेते। दान के प्रतिदान में, अपने विचार से उन्होंने प्रतिदान का ही वजन अधिक करना चाहा था। आज उन्हें ऐसा जान पड़ा, कि उनको यह प्रतिदान की चाल अपने मन से नहीं है, अपनी इच्छा के अनुसार अपनी चाल से नहीं चल रहे हैं, वरन् दूसरों के चलाने से वे चल रहे हैं। अपनी सारी चेतना एकत्र कर राय ने चारों ओर देखा, इसके बाद सामने की तरफ देखा। उनका मन भाग्यवादी हिन्दू का है, उन्होंने चारों ओर कुछ देख न पाया, किन्तु किसी वस्तु का अनुभव हुआ। उन्होंने देखा कि सामने का मार्ग रहस्यमय अन्धकार में पूरी तरह लुप्त हो गया है। वे पीछे फिर पीछे के रास्ते को देखकर सामने के मार्ग का अनुमान करते-करते सिहर उठे। चक्रवर्ती—घराने का जीवन-पथ, जिस स्थान पर राय—घराने के जीवन-पथ से मिलने आया था,

उसी स्थान पर एक गहरी खाई अतल अन्धकूप की तरह मौजूद थी।

किन्तु उपाय कहाँ? दिशा बदलकर चलने की बात याद पड़ी, किन्तु यह बड़ी लज्जा की बात है, मन के वजन पर दान-प्रतिदान की तराजू की ओर देखकर उन्हें स्पष्ट ज्ञात हुआ, चक्रवर्ती—घराने के दान का पलड़ा अब भी अटल होकर पड़ा हुआ है। सन्तान, सम्पत्ति—सभी कुछ चक्रवर्ती-घराने के पलड़े पर रखी हुई है। सुनीति तथा अहीन्द्र करुणा-पूर्ण दृष्टि से अपना प्रतिदान पाने की आशा से उनकी ओर देख रहे हैं।

जप करने के बाद शुद्ध सुरा का पात्र पीकर राय ने गम्भीर स्वर में पुकारा। काली! काली! माँ। इसके बाद फिर जप करने लगे। किन्तु कचहरी घर में अचिन्त्य बाबू की आवाज चील की तरह आ रही है। यह मनुष्य किसी के साथ चिल्लाकर झगड़ा अथवा बहस कर रहा है। उनकी भौंहें टेढ़ी हो गयीं, किन्तु दूसरे ही क्षण अपने को सँभाल तथा सारी इन्द्रियों को रोककर इन्द्रराय ने इष्टदेवी के स्मरण करने की चेष्टा की।

अचिन्त्य बाबू अमल और अहीन्द्र पर क्रोधित हो उठे थे। सन्ध्या के समय घूमने के बाद चाय पीकर वे राजनीतिक चर्चा कर रहे थे, और अचिन्त्य बाबू नायब के पास बैठकर व्यर्थ की गप्पें हाँक रहे थे। अकस्मात् प्याले की आवाज सुनते ही वे वहाँ से उठकर उनलोगों के पास जम कर बैठ गये। अमल कड़ी भाषा में अंग्रेजी राज्य की शोषण-नीति की आलोचना कर रहा था।

अहीन्द्र बोला—पराधीन जाति का ऐसा ही भाग्य होता है अमल, पराधीनता से मुक्ति न मिलने पर शोषण से बचने का उपाय नहीं है। कठपुतली के नाच की कठपुतली की तरह अचिन्त्य बाबू का मुँह चाय के प्याले की ओर से अहीन्द्र की ओर घूम गया, विस्मय के साथ उसका मुँह देखकर बोले—क्या? अंग्रेजी राज्य को उलटना चाहते हो?

थोड़ा हँसकर अहीन्द्र ने कहा—चाहने पर भी मुझ में वैसी शक्ति नहीं है। फिर भी सबका दिल स्वाधीनता चाहता है, यह सर्वथा सत्य है।

तख्ते पर हाथ पटककर अचिन्त्य बाबू ने कहा—नहीं, नहीं, नहीं। कहते-कहते अधिक उत्तेजित हो जाने से थोड़ी-सी गर्म चाय उनके कपड़े पर गिर पड़ी। फलतः वे अपनी बात पूरी नहीं कर पाये, चाय का कप संभालने में लग गये।

अमल बोला—आप इतने उत्तेजित क्यों होते हैं?

अचिन्त्य बाबू ने कहा—उत्तेजित नहीं होऊँगा? साहबों को भगाकर तुम लोग कैसा राज्य करोगे भाई? कहते हैं, घुस कर तो पकड़ नहीं पाते, किनारे पर पकड़ना चाहते हैं। ऐसा विचारने की तुम लोगों में शक्ति है? तुम लोग आज नौकर रखोगे और कल कुत्ते की तरह उसे भगा दोगे। किन्तु सरकारी चपरासी की नौकरी चली तो जाय! इसके बाद बूढ़े हो जाने पर पेन्शन। तुम लोगों में है इतना ज्ञान?

अमल तथा अहीन्द्र दोनों इसपर हँस पड़े।

अचिन्त्य बाबू बिगड़ पड़े—हँसो नहीं, समझते हो? हँसो मत। यही है तुम्हारी जाति का स्वभाव, बड़े को छोटा समझकर हँसना, और भाई-भाई में लट्ठम-लट्ठा करना। अंग्रेज हैं हमारे भाई। उनको लाठी से भगा कर राज्य करोगे? वाह! अच्छा है!

अमल और अहीन्द्र दोनों हो-हो कर हँस पड़े। अचिन्त्य बाबू ने अब बहुत बिगड़कर कहा—तुम लोग बिलकुल व्यर्थ लड़के हो! तुम लोग इस प्रकार दाँत निपोड़कर क्यों हँस रहे हो?

अमल बोला—अंग्रेज हमारे भाई हैं?

तख्ते पर अपनी शक्ति भर जोर से हाथ पटककर वे बोले—निश्चय ही, सरटेनली, अंग्रेज हैं हमारे भाई—एक जाति, एक वंश। इतिहास में

नहीं पढ़ा है ? वे भी हैं आर्य, हम भी हैं आर्य। और प्रमाण चाहते हो ? भाषा की बात पर विचार करो। हमलोग पिता को प्राचीन भाषा में कहते हैं पिता, पितर, वे कहते हैं फादर। माता, मदर, बाबा, पापा। भ्राता ब्रदर। कहाँ फर्क है भैया ? हमलोग डर जाने पर कहते हैं हरि बोल, हरि बोल। वे कहते हैं, हॉरिबल, हॉरिबल। चमड़े का अन्तर तो बाहरी है। वह तो स्थान, जल, वायु की भिन्नता से हो जाता है।

बहस आगे नहीं बढ़ सकी, नायब ने आकर रोक दिया। उसने कहा, अचिन्त्य बाबू आप थोड़ा ठहर जाइये, बाहर के एक सज्जन आये हैं, महाजन। क्या सोचेंगे, कहिये तो ?

अचिन्त्य बाबू बहस बन्द कर उस सज्जन के सम्बन्ध में विचार करने लगे। इस घर से निकल उस घर उस सज्जन के सामने जाकर बोले—नमस्कार। क्या आपका निवास-स्थान जान सकता हूं ?

नमस्कार का उत्तर देकर उक्त सज्जन ने कहा—मेरा घर तो है कलकत्ता, किन्तु मेरा कार्यक्षेत्र यही जिला है। मैं शहर से आ रहा हूँ।

यहाँ—माने, किस उद्देश्य से—यदि अवश्य—

मैं यहाँ चीनी की एक मिल खोलना चाहता हूँ। सुनता हूँ, उस पार एक दियारा निकला है। वहाँ ईख की फसल अच्छी हो सकती है। इसीलिये जगह देखने आया हूँ।

अचिन्त्य बाबू गम्भीर हो उठे। उनके खस की जड़ के व्यवसाय में बाधा अनुभव होने लगी। और वे चुपचाप गम्भीर होकर बैठे रहे। नायब बोले—आप ठहरिये थोड़ी देर, मैं देखूँ, मालिक की सन्ध्या समाप्त हुई की नहीं।

उसने घर में जाकर पुकारा—माँ।

हेमांगिनी, सिर का घूँघट थोड़ा बढ़ाकर बरामदे में आ गयीं ; बोलीं—कुछ कह रहे हैं ?

जी। मालिक की सन्ध्या समाप्त हुई ?

हाँ, खतम हो गयी होगी। कोई काम है ?

जो हाँ, एक सज्जन आये हैं, चक्रवर्ती-घराने के उस दियारे को देखेंगे। वे चीनी का एक कारखाना खोलेंगे। वे हमारे यहाँ आये हैं।

ओ मैं खबर देती हूँ, आप जाइये। मैं चाय तथा जलपान भी भेज देती हूँ।

नायब चले गये। हेमांगिनी चाय का जल गर्म करने के लिये कह-कर ऊपर चली गयीं। आखिरी सीढ़ी पर चढ़ते ही उन्होंने सुना—राय मीठे स्वर में गा रहे हैं। —"सब है तुम्हारी इच्छा, माँ इच्छामयी तुम।" वे विस्मित हो गये, गाना बहुत बड़ा नहीं है। अभ्यास के अनुसार तीन पात्र "वारुणी" पान करने पर वे अस्वाभाविक नहीं होते। पर्व अथवा विशेष कारण से तीन पात्र से अधिक पान करने पर वे कभी-कभी गाना गाते हैं। हेमांगिनी ने घर में प्रवेश कर देखा, सामने मद से भरा हुआ पात्र रखकर राय गा रहे हैं।

उन्होंने समझ लिया, सन्ध्या कर चुके हैं, आज राय ने बहुत पी ली है।

हेमांगिनी बोलीं, यह क्या, सन्ध्या तो हो चुकी, फिर और लिये बैठे हो।

उन्मत्तता के आवेश से हँसते हुए राय ने पास ही में स्थान की ओर संकेत कर कहा—बैठो, बैठो। अपनी माँ को पुकारता हूँ। मेरी सदानन्दमयी माँ !

उन्होंने फिर भरा पात्र उठा लिया।

हेमांगिनी बोलीं—इसी पर समाप्त करो। अब न पी सकोगे।

राय बोले—आज आनन्द का दिन है। चक्रवर्ती तथा राय-घराने का अन्तिम काँटा भी माँ ने निकाल दिया, आनन्द नहीं करूंगा ? पाँच हो चुका है, सात समाप्त करूँगा हेम, आज पाँच-सात सोचना खतम कर दिया।

ऐसा कह हेमांगिनी के मुंह के सामने हाथ हिलाकर फिर गाने लगे ;

"सब तुम्हारी इच्छा माँ, इच्छामयी तारा तुम।"

इक्कीस

चीनी के कारखाने के व्यवसायी सज्जन का नाम विमल बाबू है। विमल बाबू दूसरे दिन सवेरे जाकर दियारा देख आये। रात में बाढ़ बहुत कम हो गयी है, फिर भी दियारे का तिहाई भाग अब भी जल के भीतर है, इसी अवस्था में दियारा देखकर वे खुश हो गये। सन्थालों को देख वे सब से अधिक प्रसन्न हुए। छोटे राय के नायब मित्तिर उनके साथ थे। विमल बाबू ने मित्तिर से कहा—यह जाति बड़ी विचित्र है महाशय। जैसा स्वास्थ्य, वैसा ही परिश्रम। हमारे देशी आदमियों की तरह फाँकी नहीं देते।

मित्तिर मीठी हँसी हँसकर विमल बाबू से अधिक ज्ञान का परिचय देते हुए बोले—इन्होंने भी फाँकी देना सीख लिया है महाशय, धीरे-धीरे सीखा है। जब ये पहले यहाँ आये, तब जितना काम एक आदमी करता था, उतना इस समय दो आदमी करते हैं; डेढ़ तो लगेंगे ही।

विमल बाबू व्यवसायी हैं—कई कारखानों के मालिक, मजदूरों के सम्बन्ध में उनकी जानकारी अधिक है। इसके अतिरिक्त वे सुशिक्षित तथा वैज्ञानिक भी हैं। मित्तिर की बात सुनकर वे हँसते हुए बोले—इस समय भी उनका एक आदमी जितना काम करता है, उतना काम

करने में डेढ़ देशी आदमी लगेंगे। मैं कहता तो दो, किन्तु आपके भय से डेढ़ ही कहता हूँ।

मित्तिर इस पर सन्तोष की हँसी हँसने लगे। विमल बाबू उनसे डरकर बात कर रहे हैं, यह उन्हें बहुत अच्छा लगा। हँसते हुए उनकी बात मानकर वे बोले—हाँ, यह तो है!

विमल बाबू बोले—चलिये एक बार इनकी बस्ती में चलें, कुछ बातचीत कर ली जाय। कारखाना खोलने पर इनके बिना काम कैसे चलेगा?

श्रीवास की दूकान के सामने से ही रास्ता है। दूकान के सामने ही आकर मित्तिर ने कहा—अरे बाप रे! माँझी यहीं भीड़ लगाये हुए हैं। यहाँ तुम सब क्या करते हो?

श्रीवास दूकान में बैठकर बाकी खाते में उनसे अंगूठे की निशान ले रहा था।

श्रीवास अपने हाथ में हुक्का लेकर सब कुछ देख लेता था। मित्तिर तथा अपरिचित विमल बाबू को देखकर उसे शंका हुई। झटपट हुक्का रख रास्ते में चला आया, और आधा झुककर बोला—प्रणाम!

किधर मित्तिर महाशय? इस बाढ़ में ही, और ये बाबू?

मित्तिर ने हँसकर कहा—ये हैं कलकत्ता-निवासी। दियारा देखने आये हैं। यहाँ चीनी का एक कारखाना खोलेंगे, इसीलिये साथ लेकर आया हूँ। तुम्हारे यहाँ इतनी भीड़ क्यों है?

चीनी का कारखाना खोलेंगे—विस्मय से श्रीवास की आँखें फैल गयीं।

चीनी का कारखाना खुलेगा और साथ ही साथ ईख की खेती भी होगी। किन्तु आपका नाम क्या है?—विमल बाबू ने तीक्ष्ण दृष्टि से श्रीवास की ओर देखकर पूछा।

श्रीवास का मुँह असन्तोष से बहुत सूख गया। वह बोला—क्या कारखाना यहीं खुलेगा? आप इतनी ईख कहाँ पायेंगे?

विमल बाबू हँसकर बोले—कारखाना हो जाने पर चारों ओर ईख की खेती बढ़ जायगी। आपकी दूकान खूब चलेगी। इसके बाद, यहाँ आपकी जमीन भी है। उसमें शुरू कर दीजिये ईख की खेती। कारखाने से आपकी हानि नहीं होगी, लाभ ही होगा। अच्छा, यहाँ अभी पन्द्रह लाख ईंटें तैयार होंगी। आपकी दूकान तो इस दियारे के ऊपर ही है? शहर से ईंटें तैयार करने के लिये मेरे अनेक कुली आयेंगे, दो मास में ही आ जायेंगे। आप अपनी दूकान बढ़ा डालिये।

श्रीवास का मुँह धीरे-धीरे कोमल तथा उज्ज्वल हो गया। अब उसने कहा—आप जैसा धनी जहाँ जायगा, वहाँ की अवस्था तो अच्छी हो ही जायगी।

आपकी आज्ञा पाते ही दूकान बढ़ा दूंगा। और जो कुछ देखना-सुनना होगा मैं देख-सुन दूंगा। और देखिये, ये सब सन्थाल मेरे वश में हैं। मुझ से ही धान लेते हैं, साल-साल; एक लेते हैं, एक देते हैं। इनके साथ मेरा बहुत मेल है। जितने आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी, मैं ठीक कर दूँगा।

मित्तिर बोले—आज इतनी भीड़ क्यों है?

जी। आज है इनका "रोया" पर्व। अर्थात् खेत में पानी धान रोपने के पहले ये पूजा-पाठ करेंगे। इसके बाद खेती में लग जायेंगे। इसीलिये सब जिन्स-पत्र ले रहे हैं, खाने के लिये धान भी ले रहे हैं।

विमल बाबू बोले—अच्छा, इनका आज पर्व है? तब तो बड़े अच्छे दिन में आया। वाह, कहाँ है इनका सरदार, कहाँ है?

सन्थालों का सारा दल चुपचाप बैठकर विमल बाबू को देख रहा था। विस्मय, भय, श्रद्धा और अनेक बातें उनकी दृष्टियों से प्रकट

हो रही थीं। विमल बाबू के पुकारने पर भी कमल नहीं बोला, उसने अपना भारी शरीर थोड़ा हिला-डुला दिया। श्रीवास एकदम व्यस्त हो गया। विमल बाबू के प्रति सम्मान तथा सन्थालों पर रोब दिखाते हुए चिढ़कर बोला—अरे कमल माँझी, तेरे कानों में बात नहीं जाती क्या? इधर आ। देखता नहीं, कितने बड़े आदमी तुम्हें पुकार रहे हैं।

कमल धीरे-धीरे उनके पास गया और झुककर प्रणाम करने के बाद बोला—आप क्या कहते हैं?

हँसकर विमल बाबू ने स्पष्ट सन्थाली भाषा में कहा—तुम यहाँ के सरदार हो?

बैठे हुए सन्थालों के अचरज की सीमा न रही। उनमें कलरव हो उठा, ये बाबू हमारी भाषा बोलते हैं, हमारी भाषा बोलते हैं! अरे बाप रे।

कमल ने टूटी-फूटी बंगला में ही पूछा—हमारी भाषा आपने कैसे सीख ली बाबू?

मेरे यहाँ अनेक सन्थाल काम करते हैं। हमारे तीन कारखाने हैं। कारखाना जानता है न?

हाँ-हाँ। अपने आप चलता है। खूब धुँआँ निकलता है। एक इतने मोटे, इतने चौड़े, लोहे की चिमनी से धुँआँ निकलता है। घड़ घड़ आवाज होती है। रेलर चलता है, रिंजो चलता है।

—हाँ। रेलर इंजिन से काम होता है। मैं यहाँ एक कारखाना खोलूँगा। तुम लोग काम करोगे। तुम्हारा आज 'रोया' पर्व है न?

कमल के बड़े-बड़े पीले दाँत निकल पड़े। वह बोला—हाँ, वही तो कर रहा हूँ। पानी तो बहुत बरस गया। बीज के चारे भी बड़े हो गये हैं। अब बैठने से क्या होगा?

ठीक, ठीक। तो आज क्या-क्या खाया-पिया जायेगा ?

हँसकर कमल ने अपनी ही भाषा में कहा—जेल, दाका, हाण्डी।

तब तो आज तुम लोगों का भोज है ? माँस, भात, मदिरा अनेक वस्तुयें ! कितनी हाण्डियाँ की हैं ?

लज्जा के साथ कमल बोला—बहुत की हैं। स्त्रियाँ खायेंगी, हम-लोग खायेंगे। तभी तो आनन्द मिलेगा।

ठीक-ठीक। अच्छा है। आज तुम्हारे पर्व का दिन है—खाना-पीना करना। इतना कह मनोवेग से एक नोट निकालकर कमल के हाथ में दिया।

कमल सावधानी के साथ दोनों हाथों की दो उँगलियों से नोट पकड़कर उसकी छाप की ओर देखने लगा।

विमल बाबू ने हँसकर कहा—"गेल, रुपया, दस रुपया पाओगे उसे देने से।

सारा दल विस्मय से कलरव करने लगा।

विमल बाबू ने हंसकर मित्तिर से कहा—अब चलिये यहाँ से। जा रहा हूँ दूकानदार महाशय। जा रहा हूँ माँझी।

कमल बोला—आप आइये। काम करेंगे, आपके कारखाने में हम-लोग काम करेंगे।

सन्थाल बस्ती के बीच की कच्ची सड़क कई दिनों की वर्षा से धुलकर खूब साफ हो गयी थी। इसके अतिरिक्त पर्व के उपलक्ष में स्त्रियों ने उस पर झाड़ू लगा दी है। प्रत्येक घर के मुँह पर एक-एक मंगल-चिह्न बनाया है। अपने-अपने घरों में स्त्रियाँ आज खूब व्यस्त हैं, तत्परता के साथ काम कर रही हैं, छोटी-छोटी लड़कियाँ अपने आंचलों में साग एकत्र करती फिरती हैं। आज के पर्व में साग एक प्रधान वस्तु है।

चलते-चलते मित्तिर मुँह बिगाड़ कर बार-बार जोर से साँस खींचते-खींचते बोला – ओह, मद की तो इन सब ने बाढ़ ला दी है। पचुई की गन्ध आ रही है।

विमल बाबू बोले—हर घर में आज मद तैयार हो रही है। पर्व है न! पर्व के अवसर पर वे दूकान का मद नहीं पीते। दूकान की शराब अपवित्र है। इसके अतिरिक्त पैसे भी अधिक लगेंगे। मद की बात कहते-कहते विमल बाबू को जैसे कोई जरूरी बात याद आ गयी। बात के स्वर तथा ढँग में गम्भीरता लाकर उन्होंने कहा—अच्छी बात है। यहाँ देशी शराब की दूकान सब से नजदीक कहाँ है?

मित्तिर विस्मय के साथ अपनी हँसी न रोक सका। वह हँसकर बोला—अकस्मात् शराब की दूकान की खोज! कहते-कहते उसने विमल बाबू का मतलब समझ लिया।

उसने कहा—समझ गया। आपको चाहिये। क्या कलकत्ता के सभी बाबू मछली पकड़ते हैं? हमारे बाबू के तालाब में खूब बड़ी-बड़ी मछलियाँ हैं, एक-एक अठारह सेर, बीस सेर, बाईस सेर।

विमल बाबू बोले—नहीं, मछली पकड़ने के लिये नहीं। मेर कुली यहाँ आयेंगे। पगमिल तथा बक्स मोल्डिंग के लिये तो यहाँ आदमी मिलेंगे नहीं। अतः साठ-सत्तर कुली आयेंगे। शराब की दूकान पास न रहने से, असुविधा होगी।

बात समझकर बार-बार गर्दन हिलाते हुए मित्तिर बोला—यह देखिये, ऐसा न करने पर क्या पक्का व्यापारी कोई हो सकता है? आप पक्के व्यापारी हैं महाशय! चारों ओर नजर रखनी पड़ती है। शराब की दूकान तो थोड़ी दूर पर ही होगी। दो कोश से कम नहीं। तो फिर?

विमल बाबू ने नोटबुक निकालकर यह बात नोट कर ली, और

घमण्ड-पूर्वक बोले—यहीं एक दूकान की मंजूरी ले लूँगा। कारखाना होने से तो जरूरत होगी ही। इसकी व्यवस्था पहले से ही कर लूँगा।

रास्ते के पास ही एक सघन वृक्ष के नीचे अनेक सन्थाल स्त्रियाँ भीड़ कर खड़ी हैं! पेड़ के तने के पास मिट्टी की एक सुन्दर वेदी है। वेदी के चारों ओर की थोड़ी जगह मिट्टी और गोबर से खूब सफाई से लिपी हुई है। वेदी के चारों ओर खड़िया मिट्टी से चित्र बनाये गये हैं। उस समय भी स्त्रियाँ सामने की लिपी हुई जगह पर खड़िया मिट्टी से चित्र बना रही थीं—पशु तथा पक्षी के चित्र, उनके पास ही पास खजूर की डाल-पत्तियों और धान के पौधे के चित्र। एक स्त्री सफेद रेखाओं के बीच सिन्दूर की टीप दे रही थी। सब मिलकर इस पर्व पर मंगल-गान गा रही थीं—

ठाकुराई सिरिजिला इना पिरथिना हो,
ठाकुराई सिरिजिला गाइया जो बारे
पुसवाहि डाहावालि गाइया जो बारे,
पुसवाहि डाहावालि गाइया जो—

विमल बाबू खड़े होकर हँस रहे थे, उनकी आलोचना बन्द हो गयी, स्त्रियाँ भी विस्मय के साथ उनकी ओर देखने लगीं। उनका गान मृदु से मृदुतर होता गया। अधिकांश स्त्रियों ने गाना बन्द कर दिया था, दो एक प्रवीणायें गा रही हैं। मांगलिक गान वह कैसे बन्द करेंगी?

मित्तिर बोला—चलिये, चलिये।

स्त्रियों के दल से, वह लम्बे शरीरवाली स्त्री, कमल मांझी की नातिन, सारी, आगे आकर बोली—एक ओर से जाइये बाबू, यहां हमारी पूजा होगी।

बहुत से लड़के सिर पर लाल फूल वाले कई मुर्गों के पैर में रस्सी

बांधकर पकड़े बैठे हैं। उनमें बहुत उत्साह है, चहकनेवाले पक्षियों की तरह अपनी भाषा में चहक रहे हैं। मित्तिर बोला—अरे बाप रे! इतने मुर्ग तुम लोग खाओगे क्या?

सारी बोली—क्यों, ऐसी बात क्यों कहते हो? तुम्हें भी लोभ हो गया है क्या?

मित्तिर वैष्णव हैं, वे घृणापूर्वक थूककर बोले—राम, राम, राम; यह हरामजादी क्या कह रही है?

सारी ने कहा—तुम खाने की बात क्यों कहते हो? हम उन्हें देवता पर चढ़ायेंगे। देव-स्थान में काटेंगे, इसके बाद टुकड़े-टुकड़े कर एक मिट्टी की पुतली से बांधेंगे। इसके पहले ही खाने की बात क्यों कहते हो?

मित्तिर ने मुँह बिगाड़कर कहा—चलिये महाशय, चलिये, मुझे घृणा हो रही है।

विमल बाबू सारी को देख रहे थे। चलने के लिये कदम बढ़ाते हुए कहा—युवती का शरीर चमत्कार है, tall, graceful—youth personified!

सारी ने भौंहें चढ़ाकर कहा—तुम लोग क्या कह रहे हो?

हँसते हुए विमल बाबू आगे बढ़ गये। इस बात का कुछ जवाब नहीं दिया।

नदी के उस पार घाट के पास ही सन्थालों के कुछ बड़े-बड़े लड़के गायों, भैंसों को नहला रहे थे। और कई लड़के जल के किनारों की बिलों में लम्बी लाठी से खोंचा मार-मारकर शिकार की खोज कर रहे थे।

× × × ×

मित्तिर तथा विमल बाबू के चले जाने पर श्रीवास बड़ी चिन्ता के साथ दूकान के सामने घूमने लगा। यहाँ चीनी का कारखाना खुलेगा!

यह दियारा घर-द्वार और आदमियों से भर जायगा ! हाँ, दूकान बड़ी करनी पड़ेगी। वर्षा के बाद ही एक लम्बा तीन कमरे का घर बनाना अवश्य शुरू कर देना चाहिये। घर की नींव तथा फर्श पक्की हो, तो अच्छा। चूहों का कैसा उपद्रव है ! इस बाबू के तो बहुत ईंटें तैयार होंगीं—पन्द्रह लाख। उनमें से जो टूटी-फूटी बच जायँगी, उन्हींसे एक बहुत बड़ा दालान तैयार हो जायगा। और आदमियों के साथ, जिसको कहते हैं सुख, उसी सुख से रहने पर—। साथ-ही-साथ श्रीवास के होंठों पर मृदु मुस्कान छा गयी। दूसरे क्षण वह फिर गम्भीर हो गया। आह, यदि थोड़ी भूमि और दखल कर रखता ! जमीन का दाम एकदम बढ़ जायगा। दो सौ, ढाई सौ रुपये बीघे की तो बात ही नहीं !

सन्थालों का दल बैठा हुआ श्रीवास का इन्तजार कर रहा था। उनके काम-काज बन्द हो गये हैं। हिसाब के खाते में अंगूठे की निशानी दे देने पर धान मापा जायगा। उधर 'रोया' पर्व का उत्साह उनके जंगली मनों को हर क्षण आकर्षित कर रहा है। वे धीरे-धीरे हिल-डुल रहे थे, और व्यग्र दृष्टि से श्रीवास की ओर देख भी रहे थे। इसके ऊपर इस प्रकार अकस्मात् रुपया पा जाने पर उनके मन और भी रंगीन हो गये हैं। चूड़ा, वही कठपुतली का उस्ताद तथा रसिक सन्थाल बोल उठा—अरे बाप रे ! हमारे सरदार को क्या हुआ ? मच्छड़ काट रहा है क्या ? इस तरह घूमता क्यों है ? तुम्हारा मुँह कोई सी दिया है क्या ?

कमल ने इस पर पुकारा, सरदार महाशय !

श्रीवास थोड़ा चकित होकर बोला, क्या, ओह आता हूँ। वह आकर तख्ते पर बैठ गया। कमल बोला, लीजिये, हमलोगों की टीप लीजिये। इसके बाद धान मापना होगा।

हुँ। हिसाब की बही अपनी ओर खींचते ही श्रीवास के सिर में एक बार बिजली के समान चमक गयी। जमीन का दाम बढ़ेगा।

अँगूठे की निशानी बही-खाते में न लेकर एकबार ही बन्धकी कागज पर लिया जाय—किन्तु इन जंगलियों का दल बड़ा संशयकारी है। फिर एक बार ही सब कहने लगेंगे—क्यों जी, फिर अँगूठे की निशानी क्यों देंगे ? तुमने तो कहा था, खाते में देनी होगी। दूसरे ही क्षण उसने दावात बही-खाते पर गिरा दी और भय के साथ बोल उठा—जा, सर्व-नाश हो गया !

सन्थाल-दल भी बहुत भय के साथ बोल उठा—जा।

श्रीवास के लड़के ने बाप को डाँटकर कहा—क्या कर दिया ? हो गया न ! उस पन्ने को छोड़—

बीच में ही टोककर श्रीवास ने अत्यन्त दुःख प्रकट करते हुए कहा—उहुँ, एक काम करो। जल्दी जाकर उस पार से पचीस डेमी तो ले आओ। इसके बाद खाता बना लिया जायगा।

श्रीवास का पुत्र गणेश अब क्रोधित हो गया—तुम पागल हो गये हो क्या ? क्या डेमी से खाता बनता है ?

अत्यन्त क्रोध से मुँह बिगाड़कर श्रीवास गणेश के मुँह की ओर चुपचाप देखने लगा। इसके बाद बोला—तुमको जो कहता हूँ, वही करो। जाओ, अभी जाओ, जाओ और आ जाओ—इतना कहकर बक्स से रुपये निकाल कर फेंक दिया।

सन्थाल अचरज के साथ श्रीवास का मुँह देख रहे थे। श्रीवास गम्भीर मुँह से उठकर बोला—अँगूठे की निशानी बाद में ली जायगी माँझी। गणेश कागज लेकर आ जाय। तब तक तुम लोग बखार तोड़ धान माप कर ठीक कर लो। तुम लोगों का आज पर्व है न।

सन्थाल यह सुनकर बहुत खुश हो गये। कमल ने कहा—ना ; सरदार बड़ा भला है, इसमें विचार है।

चूड़ा माँझी ने भौंहें नचाकर कहा—सरदार स्याही गिराकर बहुत बेबकूफ बन गये। लड़के पर क्रोध देखा न ?

चूड़ा की व्याख्या से सब सन्थालों को हँसी आ गयी। सब खिलखिला उठे। सचमुच सरदार बड़े बेबकूफ बन गये हैं।

देखते-देखते घास से बनी हुई मोटी बखार तोड़कर धान जमा कर दिया गया। जलद-जलद टिन से माप-माप कर धान फेंका जाने लगा।

श्रीवास धान माप के साथ ही पुकारने लगा—राम, राम, राम, राम रामे—दो दो, दो रामे—तीन, तीन।

चूड़ा एक ओर बैठकर एक लकड़ी से जमीन पर दाग लगाकर सन्थालों की ओर से हिसाब करता जा रहा था।

बाईस

इधर गाँव में एक अफवाह चारों ओर फैल गयी। सवेरा होते-न-होते गाँव के एक ओर से दूसरे छोर तक यह खबर फैल गयी कि उस पार दियारे में चीनी का एक कारखाना खुल रहा है। खास कलकत्ता से एक धनी व्यापारी आया है और अपने साथ बहुत सा रुपया लाया है—एक छोटे हण्डे-भर रुपया। फिर क्या था, राय—घराने के सब भागीदार एकदम लालच से जीभ फैलाकर रुपये हड़पने के लिये उठ खड़े हुए। दूसरी ओर उपजाऊ भूमि के लिये लालच करनेवाले किसानों का दल, बाघ से छिपाकर साथ में चलनेवाले सियारों की तरह, जीभ चाटने लगा। सबसे पहले नवीन बागदी की स्त्री मोती बागदिन अपने पोते को गोद में लेकर, चक्रवर्ती के मकान के भीतर बरामदे में खड़ी होकर, आँखें पोंछने लगी।

यह सम्वाद सुनकर रंगलाल घर लौटने पर बिना कारण अपनी स्त्री से झगड़ पड़ा और बड़े क्रोध से लाठी मारकर भोजन पकाने की हाँड़ी तोड़ दी। इसके बाद सन्न होकर मिट्टी की मूर्ति की तरह बैठ गया।

मन की उत्तेजना से अचिन्त्य बाबू को सारी रात नींद नहीं आयी। फलतः अपुष्टिकर खरगोश के माँस से उनकी बदहजमी बढ़ गयी। वे बड़े

सवेरे ही उठ कर ढक ढक एक ग्लास जल और थोड़ा सोडा खाकर टहलने के लिये बाहर निकल पड़े। खूब जोर से थोड़ी दूर टहलने के बाद भरी हुई कालिन्दी के सामने आ जाने पर रुक गये। उस पार का दियारा अन्धकार के भीतर से अनेक प्रकार के रंगों के निकलने के कारण बड़ा ही सुन्दर हो गया। गहरी अन्धकारमयी काली जैसे कमला के रूप में बदल रही है।

अचिन्त्य बाबू देख रहे थे कि जंगली घास का हरा और घना जंगल दियारे को एक ओर से दूसरी ओर तक चला गया है। उन्होंने एक लम्बी सांस छोड़ी। ओह, ढेर का ढेर खस इस घने हरे जंगल में छिपा हुआ है। घाट का ठेकेदार इसी समय घाट पर आ गया।

अचिन्त्य बाबू को देख उसने प्रणाम कर कहा—आज मेरा भाग्य अच्छा है, सवेरे ही ब्राह्मण का दर्शन मिला। इस घाट पर न जाने कितने सुजात-कुजात का मुँह देखना पड़ता है! यह काम बहुत बुरा है। किन्तु दो पैसा मिल जाता है, इसीसे करता हूँ—

बात पूरी न कर वह खूब मुँह फैलाकर हँस पड़ा।

अचिन्त्य बाबू फिर लम्बी सांस छोड़कर बोले—अब तुम्हें अधिक लाभ होगा, समझे न? उस पार दियारे पर कारखाना बनेगा—चीनी का कारखाना। लोगों का आना-जाना देखते-देखते बढ़ जायगा।

ठेकेदार ने अचरज के साथ अचिन्त्य बाबू का मुँह देखकर कहा—कारखाना? चीनी का कारखाना?

हाँ, चीनी का कारखाना। कल कलकत्ता से एक बहुत बड़ा महाजन आया है साथ में हण्डे भर रुपये लेकर। मैंने अपनी आँखों से यह देखा है। कल छोटे राय के यहाँ मेरा निमंत्रण था न!

कुछ देर चुप रहकर ठेकेदार ने कहा—अच्छा, ये रुपये कौन लेगा? दियारे तो चक्रवर्ती—घराने का सभी बताते हैं। तो छोटे राय के घर—

पुत्र बहुत देर तक बैठे थे। दोनों को अच्छी तरह देखा। दोनों में बहुत बातें हुईं।

हुँ। अचिन्त्य बाबू गम्भीर होकर बोले—हुँ, अच्छा, दोनों क्या बातें कर रहे थे? स्वदेशी की बात? अर्थात् साहबों को भगाना होगा? वन्देमातरम्, महात्मा गान्धी की जय, ये ही बातें हो रही थीं न?

जी नहीं। मैं तो दूर पर बैठा था। कान लगाकर थोड़ा सुना। कल बातें हो रही थीं—उमा किसका नाम है, कहिये तो। वही छोटे राय की लड़की न?

हाँ, हाँ। मैं उसको पढ़ाता था। कहते-कहते अचिन्त्य बाबू कुण्ठित हो गये, बोले, उसे कलकत्ता भेजकर परी बना डाला। छोटे राय हैं बाहर बाघ, घर में एकदम सियार। समझते हो न? स्त्री के सामने एकदम केंचुआ। जो औरतों से डरता है, उससे मैं घृणा करता हूँ। समझे न?

जी हाँ। तो कल छोटे राय के लड़के ने चक्रवर्ती-घराने के छोटे लड़के को पकड़ा था और कहता था, तुम्हें उससे ब्याह करना पड़ेगा।

कहते क्या हो?—अचिन्त्य बाबू एकदम बाण की तरह सीधे खड़े हो गये। बात मालूम करने के विचार से बोल उठे—बात ठीक है। इन्द्रराय की इच्छा अब तक समझ नहीं पाता था। अहीन्द्र तो हीरे का टुकड़ा है। इस बार भी यूनिवर्सिटी में फोर्थ हुआ है। किन्तु, क्या तुमने ठीक-ठीक सुना है?

जी हाँ। उम्र भी अधिक हो गयी। मनुष्य के मुँह खोलते ही

जान लेता हूँ कि क्या कहना चाहता है। इसके अतिरिक्त आपके राय की लड़की के विषय में बहुत अफवाह है। चक्रवर्ती—घराने की बहू और राय महाशय की बहन। कुल के विचार से तो लोग राय महाशय को ही पकड़ेंगे।

अरे बापरे, बाप! यह देखो, मैं तो यह बात भूल ही गया था। तुम तो भयानक बुद्धिमान हो। देखो, तुम रोजगार करो, तुम्हारी अवश्य उन्नति होगी। मेरे साथ चलोगे तुम, मैं तुम्हें साथ लूँगा। किसी से कहना मत। यह खस का व्यापार है। खस जानते हो न? जंगली घास की जड़।

घास की जड़?

हाँ, चुप रहो, मँझले राय—घराने का हरीश आ रहा है।

हरीश राय मँझले राय—घराने का भागीदार है। समस्त राय—घराने की चौथाई का हिस्सेदार है मँझला घराना। मँझले घराने के एक आने—अर्थात् राय—घराने की सारी सम्पत्ति में एक पैसे का हिस्सेदार है हरीश राय। इसी एक पैसे की जमींदारी लेकर ये सदा व्यस्त रहते हैं, और उन्हें सिर उठाने का भी अवकाश नहीं मिलता। वे कागज-पर-कागज तैयार कर रहे हैं। जमींदारी की तिल भर जमीन कोई हड़पना चाहे, तो उनके दर्पण के समान कागज में उसका प्रतिबिम्ब पड़ेगा ही।

कान पर जनेऊ चढ़ाये, लोटा हाथ में लिये, दातौन करते-करते, हरीश राय नदी-तट पर पहुँच गये। अचिन्त्य बाबू को देखकर वे बोले—आप आज कैसे इस ओर?

उदास भाव से अचिन्त्य बाबू ने कहा—आ गया हूँ।

ना, मैं इधर तो आपको देखता नहीं।

हाँ—कहकर उन्होंने यहाँ आने का कारण आविष्कार कर डाला

दियारे के ऊपर कारखाना बन रहा है, चीनी का कारखाना—शुगर मिल। सोचा—देख आऊँ, बात क्या है।

कारखाना! चीनी का कारखाना! हरीश राय के अचरज की सीमा न रही। कौन चीनी का कारखाना बनायेगा? किसके पास इतने रुपये हैं?

कल रात कलकत्ता से एक बहुत बड़ा महाजन आया है। उसके साथ एक बोरा रुपया है। मैंने अपनी आँखों से देखा है—ओन आईज। इन्द्रराय के यहाँ कल मेरा निमंत्रण था न?

इन्द्र? तो इन्द्र दियारे का बन्दोबस्त करते हैं क्या?

हाँ, वे ही चक्रवर्ती-घराने का सब कुछ देख-सुन रहे हैं। उन्होंने भौंहें नचाकर मुस्कराते हुए कहा—आप तो कुछ पता ही नहीं रखते।

हरीश राय अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए गर्दन हिलाते-हिलाते बोले—यह देखिये, ऐसा कुछ नहीं है जो हरीश राय के कागज में न हो। नवाब मुर्शिदकुली खाँ के जमाने से नकशा, जमाबन्दी, खतियान, जमा, वसूल बाकी—सब मेरे पास है। क्या कहूँ। पैसा मेरे पास नहीं है, नहीं तो चकबन्दी करा डालता। मैं अन्याय-अधर्म भी करना नहीं चाहता। यदि मैं एक कलम चला दूँ, सब त्राहि-त्राहि करने लगेंगे। देखता हूँ, हो जाय बन्दोबस्त। मैं अभी तक चुप था; सोचता था—चक्रवर्ती हमारे ही नाती हैं, वे ही खाते हैं, ठीक है। किन्तु ऐसा नहीं हो सकता महाशय, उहुँ।

अचिन्त्य बाबू बोले—आप को जो करना हो, कीजियेगा। दियारे का बन्दोबस्त तो आज ही हो रहा है।

हँसकर हरीश ने कहा—देखिये न, बेबाकी का कागज निकालता हूँ। एकदम दियारे की धूल तक नाप कर दिखा दूँगा।

अचिन्त्य को ये बातें अच्छी नहीं लग रही थीं। उनके मन में

उस समय भीषण उत्तेजना भर गयी थी। ओह! भीतर-भीतर इन्द्रराय कन्यादान की व्यवस्था कर बैठे हैं! हरीश राय से बात करना बन्द कर उन्होंने ठेकेदार से कहा—तो तुम कब आओगे? सन्ध्या के समय न?

हरीश पानी का कुल्ला करते-करते अपने आप कहने लगे—इन्द्र को क्या कहूँ! लज्जा घोल कर पी गया है! छिः, छिः, छिः। इतनी बड़ी घटना के बाद भी रामेश्वर चक्रवर्ती की सम्पत्ति को देख-छुन रहा है। छिः।

अचिन्त्य बाबू जाते-जाते लौट आये और मुस्कराकर बोले—यही तो कह रहा था महाशय! क्या खबर रखते हैं आप? भूमि की खबर से ही आप पागल हो रहे हैं, मनुष्य के मन की भी कुछ खबर रहते हैं? इन्द्रराय बड़े पक्के हैं। लज्जा घोलकर पीने से इन्द्रराय की कन्या का उद्धार कैसे होगा, बतला सकते हैं? राय रामेश्वर चक्रवर्ती के लड़के के साथ कन्या का व्याह करेंगे।

क्या कहते हैं आप?

जी हाँ, मैं ठीक कहता हूँ। चक्रवर्ती-घराने को इन्द्रराय तैयार कर रहे हैं। ऐसा रूपवान् तथा गुणवान वर कहाँ पायेंगे?

अरे महाशय! उनमें और है ही क्या?

नहीं, इसी कन्या-दामाद के लिये राय दियारे पर नगर बसा रहे हैं।

हुँ। किन्तु सुनते हैं, रामेश्वर को कोढ़ हो गया है।

जी नहीं। उन्होंने रक्त-परीक्षा कराकर देख लिया है। वह है रामेश्वर का पागलपन। अच्छा, मैं जा रहा हूँ। अचिन्त्य बाबू इतनी बातें कह खुश हो गये।

ठहरिये, ठहरिये। मैं भी चलता हूँ। दाँत धोना आधा ही समाप्त कर हरीश राय खड़े हो गये। अचिन्त्य बाबू के साथ चलते-चलते बोले देखिये न, मैं क्या करता हूँ। मैं सम्पूर्ण कागजात अभी जाकर

निकालूँगा ! सब हिस्सेदारों को बुलाऊँगा। सब मिलकर कहेंगे। इन्द्र से भी कहेंगे, महाजन से कहेंगे। आँख में उँगली डालकर दिखा दूँगा। यदि सुन लें तो अच्छा ; यदि न सुनें, तो कल ही सदर में जाकर नम्बरी कर दूँगा, और साथ ही साथ इन्जेक्शन भी। बनायें, देखें कैसे कारखाना बनाते हैं ! कारखाना बनेगा ! नगर बसेगा !

अचिन्त्य बाबू बोले—कारखाना बनने से सर्वनाश हो जायगा। सब तरह के लोग आ जायँगे—कुली, कमीना, गुण्डा, बदमाश, चोरी डकैती, रोग—कितना बुरा काम होगा ! सब चीजों के दाम में आग लग जायगी, गृहस्थों पर ही आफत आयेंगी। इसको छोड़ दूसरे उपाय से अपनी उन्नति करो न। कितने रोजगार हैं। मान लीजिये, पेड़-पौधों की सप्लाई कीजिये, खस—अचिन्त्य बाबू सहसा चुप हो गये।

हरीश बाबू उनका हाथ पकड़कर बोले—आइये आप, मैं आपको कागज दिखाऊँगा। आप इन्द्रराय के मित्र हैं। आप ही न्याय की बात कहिये। दर्पण की तरह कागज है, आप एक ही नजर में समझ जायँगे। इन्द्र बड़े आदमी हैं और हमारे पास पैसा नहीं है। इसीसे क्या उन्हें अधर्म करना चाहिये ?

कुछ ही देर में हरीश राय के मकान पर राय-घराने के प्रायः सभी हिस्सेदार जमा हो गये। कूदने-फाँदने तथा कठोर बातों से सुन्दर प्रभात तीखा हो गया।

निस्सहाय नाबालिग की अभिभाविका नागिन की तरह विष उगलते हुए शापों की वर्षा करने लगी—नाश हो जायगा, भोग नहीं कर पायेंगे। जो मेरे अनाथ पुत्र को धोखा देगा, उसकी कन्या बिधवा हो जायगी, वंश नाश हो जायगा। लाल बर, लाल बर ! लाल बर ! सुहागरात में मरेगा।

इन्द्रराय इसके लिये तैयार नहीं थे। राय-घराने के लोग दल बाँधकर आये, और अधः पतित कुलीन वंश के स्वभाव के अनुसार जैसा पाखण्ड तथा बुरी मनोवृत्ति का परिचय दिया, इससे वे भी चकित हो गये। विशेषकर राय-घराने के गाँजा पीनेवाले एक हिस्सेदार—शूलपाणि क्रोध से पागल हो बुरी तरह हाथ-पैर नचाकर बोला—ओह; हमारे बाबू का नगर बसेगा, लड़की तथा दामाद के लिये! और हम सब आँखें निकालकर बैठे देखते रहेंगे न?

इन्द्रराय ने कहा—शूलपाणि, शूलपाणि, क्या कह रहे हो?

राय के मुँह के पास ही दोनों हाथ नचाकर वह बोला—अहा, हा, कितना सीधा है! कितना सीधा! हमलोग कुछ जानते ही नहीं क्या? रामेश्वर के लड़के के साथ तुम्हारी कन्या के ब्याह की बात क्या हम नहीं जानते?

इन्द्रराय चकित हो गये। उनको ऐसा जान पड़ा, जैसे पैर के नीचे की पृथ्वी थरथर काँप रही है। भय के साथ उन्होंने आँखें बन्द कर लीं। उनकी आँखों के सामने आ गया—कल सन्ध्या के समय मन की आँखों से देखा हुआ दृश्य—चक्रवर्ती घराने और राय-घराने के जीवन-पथों के मिलने के स्थान पर एक गहरा अन्धकूप—

शूलपाणि बुरी भाषा में अपने आप बक रहा था। अन्य राय लोग आपस में उत्तेजना के साथ आलोचना कर रहे थे। हरीश ने खूब समझाने के ढग से कहा—पाँच आदमी एक साथ पंचायत कर लो। मैं रख देता हूँ सारे कागज एक-एक करके—एकदम रुद्राक्ष की माला के समान गुँथा हुआ। देखो, विचार कर देखो, यदि सब का हो तो, सभी लेंगे। चक्रवर्ती लोगों का होगा, तो चक्रवर्ती लोग अकेले लेंगे। एक अकेला तुम्हारा हो, तो तुम्हीं लो और लड़की दामाद को दान कर दो। अपने रखो, अथवा जो चाहो, करो। उस समय यदि बोलें—तो दोनों कान पकड़ लो।

इन्द्रराय के कानों में कोई बात नहीं घुसी। धीरे-धीरे अपने को सँभाल लिया और एक लम्बी साँस छोड़कर बोले—तारा, तारा, तारा माँ। इसके बाद उन्होंने पुकारा—गोविन्द, अरे गोविन्द !

गोविन्द राय का नौकर है। उसका उत्तर न पाकर राय ने पुकारा—घर में कौन है ?

घर में थे अमल और अहीन्द्र। अहीन्द्र आँखें फाड़कर गुम-शुम बैठा था और अमल हँसकर कह रहा था—कौरव-वंश पाण्डवों और यादवों की मित्रता देख चिल्ला रहा है। माई गाड !

पिता की आवाज सुन वह हँसना छोड़ बाहर निकला। राय ने कहा—गोविन्द कहाँ है ? उसको तम्बाकू भरने को कह दो।

शूलपाणि बोला—हमलोगों ने बहुत तम्बाकू पी है। हम तम्बाकू पीने नहीं आये हैं। पहले मैं अपनी बात का उत्तर चाहता हूँ।

बात का उत्तर ! साथ-ही-साथ क्रोध से राय का माथा गर्म हो गया। बहुत धैर्य के साथ अपने को सँभाल कर कुछ देर के बाद बोले—जवाब मैं इस समय नहीं दे सकता। उस समय दो-एक आदमी आइयेगा, तो जवाब दूँगा।

शूलपाणि फिर उछल पड़ा, किन्तु हरीश ने उसे रोककर कहा—ठहरो शूलपाणि। इन्द्र हैं इस समय राय-घराने में सबसे बड़े। उनके साथ इस प्रकार की बात न करनी चाहिये।

शूलपाणि इतना सुनते ही हरीश पर ही बिगड़ उठा। बोला—जा-जा, खुशामदी कहीं का। खुशामद करनी है, तो तू कर ; मैं नहीं करूँगा। अच्छा, अच्छा कौन जाता है दियारे के ऊपर, देखा जायगा। इतना कहकर वह कचहरी के बरामदे से निकलकर तेजी के साथ चला गया।

हरीश ने कहा—तो मामला-मुकदमा ही लड़ना तय हुआ न इन्द्र ?

इन्द्रराय बोले—आप लोगों के आगे-आगे चलने पर मुझे रामेश्वर की ओर से पीछे-पीछे चलना ही पड़ेगा।

हरीश बोले—तुम धोखा खाओगे इन्द्र, मेरे पास ऐसा कागज है—एकदम ब्रह्मास्त्र!

इन्द्रराय हँस पड़े, कुछ उत्तर नहीं दिया। एक बार और कूद-फाँद कर राय लोग चले गये। शूलपाणि उस समय भी चला नहीं गया था, वह इन्द्रराय के दरबान से सुरती लेकर खा रहा था।

राय आज असमय घर जाकर बोले—हेम, सन्ध्या का प्रबन्ध कर दो तो।

भीतर से हेमांगिनी सब सुन रही थीं। वे भी दिशा भूले हुए के समान विह्वल हो गयी थीं। उमा—उनकी अत्यन्त प्यारी उमा। अहीन्द्र सोने का अहीन्द्र। किन्तु इसकी तो कभी कल्पना भी नहीं की गयी थी। स्नान-पूजा समाप्त कर राय भोजन करने बैठे। हेमांगिनी बोलीं—उनकी बातों पर ध्यान न देना। निन्दा करना उनका स्वभाव ही है। राय ने मीठी हँसी हँसकर कहा—मैं बिचलित नहीं हुआ हेम!

× × × ×

सन्ध्या के समय वे विमल बाबू के साथ बैठे हुए थे। सब झगड़े मुकदमे की बात कहकर उन्होंने कहा—इसमें बाधा पड़ेगी, इसका मुझे विश्वास नहीं है। मैं उन लोगों को जानता हूँ। आप से सब बातें कह देना आवश्यक था, इसलिये कह दिया। आप कागज-पत्र देखिये, देखने पर आपको कानून-सम्मत बात मालूम पड़ जायगी।

विमल बाबू ने बड़े ध्यान के साथ कागज-पत्र देखा। इसके बाद वे बोले—मेरी ओर से इसमें कुछ आपत्ति नहीं है, आज ही लिखा-पढ़ी हो जाय।

रुपये-पैसे की बात समाप्त कर उन्होंने अमल को सुनीति के पास

भेजा। सुनीति की स्वीकृति आवश्यक है। कुछ देर के बाद अमल और अहीन्द्र ने कहा—आप जो कुछ करेंगे, वह मुझे मंजूर है। किन्तु एक बात उन्होंने कही है—

राय बोले—क्या ?

नवीन बागदी की स्त्री उनके पास आयी थी। उसके साथ और बागदी भी आये थे। वे हमारे पुराने नौकर हैं। वे कुछ जमीन चाहते हैं।

राय कुछ विचारकर बोले—अच्छा, उनके लिये पचीस बीघे रख कर ही बन्दोबस्त किया जायगा। किन्तु दियारे को नापने की आवश्यकता है। आज दलील का खसड़ा बन जाय, कल नाप कर दलील लिखी जायगी।

ठीक है न विमल बाबू ?

विमल बाबू बोले—ऐसा ही किया जाय।

तो मैं सन्ध्या कर आऊँ। राय उठे, किन्तु जा न सके। बरामदे से निकल कर देखा—योगेश मजुमदार बाग में से होकर कचहरी की ओर आ रहा है। आज मजुमदार के साथ एक चपरासी है। मजुमदार इस समय चक्रवर्ती-घराने की बिकी हुई सम्पत्ति के मालिक और रायों की जमींदारी में हिस्सेदार है।

इन्द्रराय थोड़ा हँसे और हँसते हुए उनका स्वागत किया—आओ, आओ मजुमदार, क्या बात है ? अकस्मात्—

अपने स्वभाव के अनुसार विनयपूर्वक हँसते हुए मजुमदार बोले—आया हूँ आपके श्री चरणों का दर्शन करने।

राय बोले—श्री तो इस समय चली गयी है मजुमदार, केवल चरण ही बचा है। अतः इस बात को मैं तुम्हारी विनय मान लेता हूँ। अब बतलाओ, असली बात क्या है ? यदि थोड़े में कहना हो, तो अभी कह दो। अगर अधिक समय लगे, तो थोड़ा इन्तजार करना होगा। मेरी सन्ध्या का समय बीत रहा है।

मजुमदार ने कहा—बात थोड़ी ही है। माने आप तो जानते हैं, चक्रवर्ती-घराने का वह ऋण दूसरे के नाम से मैंने ही दिया है। सम्पत्ति नीलाम ली, किन्तु अभी बहुत बाकी है। आज सुना है दियारे का बन्दोबस्त हो रहा है। तो मेरा क्या प्रबन्ध होगा ?

राय विचित्र हँसी हँसते हुए मजुमदार के मुँह की ओर देखकर बोले—इसका उत्तर मुझ से ही लेना चाहते हो मजुमदार ? तुम तो चक्रवर्ती-घराने को पहचानते हो

बात के स्वर में सुई का तीखापन था। मजुमदार उसकी चोट से एकदम तिलमिला उठे, बोले—आप हो उस घर के मालिक हैं राय महाशय ! चक्रवर्ती के सम्बन्धी और भावी समधी—

राय गहरी साँस खींचकर अजगर की तरह फूल उठे। उन्होंने कहा—हाँ, रामेश्वर का सम्बन्धी हूँ और समधी बनने की भी बात सोच रहा हूँ। अच्छा, अब मेरा उत्तर सुनो—नौकर से कर्ज ! जानता हूँ उसने मेरा ही रुपया चोरी करके मुझे ऋण दिया है। किन्तु जब कर्ज के रूप में लिया गया है, तो मेरे बहनोई अथवा मेरे भावी समधी कभी "नहीं दूँगा" नहीं कहेंगे।

मजुमदार क्षणभर के लिये फीका पड़ गया। राय बोले—कल सवेरे अपनी हैण्डनोट लेकर आओ। इसके बाद मोटे स्वर में बोले—बैठो, तम्बाकू पियो। गोविन्द, मजुमदार को तम्बाकू पिलाओ।

वे अन्दर चले गये, जाते-जाते उन्होंने गम्भीर स्वर में पुकारा—तारा, तारा माँ !

तेईस

६ महीनों के बाद ।

जाड़े से जर्जर माघ का सवेरा कुहासे तथा धुँयें से अस्पष्ट हो गया है। दियारा अब दिखाई नहीं देता। रात के पिछले पहर से ही गाढ़ा कुहासा पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त लाखों ईंटें पक रही हैं, उन सब भट्ठों के धुँयें घनी हवा के दबाव से सफेद कुहरे में काला चक्कर बनाकर फैल रहे हैं। दूर तक फैली हुई दूध के समान चादर पर किसी ने जैसे थोड़ी स्याही गिरा दी है। ठंडे कुहासे के बाण मनुष्यों के मुँह, आँखों की पलकों तथा केशों पर आकर लग रहे हैं और उसके साथ ही अत्यन्त छोटे बालू के कणों के समान कोयले के कण भी हैं।

कोयले की गन्ध से भींगी हवा और भी भारी हो गयी है।

इसी बीच विमल बाबू, कलकत्ता के कारखानेवाले महाजन, दियारे के ऊपर एक बँगला तैयार कराकर रहने लगे हैं। कारखाना बनने लग गया है। काम खूब तेजी से हो रहा है। यहाँ के लोग काम की तेजी देख आश्चर्य कर रहे हैं। इतनी तेजी से काम हो सकता है, ऐसा वे सोच ही नहीं सकते थे। यह जैसे विश्वकर्मा का काम है। एक ही रात में एक विशाल नगर तैयार कर देने जैसा काम है।

विमल बाबू बँगले के एक बरामदे में एक आराम कुर्सी पर बैठकर

चाय पी रहे थे और कुहासे की ओर देख रहे थे। कुहासे के बीच कहीं भाप के जोर से रेलर का भोंपा बज उठा। एक रैलर यहाँ बैठा दिया गया है। इसके जोर से नदी में एक पम्प चलता है। उसी पम्प से ईंटें तैयार करने के लिये जल लिया जाता है। पानी का पाइप बँगले तक चला आया है और कहीं-कहीं कल लगाकर जब इच्छा हो, जल लेने का प्रबन्ध हो गया है। बँगले के सामने एक पक्का कुँआँ भी बन गया है। कुँएँ की चारों ओर मौसमी फूल तथा तरकारियों के पौधे हैं। बरामदे के पास ही पानी की कल है। वहाँ एक बहुत बड़ा चबूतरा तथा एक हौज है। उसी चबूतरे पर बैठकर सारी—सन्थालों की वही बड़े शरीर-वाली स्त्री —बर्तन माँज रही है। विमल बाबू के घर वह नौकरानी का काम करती है। कुहासा इतना घना है कि विमल बाबू सारी को स्पष्ट नहीं देख पाते। सफेद वस्त्र पहने हुए सारी ऐसी लगती है, जैसे वहाँ कुहासे का ढेर जमा हो गया हो। इसी कुहासे में मिस्त्रियों का टक-टक शब्द लगातार हो रहा है। और हो रहे हैं, लोहे पर हथौड़ों की प्रचण्ड चोटों के शब्द। ये शब्द चारों ओर खुले हुए आकाश में फैल दिगन्त में प्रति-ध्वनि कर फिर लौट आते हैं।

दिन बढ़ने के साथ ही कुहासा धीरे-धीरे कम हो रहा था। कोयले का धुँआ पृथ्वी से आकाश की ओर जाने लगा। विमल बाबू सारी की ओर देखकर थोड़ा हँसे। सारी के सिर पर मौसमी फूलों की पंक्ति है। इसी बीच उसने न जाने कब फूल तोड़कर केशों में पहन लिया है। विमल बाबू बनावटी क्रोध दिखाकर बोले—फिर तुमने फूल तोड़ लिये ?

सारी भयभीत होकर विमल बाबू का मुँह देखने लगी। सारी के समान ढीठ जङ्गली स्त्री भी विमल बाबू से डरती है और अजगर के मुँह में जानेवाले जीव की तरह अचेत हो जाती है। इस दियारे में जितने बड़े-बड़े काम हो रहे हैं, वे सब विमल बाबू के शरीर के समान हैं और वे

मनुष्य के रूप में आत्मा के समान हैं। उनकी सम्पत्ति, कार्यशक्ति, गम्भीरता और तत्परता—सब मिलाकर विमल बाबू का एक भयंकर रूप उसके मन की आँखों के सामने खड़ा कर देती हैं और वह डर से सन्न हो जाती है।

सारी का डर देख विमल बाबू थोड़ा हँसे। इसके बाद, पास की तिपाई पर रखी हुई फूलदानी से एक गुच्छा फूल निकालकर उन्होंने सारी पर फेंका और कहा—यह ले।

सारी फूल का गुच्छा उठाकर शंका के साथ थोड़ा हँसी, इसके बाद बोली—वह कपड़ा तुम नहीं खरीदोगे ?

खरीदूँगा।

कब खरीदोगे ?

अच्छा आज ही खरीदूँगा। तू भीतर जाकर सफाई कर डाल। सरकार बाबू आ रहे हैं।

कुहासा इस समय प्रायः फट गया है। बँगले से एक चौड़ी सड़क कारखाने की ओर चली गयी है। उसी सड़क से आ रहा था शूलपाणि-राय—रायवंश का वही गँजेड़ी, तेजमिजाज आदमी। उसके साथ दो चपरासी भी थे। वह खूब गरज-तरज रहा था। शूलपाणि विमल बाबू का गुमाश्ता है। उसका पराक्रम देखकर विमल बाबू ने उसे लेबर-सुपरवाइजर—कुलियों का सरदार—बना दिया था। शूलपाणि कुलियों की हाजिरी लेता है, उनसे काम लेता है, उनपर शासन करता है। उसका मासिक वेतन बारह रुपये हैं।

केवल शूलपाणि ही नहीं, रायहाट के अनेक लोगों को वहाँ नौकरी मिली है। इन्द्रराय विमल बाबू की चतुराई पर हँसे थे, मुग्ध होकर हँसे थे। इस चतुर व्यापारी ने मामले-मुकदमे की सारी सम्भावनाओं को नौकरी के पिंजड़े में बन्द कर रखा है। मजुमदार विमल बाबू के

मैनेजर, अचिन्त्य बाबू एकाउण्टेण्ट, हरीश राय गुमाश्ता हैं, और कई रायवंश-वालों को भी यहाँ काम मिला है। इन्द्रराय के नायब मित्तिर का पुत्र भी यहाँ काम करता था। उसके लिये इन्द्रराय ने स्वयं सिफारिश की थी। किन्तु हाल ही में विमल बाबू ने दुःख के साथ उसे नोटिस दे दी है; क्योंकि उसका काम सन्तोषजनक नहीं होता।

शूलपाणि चिल्ल-पों करते-करते आ रहा था—हरामजादे, सुअर के बच्चे—

विमल बाबू की भौंहें तन गयीं। वे बोल उठे—धीरे-धीरे। वे लोग तो यहाँ नहीं हैं।

शूलपाणि थोड़ा दबकर बोला—जी नहीं। वे ही सब संथाल—

हाँ, वे हरामजादे तो हैं, किन्तु क्या हुआ है? क्या बात है? धीरे-धीरे कहो।

शूलपाणि अब अच्छी तरह शान्त होकर प्रार्थना के स्वर में बोला—जी, आज कोई नहीं आया।

कोई नहीं आया?

जी, हाँ!

हुं। विमल बाबू की दोनों भौंहें तथा सिर और तन गये।

शूलपाणि ने उत्साह के साथ कहा—हुक्म दीजिये, सबके गले में गमछा डालकर खींच लाऊँ।

विमल बाबू व्यंग्य की हँसी हँसकर बोले—राय साहब, यह तुम्हारी जमींदारी नहीं है। यह रोजगार है। इसमें गले में गमछा डालकर खींच लाने का काम नहीं है। नहीं आये तो न सही। आज काम बन्द रहेगा। तीसरे पहर सबको यहाँ बुलाना। श्रीवास दूकानदार को एक बार मेरे पास भेज दो, जरूरी काम है। और हाँ, कल रात में सभी लोहा आ गया?

जी नहीं। अभी लॉरी को दो बार और जाना पड़ेगा। लॉरी तो जोर से नहीं जा सकती। स्टेशन की सड़क पर घुटने भर धूल हो गई है और बीच-बीच में गड्ढे—

अपनी ओर से मरम्मत करा लो, जल्द मरम्मत करा डालो। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मुँह देखने से काम नहीं चलेगा। वे तो वर्ष में एक बार मरम्मत करायेंगे और सो भी इधर-उधर केवल कंकड़-मिट्टी बिखेर देंगे। जब लॉरी स्टेशन जाय, तो उसपर ईंट के टुकड़े लाद दो। जहाँ-जहाँ गड्ढे हों, वहाँ उन्हें गिरा दिया जाय। इसके बाद कई लॉरियाँ कंकड़ डाल-कर मरम्मत करा दो। समझे न ?

जी, हाँ।

अच्छा, तुम अब जाओ।

शूलपाणि नमस्कार कर शान्तभाव से चला गया। उसके समान गँजेड़ी तथा तेजमिजाज भी विमल बाबू के सामने एकदम भलामानस बन जाता है। वह गरजता-तरजता आता है, किन्तु कठपुतली की तरह नाचकर वापस होता है।

विमल बाबू ने पुकारा—सारी !

सारी आकर चुपचाप अचरजभरी दृष्टि से देखने लगी। पूरे प्रकाश में दिखाई पड़ा कि सारी का वह लम्बा स्वास्थ्यपूर्ण शरीर बहुत तेल से भरा नहीं है, बल्कि रूखे शृङ्गार का प्रकाश उसके शरीर पर फैल रहा है। अब वह सन्थाल-स्त्रियों के समान मोटी साड़ी नहीं, बल्कि फूलदार किनारेवाली मिल की साड़ी पहने हुए है। जंगली जातियों के शरीर के मैल में एक तीखी गन्ध रहती है ; किन्तु अब सारी के पास आकर खड़ी हो जाने पर भी वह गन्ध नहीं पायी जाती।

विमल बाबू बोले—क्या फिर तुम्हारे पाड़े के लोग गोलमाल कर रहे हैं ?

सारी डर गयी और बोली—मैं नहीं जानती। उन्होंने मुझसे नहीं कहा।

किन्तु काम करने तो नहीं आये ?

सारी के मुँह पर संकोचभरी हँसी की रेखा फूट पड़ी। उसने शान्त भाव से कहा—कल हमारे जमींदार, उसी लाल बाबू के ससुर राय बाबू ने सिपाही भेजा था। उसने कहा—खेत जोतना होगा, मटर-सरसों बोनी पड़ेगी, आलू लगाना होगा और धान काटना पड़ेगा।

विमल बाबू की भौंहें तन गयीं। अपने-आप कहने लगे—ड्रोन्स ऑफ दी कण्ट्री, इडियट्स, दीज जमींदार्स !

सारी भयभीत हो गयी। उसके काले मुँह की दोनों आँखों में शंका की छाया घनी हो गयी ; जैसे रात के प्रकाश में चाँद पर पृथ्वी की छाया पड़ती है।

विमल बाबू एक के बाद एक काम की देखभाल कर लौटे। लौटते समय सीधे बँगले पर न आकर श्रीवास की दूकान के सामने जाकर खड़े हो गये। श्रीवास का पुत्र गणेश अब पहला गणेश नहीं रहा। चौकोर छापवाली रंगीन लुंगी पहने, गर्दन एकदम बनवाकर चौदह आना-दो आना फैशन से केश छँटाये हुए है। शरीर पर पुल-ओवर चढ़ाकर एकदम बदल गया है। दूकान की भी अवस्था पहले जैसी नहीं है। पक्की फर्श, पक्का बरामदा है और दूकान में सभी प्रकार की चीजें भरी हुई हैं—लोहे के तार के बण्डल, कील, बैलगाड़ी के पहियों की हाल के लिये लोहे की चादरें, गाय की रस्सी के बदले लोहे की सींकड़ें, खिड़कियों में लगाने के लिये लोहे की छड़ें—सारांश यह कि लोहे का ही कारबार अधिक है।

पास में ही पेड़ के नीचे पश्चिम का एक मुसलमान एक बैल को रस्सी में बाँधकर उसके पैरों में नाल लगा रहा है। कई गाड़ीवान अपने बैलों के साथ इन्तजार में खड़े हैं। सड़क के किनारे एक-एक ईंट

रखकर कई पश्चिम के नाई हजामत बना रहे हैं। गणेश लोहे का तार एक सन्थाल लड़की के हाथ बेच रहा है। गणेश कह रहा है—कपड़े टाँगने के लिये कितने हाथ तार लोगी? नाप लायी हो?

लड़की समझ नहीं पा रही है, वह कह रही है—नाप किसे कहते हैं?

क्या कहें, कितना झगड़ा है? यहाँ आकर चिल्ल-पों कर रही है।

हुँ। क्या चिल्ल-पों करती हूँ?

क्या कहें। कपड़े रखने के लिये तार बाँधोगी न?

हुँ।

ठीक उसी समय विमल बाबू आ गये। गणेश ने झटपट तार फेंककर उन्हें नमस्कार किया और तुरन्त लोहे की एक कुर्सी सामने रख दी। विमल बाबू बैठे नहीं, कुर्सी पर एक पैर रखकर बोले—श्रीवास कहाँ है?

जी, पिताजी अभी नहीं आये। कल उस पार के घर में—

हुँ। तुम्हीं सुनो। माँझी फिर गोलमाल कर रहे हैं। भीतरी बातों का पता लगाओ। सुना है शायद इन्द्रराय ने बेगार में उन्हें पकड़ लिया है। असली बात मुझ से कह जाना।

विमल बाबू लौट पड़े।

आफिस में बैठकर उन्होंने पुकारा—योगेश बाबू!

योगेश मजुमदार आकर खड़े हो गये। विमल बाबू बोले—आपके द्वारा लिखाये गये श्रीवास के हैण्डनोट के तीन वर्ष शायद पूरे हो रहे हैं न?

योगेश मजुमदार ने फौजदारी के मुकदमे के समय श्रीवास को ऋण दिया था, उन्हीं हैण्डनोटों को विमल बाबू ने खरीद लिया है।

मजुमदार बोले—जी हाँ, उनकी तमादी का समय आ गया। इसके अलावा आपके भी दो हैण्डनोट—

उन्हें रहने दो। अभी इसी के लिये वकील से एक नोटिस दिला दो।

विमल बाबू ने स्वयं भी उसे दो बार ऋण दिया है। मजुमदार ने कहा—उसे बुलाकर—

विमल बाबू ने रोककर कहा नहीं। ठीक ढंग से काम करते जाओ। इसके बाद जो करना होगा, वह वकील के जरिये ही होगा। वकील हमारी शर्तें बतला देगा, मैं दियारे के एक सौ बीघे का उचित मूल्य ही चाहता हूँ।

मजुमदार बोले—जो आज्ञा।

विमल बाबू ने कहा—एक बात और। आप एक बार इन्द्रराय के यहाँ जाइये। उनसे कहिये कि शरीर अस्वस्थ रहने से मैं स्वयं न आ सका। उन्होंने जमींदार के नाते जो सन्थालों को बेगार के लिये पकड़ लिया है, इसमें मुझे आपत्ति है। उन्होंने मुझसे पेशगी रुपये लिये हैं। मेरे पेशगी खाये हुए कुलियों को पकड़ने से मेरे काम में हानि पहुँचती है। समझते हैं न? इसे मैं सहन नहीं करूँगा—अच्छा अब आप उनके पास जाइये।

मजुमदार चले गये। विमल बाबू कागज-कलम लेकर बैठ गये। दूसरे ही क्षण एक चपरासी ने सलाम कर कहा—आया है।

उसकी ओर न देखकर उन्होंने कहा—ले आओ।

जिस आदमी ने आकर प्रवेश किया, वह यहाँ की शराब की नयी दुकान का दुकानदार है। वह सलाम बजा कर खड़ा हो गया। विमल बाबू चपरासी से बोले—तू यहाँ से चला जा। चपरासी चला गया। विमल बाबू ने कहा—देखो मेरे चलते ही तुम्हारी यह दुकान हुई है। वह आदमी तुरन्त ही विनय तथा कृतज्ञता प्रकट करते हुए बोल उठा—जानता हूँ। हुजूर ही मेरे माँ-बाप हैं.....

हाँ। रोककर विमल बाबू ने कहा—हाँ। एक काम तुम्हें करना होगा। सन्थालों के सिरों में एक बात चतुराई से बिठा देनी होगी। समझते हो न? दरवाजा बन्द कर दो। जमींदार के पकड़ने पर वे बेगार के लिये न जायँ।

विमल बाबू ने जो कुछ कहा, उसे वह समझ न सकी। किन्तु यह अच्छा है कि सामने शराब की बोतल नहीं हैं।

विमल बाबू बोले—जो खेती नहीं करते, वे क्यों नहीं आये?

उनको धान काटने में लगाया गया है। सारी की आवाज से भय टपक रहा था।

धान काटने में लगाया गया है? पैसा मिलेगा या नहीं?

नहीं, बेगार लिया है। वे जमींदार—राजा—हैं।

हुं। विमल बाबू गम्भीर हो गये। कुछ देर बाद मोटो चेस्टर-फील्ड कोट पहन कर बोले—छड़ी ले आ।

सारी ने झटपट छड़ी लाकर उनके हाथ में दे दी। विमल बाबू ने प्रसन्नता के साथ हँसकर उसके सिर में उँगली से मार दिया और सड़क पर चल पड़े।

अब कुहासा दूर होकर धूप फैल गयी है। दियारा भलीभाँति दिखाई पड़ रहा है। सब से पहले आकाश की ओर उद्धतता के साथ उठी हुई ईंट को आधी बनी एक चिमनी पर दृष्टि पड़ती है, वहीं राजगीरों का खट-खट शब्द हो रहा है। उस ओर भी एक बँगला तैयार हो गया है, वह आफिस है। उसके पास लोहे के फ्रेम की बिना छत की शेड है।

अब सारी का मुँह थोड़ा चमक उठा। विमल बाबू के कुछ दूर चले जाने पर वह स्वतन्त्र हो गयी और गर्मी की सन्ध्या में भींगे हुए अंकुर की तरह दीख पड़ी। काम करते-करते वह अपनी भाषा में गुन-गुनाकर गाने लगी।

"अरे बाप रे ! इस जंगल में कितना अंधेरा और कितने पेड़ हैं ! यहाँ साँप भी नहीं चल सकता, इसी जंगल के बाद राम चार का सूर्य देवता के सोने के घर तक लम्बा ताल है। वहां न तो आदमी हैं और न पक्षी। हे प्यारे ! तुम वहाँ मुझे छोड़कर न चले जाओ।"

सारी अब विमल बाबू के बँगले पर काम करती है, और यहीं रहती भी है। इन्हीं कई महीनों में अनेक बातें हो गयीं।

विमल बाबू के यहाँ आने के कुछ ही दिनों में सारी ने अनुभव किया, जैसे अजगर के सामने शिकार का सारा शरीर शिथिल हो जाता है, वह भी वैसे ही शिथिल हो गयी है। चिल्लाकर अपने लोगों को सहायता के लिये बुलाने की भी शक्ति उसमें नहीं रह गयी।

धन, गम्भीरता, कार्य-कुशलता, शासन-शक्ति, तत्परता, आदि विचित्र छापों से चित्रित विमल बाबू विशाल अजगर की भाँति भयंकर हैं। अजगर के मुँह वह अचेत जीव की भाँति पड़ गयी। उनके कठोर नेत्रों के सम्मुख किसी को प्रतिवाद का साहस न हुआ, और भी एक विचित्र घटना हुई। सन्थाल पाड़े के सब लोगों ने कमल माँझी तथा सारी के पति को एक घर में कर दिया, और वे ही विमल बाबू के सबसे बड़े आज्ञाकारी बन गये। कुछ ही दिनों में सारी ने अपनी जातिवालों से "सामकचारी" अर्थात् विवाह-विच्छेद की प्रार्थना की। सामाजिक कानून के अनुसार जुर्माने का नियम है ; माँगने के पहले ही उसने पंचों के सामने एक सौ रुपये रख दिये।

कुछ ही दिनों में एक दिन सवेरे देखा गया बूढ़ा कमल माँझी, उसकी स्त्री तथा सारी का पति रात के अंधेरे में कहीं चले गये।

अब वही कठपुतलियों का उस्ताद चूड़ा माँझी सन्थाल पाड़े का सरदार है।

सरदार माँझी की जमीन श्रीवास पाल ने दखल कर ली, उसके पास बन्धक का कागज है।

सारी अब विमल बाबू के बँगले पर काम करती है और उसकी सीमा में बने हुए घर में रहती है। उसका ठाट-बाट देखकर उसकी सखियाँ अचरज करने लगतीं।

किसी-किसी दिन देखा जाता है कि खूब रात में सारी डरी हुई हरिनी के समान भाग रही है और उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं विमल बाबू हाथ में हण्टर लेकर।

गाना गाते-गाते सारी काम कर रही थी, वह काम बन्द कर दीवार में लगे हुए एक बड़े शीशे के सामने खड़ी हो गयी। केश ठीक कर लिये, एक बार हँसी, इसके बाद शरीर हिला-डुलाकर नाचने लगी। "जंगल में अंधेरा और कैसे घने पेड़! ·····मुझे छोड़ कर न जाओ, हे प्यारे!"

× × × +

बँगले के सामने से सड़क सीधी चली गयी है। सुन्दर सड़क ईंटों के टुकड़े तथा लाल कंकड़ी से तैयार हुई है। सरल रेखा के समान सीधी, उसी प्रकार चौड़ी भी है। तीन गाड़ियाँ पास-पास एक साथ चल सकती हैं। कुहरे से भींगने के कारण सड़क की लालिमा और भी गाढ़ी हो गयी है।

बँगले से थोड़ी दूर आगे चलने पर सड़क की दोनों ओर झोपड़ियों की कतारें शुरू हो गयी हैं। बाहर के बहुत से कुली आये हैं, वक्स के फर्मे से ईंटे पाथना, ईंटों के भट्ठे लगाना और मशीन में लोहे-लक्कड़ के काम इस देश के अनजान कुलियों द्वारा नहीं हो सकते। उन्हीं कुलियों के अस्थायी रूप से रहने के लिये झोपड़ियाँ बनी हुई हैं। उस ओर इसी बीच कुलियों के स्थायी घर प्रायः बन चुके हैं, पक्की ईंटों का एक लम्बा बैठक, छोटी-छोटी कोठरियाँ और सामने छोटे-छोटे बरामदे हैं।

कुलियों की झोपड़ियों में लोग नहीं हैं! रैलर का भोंपा बजते

ही सब काम पर चले गये हैं। कुछ अशक्त बूढ़े-बूढ़ियाँ तथा नंगे अथवा अर्द्धनंगे लड़के बाकी हैं।

कुछ बूढ़े बैठे हुए अर्थहीन दृष्टि से देख रहे हैं। कुछ बूढ़ियाँ अपने केश फैलाकर धूप की आशा में बैठी हैं और एक दूसरे के सिरों से जुएँ निकाल, उन्हें नखों पर रखकर मार रही हैं। वे मुंह से "हुँ" कर रही हैं। "हुँ" न करने से शायद जुओं को स्वर्ग नहीं मिलेगा। बीच-बीच में लड़कों को गालियाँ देते हुए धमकाती जाती हैं—

आ रे बदमाश हरामजादे, तेरी मरम्मत कर देती हूँ।

हरामजादी बूढ़ी, हम तेरे दाँत तोड़ देंगे—कहकर लड़के दाँत निकाल, मुंह बिचका देते हैं। एक बूढ़ी, एक रोती हुई लड़की को लोरियाँ सुना-सुनाकर रिझा रही है—

"हे हमारी बेटी रानी, सातपरानी, बेटा लँगड़ा, पूता कानी—बेटी मेरी भागमानी! ए—ए—ए—।

विमल बाबू उसकी लोरी सुनकर हँसे। बूढ़ी ने लड़की से कहा—अरे चुप हो जा, बिटिया, मालिक जाता है, मालिक, अरे, बाप रे!

बड़े लड़के उन्हें देखकर शान्ति से खड़े हो गये। छोटों ने हाथ जोड़कर सलाम करते हुए कहा—सलाम मालिक!

विमल बाबू ने हँसकर केवल गर्दन हिला दी। एक छोटा लड़का अपने सिर पर सड़क की धूल डाल रहा है। वहीं एक बड़ा लड़का धूल-पर सोया है, और अपनी पीठ पटक-पटक धूल उठाते हुए प्रसन्न हो रहा है। चिढ़ते हुए विमल बाबू ने अपनी छड़ी से खींचकर उससे कहा—क्यों रे!

लड़के ने झटपट उठकर सलाम करते हुए कहा—सलाम मालिक!

हँसते हुए विमल बाबू आगे बढ़े। उनके पीछे फिरते ही लड़के ने अपने जीभ निकाल, दाँत दिखा, बुरी तरह मुँह बना दिया। इसके बाद

फिर धूल में सो पीठ पटक-पटककर कहने लगा—जरूर करेंगे, जरूर करेंगे। ईं—ईं—ईं। फिर उसने मुँह बिचकाया।

कुली-बस्ती पार करते ही कारखाना शुरू होता है।

इधर का दियारा अब पहले का दियारा नहीं रहा। अब घास का जंगल नहीं रह गया। दियारे का यह भाग खोदकर बराबर कर दिया गया है। अब लाल मिट्टी चमक रही है, बीच-बीच में यहाँ-वहाँ दूब तथा भोथा घास के टुकड़े हरी छाप के समान बने हुए हैं। इनके बीच में चतुर्भुज बनाकर लाल कंकड़ी की अनेक सड़कें इधर-उधर चली गयी हैं। बड़ी सड़क ने यहाँ पहुंच कर बड़े देवदारु के पेड़ के समान चारों ओर अपनी डालियाँ फैला दी हैं।

इसी प्रकार के एक चौकोर स्थान पर टिन का एक बड़ा शेड बन रहा है। मोटी-मोटी लोहे की कड़ियों तथा धरनों को छेद-बाँधकर ढाँचा प्रायः बन चुका है। शेड की छतपर कुली काम कर रहे हैं, लोहे पर हथौड़े की चोट कर रहे हैं, उनके शब्द चारों ओर फैल रहे हैं, जिनकी प्रतिध्वनियाँ दो-तीन दिशाओं से आ रही हैं।

एक लारी से लोहे की कड़ियाँ तथा धरनें उतारी जा रही हैं। इसी लारी में स्टेशन से लोहा-लक्कड़ लाया जाता है। लोहे का ढेर लग गया है। मशीनरियाँ भी बहुत आ गयी हैं, अनेक प्रकार के यन्त्र अलग-अलग रखे गये हैं। एक ओर बहुत बड़े-बड़े लंकाशायर के दो रैलर कुम्भकर्ण की तरह पड़े हुए हैं। इन्हीं नये लोहे-लक्कड़ों तथा मशीनरियों को खुली धूप तथा वायु से बचाने के लिये यह शेड बन रही है, एकदम बीच के एक चौकोर स्थान पर कारखाने की बुनियाद खोदी गयी है, और उसीके बीचोबीच चिमनी तैयार हो रही है। इसके उस ओर लाल ईंटों से बना हुआ लम्बा कुली बैरक है। बैरक की छत पीटते-पीटते मजदूर स्त्रियां पीटने के शब्द के साथ ताल मिलाकर एक साथ गा रही हैं।

चौबीस

मजुमदार सन्देश लेकर इन्द्रराय के सामने जाने के विचार से विचलित हो उठे। इन्द्रराय की दम्भपूर्ण दृष्टि, हँसी और बातें तीखे वाण के समान आकर उसके मर्मस्थान को छेद देती हैं और उसके अपने वाक्यों के वाण—चाहे जितनी सान देकर वह प्रहार करे, फेंकने की शक्ति की कमी से काँपते-काँपते सिर नीचा कर जैसे प्रणाम करने के लिये लोट जाते हैं। किन्तु इस बार उसके पीछे हैं, शक्तिमान् विमल बाबू। विमल बाबू के वाक्-वाण केवल तीखे ही नहीं, वरन् शक्ति के वेग से उनकी गति अकम्पित और सीधी है। मजुमदार एक भयपूर्ण हिंसा से भर गये।

अनेक विचार करते-करते वे दियारे से नदी के घाट पर पहुंचे। दियारे के ऊपर की सड़क नदी तक पक्की बन गयी है। काली की पेटी में भी गाड़ियों के पहियों से एक रास्ता रायहाट से खेवाघाट तक चला गया है। उस पार से मजदूर—पुरुष तथा स्त्रियाँ—दल बाँधकर दियारे की ओर आ रहे हैं। वे कारखाने की इमारत में काम करते हैं। पहले से थोड़ी मजदूरी बढ़ गयी है। कितने किसान सिर पर टोकरियों में साग-सब्जी, बैगन-मूली आदि लेकर दियारे की ओर आ रहे हैं, इस समय दियारे में रायहाट से अच्छी बिक्री होती है। दियारे के मजदूर-मिस्त्री

मोल-भाव कम करते हैं और परिमाण में अधिक खरीदते हैं। इस पार जो आता, वह मजुमदार का अभिवादन करता, वे इस समय कारखाने के मैनेजर हैं। रायहाट के घाट पर आकर मजुमदार चिढ़ गये, रास्ते में घुटनों तक धूल है। चारों ओर पुराने जमाने के पेड़ों की घनी छाया में जाड़ा जमा हुआ है। रास्ते पर आदमी-जन नहीं हैं। मजुमदार ने दियारे के मैनेजर के सम्मान का घमण्ड उस सूनसान रास्ते पर जोर से कह डाला, अपने मन से ही उसने कहा—जब माँ लक्ष्मी छोड़ देती हैं, तब ऐसी ही दशा होती है।

हुँः, अतिदर्पे हतो लंका, अतिमाने च कौरवाः।

रास्ते के दोनों ओर पुरानी नाव के समान टेढ़े-कच्चे घरों को देखकर उसे घृणा हुई। उसने कहा—हुंः यह सब कैसे घृणित घर हैं। उस समय के लोग कैसे और किस प्रकार के थे! कितने अण्ड-बण्ड घर हाथी की सूँड़, परी, सिंही आदि के समान बनाये हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि रायहाट की सभी वस्तुओं से व्यंग्य तथा घृणाकर उसने इन्द्रराय के सामने जाने के लिये अपने को तैयार कर लिया।

नायब तथा सिरिश्तेदार के सामने एक लकड़ी की कुर्सी पर बैठकर इन्द्रराय जमींदारी के कामों की देखभाल कर रहे थे। मिस्तिर तख्ते के ऊपर एक डेस्क पर अपना खाता खोलकर उनके प्रश्नों का उत्तर दे रहा था। उसकी बगल में उसका भतीजा बहुत से खाते लेकर बैठा हुआ था। इसी आदमी को राय ने चक्रवर्त्ती के घर का कर्मचारी नियुक्त किया है। उनके मन में ऐसी इच्छा है कि धीरे-धीरे वे चक्रवर्तियों के झंझट से अलग हो जायँ।

मजुमदार घर में प्रवेश करते ही नमस्कार कर बोले—मुकर्जी साहब ने आपके पास भेजा है।

विमल बाबू यहाँ मुकर्जी साहब के नाम से प्रसिद्ध हैं। बाबू नाम पसन्द नहीं करते, कहते हैं कि यह गाली है। दियारे के कुली-मजदूर और रायहाट के दरिद्रों के लिये हैं मालिक, हुजूर। कर्मचारियों तथा शिक्षित लोगों के लिये वे मुकर्जी साहब हैं।

इन्द्रराय के पास और तीन कुर्सियाँ खाली पड़ी थीं। मजुमदार ने अपनी बात की भूमिका समाप्त कर उनकी ओर दृष्टि फेरी; इन्द्रराय ने आदर के साथ उनका स्वागत कर मित्तिर के तख्ते की ओर संकेत कर कहा—बैठो, बैठो।

मजुमदार थोड़ा आगा-पीछाकर तख्ते पर बैठ गया, राय ने अपने स्वभाव के अनुसार हँसकर कहा—तुम्हारे मुकर्जी साहब का क्या समाचार है?

जी। सिर खुजलाते हुए योगेश मजुमदार ने विनय के साथ कहा—

जी, मुझे अपराधी न समझियेगा—

इन्द्रराय के होठों पर हँसी की जो रेखा दिखाई पड़ी, वह कुलीनता-सूचक एक अभ्यास है, ऐसी नहीं। मजुमदार की भूमिका सुन उन्हें सचमुच हँसी आ गयी।

समझ लिया, अस्त्र चलाने के पहले मजुमदार ने यह प्रणाम-बाण चला रहा है। राय हँसकर सीधे बैठ गये। दूत सदा से अवध्य हैं। तुम भय न करो, निर्भय होकर मुकर्जी साहब का सन्देश सुनाओ।

राय की बोली से उनकी शक्ति का अनुमान लगाकर मजुमदार और शान्त हो गये, फिर थोड़ा विनय दिखाते हुए बोले—वे स्वयं आते, किन्तु उनका शरीर—

मजुमदार सोचने लगा किस रोग की बात कहे—

शरीर में उनके क्या हो गया? प्रश्न कर राय हँसने लगे। वे

बोले—जिस समय चलनी में सरसों रखकर चल रहे हैं, उस समय शरीर में कुछ हो जाने में आश्चर्य क्या है ? तुम्हारा शरीर कैसा है ?

लज्जा के साथ मजुमदार बोले—जी, मैं तो अच्छा ही हूँ।

राय ने बायें हाथ से मूँछ पर ताव देकर कहा—अच्छी बात, शरीर स्वस्थ्य है ही अब सच्चे दिल से स्पष्ट भाषा में कहो, मुकर्जी साहब का कौन-सा सन्देश कहना है। बाँयें हाथ से मूँछों पर ताव देना राय की अस्वाभाविक गम्भीरता का बाहरी प्रकाश है।

मजुमदार ने यथाशक्ति अपने को सँभालकर कहा—बात है दियारे के सन्थालों के सम्बन्ध में। माने, उन्होंने सन्थालों को पेशगी दे रखी है। श्रीवास के धान के विषय में किसी के यहाँ बीस, किसी के यहाँ तीस, और दो-एक के ऊपर चालीस रुपये कर्ज थे। श्रीवास को तो जानते ही हैं, उसने डेमी में अंगूठे का निशान लेकर बन्धक कर लिया था। योगेश थोड़ा रुक गये।

राय ने मूँछों पर ताव देना बन्द कर दिया, उनके मुँह और नेत्रों से चिन्ता झलकने लगी।

मजुमदार कुछ संकेत न पाकर बोले, जब मुकर्जी साहब को मालूम हुआ, तब उन्होंने श्रीवास को बुलाकर धमकाया और रुपया देकर वे कागज खरीद लिये। सन्थालों से कहा—तुम लोग काम करके चुका देना ! उन्होंने मजदूरी से एक आना रोज काट लेने का प्रबन्ध कर दिया है।

राय अपनी चिन्तित दृष्टि भीतर ले जाकर अदृष्ट लोक की ओर कुछ देखना चाहते थे। कुछ दिखाई तो नहीं पड़ा, किन्तु उन्होंने अनुभव किया, कि जीवन का मार्ग बहुत ऊँचे पर्वत पर होकर जा रहा है, सँकरा मार्ग है, जिसमें घूमकर रास्ता बदलने का भी उपाय नहीं है। रास्ता बदलने जाकर, उन्हीं का हाथ पकड़कर जो चल रहा है, ऐसे रोगी तथा

पंगु रामेश्वर को खड्ड में गिरा देना पड़ेगा। उनको गिराने जाकर उनको भी इस ओर के घोर अन्धकार, अधोगति के यमलोक तथा कृतघ्नता के नर्क में गिरना पड़ेगा।

मजुमदार बोलता गया—अब मान लीजिये कि इन कर्जदार कुलियों को आप रोक लें, तो काम कैसे चलेगा?

चिन्ता करते-करते भी राय उसकी बात सुन रहे थे। उन्होंने प्रश्न की दृष्टि से मित्तिर के भतीजे की ओर देखकर पूछा—क्या बात है राधारमण?

राधारमण बोला—जी, रोकने क्यों जाऊँगा। किन्तु इस समय धान कट रहा है, माँझियों ने हमारी खास जमीन का धान नहीं काटा था उन्हें काटने का हुक्म दिया है। इसके बाद अगहन बीत रहा है, किन्तु अभी तक उन्होंने रबी की फसल नहीं बोयी, केवल कारखाने में काम कर रहे हैं। इसलिये कहा गया है कि पहले यह सब काम कर लो, फिर जो करना हो, करो!

मजुमदार प्रतिवाद के स्वर में तनिक जोर से बोल उठे—जो भागीदार हैं, उनको खास जमीन का धान काटने के लिये बेगार में पकड़ा गया है।

राय ने राधारमण की ओर देखकर पूछा—बेगार में पकड़ा गया है!

उसके उत्तर देने के पूर्व ही मजुमदार बोल उठे—पकड़ा गया है और आपके नाम पर पकड़ा गया है। आपका नाम न लेने पर साहब मुझे यहाँ न भेजते, बेगार हटा देते। सन्थाल पाड़े के सभी लोगों ने कहा—हमारे लाल बाबू के ससुर राय-साहब के हुक्क पर बेगार देनी ही होगी। बात कहते-कहते उसके मुँह पर एक व्यंग्यभरी हँसी छा गयी।

क्षण-भर के लिये राय का मुँह भयंकर हो गया। किन्तु साथ-ही-साथ वह आँखें बन्दकर बैठे रहे और कुछ देर बाद एक गहरी साँस छोड़कर

बोले—तारा, तारा मा। अब उनका स्वर धीमा और शान्त है। दूसरे ही क्षण राय हिल-डुलकर बैठ गये। सचेत होकर बायें हाथ से मूछों पर ताव देते-देते बोले—इसके बाद ?

मजुमदार भय से बोले—जी।

राय ने हँसते हुए कहा—अब मुकर्जी साहब क्या कहते हैं ?

जी, बेगार लेने से हमारा काम कैसे चलेगा ? इसके अतिरिक्त बेगार का यह रिवाज भी तो गैरकानूनी है।

ओह ! कानून ! कानून की बात मुझे याद नहीं थी। हाँ, कानून क्या कहता है ?

मजुमदार बात पूरी तरह न समझकर शंका के साथ बोले—जी ?

अपने मुकर्जी साहब से कहो, वे समझेंगे, तुम समझ नहीं पाओगे। कहना, हमारी जमींदारी की सनद बादशाही जमाने की है—हमें बहुत दिनों से बेगार पकड़ने का अभ्यास पड़ गया है। उसे क्या अब किसीके कहने से छोड़ सकते हैं ? हम बेगार बराबर से लेते आये हैं और लेते रहेंगे भी।

इसके बाद थोड़ा हँसकर बोले—आवश्यकता पड़ने पर तुम्हारे मुकर्जी साहब को भी बेगार देनी पड़ेगी। चक्रवर्ती घराने में काम होने पर उनको भी किसी काम में लगा लेंगे। काम तो अनेक प्रकार के होते हैं।

मजुमदार अवसर पाकर झटपट बोल उठे—काम तो आपके हाथ में है, आपकी इच्छा करने से ही हो जायगा, उमा के साथ अहीन्द्र का विवाह कर डालिये।

राय ने अब हँसकर कहा—लड़के-लड़कियाँ रहने पर विवाह की बात-चीत तो चलती ही है मजुमदार ! वर और कन्या-पक्ष अनेक कल्पनायें भी करते ही हैं। और गाँव-पड़ोसवाले भी अनेक प्रकार की बातें सोचते हैं। किन्तु असल काम तो भगवान के हाथ है और उन्हीं की दया से वह पूरा होता है। यदि ऐसा हुआ, तो तुम सबसे पहले जान रक्खो कि

अहीन्द्र के ससुर जो भी हों, उन्हें आशीर्वाद में तुम्हें एक सिरोया देना ही होगा। चक्रवर्ती घराने के तुम पुराने नौकर—अपने आदमी हो।

"सिरोया" तथा "पुराने नौकर" शब्द से मजुमदार का मर्मस्थान छिद जाना चाहिये था। किन्तु, आज राय का स्वर कुछ दूसरे प्रकार का था, आघात करने के लिये व्यंग्य की डोरी खींचने की रुचि उनमें नहीं थी। भाग्यवादी मन की दृष्टि अपनी इष्टदेवी के चरणों में रखकर वे बातें कर रहे थे। मजुमदार आज आहत नहीं, वरन उस स्वर की कोमलता से विचलित तथा लज्जित हो गये। कुछ देर चुप रहने के बाद, उसने सरल भाव से कहा, क्या दियारा के सन्थालों के झगड़े का निपटारा नहीं हो सकता ?

राय बोले—किसके साथ निपटारा होगा ? विमल बाबू के साथ ? वे हँस पड़े।

मजुमदार बोले—यह आदमी बड़ा भयानक है बाबू ! धर्म-अधर्म कुछ नहीं मानता और इसमें असाधारण कपट-बुद्धि है ?

राय फिर हँसे—कुछ उत्तर नहीं दिया।

मजुमदार बोले—सरदार माँझी की नातिन सारी के मामले में हम लोगों ने समझा था कि सन्थाल झंझट करेंगे, किन्तु ऐसा खेल खेल दिया कि कमल और सारी के पति ने देश छोड़ दिया और सारे सन्थाल उसके पक्ष में हो गये। वे बोले भी नहीं। कितनी भयंकर रुचि है इस आदमी की।

राय बोले—इसमें भय करने की क्या बात है ? वह खेल हमलोगों का पुराना हो गया है, अगले समय के मालिक लोग भयानक खेल खेल गये हैं। यह खेल व्यापारियों के लिये नया है। माँ लक्ष्मी का भाग्य ही ऐसा है, पीछे-पीछे अलक्ष्मी आयगी ही। वाणिज्य लक्ष्मी के घर अलक्ष्मी सौतिन आयी है। जाने दो, यह बात छोड़ दो।

मजुमदार फिर कुछ देर चुप रहकर बोले—झगड़ा-बखेड़ा न होने से अच्छा होता बाबू ?

झगड़ा-बखेड़ा ! राय ने मूछों पर ताव देकर हँसते हुए कहा—झगड़ा-बखेड़ा करने के लिये तो मुखर्जी साहब तैयार हैं, हैं न ?

हाँ, जैसा ढँग दीख पड़ा उससे—मजुमदार ने इशारे से बात समाप्त कर मौन धारण कर लिया ।

राय बोले—जानते हो न, अगले जमाने में युद्ध के पहले एक राजा दूसरे के यहाँ दूत भेजता था । वह दूत सोने की जंजीर तथा नंगी तलवार लेकर आता । जो पसन्द आये, उनमें से एक उसे लेना होता । तो अपने मुखर्जी साहब से कहना, हमने नंगी तलवार ही लिया । जंजीर लेना हमारे कुल-धर्म में वर्जित है, समझे ?

बात कहते-कहते राय का चेहरा एकदम बदल गया । व्यंग्य और हास्य मुँह पर छा गये और मूछों के दोनों किनारे मरोड़ खा गये । आँखें तो सबसे अधिक विचित्र बन गयीं । उस प्रक्षन्नता से पूर्ण तीखी निगाह के सामने सब-कुछ तुच्छ है । माथे पर तीन रेखाओं की पंक्तियाँ रुके हुए क्रोध के बाँध के समान प्रकट हो गयी हैं ।

मजुमदार को अब कुछ कहने का साहस न हुआ । वह उन्हें प्रणाम कर चला गया ।

राय बोले—मित्तिर एक फौजदारी कानून की नयी पुस्तक के लिए कलकत्ता लिखो । हमारे अमल के मामा को ही पत्र दो । वह देख-सुनकर अच्छी पुस्तक भेज दे । हमारी पुस्तक तो बहुत पुरानी हो गयी है ।

कुर्सी से उठ, घर में थोड़ा टहल कर बोले—अगर वे एक पैर विरोध के लिये बढ़ायें, तो काली में बाँध बाँधकर, जो पम्प बैठाया गया है, उसे बन्द कर दो । दियारे के बन्दोबस्त के साथ नदी का क्या वास्ता है ?

दो पहर के बाद घर में प्रवेश कर इन्द्रराय ने पुकारा—हेमाँगिनी ।

स्वामी की ऐसी आवाज हेमांगिनी ने बहुत दिनों से नहीं सुनी थी। वह शीघ्रतापूर्वक ऊपर आयी और उनके मुँह की ओर देखकर बोली—इस अवस्था में, इतने दिनों बाद फिर असमय आरम्भ किया ? छिः !

अर्थात् शराब। हेमांगिनी की तेज दृष्टि ने धोखा नहीं खाया है। राय चिन्ता करते-करते दो-एक प्याला पीते रहे हैं। उनका मुँह लाल, नींद माते मनुष्य जैसा हो गया है।

राय हँसकर बोले—बड़ी चिन्ता में पड़ गया हूँ हेम ! सामने अग्नि-परीक्षा जान पड़ती है।

हेमांगिनी ने कहा—मुँह देखकर तो ऐसा ही जान पड़ता है, जान पड़ता है कोई अच्छी खबर मिली है।

ना, ना हेम, दियारे के कारखाने के मालिक के साथ झगड़ा होने की सम्भावना है। उसने आज सिखाकर आदमी भेजा था। तुम्हें एक बार सुनीति के यहाँ जाना पड़ेगा। यह बात उसे बता देनी चाहिये। कहना—वह डरे नहीं ; पीछे नहीं, इस बार मैं सामने हूँ।

❀ ❀ ❀ ❀

मजुमदार चिन्तातुर होकर सम्वाद देने जा रहा था। जब वह नदी के घाट पर पहुँचा, उस पार बारह का भोंपा बज रहा था। शोर-गुल से दियारा गूँज रहा था। इस पार से दियारा विचित्र जान पड़ता है। कालिन्दी की काली धारा के किनारे हरी पट्टी के बीच रंगीन सड़क, नये घर, मनुष्यों का कोलाहल और कुलियों का गाना अद्भुत् जान पड़ता है ! ऐसा जान पड़ता है कि दियारा एक चंचल किशोरी के समान कालिन्दी के जल के दर्पण में देख अपने शृंगार में लीन है।

इस पार राय हाट सुनसान है ; सारा गाँव पुराने पेड़ों से ढँका है, जिनके सिरों पर धूल पड़ी हुई है। उन पेड़ों के ऊपर पुराने समय के गिरे-पड़े दालानों के सिरे धूलभरी जटाओं के समान निकले हुए हैं। उस

पार के दियारे की तुलना में ऐसा जान पड़ता है, जैसे कोई पके हुए केश और झुर्रीदार चमड़ेवाली बुढ़िया शून्य दृष्टि से दूसरे पार की ओर चुपचाप देख रही है।

मजुमदार को बाहर से ऐसा ही जान पड़ा ; किन्तु उनके मन में दुःख हुआ। जब वे गये थे, तब इन्द्रराय और चक्रवर्तियों पर क्रोध के कारण रायहाट से भी घृणा करता था, किन्तु लौटती बार इन्द्रराय की सहृदयता से उसका मन बदल गया था, उसे अब रायहाट के लिये पीड़ा का अनुभव हुआ। सिर नीचा किये हुए वह नदी की बालू पर चल रहा था। अकस्मात् चील की तरह तीखी आवाज से किसीने पुकारा ! किस प्रकार ? क्या हुआ महाशय ? क्या कहा उस चमकीले पक्षी, ढाई हजारी जमींदार ने ? मजुमदार ने सिर उठाया, सामने दियारे से अचिन्त्य बाबू, हरीश राय एवं शूलपाणि लौट रहे थे। प्रश्न तीखे स्वर में अचिन्त्य बाबू ने पूछा था। विमल बाबू के यहाँ आश्रय लेने के बाद से ही उन्होंने इन्द्रराय का नाम रख दिया है चमकीला पक्षी, ढाई हजारी जमींदार।

शूलपाणि ने आने के पहले गाँजा पी लिया था। उसने रोककर हाथ नचाते हुए कहा—घमण्डी है इन्द्रराय ! मर जायगा ! हमलोग तो जमींदार हैं, हमारा क्या कम हिस्सा है ?

मजुमदार बोले—देखो शूलपाणि, बकबाद न करो। तुम हो मुखर्जी साहब के नौकर और राय महाशय हैं तुम्हारे राय साहब के जमींदार।

अचिन्त्य बाबू ने बहुत दिनों तक नौकरी की थी, मजुमदार का पद उनसे ऊँचा है—यह ज्ञान उन्हें था। उन्होंने झटपट बात घुमाकर पूछा—राय महाशय ने क्या कहा !

कहेंगे क्या ! जो कहना चाहिये, वही कहा। उन्होंने कहा—बेगार लेने का हमें बहुत दिनों से अभ्यास पड़ गया है। 'छोड़ दो' कहने से ही तो वह छोड़ा नहीं जा सकता ? इसके बाद उन्होंने हँसते-

हँसते कहा—"ये तो सन्थाल हैं, चक्रवर्ती घराने में काम पड़ने पर तुम्हारे भाई साहब को भी बेगार में पकड़ूँगा। काम तो अनेक प्रकार के होते हैं।

अचिन्त्य बाबू ने बहुत बड़े ज्ञानी के समान सिर हिलाकर कहा—तब तो झगड़ा लग गया, किन्तु इस बार राय को नीचा देखना पड़ेगा। जमींदारी और साहबी बुद्धि में बहुत अन्तर है। पुत्रो-दामाद के लिये राय अपमानित होंगे।

मजुमदार बोले—नहीं, नहीं वह बात ठीक नहीं।

अर्थात् ?

आज जो बात हुई, उससे पता लगा कि विवाह की कोई बात नहीं है।

उन्होंने मुझसे कहा—"पुत्र-पुत्री रहने से बात चलती ही है योगेश, किन्तु ऐसा होने पर तुम जान न पाते। तुम चक्रवर्ती घराने के पुराने कर्मचारी हो ? किन्तु, भगवान की ऐसी ही इच्छा होगी, तो यही होगा।"

आपका सिर !—अचिन्त्य बाबू बड़े अपमान के साथ तुरन्त बोल उठे—आपका सिर ! मैं स्वयं जानता हूँ, बात चली थी। राय के पुत्र अमल ने अहीन्द्र को पकड़ा था। अब असल बात यह है, रामेश्वर बाबू उसे घर में आने नहीं देंगे। अगर ऐसा न हो, तो मैं अपने दोनों कान काटकर फेंक दूंगा। भगवान की इच्छा होगी तो होगा, यह छिपाने की चेष्टा है। इतना कहकर वे बुद्धिमानी की हँसी हँसने लगे।

हरीश राय की दोनों आंखें फैल गयीं। दोनों भौंहें हिलने लगीं, गर्दन थोड़ी-सी हिलाकर बोल उठे—यह बात ठीक है। अचिन्त्य बाबू ने ठीक पकड़ा है।

शूलपाणिजी ने बार-बार गर्दन हिलाकर कहा—वह कठिन आदमी है, रामेश्वर चक्रवर्ती, दूसरा कोई नहीं है। इसके बाद हँसकर अदृश्य इन्द्र-

राय व्यंग्य करते हुए बोला, लो भैया लो, पुत्री-दामाद के लिये दियारे पर नगर बसाओ।

यह बात मजुमदार को भी जँची। इन्द्रराय की सहृदयता से जो कोमलता थोड़े समय के लिये उनके मनमें आ गयी थी, वह उस समय कुहासे की तरह नष्ट होने लग गयी। हरीश राय ने धीमे स्वर में कहा—हमारी जाति के हैं तो क्या हुआ, छोटे राय-घराने की वह बद-नामी वंशगत है। हमारे पास राय-घराने का कुर्सीनामा है। मैं दिखला दूंगा कि उनके समी पुरुष इसी प्रकार के हैं, समझते हो न?

उस दोपहर की धूप में नदी की बालू पर ही उनकी मजलिस बैठ गयी। सब के मनों के पात्रों में परनिन्दा का रस धूप खाई हुई ताड़ी के समान फेनिल हो उठा।

सन्ध्या के पहले ही यह बात गाँव भर में फैल गयी। इन्द्रराय की कचहरी तक बात पहुंच गयी। इन्द्रराय वहां नहीं थे, वे भीतर नियमित संध्या-तर्पण कर रहे थे, बात पहले-पहल राय के नायब मित्तिर ने सुनी। रास्ते पर खड़ी होकर, बड़े घमण्ड के साथ, रायवंश के उस नाबालिग की अभिभाविका ऊँचे स्वर से घोषणा कर रही थी। मित्तिर का सारा शरीर जल उठा, किन्तु विवश था। घोषणा करनेवाली स्त्री थी। यह बात राय से कहने का भी साहस न हुआ। वह सन्न होकर खड़ा रहा।

राय की सन्ध्या—उपासना आधी हो चुकी है, वे दूसरा प्याला पीकर जप पर बैठे हैं। गद्‌गद् स्वर से इष्ट देवी को पुकार रहे हैं, माँ मेरी रणरंगिनी माँ! धनी मुकर्जी से झगड़े की सम्भावना से उन्हें यही नाम याद पड़ रहा है।

अकस्मात् घर के बरामदे में किसी ने खाँसीभरी आवाज से चिल्लाना शुरू कर दिया—हाय, हाय रे! मर जा! अहा रे! ओह, दाल-भात में

मूसरचन्द पड़ गया। चक्रवर्तियों ने नाक काट ली। हो गया न ? नाबालिग हिस्सेदार को धोखा देने का फल मिल गया न ? ईर्ष्यालु मंथरा स्त्री रास्ते-रास्ते चिल्लाकर भी सन्तुष्ट न हुई, वह राय के घर में आ हेमांगिनी के सामने हाथ नचाकर बकवाद करने लगी।

राय की भौंहें तन गयीं, पर दूसरे क्षण ही उन्होंने अपने को सम्भाला। गम्भीरता के साथ उन्होंने इष्ट देवी को स्मरण करने की चेष्टा की।

नीचे हेमांगिनी के मुँह के पास हाथ नचाकर नाबालिग की अभिभाविका उस समय भी बोल रही थी, इसीलिये कहने आयी हू, सोचा एकबार सुना आऊँ। मेरे नाबालिग को जो धोखा देगा, भगवान उनको धोखा देगा। हाय, हाय रे ! हाय, हाय वह नाचने लगी।

हेमांगिनी इस घटना की आकस्मिकता तथा तीखेपन से विचलित हो उठी। शंका और विस्मय के साथ मीठे स्वर से फिर उसने पूछा—तुम क्या करती हो ? उस विधवा ने अभिमान तथा व्यंग्य के साथ कहा—मैं मर गयी। कोई कुछ नहीं जानता ! कहती हूं कि चक्रवर्ती घराने का सुन्दर वर तुम्हारी कन्या के भाग्य में नहीं है। चक्रवर्तियों ने भगा दिया न ? कौनसा मुंह लेकर तुमलोग फिर गये थे ? क्या चक्रवर्ती फिर इस घर की कन्या से व्याह करेंगे ? हाय-हाय रे, यह अवसर हाथ से निकल गया ! अकस्मात उसकी आवाज में और तीखापन आ गया, चक्रवर्तियों के घर में दियारा घुसा दिया। कन्या-दामाद के लिये नगर बसायेंगे, आह, हाय-हाय रे। हाय-हाय रे ! वह जैसे नाचते-नाचते आयी थी, वैसे ही नाचते-नाचते चली गयी।

हतबुद्धि होकर हेमांगिनी मिट्टी की पुतली की भांति बैठी रहीं। ऊपर से गंभीर-धीर शब्द सुनायी पड़ रहा था—तारा, तारा माँ। सारे मकान में वह शब्द प्रतिध्वनि की झंझा से गूंजने लगा।

कुछ देर बाद सीढ़ी पर खड़ाऊँ की आवाज सुनाई पड़ी। संध्या-

उपासना के बाद विशेष आवश्यक न होने पर, राय नीचे नहीं आते। आज नीचे आये, किन्तु हेमांगिनी अभी तक सचेत नहीं हो पायी थीं। राय ने नीचे आकर पुकारा—हेम ! वे यह नाम आदर के लिये लेते हैं।

हेमांगिनी उत्तर नहीं दे पायी। राय ने कहा—चलना होगा हेम ! उठकर एक अच्छा कपड़ा पहन लो, मेरी शाल भी निकाल दो।

एक लम्बी सांस छोड़कर हेमांगिनी उठकर खड़ी हो गयी। राय बोले—तनिक जल्दी करो, हेम। महेन्द्र योग अधिक देर नहीं है।

हेमांगिनो ने अब पूछा—कहां जाओगे ?

हँसकर राय ने कहा—मेरी मां ने अनुमति दी है हेम। रामेश्वर के पास जाऊँगा, उमा के विवाह के लिये। एक अच्छी साड़ी पहन लो, मेरी शाल भी दे दो।

हेमांगिनी का मुँह अब चमक उठा। सोने की उमा, सोने का अहोन्द्र। मन ही मन यह विचार कितनी बार आया है।

आगे लालटेन लेकर नौकर जा रहा था, और चपरासी पीछे-पीछे चल रहा था। बहुत दिनों के बाद इन्द्रराय ने चक्रवर्तियों के द्वार पर आकर पुकारा, कण्ठ-स्वर कांप उठा—रामेश्वर !

साथ ही साथ प्रतिध्वनि के समान ही एक शब्द सुन पड़ा—कौन ? विचित्र है यह कण्ठ स्वर !

राय ने उत्तर दिया—मैं, इन्द्र।

पचीस

जर्जर शरीर, रक्तहीनों के समान पीला, सफेद केशोंवाला एक वृद्ध विस्मय से आँखें फाड़ कर खड़ा-खड़ा थर-थर काँप रहा था। अधिक उत्तेजना के कारण, हाँफने पर कंकाल छाती की एक-एक हड्डी उठती-गिरती देखती थी। हेमांगिनी ने सुनीति से कहा—पकड़ लो सुनीति, शायद वे गिर पड़ें!

इन्द्रराय विस्मय और पीड़ा से दंग रह गये—यही हैं रामेश्वर! कौतुक तथा हास्य से उज्ज्वल, स्वस्थ, सुन्दर और विलासी रामेश्वर ऐसे हो गये। क्या उस रामेश्वर का कुछ भी शेष नहीं रह गया! तीक्ष्ण दृष्टि से देख कर राय ने देखा—कठोर वास्तविकता का अब एक ही चिह्न शेष रह गया है, आँखों की भूरी-भूरी दोनों पुतलियाँ अब भी वैसी ही हैं। कई क्षणों के बाद राय ने देखा, नहीं, वे भी नहीं हैं, आँखों की पुतलियाँ तो वैसी हैं, किन्तु उन भूरी पुतलियों में वह चमक अब नहीं है। बिना स्वर के गाने अथवा रस-हीन रूप के समान ही उनकी अवस्था हो गयी है।

धीरे-धीरे रामेश्वर की उत्तेजना शांत हो रही थी। खाट पकड़ कर उन्होंने शरीर की कँपकँपी रोक ली। केवल होंठ अब भी थर-थर काँप रहा था। भूरी आँखों में जल छलक रहा है। हेमांगिनी ने सुनीति से कहा—थोड़ी हवा कर दो।

आँखों में जल तथा होंठो में कँप-कँपी के साथ रामेश्वर हँसे। इन्द्र-राय की बात का उत्तर देते समय अकस्मात् उनको रघुवंश के महाराज अज की अन्तिम अवस्था का स्मरण हो आया। उसी श्लोक का एक अंश पाठ कर वे बोले—'प्रपक्ष प्ररोह इव सौध तलम् विभेद।' रोग बरगद के समान शरीर-मन्दिर के फटे स्थान से ऊपर आ रहा है इन्द्र। अब भूमि पर गिरने की प्रतीक्षा है।

राय की आँखों का जल अब रुक न सका, टप-टप कर फर्श पर गिरने लगा, वे आँसू और आवेग भरे स्वर में बोले—ना, ना रामेश्वर ऐसी बात मत कहो। तुम्हें नीरोग होना पड़ेगा। तुम्हें हुआ ही क्या है? रामेश्वर घृणा से मुँह विचका कर बोले—देख नहीं रहे हो? इतना कह उन्होंने दोनों हाथ प्रकाश के सामने फैला दिये।

राय ने ध्यानपूर्वक उँगलियों की ओर देखा। उसे उँगलियों के भीतर की खून की नाड़ियां भी साफ दिखायी दे रही हैं। राय ने शान्ति की सांस छोड़कर गम्भीर स्वर में कहा—ना, तुम्हें कुछ नहीं हुआ है, यह तुम्हारे मन का रोग है। तुम मन को दृढ़ करो। तुम स्वस्थ होगे, फिर अपने पुत्र का विवाह करो, और स्त्री, पुत्र तथा पुत्र-वधू के साथ आनन्द करो।

रामेश्वर अकस्मात् न जाने कैसे हो गये, खाली आँखों से आकाश की ओर देखने लगे, दोनों होंठ थोड़ा कांपने लगे? अपने मन ही मन वे कुछ कह रहे थे।

राय ने रामेश्वर को रोग की अवस्था में नहीं देखा था, पहली बार उनको देख कर वे शंकित हो उठे और उसी अवस्था में पुकारा रामेश्वर! रामेश्वर!

धीरे-धीरे दृष्टि घुमाकर रामेश्वर ने उसकी ओर देखा। राय बोले—क्या कहते हो?

कहता हूँ ? पुकारता हूँ, भगवान को पुकारता हूँ "तमसो मा ज्योतिर्गमय।" इस अन्धेरे में मुझ से रहा नहीं जाता।

अब हेमांगिनी सामने चली आयीं। इन्द्रराय तथा रामेश्वर की बातचीत से अवस्था उत्तरोत्तर वायु-रहित अन्धेरे लोक की ओर बढ़ती जा रही थी। बहुत दिनों के पश्चात् भेंट होने के कारण दोनों ने अपना-अपना आत्म-संयम खो दिया था और स्मृति की वेदना के तेज चक्र में पड़ कर वे दोनों बहे जा रहे थे। रामेश्वर के लिये तो ऐसी अवस्था कुछ अस्वाभाविक नहीं थी, किन्तु सरल उच्छ्वास ही बात को खींचती जा रही थी, राय बात को खींच कर अपने रास्ते पर लाने में असमर्थ हो गये। किन्तु, ऐसी अवस्था उन्हें सहन नहीं हो रही है। इस दुःखमयी अवस्था में तनिक आनन्द का संचार करने के लिये हेमांगिनी सामने आकर बोलीं—अब मैं आप से रूठूँगी चक्रवर्ती महाशय ! आप ने मुझ से एक बात भी नहीं की।

रामेश्वर ने थोड़ा चौंक कर हेमांगिनी की ओर देखा, और दुःखमयी अवस्था में भी वह आनन्द से चंचल और सजीव हो उठा।

हेमांगिनी के प्रति उनके प्रेम तथा श्रद्धा की सीमा नहीं थी। बिलकुल सन्नाटे में जिस प्रकार अकस्मात् मधुर वायु के चलने से मनुष्य आनन्द की चंचलता से सजीव हो जाता है, उसी प्रकार हेमांगिनी के सरस हास्य से सारा घर सजीव हो उठा। वास्तव में रामेश्वर ने अब तक हेमांगिनी को लक्ष्य नहीं किया था। बहुत दिनों के पश्चात् इन्द्रराय को छोड़, और सब कुछ स्थान, काल, पात्र—उनकी आंखों से ओझल हो गया ! हेमांगिनी की बात से उन्होंने उन्हें लक्ष्य किया, साथ ही साथ मुँह पर प्रसन्नता छा गयी। स्नेह तथा आदर के साथ मीठी हँसी हँसकर बोले—

"स्वप्नो नु माया नु मतिः प्रभो नु कस्यम् नु तावत् फलमेव पुण्यैः।

यह मेरा स्वप्न, माया, मन का भ्रम, अथवा किसी पुण्य फल का

क्षणिक सौभाग्य है, मैं ठीक समझ नहीं पाता हूँ। फिर, आप आयी हैं!

हेमांगिनी ने सन्तोष की सांस छोड़ सच्चे आनन्द से हँस कर कहा—मैं तो स्वप्न भी नहीं, माया भी नहीं, पुण्यफल का सौभाग्य जो आपने कहा है, वह भी नहीं हूँ। मैं आपकी सम्बन्धिनी हूँ। आप हैं पण्डित, कवि। आपने कविता से असल बात दबा दी। बात तो मैंने कही, आपने तो कुछ कहा ही नहीं।

रामेश्वर ने हँस कर कहा—यह तो मैं समझ रहा हूँ कि जीवन के समुद्र के समान, अपराधों के बीच कहीं पर छोटे प्रवाल द्वीप के समान, किसी पुण्य का फल अक्षय रह गया है, जिससे देवी को स्वयं आकर दर्शन देना पड़ा और भक्त के साथ पहले ही बात करनी पड़ी। उसके लिये आप ख्याल न कीजियेगा, मेरे प्रति भी ध्यान न दीजियेगा, कारण आपने देवधर्म पालन किया है, मैंने भी भक्त का अभिमान कायम रखा है।

रामेश्वर की बातों से राय शान्त हो गये, किन्तु पीड़ा का अनुभव किये बिना न रह सके। स्वाभाविक तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता से पूर्ण उत्तर सुन वे सन्तुष्ट हुए। साथ ही उन्हें याद पड़ा कि कल्पना ही रोगों की जड़ है, रामेश्वर इससे अपने को पृथ्वी से अलग करने का प्रयत्न कर रहे हैं—यह केवल राधारानी का प्रभाव है। राधारानी को खो देने से ही रामेश्वर की ऐसी अवस्था हो गयी है। उन्होंने एक गहरी साँस ली। रामेश्वर के पास बैठ कर अपने दुःखभरे मुँह पर थोड़ी-सी हँसी का भाव लाकर सुनीति पंखा झलने लगी। सुनीति की ओर देख, उनकी पीड़ा की बात सोच कर राय की पीड़ा की भावना जम कर पत्थर हो गयी। गहरी साँस रोक कर भी किसी क्षण वे गम्भीर स्वर से पुकार उठे, तारा, तारा मां।

वह घर उस स्वर की गम्भीरता से अ[illegible]भीर हो गया। रामेश्वर

ने एक गहरी साँस छोड़ी, हेमांगिनी शान्त हो गयीं और सुनीति सबको करुणापूर्ण दृष्टि से देखती रहीं।

दीवार में ब्राकेट पर पुराने समय के मन्दिर के आकारवाली दीवाल-घड़ी का लटकन केवल टनटना रहा था—टक्-टक्, टक्-टक्।

चक्रवर्ती ने एक गहरी साँस छोड़ी, और मलिन हँसी हँसकर कहा—जाना चाहते हो?

ना, हम तुम्हारे पास एक भिक्षा माँगने आये हैं।

भिक्षा! रामेश्वर ने आँखें फाड़कर कहा—मेरे पास?

सुनीति भी चौंक पड़ीं। अपने सिर का घूँघट बढ़ाकर राय और हेमांगिनी की ओर अचरज के साथ देखने लगीं। आँखों से आँखें मिलते ही हेमांगिनी भी हँसने लगीं।

इन्द्रराय बोले—हाँ, तुम्हारे पास ही भिक्षा माँगने आये हैं।

हेमांगिनी ने कहा—वह भिक्षा कह सकते हैं, किन्तु मैं डकैती कहूँगी। न देने पर मानूँगी नहीं, बलपूर्वक ले लूँगी।

रामेश्वर ने शान्त-गम्भीर मुख से धीरता के साथ कहा—राय-पत्नी, जिसके भाग्य-देवता विमुख हो जाते हैं, उनकी लक्ष्मी भाण्डार का द्वार खुलते ही चली जाती हैं। मेरे भाण्डार का द्वार खुला हुआ है। यदि आप उस भाण्डार में कुछ लेने के बहाने प्रवेश करेंगी, तो समझूँगा कि सूने भाण्डार की धूल से आपका शरीर भर जायगा।

हेमांगिनी बोलीं—ऐसी बात मत कहिये। जिस घर में सुनीति के समान गृहिणी हैं, वहाँ क्या धूल का पाप रहता है या रह सकता है? वह घर कभी सूना भी नहीं होता। भाग्य विमुख हो जाता है, लक्ष्मी भी छिप जाती हैं, किन्तु मनुष्य का पुण्य-फल, अँधेरे घर का माणिक कहीं नहीं जाता। हमलोग आपके उसी माणिक के लोभ से आये हैं।

हमारे घर में एक सोने का टुकड़ा है, उसी सोने के टुकड़े के सिरपर

आपका माणिक जड़कर गहना बनाना चाहते हैं। सुनीति और मैं बाँट-बाँटकर उस गहने को पहनूँगी।

इन्द्रराय ने सन्तोष की साँस छोड़ी। इस प्रकार बनाकर वे बात न कह पाते। उनके मुँह पर आनन्द की हँसी छा गयी। उधर सुनीति विस्मय के साथ हेमांगिनी की ओर देख रही थी। उनका हाथ रुक गया था, सिर का घूघँट प्रायः खिसक गया था, छाती उत्तेजना के कारण काँप रही थी। सोना तथा माणिक का अर्थ वे समझ रही थीं, किन्तु क्या यह सत्य है?

गम्भीर चिन्ता की रेखाओं से रामेश्वर का माथा भर गया। अनन्त आकाश से पृथ्वी तक यहीं पर उनके ऐश्वर्य हैं, उसे ही वे ढूँढ़ रहे थे। वे कुछ समझ नहीं पाते थे, शंकित भाव से बोले—राय-पत्नी आप क्या कह रही हैं, मैं समझ नहीं पाता हूँ। इसके पश्चात् एक गहरी साँस छोड़कर बोले—जब लक्ष्मी चली जाती हैं, तब केवल बाहरी ऐश्वर्य ही नहीं ले जातीं, मन को भी कंगाल कर देती हैं। मेरी समझने की शक्ति भी चली गयी है। मुझे समझाकर वह बात कहिये।

अब हेमांगिनी के कुछ कहने के पहले ही इन्द्रराय ने कहा—मैं कन्या के ऋण-भार से ग्रस्त होकर तुम्हारे यहाँ भिक्षा मांगने आया हूँ। तुम्हारे अहीन्द्र के साथ अपनी कन्या का विवाह-सम्बन्ध करने आया हूँ।

क्षण-भर के लिये रामेश्वर पत्थर की मूर्ति के समान अचल हो गये और आँखें फाड़कर इन्द्रराय की ओर देखते रहे। हेमाँगिनी बोलीं—हमारी उमा को तो आपने देखा है? वही जिसने आपको कविता सुनाई थी, बँगला कविता, रवीन्द्र नाथ ठाकुर की।

फिर भी रामेश्र ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वे उसी प्रकार सुन्न भाव से आँखें फाड़कर राय-दम्पति की ओर देखते रहे। अब इन्द्रराय और हेमांगिनी—दोनों को शंका होने लगी। रामेश्वर के पीछे सुनीति बैठी

थीं, आनन्द की उत्तेजना में उनकी दोनों आँखों से आँसू गिरकर गोद का कपड़ा भिगो रहे थे। अकस्मात् आसुओं की धारा जल की अधिकता से उच्छ्वासमयी हो गयी, दोनों होंठ थर-थर काँपने लगे। किन्तु उधर किसी की दृष्टि नहीं थी।

हेमांगिनी तथा इन्द्रराय शंका के साथ रामेश्वर की ही ओर देख रहे थे।

रामेश्वर मुँह विचकाकर बोले—आह, छिः, छिः, छिः, ! घृणित रोग, वीभत्स रोग फैल गया, सारी पृथ्वी पर फैल गया, ऐं।

इन्द्रराय की आशंका अब और बढ़ गयी। वे और न चुप रह सके, बोले—रामेश्वर ! रामेश्वर !

कौन ? कौन ? स्वाभाविक दृष्टि से राय की ओर देखते हुए, अब रामेश्वर ने कहा, ओह इन्द्र। राय-पत्नी—कहते-कहते भयंकर पीड़ा से मँह-नेत्र करुणापूर्ण हो उठे। वे बोले—आह, छिः, छिः राय-पत्नी ; मुझे कोढ़ हुआ है, कोढ़। मेरी सन्तान के शरीर में मेरा ही रक्त है, और उमा है शापभ्रष्टा स्वर्ग की कन्या। आह, छिः, छिः, इन्द्र, इन्द्र, यह तुम क्या कह रहे हो !

राय ने बड़े प्रेम के साथ गम्भीर स्वर में कहा—छिः-छिः, नहीं, रामेश्वर, तुम्हारा रोग तुम्हारे मन का सन्देह है। इस विवाह के लिये मेरी इष्टदेवी ने आदेश दिया है। माँ ने मुझे आज्ञा दी है।

रामेश्वर फिर विचलित हो गये, इतनी बड़ी-बड़ी आकस्मिक घटनाओं के संयोग से उनका रोगी मस्तिष्क क्षण-क्षण में अस्थिर होता जा रहा था। उन्होंने विह्वल होकर पूछा—इष्टदेवी ? किन्तु-किन्तु—

अब क्या किन्तु कह रहे हो ?

कौन ? किस की बात कह रहे हो ?

हेमांगिनी ने स्वामी को पीछे से खींचकर बात कहने से रोक दिया।

इसके बाद रामेश्वर के और पास जाकर बोलीं—कहा है, उन्होंने भी कहा है, हँसकर कहा है।

रामेश्वर की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। इन आँसुओं के बीच मलिन हँसी हँसते हुए उन्होंने कहा—उसने भी अनुमति दी है! आपसे कहा है?

हाँ। यह विवाह न होने से उनको गति नहीं मिल रही है, उनको शान्ति नहीं मिल रही है। अब हेमांगिनी भी रो पड़ीं। इन्द्रराय ने आँखों में आँसू भरकर ऊपर की ओर मुँह कर पुकारा—तारा, तारा माँ।

दुर्बल रामेश्वर अपने को अधिक रोक न सके। आँसुओं की धारा से उनकी छाती भींग गयी। हेमांगिनी ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा—अधीर मत होइये, चक्रवर्ती महाशय। और फिर सुनीति का रखा हुआ पंखा लेकर हवा करने लगीं। धीरे-धीरे रामेश्वर अपने को सम्भाल कर हेमांगिनी से बोले—क्या आप उससे एक बात कहेंगी? एक कविता सुना देंगी—

"गिरौ कलापी गगने च मेघो लक्षान्तरेहर्क सलिले च पद्मम्।
द्विलक्ष दूरे कुमुदस्यनाथा, यो यस्य मित्र न हि तस्य दूरम्॥"

बड़ी चेष्टा के साथ अपने को सम्भालकर हेमांगिनी ने कहा—सुना दूँगी कहूँगी!

इसके पश्चात् कुछ देर के लिये घर में सन्नाटा छा गया। उस सन्नाटे को भंगकर हेमाँगिनी ने फिर कहा—तो हमारी बात का आप क्या उत्तर देते हैं?

रामेश्वर ने कहा—ओह, हाँ, हाँ। उमा, उमा, वह पर्वतराज की कन्या उमा के समान ही पुण्यवती है। इन्द्र ने अपनी इष्टदेवी का आदेश पाया है और आपने उसकी अनुमति पायी है। यह मेरा परम सौभाग्य है राय-पत्नी! चक्रवर्ती-घराने में लक्ष्मी के लौटने का समय आ गया है।

सुनीति! कहाँ हो, शंख बजाओ—

रामेश्वर के पीछे अपने को छिपाकर सुनीति बराबर रो रही थीं, स्वामी की अन्तिम बातों को सुन कर वह रुक न सकी, अत्यन्त कोमल तथा रोने के स्वर में हृदय की बात मुँह से निकल पड़ी—महीन, मेरा महीन ?

पलभर में घर में सन्नाटा छा गया। इसके साथ ही जान पड़ा, घर का प्रकाश भी कुछ फीका हो गया है। हेमाँगिनी और इन्द्रराय अत्यन्त वेदना तथा ग्लानि से जैसे भूमि में गड़े जा रहे थे और रामेश्वर निश्चल दृष्टि से देखते हुए चुप बैठे थे। सुनीति का कण्ठ भी शान्त हो गया था। मुँह पर लम्बा घूंघट खींचकर वे निश्चल हो बैठी थीं। जैसे क्षण भर के लिये अपने को न सम्भालने से उन्होंने बहुत बड़ा अपराध कर डाला है। इस सन्नाटे में सुनीति के विलाप की वह करुणध्वनि प्रतिध्वनि का रूप धारण कर सारे घर में फैल गयी थी। रात के सन्नाटे में जैसे पृथ्वी पर कीट-पतंगों के बोलने की उदासी से भरी हुई लगातार आवाज, पृथ्वी से लेकर असीम आकाश तक, फैल जाती है।

कुछ देर के बाद रामेश्वर बोले—महीन! हाँ, हाँ, महीन। अच्छा काले पानी में एक प्रकार के पत्तों से रस्सियाँ बनानी पड़ती हैं, जिससे हाथों में कोढ़ हो जाता है न ?

राय बोले—आह रामेश्वर, तुम अपना मन थोड़ा दृढ़ करो, भाई। ये झूठी बातें हैं।

हेमांगिनी ने एक गहरी साँस ली। फिर बड़े कष्ट के साथ अपने फीके मुँह पर हँसी लाने की चेष्टा करते हुए बोली—अच्छा, यह सम्बन्ध हो जाय।

रामेश्वर बोले—ना, ना, ना। इस विवाह की बातचीत से मुझे शान्ति नहीं मिल रही है, राय-पत्नी! आप यह क्या कह रही हैं, राय-पत्नी!

राय बोले—ना, ना। होगी, दो दिनों के बाद ही होगी। तुम विचलित मत होओ।

सुनीति घर के भीतर निर्वासिता के समान अकेली रहती थीं, किन्तु सारी बातें उनके कानों तक पहुँच जाती थीं। इस अपमान-जनक घटना की एक क्षीण प्रतिध्वनि भी उनके कानों तक पहुँच चुकी थी। इस समय हेमांगिनी ने जो कहा था 'इस विवाह के न होने से राधारानी को शांति नहीं मिल रही है, उनकी गति नहीं हो रही है।' इसका उन्होंने सरलता के साथ एक गहरा अर्थ निकाल लिया। राधारानी के सम्बन्ध की लज्जा बहुत समय बीत जाने से कम हो गयी थी, और इन्द्रराय को सिर ऊँचा करने का अधिकार मिल गया था, किन्तु राय-घराने के जीवन की गम्भीरता में उन्होंने और अहीन्द्र ने अकस्मात् प्रवेश कर उस नष्टप्राय लज्जा को फिर दुगुना कर दिया है। पुरानी लज्जा फिर नयी हो गयी है। उसी आत्म-ग्लानि तथा लज्जा से सुनीति अपराधिनी की तरह सन्न हो गयी हैं। उन्होंने धीर तथा कोमल स्वर से स्वामी तथा इन्द्रराय के सामने ही पुकारा—दीदी!

हेमांगिनी ने चौंककर सुनीति के मुँह की ओर देखा, उनके मुँह पर शांति तथा हँसी की एक क्षीण रेखा दिखाई पड़ी। सुनीति बोलीं—नहीं दीदी, हो, विवाह हो जाय। मुझसे अब अकेली रहा नहीं जाता। जब अहीन्द्र लौट आयेगा, तो उसका विवाह कर आनन्द करूँगी। सुख में अकस्मात् उसका ध्यान आ गया था, हाँ, अब विवाह हो जाय।

कुछ देर शान्त रह कर राय बोले—तुम्हारा मंगल होगा बहन, तुमने सत्य लज्जा से न सही, लोक-लज्जा से तो मुझे बचा लिया।

सुनीति उठकर बोली—देव-पूजा का रुपया निकाल आऊँ, दीदी, और मानदा से कह दूँ, शंख बजाये, बजाना पड़ेगा। आप थोड़ा बैठिये दीदी, मुँह मीठा कर के जाना होगा।

राय बोले—लाओ बहन, तुम्हारे भोजन बनाने की प्रशंसा तुम्हारी समधिन के मुँह में समाती ही नहीं; आज मैं भी परखूँगा।

छब्बीस

आँधी में जिस प्रकार आग बड़ी तेजी से चारों ओर फैल जाती है, उसी प्रकार इसके बाद इन्द्रराय बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़े। राधारानी के लापता हो जाने के बाद जो अपमान बारूद के समान विनाशकारी क्षोभ लेकर हृदय में जमा हो गया था, उस अपमान-बारूद की ढेर को जलाकर इन्द्रराय के वंश को आग में शुद्ध कर लेने योग्य पवित्र आग की चिनगारी चक्रवर्ती वंश ही दे सकता था। उसी अत्यन्त आवश्यक चिनगारी का स्पर्श पाकर इन्द्रराय का इस प्रकार आनन्द से दशों दिशाओं को जगमगा देना स्वाभाविक ही है। संसार में स्वभाव तथा धर्म के विरुद्ध कुछ बातें हो जाती हैं। इन्द्रराय स्वभाव-धर्म के आवेग से ही दौड़ रहे थे। अगहन के केवल छः दिन बाकी थे, इन्हीं में उन्होंने वर-कन्या के आशीर्वाद की विधि पूरी कर दी। सुनीति के नाम से अहीन्द्र को तार भेजा गया; और इन्द्रराय ने स्वयं अमल को तार भेजा—"तुरन्त उमा को लेकर चले आओ।"

उसी दिन बहुत रात बीते अहीन्द्र तथा उमा को साथ लेकर अमल आ पहुँचा। दोनों घरों में आगमन की प्रतीक्षा हो रही थी। अहीन्द्र के पुकारते ही मानदा ने दौड़ कर द्वार खोल दिया, और हँस कर कहा—भैया जी!

अहीन्द्र ने उत्कण्ठा के साथ पूछा--पिताजी कैसे हैं मानदा ?

अच्छो तरह हैं भैया जी, सभी अच्छी तरह हैं, मानदा के मुँह पर हँसी छा गयी थी।

तब, इस प्रकार तार क्यों भेजा था ?

आपका विवाह होगा भैया जी, उस घर की उमा के साथ।

अहीन्द्र के समस्त शरीर में एक विचित्र सिहरन हो उठी, छाती के भीतर एक अनुभूति होने लगी। क्षण भर में ही अनुभव होने लगा, वह उमा से प्रेम करता है, हाँ, वास्तव में प्रेम करता है।

ठीक इसी समय सुनीति आ गयी और बोली—आओ, घर में आओ। तुम्हारे लिये हम लोग जग रहे हैं।

माँ के मुँह की ओर देखते ही अहीन्द्र को बड़े भाई का स्मरण हो आया, सुनीति के सुन्दर मुँह पर जीवन के दुर्भाग्यों ने एक करुण वेदना की छाप डाल दी है, उनके मुँह पर आनन्द की उज्ज्वलता छायी रहने पर भी अतीत दुःखों की स्मृति क्षण भर में जग उठती है। वेदना की अधिकता से अहीन्द्र की छाती भर गयी। वह कातर स्वर में बोल उठा—छिः, छिः, छिः, माँ, यह क्या कर रही हो ? ना, ना, ना। यह नहीं होगा, हो नहीं सकता।

सुनीति आशंका से चौंक पड़ीं ! उन्होंने शंका से पूछा—क्यों नहीं होगा अहि ? हम लोग बात दे चुके हैं बेटा।

अहीन्द्र की आँखों से आँसू टपकने लगे। उसने कहा—भैया की बात क्या भूल गयीं माँ ?

सुनीति के मुँह पर एक करुणापूर्ण हँसी फैल गयी। गहरे शीत की चाँदनी के समान वह हँसी थी। अहीन्द्र का सिर अत्यन्त स्नेह के साथ अपनी छाती से लगा कर उन्होंने कहा—फिर भी तुझे विवाह करना

ोगा, दूसरा उपाय नहीं है। यह है तुम्हारे माँ-बाप की आज्ञा, कोई ाप तुझे छू नहीं सकेगा बेटा !

अहीन्द्र मुँह से तो नहीं बोला, किन्तु प्रश्नभरी दृष्टि से माँ की ओर खता रहा। सुनीति बोलीं—घर में आओ।

घर के भीतर अहीन्द्र के कमरे में बैठ कर सुनीति ने सारी बातें समझा कर कहीं—तेरी बड़ी माँ, मेरी बड़ी बहिन, मुझे निश्चय है अहीन्द्र, जीवित नहीं हैं। किसी गहरे अभिमान के कारण छिपकर उन्होंने आत्महत्या तक कर डाली है, और उसी के आघात से तेरे बाप इस प्रकार पागल हो ग किन्तु कलुष की कालिमा मुँह में पोत कर मनुष्य ने पृथ्वी को सं-सार बना दिया है। वहाँ मनुष्य किसी की रियायत नहीं करता, उसने उसकी स्मृति पर स्याही फेर दी है। यह कालिमा तुम को और उमा को धोनी पड़ेगी।

अहीन्द्र शान्ति के साथ भयग्रस्त की तरह माँ की बात सुन रहा था। सुनीति ने लम्बी साँस छोड़कर फिर कहा—उस दिन उमा की माँ ने तेरी बड़ी माँ का नाम लेकर कहा—यह विवाह न होने से उन्हें शांति न मिलेगी, उनकी गति नहीं हो रही है; इससे अधिक सच्ची बात और नहीं हो सकती।

पहले वर का आशीर्वाद समाप्त हुआ। इन्द्रराय धूम-धाम से अहीन्द्र का आशीर्वाद कर गये। उन्होंने राय-वंश के प्रत्येक व्यक्ति को वर को आशीर्वाद देने के लिये चक्रवर्ती-घराने में जाने का निमंत्रण दिया। चक्रवर्ती के घर भोजन का प्रबन्ध हुआ था। इन्द्रराय के नायब का भतीजा चक्रवर्ती-घराने का नायब है, उसने इन्द्रराय की आज्ञा से सारा प्रबन्ध किया था। वही नायब एक दिन योगेश मजुमदार को सुनीति के नाम से आदर निमंत्रण दे आया—मालिक की अवस्था तो जानते ही हैं, मालकिन ने कहा है, इस घराने की मर्यादा केवल आप जानते हैं, आपके न आने से सब काम कैसे होंगे ?

मजुमदार कुछ देर चुप रह कर बोला—मैं आऊँगा, कहना, मेरी शक्ति में जो कुछ है, उसे उठा नहीं रखूँगा।

और उस घराने के राय महाशय भी भेंट करने के लिये बार-बार बुलाते हैं।

कौन, छोटे राय महाशय ?

जी हाँ ! वे अपने पुत्र को भेजते, वह—

बीच में ही मजुमदार बोल उठा—ना, ना, ना, मैं स्वय जाऊँगा।

मजुमदार के आने पर स्वागत कर राय बोले—तुम्हारा मन उस दिन बड़ा पवित्र था योगेश, उस बात को माँ तारा ने सत्य कर दिया। मुझे याद है, मैंने कहा था, बात सत्य होने पर तुम सब से पहले जानोगे। इस समय तुम्हें कुछ भार लेना होगा भाई, चक्रवर्ती का घर तुम्हारा पुराना घर है। वहाँ के काम-काज का भार तुम्हें ही लेना होगा। कन्या को आशीर्वाद देने के लिये रामेश्वर तो आ नहीं सकेंगे, आशीर्वाद देंगे उस घर के कुलगुरु, और तुम उस घर का प्रतिनिधि बन कर साथ आना।

मजुमदार मुँह से तो कुछ नहीं बोले—किन्तु राय की बात पूरी करने की भरसक चेष्टा की, और कपट-रहित होकर चेष्टा की।

कारखाने के मालिक विनय बाबू को सादर निमंत्रण दिया गया था। वे भी वर के आशीर्वाद के उत्सव में उपस्थित हुए थे। इन्द्रराय ने अकस्मात् एक काम कर दिया, विमल बाबू को देखते ही तीखी नजर डाल कर क्या सोच लिया, इसके बाद चंचलता के साथ गुलाबजल से भरा हुआ गुलाब पाश उनके हाथ में पकड़ा दिया। फिर इत्रदान वाले नौकर को साथ में देकर बोले—आप चक्रवर्ती-घराने के आदमी हैं, आज हमलोग आप लोगों के घर मेहमान हैं। आज आप लोग हमलोगों की खातिर कीजिये, मैं आपलोगों का सम्मान करूँगा अपने घर पर।

विमल बाबू ने कुछ नहीं कहा, कहने का उपाय ही नहीं था।

बाहर के बड़े आँगन में सन्थालों ने ढोल बजाना तथा नाचना गाना शुरू कर दिया था। इसके उपलक्ष में बागदी पाड़े के लठैतदल के प्रत्येक ने दस हाथ लम्बा एक गज चौड़ा लाल साल् और एक-एक कुर्ता पाया था। वे नया कुर्ता पहने, लाल पगड़ी सिर पर बाँधे, लाठी हाथ में लेकर, तैयार थे। उन्होंने तथा सन्थालों ने खूब शराब पी थी। नवीन की स्त्री मोती इस समय उनकी सरदारिन थी। उसने नया कपड़ा पाया था। वह कमर बाँधे हाथ में लाठी लेकर अन्दर के दरवाजे पर खड़ी थी, और चिल्ल-पों कर रही थी।

आशीर्वाद समाप्त हो जाने पर अहीन्द्र अमल के साथ सन्थालों के दल के सामने आकर खड़ा हो गया।

एक दूसरे की कमर पकड़कर सफेद चमकते हुए कपड़े पहने काली-काली स्त्रियाँ अर्द्धचन्द्राकार पंक्ति बनाकर जल की लहरों की तरह नाच रही थीं और सामने पुरुष ढोल, नगाड़ा, बाँसुरी तथा सारंगी बजाकर, आँधी से हिलते हुए शाल की तरह हिलकर लम्बे-लम्बे कदमों से नाच रहे थे। स्त्रियाँ बड़ा अच्छा गाना गा रही थीं, उन्होंने बँगला में वह गाना स्वयं बना लिया था,—

राजा जाबे सोराने सोराने (पक्की सड़क)
रानी आसछे डूलिर ऊपरे चेपे।
राँगा बाबूर बिये हबे ;
लाल फूलेर माला कूथा पाबो गो !
पालते पोलाश जबा फूलेर माला गो !

गाना सुनकर अमल ने हँसकर कहा—वाह ?

अहीन्द्र हँसता हुआ एक सिरे से दूसरे सिर तक दल के प्रत्येक को देख रहा था। देखते-देखते उसकी हँसी जाती रही। कमल तथा सारी

को न देख उसका मन प्रश्नमय अचरज से भर गया! गाना समाप्त होते ही स्त्रियों ने अहीन्द्र तथा अमल की ओर उँगलियाँ दिखाकर शोर करना शुरू कर दिया। काले-काले मुँहों में उज्ज्वल नेत्र अहीन्द्र पर निस्संकोच पड़ने लगे। चूड़ा माँझी ने ढोल गले में झुलाते हुए आकर प्रणाम किया और कहा—आपके विवाह का गाना मैंने बनाया है। स्वयं मैंने। आप उनसे पूछ लीजिये।

अमल अचरज के साथ बोला—वाह, वाह, खूब अच्छा गाना बना है?

चूड़ा उत्साह के साथ बोला—मैं, समझा बाबू यही हैं। छाती पर हाथ रखकर अपनी ओर संकेत कर कहने लगा—मैं मंत्र जानता हूँ, भूत भगाने जानता हूँ, गाना बनाने जानता हूँ। समझे बाबू, मैं बहुत कुछ जानता हूँ। वह-वह और क्या कहूँ बाबू! इसके बाद सोचकर बोला—हमें और शराब देनी होगी बाबू, आपलोगों ने जो दी थी, उसका बहुत भाग स्त्रियों ने पी लिया। देखिये न, सब नशे में चूर हैं।

अब स्त्रियाँ खिलखिला उठीं। अहीन्द्र हँसकर बोला—अच्छा, यह सब होगा। किन्तु, तुम्हारा सरदार कमल माँझी—कहाँ है? और वह तीरन्दाज शिकारी माँझी, जिसने साँप मारा था, कमल का नात्र-दामाद, उस लम्बी युवती का पति, कहाँ है! वे सब क्यों नहीं आये?

सारी सन्थाल-मण्डली इस प्रश्न से क्षणभर के लिये चुप हो गयी।

बार-बार गला साफकर हाथ जोड़ते हुए चूड़ा माँझी ने विनय के साथ कहा—आपको हम लाल बाबू कहते हैं, आप हमारे राजा हैं। आप उन लालदेव के नाती हैं। उसी तरह आग के समान रंग है। बाप रे, आपसे झूठ नहीं कहूँगा। बात यह है, उन्होंने किया क्या—उन्होंने—

अहीन्द्र ने भौंहें टेढ़ीकर पूछा—क्या किया उन्होंने?

चूड़ा हाथ उठाकर अत्यन्त विज्ञभाव से बोला—वही तो कह रहा

हूँ बाबू। उन्होंने—पाप किया। हमारे पंचों ने कहा—तुम्हारे साथ हम नहीं खायेंगे। तुम्हारे साथ काम नहीं करेंगे, विवाह आदि नहीं करेंगे। हाँ, उन्हें बिरादरी से निकाल दिया, घृणा किया। उससे ही बुड्ढे को शर्म आयी, यहाँ रह न सका। वह चला गया, भाग गया। लज्जा की बात है न ?

अहीन्द्र बोला—उन्होंने क्या किया था ?

अत्यन्त लज्जा के साथ चूड़ा ने जीभ काटकर कहा—छिः, वह लज्जा की बात है, खराब बात है। वह आपलोगों को सुनने लायक नहीं है। छिः ! बाप रे !

अहीन्द्र फिर कुछ पूछ न सका। किन्तु उनकी बातें अमल को अच्छी लग रही थीं। उसने कहा—तब इस समय सरदार कौन है ? तुम हो ?

चूड़ा ने विनय के साथ कहा—आप उनसे पूछिये, मैं नहीं कहूँगा।

उन्होंने कहा—मैं बहुत कुछ जानता हूँ न, मैं अनेक विद्यायें जानता हूँ, मैं उस्ताद हूँ। बोंगा की पूजा जानता हूँ—बोंगा हैं भगवान। उनका मन्त्र जानता हूँ। भूत भगाना जानता हूँ। औषधियाँ जानता हूँ। अनेक विद्यायें जानता हूँ। उन सबों ने कहा—मैंने नहीं कहा। अपने-आप नहीं कहा जाता, शर्म की बात है ! उनसे आप पूछिये।

अमल हँसकर बोला—बात तो जटिल जान पड़ती है अहीन। इतनी विनय तो अच्छी नहीं।

अहीन्द्र बोला—हुं। पीछे मालूम होगा, क्या बात है। अभी सब नाच-गा रहे हैं।

नाचें-गायें।

उनकी बातें अच्छी तरह न समझ पाने पर भी चूड़ा ने तो समझ ही लिया कि उन्हीं के विषय में बात हो रही है। उसने फिर विनय के साथ कहा—

उस दियारे का बन्दोबस्त जब हुआ, लाल बाबू गये, सरदार गये, उस समय मैंने हिसाब किया, नापने की जंजीर पकड़ी। मैं सब कुछ जानता हूँ। इसीसे उन्होंने मुझे ही सरदार बनाया।

अहीन्द्र बोला—अच्छा हुआ। इस समय तुम लोग नाचो-गाओ, तुम बड़े अच्छे हो, तुम सरदार हुए, यह भी अच्छा हुआ।

अब चूड़ा प्रसन्न होकर अपनी ढोल के साथ कूदकर स्त्रियों के सामने खड़ा हो गया और लगा बजाने धि तां तां, धि तां तां। बाँसुरी, सारंगी, नगाड़े फिर बजने लगे। स्त्रियाँ फिर कतारों में खड़ी हो गयीं।

दूसरे ही दिन सन्ध्या समय उमा को आशीर्वाद देने चक्रवर्ती-घराने के कुलगुरु आये। इन्द्रराय ने धूमधाम किया, रायवंश के सभी लोगों को निमंत्रण देकर खिलाया। उत्सव समाप्त हो जानेपर उन्होंने योगेश मजुमदार को बुलाया और एक मूल्यवान धोती तथा गरद की चादर देकर बोले—तुम आज मेरे समधी के समान आदरणीय हो, कर्मचारी होने पर भी रामेश्वर तुमसे भाई जैसा प्रेम करते हैं, अहीन्द्र तुमको काका कहता है। समधी के घर सम्मान उचित है।

विमल बाबू आज नहीं आये। शरीर खराब बतलाकर क्षमा कहला दिया था। इन्द्रराय उनसे गुलाबपाश बुलाकर ही शान्त नहीं हुए, वरन् जाति-भोज में बैठने तक नहीं दिया। उनको अलग भोजन कराया गया। राय ने कुर्सी-मेज का प्रबन्ध किया था। हँसते हुए विलायती शराब की एक बोतल रखकर कहा था—आपके लिये हँड़िया का प्रबन्ध किया गया है।

सन्थाली भाषा में शराब को 'हँड़िया' कहते हैं।

× × × +

दूसरे दिन हेमांगिनी उमा को लेकर रामेश्वर से मिलने गयीं।

श्वर को प्रणाम करने के लिये उमा को साथ लायी थीं। उमा रामेश्वर को प्रणाम कर लज्जा तथा संकोच के साथ बैठ गयी।

रामेश्वर प्रेम के साथ हँसते हुए बोले—पहले-पहल जिस दिन मैंने उमा को देखा था, उस दिन 'कुमारसम्भव' में वर्णित उमा का बाल्यरूप स्मरण हो आया था; आज याद आ रहा है उमा का भावी बधू-रूप। महाकवि कालिदास ने कहा है—

सा सम्भवद्भिः कुसुमैर्लतेव ज्योतिर्भिरुद्यद्भिरिव त्रियामा।
सरिद्विहंगैरिव लीयमानै रामुच्यमानाभरणा चकाशे॥

अर्थात् अलंकार धारणकर उमा सुशोभित हुईं, फूली हुई लता के समान, प्रकाशमान रात की तरह, बगुलों और हंसों से शोभित नदी के तट के समान। तो हाँ उमा, तुम मुझसे प्रेम करोगी न? देखती हो, मैं रोगी हूँ, मेरी पुत्रवधू होने में तुम्हें कुछ आपत्ति तो नहीं है?

उमा कुछ बोल न सकी, केवल गम्भीर वेदना-भरी कातर आँखों से उनकी ओर देखती रही, किन्तु दूसरे ही क्षण लज्जा से अपनी आँखें नीची कर लीं। हेमांगिनी ने कातर भाव से कहा—क्यों आप बार-बार वही बात कहते हैं चक्रवर्ती महाशय? कहाँ है आपका रोग? अभी उस दिन तो आपके खून की परीक्षा हुई थी, वे भी तो कहते हैं, आपको कोई रोग नहीं है। यह आपके मन का भ्रम है!

रामेश्वर बोले—राय-पत्नी! भगवान के दण्ड, मृत्यु तथा रोग का निर्णय कभी नहीं होता। ये चीजें चिकित्सा-विज्ञान तथा मानव-ज्ञान के बाहर हैं। किन्तु, यह विवाद रहने दो। उमा ने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया है। मैं अपने को धन्य मानता हूँ राय-पत्नी! हाँ, एक बात और है। उमा, मैं दरिद्र हूँ, लक्ष्मी ने मुझे त्याग दिया है। इसके लिए मुझे दुःख नहीं है। दरिद्रता को प्रणाम कर मैं कहता हूँ—

दारिद्र्याय नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहम् तत्प्रसादतः !
जगत् पश्यामि मेनाहं न मा पश्यन्ति केचन ॥

मैं कहता हूँ कि हे दरिद्रता, तुझे नमस्कार है, तुम्हारी कृपा से मैं सिद्ध हो गया हूँ, इसके लिए कोई मुझपर दृष्टि नहीं रखता। मैं संसार को देखता हूँ। मैं द्रष्टा हो गया हूँ।

किन्तु बेटी ! यह भी जान रखो, तुम्हारे आगमन से लक्ष्मी को फिर लौटना पड़ेगा।

उमा अब चुप न रह सकी। वह एक तेजस्विनी बालिका है, फिर कलकत्ता के स्कूल में शिक्षा पायी है और रामेश्वर भी बिलकुल अपरिचित नहीं हैं, वरन् काव्य-चर्चा-द्वारा उनके हृदयों में आत्मीयता उत्पन्न हो गई है। उमा ने मीठे स्वर से कहा—बड़ी सुन्दर कविता है !

हेमांगिनी बोलीं—लीजिये, अब पतोहू को संस्कृत सिखाइये।

अत्यन्त उत्साह से रामेश्वर की आँखें चमक उठीं। वे बोले—अवश्य सिखाऊँगा ? बेटी पढ़ोगी, मैं सुनूँगा। जानती हो बेटी, तुम्हारे उस बंगाली कवि रवीन्द्रनाथ की पुस्तक अहीन्द्र ने मेरे लिये लादी है, किन्तु, आँखें खराब होने से मैं पढ़ नहीं पाता। उसे तुम मुझे सुनाओगी ? वह देखो, ले तो आओ, तुम्हारे कण्ठ-स्वर से कवि के वाक्य संगीत बन लहरायेंगे। मुझे कुछ सुनाओ तो बेटी। बहुत दिनों से कुछ नहीं सुना।

उमा ने देखा, एक पुराने टेबिल पर 'चयनिका' यत्न के साथ रखी हुई है। वह पुस्तक लेकर बैठ गयी। हेमांगिनी बोलीं—मैं नीचे सुनीति के पास जाती हूँ, चक्रवर्ती महाशय। आप श्वसुर-पतोहू मिलकर बैठे-बैठे काव्य-चर्चा कीजिये।

हेमांगिनी चली गयीं। रामेश्वर बोले—यदि मृत्यु के सम्बन्ध में तुम्हारे कवि की कोई कविता हो, तो वही मुझे सुनाओ।

उमा ने देख-सुनकर निकाल लिया—

एतो चुपि-चुपि केनो कथा कओ
उगो मरण, हे मोर मरण !

पहले लज्जा तथा संकोच के कारण थोड़ा मीठे स्वर से उमा ने शुरू किया, किन्तु पढ़ते-पढ़ते काव्य के प्रभाव से प्रभावित हो, स्थान-काल पारकर स्वच्छन्द बन गयी। स्वर में भी जड़ता नहीं रह गयी। खुले हुए आवेगपूर्ण स्वर से छन्द-छन्द तथा ताल-ताल पर संगीत की मधुरता लाकर वह कविता पढ़ रही थी—

तव पिंगल छवि महाजट
से कि चूड़ा करि बाँधा हवे ना।
तव विजयोद्धत ध्वज पट,
सेकि आगे-पीछे केऊ र वे ना !
तव मशाल आलोके नदी तट
आँखि मेलवे ना राँगा वरण।
त्रासे केंपे उठवे ना धरातल
उगो मरण, हे मोर मरण॥

आँखें फाड़कर शान्ति के साथ रामेश्वर सुन रहे थे, उत्तेजना से नाक बार-बार फूल उठती थी। गीत समाप्त हो गया, उमा चुप हो रही। किन्तु अब भी सारे घर में स्वर गूँज रहा था। अकस्मात् रामेश्वर बोले—वह स्थान फिर तो एक बार पढ़ो बेटी। वही जो—तवे शंखे तोमार तुलो नाद, इसके बाद क्या है ?

उमा पढ़ने लगी—

तवे शंखे तोमार तुलो नाद
करि प्रलय स्वास भरण

साथ-ही-साथ रामेश्वर पढ़ने लगे—

तवे शंखे तोमार तूलो नाद
करि प्रलय स्वास भरण
आमि छूटिया आसिबो उगो नाथ
उगो मरण, हे मोर मरण ॥

इसके बाद रामेश्वर जैसे काव्य के मोह में निमग्न हो गये, उमा की उपस्थिति का भी ज्ञान नहीं रह गया ! कुछ देर के बाद दोनों हाथ घुमा-फिराकर देखने लगे। मोटे स्वर में बोले—तुम्हारा शंखनाद मुझे सुनायी देता है, प्रलय स्वास की लहरें मेरे शरीर में लग रही हैं। ओह, उँगलियों ने एकदम बुड्ढा कर दिया है।

उमा को शंका हो आयी। वह धीरे से घर से बाहर जाने के लिये खड़ी हो गयी। कमरे के प्रकाश में उसकी छाया बड़ी होकर फर्श पर चंचल हो उठी।

रामेश्वर ने चौंककर पूछा—कौन ?

उमा ने शंका के साथ धीरे से कहा—मैं।

उसके मुँह की ओर देख रामेश्वर ने जैसे स्मरण कर कहा—उठो बेटी ! मेरी बेटी ! तुमको आशीर्वाद देता हूँ बेटी—

आखगुलो समो भर्ता जयन्तः प्रतिमः सुतः।
आशीरण्ये न ते योग्या पौलमी मंगला भव ॥

उमा ने उन्हें फिर प्रणाम किया और पैर की धूल लेकर धीरे-धीरे बाहर चली गयी।

रामेश्वर के कमरे से निकल, भीतरी बरामदे में होकर, उमा सीढ़ियों की ओर चली। एक-दो घर पार करते ही, उसने देखा, अहीन्द्र अपने कमरे में खुली खिड़की से बाहर की ओर देख रहा है। इधर-उधर देखकर उसने मोटे स्वर में कहा—गुड आफ्टर नून साहब।

अहीन्द्र ने चौंककर पीछे की ओर देखा और कहा—नमस्कार श्रीमती उमा देवी।

उन दोनों के इस प्रकार के सम्बोधन का एक इतिहास है।

कई वर्ष पहले इसी चक्रवर्ती-घर में बालिका उमा ने अहीन्द्र को एक दिन कहा था—आपको देखते ही लोग समझ जायँगे।

इन्होंने स्कालरशिप पायी है। साहबों की तरह गोरा रंग है न!

इसके बाद अहीन्द्र के कलकत्ता जानेपर अमल ने उमा से पूछा था—बतलाओ क्या नाम रखा है?

उमा के स्कूल की बस उस समय खड़ी थी, उसने अपनी लम्बी चोटी हिलाकर कहा था—साहब। फिर दूसरे ही क्षण उसने कहा था—पूछ लो न साहब से; रायहाट वाले उनके मकान में ही उनका नाम 'साहब' रख दिया है। गुडमार्निंग साहब।

अहीन्द्र हँसकर बोला—नमस्कार श्रीमती उमा देवी। मैं तुमको एक विशुद्ध बंग-महिला के रूप में हमेशा ही देखना चाहता हूँ।

उमा ने अपना सिर थोड़ा झुकाकर कहा था—क्या बंगाली-काली बालिका—मुझे स्कूल में देर हो रही है, यह कह वह चोटी हिलाती हुई बाहर चली गयी।

आज उमा बोली—इस तरह ध्यान में क्यों डूबे बैठे हो?

अहीन्द्र की खिड़की से दियारा स्पष्ट दिखाई देता है, वह उँगली से उसकी ओर दिखाकर बोला—दियारा देख रहा हूँ। इन्द्रजाल के समान यह दानव की पुरी बन गयी। अभी पूजा की छुट्टी में भी देखा था। हरी घास का एक श्यामल खंड था, और बीच में थी एक छोटी सन्थाल वस्ती। किन्तु, अब एक ही जगह ईंट के कितने भट्ठे हैं।

उमा बोली—दियारा तो तुम लोगों का है!

अहीन्द्र ने हंसकर कहा—हाँ, तुम्हीं लोगों का है।

उमा का मुँह लाल हो गया। वह लज्जा के कारण जवाब नहीं दे सकी।

अहीन्द्र बोला—जानती हो उस दियारे पर एक दल मेरी पुजारिनों का है, वे मुझे देखकर लज्जा से लाल नहीं होतीं, वरन् बिना किसी संकोच के आनन्द से नाच उठती हैं।

उमा बोली—जानती हूँ, एक युवती आज मुझे देखने आयी थी। उसने मुझ से कहा था—लाल ठकुरानी! फिर उसने कहा—बाबू को कहती हूँ लाल बाबू, तुमको कहूँगी लाल ठकुरानी।

अहीन्द्र ने उल्लास के साथ कहा—बहुत सुन्दर नाम रखा है!

उमा ने कहा—उसका अपना नाम भी अच्छा है—सारी, सारी।

विस्मय के साथ भौंहें टेढ़ी कर अहीन्द्र बोला—सारी? खूब लम्बी युवती?

हाँ, थोड़ी अधिक लम्बी। किन्तु अब जाती हूँ। शायद मायें अभी ऊपर चली आयें। मैं भागती हूँ। उसने उत्तर का इन्तजार नहीं किया, कोठरी से बाहर चली आयी।

कई मिनट के बाद अहीन्द्र नीचे चला आया और मानदा से बोला—मैं दियारे की ओर जा रहा हूँ। अमल के आने पर कहना—भैया जी ने तुमको उधर ही आने को कहा है।

अहीन्द्र के जाते ही मानदा हँसी से फूलती हुई सुनीति और हेमांगिनी के पास जाकर बोली—सास को देखकर भैया जी को लज्जा लगी, मुझे बुलाकर धीरे-धीरे—बोलते-बोलते वह हँसी से लोट-पोट होने लगी।

दियारे पर का शोर गुल अब भी शान्त नहीं हुआ। शेड के लोहे का ढाँचा इसी बीच तैयार हो चुका है। अब उस पर कारोगेटेड शीट लगायी जा रही है। वोल्टों पर हथौड़ी की चोटें पड़ रही हैं।

आकाश में उठी हुई चिमनी का आकार अब पतला होने लग गया है, आज नया मचान बँध रहा है। नीचे कहीं मिस्त्रियों की करनी का शब्द सुनाई पड़ रहा है। छत पर असंख्य पिटनियों के शब्द एक साथ हो रहे हैं, किन्तु स्त्रियाँ गा नहीं रही हैं, जान पड़ता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता। एक लारी का इंजन कहीं जोर से गरज रहा है, जान पड़ता है किसी बड़ी कठिनाई को पार कर चलना पड़ रहा है। बीच-बीच स्टीम रैलर थर-थर काँप रहा है, इन सब को एक हल्के परदे से ढँककर मनुष्य की आवाजें आ रही हैं। अहीन्द्र ने नदी के किनारे खड़े होकर इस आधी बनी हुई यंत्र-पुरी को विस्मय के साथ देखा। वह स्वयं विज्ञान का छात्र है। उसने मन ही मन विज्ञान को नमस्कार किया।

नदी से दियारे के घाट पर पहुँचते ही उसने देखा—जंगली घास में बैलगाड़ी के पहिये से बनी हुई कच्ची सड़क नहीं रही। लाल कंकड़ी बिछी हुई एक लम्बी-चौड़ी पक्की सड़क बन गयी है, जो घाट से एक लम्बे धनुष की डोर के समान कारखाने की सड़क तक चली गयी है। कुछ दूर आगे जाकर उसे दाहिनी ओर मुड़ना पड़ा। इसके बाद कच्ची सड़क दिखाई पड़ी। वह सन्थाल बस्ती की ओर चली गयी है। दोनों ओर सन्थालों के खेत हैं। सभी खेत बिना जोते पड़े हैं, उनमें फसल नहीं है। सभी खेतों की भूमि एक नई विधवा की तरह उदास है।

उसको अचरज हुआ—यह क्या! सन्थालों ने जमीन को बिलकुल खाली और बेकार बना रखा है! पिछले साल इसी समय की खेतों की शोभा याद पड़ गयी! ये विचित्र रंगों से भरे हुए गलीचे के समान हो रहे थे। आलू के खूब हरे पौधों से भरे हुए खेतों के चारों ओर कुसुम-फूल के पौधे, फूली मटर की लताओं के खेत, एकदम हरे-हरे चने और मसूर के खेत, इनके भीतर बैंगनी रंग के ढेर के ढेर

अलसी के फूल, और नयी बालियों से भरे हुए गेहूँ तथा जौ के खेत थे। सब से अधिक बहार सरसों के खेत दिखा रहे थे, हरियाली के ऊपर पीले-पीले फूल पीली पगड़ी की तरह जान पड़ते थे। खेतों के किनारे किसान और सन्थाल यों ही घूमा करते, उनके काले मुँहों और सफेद आँखों से कैसी आशाएं चमक रही थीं! अहीन्द्र को जीवित पहाड़ के समान दृढ़ शरीर वाले कमल माँझी का स्मरण हो आया। उसने उसे आखिरी बार वर्षा के समय देखा था। उस समय वह मिट्टी लपेट कर इसी कीचड़ भरे खेत में बैठा हुआ उसको बराबर कर रहा था। वह जंगली सूअर के समान हुँकार छोड़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक की मिट्टी हिला-डुला देता था। शायद कमल के रहने पर खेती की ऐसी दुर्दशा न होती। अहीन्द्र ने अच्छी तरह समझ लिया, रोजाना नगद पैसों का स्वाद पाकर इन्होंने खेतों की ऐसी दुर्दशा कर रखी है। जान पड़ता है कमल कहीं पास ही है, नहीं तो सारी उमा को देखने कैसे जाती। उमाने कहा—खूब लम्बी युवती, भला-सा नाम है सारी। मैदान पीछे छोड़ कर अहीन्द्र ने खूब छायादार सन्थाल-बस्ती की सीमा में प्रवेश किया। बस्ती एक दम शान्त है। केवल कई कुत्तों ने जोर से भूंकते हुए उसका रास्ता रोक लिया। अहीन्द्र डरा तो नहीं, किन्तु सावधान हो गया और भौंहें टेढ़ी कर खड़ा हो गया। ठीक इसी, समय पास की झोपड़ी से एक स्त्री इस घटना को देखने के लिये बाहर निकली और लाल बाबू को देखकर आनन्द से बोल उठी,,—लाल बाबू!

अहीन्द्र हँसकर बोला—हां रे। किन्तु तुम्हारे कुत्ते तो जाने ही नहीं देना चाहते।

स्त्री थोड़ा डरते हुए कुत्तों को भगाने के लिये हाथ उठा कर बोली—हड़िच्, हड़िच्। कुत्ते फिर भी नहीं भागे, स्त्री के प्रति भक्ति दिखाते हुए वे अपनी दुमें हिलाते-डुलाते भूंकते रहे। इस बार उसने अत्यन्त

क्रोध से कहा—इ—रे कम्बड़ो-से-तो हड़िच्-हड़िच्। अर्थात् हे चोर कुत्तो, भागो, भाग जाओ। अब कुत्ते सिर नीचा कर धीरे-धीरे भूंकते हुए चले गये।

अहीन्द्र ने आगे बढ़कर कहा—तुम सब कैसी हो?

स्त्री ने अचरज के साथ कहा—क्यों, अच्छी तो हैं। अभी तो तुम्हारे विवाह के सम्बन्ध में नाच आयी हूँ। शराब पी, गाना गाया। अहीन्द्र हँसने लगा—हाँ, यह तो ठीक है, जब नाच आयी तब शरीर खराब कैसे रहेगा, और अच्छी न रहोगी तो नाचोगी कैसे? बात ठीक है।

वह स्त्री विस्मय के साथ अहीन्द्र के मुँह की ओर देखती रही, फिर उसकी बात का अर्थ समझ कर आनन्दित हो गयी—नहीं तो नाच आयी कैसे?

लाल बाबू!

लाल बाबू! बापरे!

हाँ रे—लाल बाबू!

हँसी की आवाज सुनकर आस-पास की झोपड़ियों की तीन-चार स्त्रियों ने झांक कर अहीन्द्र को देखा और विस्मय तथा आनन्द के साथ उसके आने की जोर से घोषणा करती हुई सामने आकर खड़ी हो गयीं। देखते-देखते युवतियों के दल ने उसे घेर लिया। उनमें से अधेड़ माँझिनों ने तड़ातड़ी एक चारपाई काले सिरे वाले देवताओं के पेड़ के नीचे डाल कर कहा—बैठ जाइये, बाबू।

युवतियाँ एक दूसरे का गला पकड़ कर अपनी भाषा में लगातार बातें कर रही थीं। उनकी बातों का विषय अहीन्द्र था। अहीन्द्र बोला—तुम सब क्या बोल रही हो?

स्त्रियाँ खिलखिला उठीं। एक अधेड़ स्त्री ने कहा—ये सब कहती

हैं, लाल बाबू से पूछो ; सभी पसन्द हैं न ? कितनी बड़ी बहू है ? वह उससे कहती है, तुम पूछो ; दूसरी पहले से कहती है, तुम पूछो ; इन्हें शर्म लग रही है ।

अहीन्द्र हँस कर बोला—यही, इन सब की ही तरह है । अब एक युवती ने पूछा—हमारी तरह काली है कि गोरी ?

अहीन्द्र बोला—यह मैं कैसे कहूँ ? तुमलोग जाकर देख आओ । सारी देखने गयी थी । उसने मेरी बहू का नाम रखा है—लाल ठकुरानी ।

स्त्रियाँ अकस्मात् गम्भीर होकर चुप हो गयीं । कुछ देर बाद दो-एक में गम्भीर स्वर में बहस छिड़ गयी । अहीन्द्र समझ न पाया और अकस्मात् उनके इस परिवर्तन की ओर ध्यान भी न दे सका । उसके मन में पूछने का भाव तीखेपन से उत्पन्न हो गया और उसने भौंहें और सिर सिकोड़कर पूछा—हाँ ठीक, सारी इस समय कहाँ रहती है रे ? कमल माँझी का परिवार यहाँ से क्यों चला गया ?

स्त्रियाँ फिर चुप हो गयीं । उनके चेहरों से गहरी अप्रसन्नता प्रकट होने लगी । अहीन्द्र ने उनका मुँह देख अचरज से कहा—तुम सब गुम-सुम क्यों हो गयी ? उसको सन्देह हुआ, कि इन सबों ने चूड़ा के नेतृत्व में दल बाँध कर कमल को भगा दिया है ।

एक युवती ने अब कहा—उस युवती का नाम मत लो लाल बाबू , छिः ।

और भी अचरज से अहीन्द्र ने पूछा—क्यों ?

सबके मुँहों से तीव्र घृणा प्रकट होने लगी । उसी युवती ने फिर कहा, छिः , वह पापी है, उसने पाप किया ।

पाप किया ?

हाँ, पाप किया । अपने बर-मर्द-को छोड़ वह उसी साहब के घर रहती है ।

अहीन्द्र चौंक पड़ा। इस बात से सारी घटना तो समझ में न आयी किन्तु वह उसका सारांश समझ गया। उसने कड़ी तिरछी निगाहों से देख कर पूछा—पति को छोड़ साहब के घर रहती है? वह साहब कौन है?

वही, जिसने कारखाना बनवाया है। उसी को हम साहब कहती हैं हुं। एक छोटा "हुं" कहकर अहीन्द्र चुप हो गया।

एक दूसरी स्त्री ने कहा—अब वह अच्छा कपड़ा पहनती है, सुगन्ध लगाती है, वही साहब उसे सब देता है!

अहीन्द्र ने पूछा—इसीलिये शायद कमल माँझी तथा सारी का पति यहाँ से चला गया?

हाँ, उन्हें शर्म लगी, हम लोगों ने उनके साथ नहीं खाया, उसी से ही उन्हें बहुत शर्म लगी, वे सब चले गये।

दूसरी स्त्रियाँ आपस में मैना के झुण्ड के समान किचिर-मिचिर बातें कर रही थीं। अकस्मात् एक युवती अपनी भाषा में बोल उठी—देखो, देखो लाल बाबू का मुँह कैसा हो गया।

अचरज के साथ दूसरी स्त्री ने कहा—जेंगेल आरा (खूब लाल) अरे बाप रे!

अहीन्द्र फिर चुप हो गया, दुःख और क्रोध से उसके मन में एक लहर पैदा हो गयी। वह लम्बे शरीर वाली वकवादिनी युवती, जो उसको अच्छी लगती थी, उसका अन्तिम फल यही हुआ? और उन्हीं को भूमि में एक आगन्तुक ने आकर धन के घमण्ड में सरल निरीह जाति की स्त्री पर अत्याचार किया?

सिर में उसे कुछ चंचलता मालूम हुई, खून के दौरान से सिर भारी हो गया।

एक अधेड़ युवती बोली—हाँ बाबू, क्यों तुम लोगों ने उस साहब

को यहाँ कारखाना बनाने दिया ? उसने जबर्दस्ती उस युवती को वश में कर लिया। उसके भय से कोई कुछ नहीं बोला।

अहीन्द्र की दृष्टि एक स्थान पर जम गयी थी। उसके मन में भूतकाल के जो चित्र बिजली की तेजी से आ रहे थे, उन सबों का सम्बन्ध सारी और कमल माँझी से था। उसको याद पड़ा, वह सामने जहां पर, इस समय देख रहा है, वहीं पहली बार बैठा था। उस समय चारों ओर काँस और जंगली घास का वन था, सामने कमल एक विशाल पत्थर की मूर्त्ति के समान बैठा था और उसके सामने एक दूसरे का गला पकड़कर स्त्रियाँ खड़ी थीं, उनके बीच सारी थी।

वृद्धा कहती गयी—और देखिये, वह हमारी जमीनें निकाल ले रहा है।

अहीन्द्र जैसे गरज उठा—निकाल ले रहा है ?

उसके इस गर्जन पर सारा दल चौंक उठा। अहीन्द्र को इस रूप में उन सबों ने कभी नहीं देखा था ; यहां तक कि उसके इस रूप की कल्पना भी उन्होंने नहीं की थी ! जो अधेड़ बात कह रही थी, वह भी चुप हो गयी। अब अहीन्द्र ने थोड़ी शान्ति के साथ पूछा—जमीन कौन निकाल ले रहा है माँझिन ?

डरते-डरते उस स्त्री ने कहा—कहता है कि तुम्हारे यहाँ मेरा रुपया है, जमीन मुझे दे देनी होगी, नहीं तो नालिश करूँगा।

रुपया है ? कैसा रुपया ?

वह जो श्रीवास पाल है, उसीसे लेकर हमलोग बरसात में धान खाते थे, वही श्रीवास ने धान के दाम में कागज लिखा लिया। उसके पास से साहब ने उन कागजों को खरीद लिया। इसीसे कहता है, जमीन दे दो, तुमलोगों को और रुपया दूँगा और कागज भी लौटा दूँगा, नहीं तो नालिश करूँगा।

नालिश करने दो, खबरदार तुमलोग जमीन मत लिखना। रुपया उसका है, उसे हम दे देंगे।

वह स्त्री सन्न होकर अहीन्द्र का मुँह देखती रही, फिर रोकर क लगी—जमीन बाबू ने ले ली।

लिखवा लिया ?

हाँ बाबू। आज सवेरे मर्दों को तुम्हारे उसी मजुमदार के स शहर भेज दिया, हाकिम के सामने कागज लिखा जायगा, रजिस्ट्री होगं

अहीन्द्र पछतावे से चंचल हो उठा। उसने कहा—छिः, ि तुमलोगों ने दिया क्यों ? हमारे यहाँ गये नहीं क्यों ?

स्त्री ने करुणा के साथ कहा—उसने कहने से मना किया थ लाल बाबू ! उसको देखकर हमलोग डर से मर जाते हैं। पहाड़ी अज के सामने बकरी-भेड़ की तरह हमलोग हिल-डुल भी नहीं सकते बाबू।

उस समय सभी वहाँ पर साँस रोके खड़े थे, उसकी बात खतम ह ही उन्होंने बड़े दुःख से साँस छोड़ी।

दो-चार मीठे स्वर में कहने लगीं—आह, आह ! हाय रे !

अहीन्द्र की आँखों में चकाचौंध लगने लगी। वह जैसे साफ-स देखने लगा—सामने एक स्थान पर एक विशाल अजगर का मरा श पड़ा है, वह गतिहीन रंग-विरंगे मांस का ढेर जैसा है। ठीक उसी स्थ पर वह उस दिन पड़ा था और तीर से सारी के पति ने उसे मारा थ वह खड़ा हो गया, और खड़ा होने पर ऐसा लगा, उसका सारा श थरथरा रहा है। रुके हुए क्रोध के कारण सिर फटा जा रहा है।

❀ ❀ ❀ ❀

बहुत अधिक क्रोध के कारण ऐसी अस्थिरता का अनुभव उसे जी में कभी नहीं हुआ था। उसके दोनों कानों से आग-सी निकल रही जाड़े की ठण्डी हवा में भी उसे आराम नहीं मिल रहा है। उसकी दे

शिरायें टप-टप कर रही हैं। बार-बार उसके मन में उस कारखाने मालिक के सामने जाने का विचार हो रहा था। एक बार वह थो उस ओर बढ़ा भी, किन्तु फिर लौट आया। इस अवस्था में भी अप माता की तरह अपने को सम्भालने के अभ्यास ने उसको रोक दिया एक और विचार ने भी उसे रोक दिया—वह था उसके परिवार व मर्यादा। उसके अनुसार अहीन्द्र विमल बाबू के यहाँ जा नहीं सकता चक्रवर्तियों के आसन के सामने ही उस कारखानेवाले को आकर ख होना होगा। इसीलिये वह लौट आया। जाड़े के समय की कालिन्द का किनारा पकड़ कर वह एक सूनसान स्थान में जा बैठा। सामने पश्चि में सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा है, इसी बीच शुक्र तारे का मन्द प्रका दिखाई पड़ने लगा है।

बैठे-बैठे वह उसी कारखाने के मालिक के अत्याचार के सम्बन्ध सोच रहा था। निरीह सीधी जाति की स्त्री निकाल, ली, भूमि निका ली। अब उनका पृथ्वी पर क्या रह गया? और सन्थाल भी कित तुच्छ और डरपोक हैं! तीर-धनुष लेकर काम करते हैं, जंगली सूअ मार कर खाते हैं।

मगर मारते हैं, बाघ भी छुटकारा नहीं पाते, अत्यन्त भयंकर अजग को भी सारी के स्वामी ने ही मार डाला था, किन्तु इसको मार ना सका; उस सन्थाल स्त्री ने तो झूठ नहीं कहा, धन के जोर से बुद्धि व कुटिलता में वह अजगर जैसा ही है, चारों ओर से लपेटकर दबा-दबाव बिना खून खराबी किये हत्या कर डालता है। फिर धीरे-धीरे निग जाता है। ठीक अजगर ही है! सारी का स्वामी इस अजगर का व नहीं कर पाया? इस प्रकार की अनेक बातें आकर उसके सिर में चि की आग की लहर-सी लहराती हुई फिरने लगीं।

वह कुछ देर बाद बालू पार कर पतली धारावाली कालिन्दी के किन

पहुंचा और अंजलियों में जल भरकर अपना सिर-मुँह धो डाला। ठण्डे जल और जाड़े की हवा में उसे कुछ ठण्डक लगने लगी। मस्तिष्क भी थोड़ा शान्त होने लगा! उसने स्पष्ट स्वर में पुकारा—आह!

धीरे-धीरे वह बालू पर चलने लगा। ओह, कितना भयंकर क्रोध उसे आया था। उस आदमी के सामने जाने पर आज कोई दुर्घटना अवश्य हो जाती। किन्तु इस अन्याय, अत्याचार, धन के घमण्ड से किये हुए स्वेच्छाचार—स्वेच्छाचार क्यों, व्यभिचार का कुछ न कुछ प्रतिकार करना होगा। ऐसा करने के लिये वह धर्म तथा न्याय दोनों दृष्टियों से बाध्य है। ये सरल सन्थाल उसकी प्रजा हैं, केवल प्रजा ही नहीं, उसके बाबा के समय से आज तक वे उन्हें देवता के समान मानते हैं। केवल इन्हीं विचारों से ही क्यों? मनुष्य के नाते भी उसका कुछ कर्त्तव्य है। अन्याय के विरुद्ध न्याय के लिये लड़ने का अधिकार मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ अधिकार है। उसके मन में सबके दुःख से दुःखी आँसू भरे हुए मां के मुँह का ध्यान आ गया। उसकी माँ नैनीपाल की मृत्यु के लिये रोयीं, किन्तु पुत्र के काले-पानी का आदेश अविचलित धैर्य के साथ सहन कर लिया।

अकस्मात् पास के घास के जंगल के हिलने से वह चौंक पड़ा। दियारे के इसी भाग का जंगल अब भी बच गया है। इस वन के उस पार ईंटों की कतारें लगी हुई हैं। उन्हीं में घोंघे तथा जंगली-जन्तु अब रहते हैं। वह कुछ दूर हट कर खड़ा हो देखने लगा। अपनी रक्षा के लिये नदी की बालू में से पत्थर का एक ढेला भी उठा लिया। जानवर नहीं, मनुष्य है। घास के जंगल में एकदम सामने आ गया है, सफेद कपड़ा दीख पड़ने लगा है। अहीन्द्र हाथ का ढेला फेंककर सावधानी के साथ आगे बढ़ा। उसको याद पड़ गयी रवीन्द्रनाथ के "गान्धारी के आवेदन" की बात। पाप में लिपटे हुए पुत्र पर शाप वज्र फेंकते-फेंकते द्रौपदी

के अपमान से उसके नेत्रों में जल आ गया। कृष्णा के अपमान से कृष्णकाया अभागिनी सारी का अपमान तो कम नहीं है।

'लाल बाबू !—पीछे से मीठे स्वर में किसी ने पुकारा, लाल बाबू अहीन्द्र ने घूम कर देखा—घास के जंगल के किनारे पर सारी खड़ी है उसके हाथ में गहरे लाल रंग के दो फूल हैं। क्षणभर में ही भयंकर क्रोध उसके सिर से पैर तक की रगों में धनुष की खींची हुई डोरी के समान टंकारने लगा। उस व्यभिचारिणी युवती पर उसके क्रोध की सीमा न रही। उसको यह दिखाई पड़ा, सारी कितनी दुबली हो गयी है उसके काले रंग तथा आँखों के कोनों में काली रेखा से अंकित अत्यन्त स्पष्ट निशान भी उसे दीख नहीं पड़ा।

सारी हँसने लगी। उसकी उस हँसी से शंका टपक रही थी उसने कहा—मैंने आपको देखा, नदी की बालू पर आग जैसा मनुष्य उसी समय पहचान लिया। फूल लायी हूँ। बात कहते-कहते उसने काले-लाल मखमल के समान गुलाब के दो फूल उसके सामने कर दिये। अहीन्द्र ने उसकी ओर देखा भी नहीं, उसकी तीक्ष्ण दृष्टि सारी के मुँह पर ही लगी हुई थी। आग के समान तपी हुई लोहे की सीखों के समान उसकी दृष्टि हृदय छेद रही थी। सारी ने डर कर हाथ समेट लिया और सबसे लम्बी सजा पानेवाली अपराधियों के समान विह्वल होकर खड़ी रही।

अब अहीन्द्र ने कठोर स्वर में कहा—चली जा मेरे सामने से, आदमी के समान खड़ी होने में तुझे लाज नहीं लगती ! चली जा यहाँ से।

सारी की आँखों से आँसुओं की दो धाराएँ बहने लगीं। वह भय तथा विह्वलता के साथ बोली—मुझे घर में इतनी बड़ी छुरी दिखाय बाबू, काँटेदार चाबुक से मारता है, हे लाल बाबू !

अहीन्द्र चिढ़कर बोला—जा जा, यहां से चली जा।

सारी को फिर साहस नहीं हुआ, हाथ से घास का जंगल हटाकर उसी में डूब गयी।

× × × +

सारी चली गयी। कई कदम चल कर अहीन्द्र फिर खड़ा हो गया। उसे टहलना अच्छा नहीं लग रहा था। उसने एक गहरी साँस ली। इस गहरी साँस के साथ मन का आवेग कुछ बाहर निकल आया।

उसको अचरज होने लगा। वह आँखें बन्दकर कुछ देर तक सोचता रहा, इसके बाद फिर कालिन्दी की धारा के पास आकर आँख तथा कान एक बार धो डाले।

उसको पता नहीं था कि क्रोध से सिर में ऐसी पीड़ा होती है। ज्वर की गर्मी की पीड़ा से तो यह पीड़ा किसी अंश में कम नहीं है। उसको याद पड़ा, एक दिन और क्रोध से सिर में दर्द हो गया था। नवीन बागदी तथा रंगलाल ने उससे कहा था—कानून से पाना तो नजराना लेना। उसकी माँ के स्नेह से सिर पर हाथ फेरने के कारण वह पीड़ा शान्त हुई थी। उस दिन की पीड़ा आज की पीड़ा के सामने कुछ नहीं है। आज भी वह माँ के हाथ के स्पर्श के लिये लालायित हो उठा। माँ के हाथ का स्पर्श ऐसा शीतल है। और इतना शीतल उनका हाथ है। वह घर जाने के लिये खड़ा हो गया।

कुछ दूर जाते ही अमल से भेंट हो गयी। अमल बोला—वाह खूब, खोजते-खोजते तुम्हें परेशान हो गया, इसीको गाय खोजना कहते हैं, दूसरे ही क्षण वह अचरज के साथ कहने लगा,—अरे आकाश की गोधूलि तुम्हारे मुँह पर छा गयी है! ओह, सो ब्यूटीफुल यू लुक! ऐसा जान पड़ता है, मुँह पर अबीर मली हुई है। वरन् लाल सन्ध्या ही और मधुर—

अहीन्द्र बोला—अमल, मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। अत्यन्त क्रोध के कारण सिर में बड़ी पीड़ा हो रही है।

क्रोध से ? तुमने क्रोध करना कब सीख लिया ?

आज ही। बैठो कहता हूँ।

धीरे-धीरे सारी बातें सुनाकर वह बोला—इसी बीच सन्थालों की जैसी अवस्था हो गयी है, तुम्हें क्या बताऊँ। खेत खाली पड़े हैं। उनकी बस्ती में पहले जैसा गाना-बजाना और आनन्द नहीं है। उनके मुंह पर की हँसी खतम हो गयी है। अमल, उनकी स्त्रियों पर भी अत्याचार आरम्भ हो गया है। इसका उपाय करना ही होगा। अमल ने मलीन हँसी हँस कर कहा—"आज ही गोल्ड स्मिथ का Deserted village" पढ़ा है। इतना कहकर वह पढ़ने लगा—

Ill fares a land, to hastening ills a prey
Where wealth accumulates and men decay
Princes and lords may flourish or may fade
A breath can make them, as a breath has made
But a bold peasantry, their country's pride
When once distroyed, can never be supplied

अहीन्द्र को भी याद पड़ गया। मन ही मन पढ़ते-पढ़ते जोर से सुनाने लगा—

His best companions innocence and health,
And his best riches ignorance of wealth.

ठीक ऐसा ही सन्थालों का चित्र है। उनको बचाना पड़ेगा अमल, bold peasantry की रक्षा करनी पड़ेगी।

अमल बोला—"चलो, पिताजी से सब कहें। उन्होंने भी इस पर खूब क्रोध किया है! कालिन्दी का उस बाँध को, जिस पर पम्प से

जल उठाया जाता है—लेकर शीघ्र झगड़ा होगा। जान पड़ता है फौज दारी होगी।

अहीन्द्र ने बार-बार गर्दन हिलाकर अस्वीकार करते हुए कहा—नो, नो, अमल, नाट ऐज, ए प्रिंस आर ए लार्ड, जमींदार और धनी हिसाब से नहीं, मनुष्यता के विचार से मनुष्य का दुःख दूर करन होगा। जमींदार तथा कारखानेदार में अन्तर कहाँ है ?

अमल विस्मय के साथ अहीन्द्र का मुँह देखता रहा। कुछ देर चु रहने के बाद नदी की बालू पर अहीन्द्र आधा लेट गया।

इस समय बड़ी उत्तेजना के कारण उसका मन और शरीर थक-स गया था।

अमल बोला—यह क्या सो गये ? चलो, घर चलें।

अहीन्द्र थकान की गहरी साँस छोड़कर बोला—चलो।

अठाईस

अमल के मुँह से अहीन्द्र की सिर-पीड़ा तथा तीसरे पहर की सारी घटनाएँ सुनकर हेमांगिनी अत्यन्त चिन्तित हो उठीं।

राय तर्पण के आसन पर चुपचाप जप में लीन थे, उनके सामने ही बैठकर बातें हो रही थीं। उनके ध्यान से गम्भीर मुँह पर हँसी छा गयी, विशेष कर बात समझने के संकेत-स्वरूप हँसी की मृदुता के साथ ही उनकी गर्दन भी हिल उठी।

हेमांगिनी बोलीं—अहीन्द्र तो क्रोध कभी करता नहीं। उसका स्वभाव उसकी माँ के समान है।

अमल हँसकर बोला—पहले कभी क्रोध नहीं किया, तो आगे भी कभी क्रोध नहीं करेगा, यह तो तुम्हारी विचित्र उक्ति है माँ!

हेमांगिनी ने दृढ़ स्वर में कहा—ना क्रोध हो ही नहीं सकता।

ऐसी माँ का पुत्र किसी पर क्रोध क्यों करेगा? सुनीति की दया-मया की बात तो तू जानता नहीं। सारी पृथ्वी पर उसकी करुणा फैली है। उसका पुत्र—

माँ का स्वभाव कन्या को मिलता है और पिता का पुत्र को। तुम भूलती क्यों हो? अहीन्द्र शाक्त जमींदार-वंश की सन्तान है। उसका स्वभाव सिंह के समान होगा। दुर्बल को नहीं छुएगा, किन्तु युद्ध

करेगा बलवान के साथ, अहीन्द्र की तेजस्विता से मैं बहुत प्रसन्न हू। तारा, तारा माँ !—राय के जप का एक अंश समाप्त हो गया था। इसी अवसर पर ये बातें कह कर उन्होंने प्याला भर लिया और फिर अपनी क्रिया में लग गये।

किन्तु हेमांगिनी अप्रसन्न हो उठीं, स्वामी की बातें अच्छी नहीं लगीं। उन्होंने कहा—तुमलोग ऐसी ही बातें कहते हो। शाक्त जमींदार के वंशज होने के कारण क्रोध से सिर क्यों दुखाना पड़ेगा और झगड़ा-फसाद क्यों करना पड़ेगा !

क्या शास्त्र में ऐसा कुछ नियम है ?

क्रिया में लगे हुए राय कुछ उत्तर तो न दे सके, किन्तु मुँह पर हँसी की रेखा फूट पड़ी। हेमांगिनी बोली—उसके वंश वालों के क्रोध से मुझे बड़ा भय लगता है। उसके बाप के क्रोध तथा लाल चेहरे की याद आने से हाथ-पैर सिकुड़ने लगते हैं।

राय का मुँह भी गम्भीर हो गया। हेमांगिनी कहती जा रही थीं—अभी से अहीन्द को इन मामलों में सिर खपाने की क्या आवश्यकता है ? वह पढ़ता है, तो पढ़ता रहे। जगह-जमीन के मामले के लिये तुम हो, जितने भी रोगी हों,—उसके बाप हैं, ये लोग जैसा होगा, करेंगे।

इतना कहकर वे खड़ी हो गयी और अमल से बोलीं—चल, तू मेरे साथ चल, एक बार देख आऊँ तथा कह आऊँ ! उमा कहाँ है, वह भी चले।

\+ \+ \+

अहीन्द्र एक आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। पैरों की आवाजें सुन आँखें खोलकर देखा, उसकी माँ और उनके पीछे हेमांगिनी तथा अमल हैं। वह झटपट उठने लगा, हेमांगिनी बोलीं—ना, ना ; उठो मत।

तुम्हारा शरीर खराब है। तुम लेटे रहो।—इसके बाद क्या तुमने इतना क्रोध किया था कि तुम्हारे सिर में पीड़ा हो रही है? छिः बेटा, क्रोध चाण्डाल है, उसको इतना सहारा मत दो। तुम जिस माँ के पुत्र हो, उससे तुम्हारे शरीर में क्रोध रहना ही उचित नहीं है।

अहीन्द्र लम्बी साँस छोड़ कर बोला—आप लोगों को मालूम नहीं है उस कारखानेदार ने उन निरीह सन्थालों पर कैसा अमानुषिक अत्याचार किया है।

हेमांगिनी बोलीं—ठीक है, इसके लिये तुम्हारे पिता हैं, तुम्हारे—कहकर वे हँसने लगीं और हँसते-हँसते कहने लगीं—मामा कहना तो अब उचित नहीं, ससुर कहना होगा—वही सही, तुम्हारे ससुर हैं। वे उसका उपाय अवश्य करेंगे। गरीब प्रजा, उन्हें बचाना पड़ेगा। यह तो जमींदार का धर्म है। उस धर्म का त्याग वे कभी नहीं करेंगे। तुम्हारे पढ़ने का समय है, तुम पढ़ो-लिखो।

सुनीति बोलीं—"मैं कहती हूँ अहीन्द्र हमारी जिस जमीन पर सन्थाल खेती करते हैं, वह उनके साथ बन्दोबस्त कर दी जाय। इससे उनका दुःख कम होगा, और कारखानेदार को समझा देना पड़ेगा, कि उसमें फिर हाथ न लगाये।

अमल अब हँस कर बोला—फूफी जी का धर्म बड़ा अच्छा है और धर्म की महिमा से सब समस्याओं का समाधान पानी की तरह हो जाता है।

सुनीति लज्जित हो गयीं, किन्तु हेमांगिनी बोलीं—"भेड़े के सींग पड़ने से हीरे की धार टूट जाती है। 'तुम लोग गांव भर शाक्त-तांत्रिकों के वंशज हो, तुम लोग इस धर्म की महिमा क्या समझोगे? अरे, यदि सब लोग धर्म समझ पाते, तो क्या पृथ्वी पर इतना दुःख रहता?

अमल ने हँसकर उत्तर दिया—यह तो मैं स्वीकार करता हूँ म किन्तु फूफी जी के धर्म में कठिनाई कौन-सी है ? कठिनाई यही है f असहाय अवस्था में इस धर्म का पालन नहीं हो सकता। अर्थात् सा सृष्टि ही जिसका पेट है, वे ही जब नैनीगोपाल बनकर मक्खन के लि लोभ करते हैं, तब यशोदा को अपना धर्म छोड़ अन्य धर्म ग्रहण कर पड़ता है, कठिनाई में पड़कर नैनीगोपाल को खूंटी में बांधना पड़ता है पृथ्वी पर सभी मनुष्य इस सांसारिक सम्पत्ति के लिये गोपाल हैं—यह कठिनाई है।

अमल की बात के ढंग पर सभी हँस पड़े, केवल अहीन्द्र न हँसा वह जिस प्रकार आरामकुर्सी पर पड़ाथा, उसी प्रकार पड़ा रहा।

हेमांगिनी ने हँसते-हँसते कहा—किन्तु तू भारी पण्डित हो गय अमल। अहीन्द्र आँखें बन्द किये ही गर्दन हिलाते-हिलाते बोला—तुमने गलत समझा है अमल, माँ का धर्म यशोदा का धर्म नहीं, गांधा का धर्म है। जब भैया की गोली से नैनीपाल मरा, माँ उसके लि रोती थीं, किन्तु जिस दिन भैया को कालेपानी का दण्ड मिला, माँ व आँखों से एक बूंद आँसू भी नहीं गिरा। केवल पत्थर की मूर्ति व तरह बैठी रहीं।

सुनीति को उस समय लज्जा तथा दुःख दोनों ही हो रहे थे हेमांगिनी बोलीं—यही तो कहती हूँ, हजार अपराध करने पर भ तुम्हारी माँ किसी पर क्रोध नहीं करतीं। अन्याय करने से किसी के द पाने पर तुम्हारी माँ उसके लिये रोती हैं। तुम उसी माँ के पुत्र हो क्रोध करना तुम्हें शोभा नहीं देता।

अहीन्द्र कुछ देर तक सोचकर बोला—हाँ, क्रोध कर मैंने भूल क है। किन्तु मैंने अपनी इच्छा से क्रोध नहीं किया था। अकस्मात् जे कैसा हो गया। ऐसा न होने पर अन्याय-अविचार कहाँ नहीं है ? धन

गरीब इस पृथ्वी पर सर्वत्र हैं और अन्याय अविचार भी सर्वत्र है। कितने लोगों पर क्रोध करूंगा ?

हेमांगिनी बोलीं—ना, ना, ना। इससे काम कैसे चलेगा ? जहाँ तक हो सके, वहां तक अन्याय का विरोध करना ही पड़ेगा। और वह किया भी जायगा। उसको अच्छी तरह सिखाने के लिये वे चेष्टा कर रहे हैं। हमारी तरफ से अन्याय न हो, इसलिये मैं बार-बार कह रही हूँ ; कहती हूँ, जिसने अन्याय किया है, उसे न्याय-पथ पर चलकर दण्ड देना होगा, कूटनीति का सहारा न ले सकोगे।

अहीन्द्र ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप आँखें बन्दकर आराम कुर्सीपर लेटा रहा। हेमांगिनी बोलीं—क्या तुम्हारे सिर में अब भी पीड़ा है ? एक काम करो, सिर में ओडीकोलन की एक पट्टी लगाओ, न हो पिपरमेण्ट जल में डालकर सिर धो डालो। इसके बाद सुनीति की ओर घूमकर बोलीं—चलो, एक बार चक्रवर्ती महाशय से भेंट कर आऊँ।

सुनीति गहरी चिन्ता में पड़कर बोलीं—मुझे बहुत डर लगता है दीदी, यह सर्वनाशी दियारा है, जब इसके सम्बन्ध में कोई झगड़ा खड़ा होता है, मेरा हृदय थरथराने लगता है। अब अहीन इस दियारे के सम्बन्ध में क्या करोगे, उसका विचार मुझे अच्छा नहीं लगता। उसका मन कितना उदास हो गया है ?

हेमांगिनी हँसकर बोलीं—तुम इसका सोच मत करो। सब बातें ठीक हो जायँगी। हमारी उमा के स्वामी का भाग्य खूब अच्छा है। इसके अतिरिक्त उमा आजकल की पढ़ी-लिखी चालाक युवती है। विवाह होने दो, मैं देखूँगी, न कैसे उदास रहता है। देखो अभी मैं इसका मन ठीक कर देती हूँ। इतना कहकर उन्होंने जोर से पुकारा—अमल !

अमल के आ जाने पर बोलीं—एक काम भूल गयी हूँ ! अभी तुम्हें घर जाना पड़ेगा, जाकर दर्जी को कहला देना होगा, कि उमा के रूलि

का पैटर्न दूसरे ढंग का होगा ; आज ही उसे आरम्भ करने की बात है, वह उसे आरम्भ न करे। कल सवेरे मेरे पास आने से मैं सब बातें समझा दूंगी। उन्होंने इच्छा करके अमल को अहीन्द्र के पास से हटाकर घर भेज दिया।

अमल चला गया, हेमांगिनी ने ओडीकोलन का जल तैयार कर पुकारा उमा!

उमा मानदा के साथ बातें कर रही थी, भावी बहू को वह छोटे भैया के लड़कपन की बात सुनाकर अपनी महत्ता बढ़ा रही थी। उमा को बुरा नहीं लगा। माँ के पुकारने पर ऊपर आकर वह हेमांगिनी तथा सुनीति के सामने खड़ी हो गयी। हेमांगिनी बोलीं—यही ओडीकोलन का जल और कपड़े का एक टुकड़ा दे तो आ, हम दोनों चक्रवर्ती महाशय के घर जाती हैं। तू कपड़ा भिगोकर सिर में एक पट्टी ही बाँध दे। अहि के सिर में दर्द है।

उमा लज्जा से लाल न होकर भी बहुत संकोच में पड़ गयी। मुँह लालकर वह चुपचाप खड़ी रही, हेमांगिनी ने ओडीकोलन का वर्तन उसके हाथ में थमा दिया और कहा—तुम्हारे लज्जा करने से काम नहीं चलेगा। घर में ननद और देवर नहीं हैं, जिसको तुम्हारी सास भेज दे। जाओ दे आओ।

उमा अपने हाथ में पात्र लेकर चली गयी। हेमांगिनी ने सुनीति की ओर देखकर मुसकराते हुए कहा—यह हमलोगों का जमाना नहीं है। उस जमाने और इस जमाने में बहुत अन्तर है।

सुनीति बहुत मीठी और मलीन हँसी हँसकर बोलीं—किन्तु ढंग तो अच्छा नहीं है दीदी!

कुछ देर पहले हेमांगिनी की इच्छा अपने मुँह में कपड़ा देकर हँसने की हो रही थी, किन्तु सुनीति की बात सुन कर संभल गयीं। वे

बोलीं—अच्छा हो या बुरा, यही इस समय का ढंग है। इसके बाद क्या होगा, नाती-नातिन के समय तक जीते रहने पर देखने में आयगा। वे इस प्रसंग को समाप्त कर चुप हो गयीं। इसके बाद बोलीं—चलो चक्रवर्ती महाशय को देख आयें। आज एक बार भेंट हुई है, किन्तु आ गयी हूँ, तो फिर चलती हूँ।

अहीन्द्र आँखें बन्द किये पड़ा था, सो नहीं रहा था, किन्तु सचेत भी नहीं था। जाग्रत पृथ्वी के सम्पूर्ण सम्बन्ध से दूर अपने चिन्तालोक के एक बन्द कमरे में बैठा हुआ था। अकस्मात् उसके सिर पर एक शीतल स्पर्श हुआ, जैसे उसने उसे चिन्तालोक से बाहर निकलने को कहा। उमा ने उसे सोया हुआ समझ लिया था, उसने नींद टूटने के डर से पुकारा नहीं, और सावधानी के साथ ओडीकोलन की पट्टी सिर पर रख दी।

अहीन्द्र ने सपने से भरी हुई आंखों से उमा की ओर देखा।

उमा को लज्जा लगी, उसने लालमुँह कर कहा—ओडीकोलन की पट्टी है। मैंने सोचा था, नींद न टूटने पावे।

अहीन्द्र का मुँह मुस्कराहट से चमक उठा—उसने कहा, मैं सोया नहीं था।

सोये नहीं थे? तो इस प्रकार क्यों लेटे हो? जान पड़ता है सिर में अधिक दर्द है?

सिर का दर्द तो बहुत कम हुआ है; किन्तु मन जैसे Vacant हो गया है।

उमा ने मीठी हँसी हँस कर कहा—किन्तु साहब को इस प्रकार दुर्बल नहीं होना चाहिये। क्रोध चित्त की दुर्बलता का लक्षण है।

अहीन्द्र और अच्छी तरह हँस पड़ा। उसने कहा—यह बात तो तुम्हें अच्छी नहीं लगती हे बंगाली रमणी श्रीमती उमादेवी। स्मरण करो, पुराने समय में पर्वत-कन्या उमा के प्रियतम परमयोगी शंकर को भी

क्रोध हुआ था, और उसी क्रोध की आग में काम भस्म हो गया था।

उमा हँस कर बोली—क्या तुम उस कारखाने को भस्म करना चाहते हो ?

एक गहरी साँस छोड़ते हुए अहीन्द्र ने कहा—उस समय चाहा था, किन्तु अब नहीं चाहता। कुछ समय पहले मैंने मन की चिन्ता दूर करने के लिये रवीन्द्रनाथ की कविता "गान्धारीर आवेदन" पढ़ी थी। उसकी कुछ पंक्तियों ने ही जैसे मुझे रास्ता दिखा दिया। मैंने उन्हें कंठस्थ भी कर लिया है।—

"दण्डित के साथ—
दण्डदाता जब रो पड़े समान आघात से।
यही है श्रेष्ठतम विचार। जिसके प्राण में
पीड़ा कुछ होती नहीं, उसका दण्ड
है प्रबल का अत्याचार।"

मैं उसे दण्ड देना चाहता हूँ, उसके अन्याय, अत्याचार का विरोध करना चाहता हूँ, किन्तु उस पर विद्वेष रखना नहीं चाहता।

अहीन्द्र की बातें सुनते-सुनते उमा का मुँह उज्ज्वल हो गया। वह आजकल की युवती है ? उसका तरुण मन आदर्श के स्वप्न से चमक उठा। वह अहीन्द्र के गौरव से अपने को गौरववती समझने लगी।

इधर रामेश्वर के कमरे से लौटते समय, नीचे उतरने की सीढ़ी पर आड़ में खड़ी होकर हेमांगिनी और सुनीति चुपचाप उमा और अहीन्द्र को देख रही थीं। हेमांगिनी अपने को रोक न सकी—सुनीति को छूते हुए फिस-फिस कर बोलीं—देखा न ?

सुनीति बोलीं—फाल्गुन का प्रथम दिन ही ठीक कीजिये। मुझे अपने दुर्भाग्य से सदा भय लगता है। अहीन ही मेरा सहारा है।

अब मैं उसका भार उमा के हाथ में सौंप कर निश्चिन्त होना चाहती हूँ।

\+ + + +

रणभेरी से प्रोत्साहित चपल तुरङ्ग के समान हेमांगिनी उत्साह से चंचल हो उठीं! वह फाल्गुन में ही विवाह की तैयारी में व्यस्त हो गयीं। विवाह की तैयारी में जैसे किसी कल्पना-लोक की मादकता होती है। पास-पड़ोस वाले भी नींद हराम कर मतवाले हो उठते हैं। फिर भला वर-वधू की माताओं का क्या पूछना! सुनीति भी जग उठीं। राय के मन में भी उत्साह की सीमा नहीं थी। राधारानी के गायब हो जाने की लज्जा आग में भस्म होने लगी, किन्तु अभी उसमें पूर्णाहुति बाकी थी। किन्तु वे हैं पुरुष, उन्होंने सोच समझ कर वैशाख में ही विवाह का दिन निश्चय किया था। फाल्गुन तथा चैत्र के महीनों में जमींदारों के कामकाज की बड़ी झंझटें रहती हैं। बाकी की वसूली तथा सालाना हिसाब-किताब से उन्हें सिर उठाने की भी फुर्सत नहीं मिलती। इन झंझटों से निपटारा पाने के बाद ही वैशाख में विवाह करने की इच्छा थी।

किन्तु हेमांगिनी ने कुछ नहीं सुना, उन्होंने कहा—वैशाख महीने में बहुत गर्मी पड़ती है, शरीर पसीने से लथ-पथ करता है...

बीच में ही रोक कर राय ने हँसते हुए कहा—मैं स्वयं तुम्हें पंखा झलूँगा, पंखा लेकर पीछे-पीछे हवा करता फिरूँगा। तब तो ठीक होगा न?

नहीं, भोज-भात से किसी को बदहजमी हो जाय...!

घर में एक डाक्टर बुला कर रखूँगा, भोजन के बाद प्रत्येक को एक-एक खुराक हाजमा की दवा दे दिया करेगा।

हेमांगिनी कुछ क्रुद्ध होकर चली गयीं। जाते समय कह गयीं—वर की माता की राय तो माननी पड़ेगी! सुनीति तुम्हारा कितना भी सम्मान क्यों न करें, तुम हो वधू के पिता और वह हैं वर की माता।

राय ने हँसते हुए पंचांग निकाला।

फालगुन के पहले सप्ताह में ही शुक्ल पक्ष की तेरस को विवाह का मुहूर्त मिला। राय ने उत्सव के प्रबन्ध में कमी नहीं रखी, गाँव के लोग, प्रजा तथा अन्य लोगों को निमन्त्रण दिया गया।

संथालों को भी बारात के लिये निमन्त्रण मिला, किन्तु वे नहीं आये।

अचिन्त्य बाबू आये थे, उन्होंने फिस-फिसा कर कहा—रोक दिया है, जो आयगा, उस पर जुर्माना होगा।

चक्रवर्ती घराने के नायब ने अचरज से पूछा—किस ने रोक दिया है? कौन जुर्माना करेगा?

मुखर्जी साहब—मिस्टर मुखर्जी।

नायब ने गम्भीर स्वर से पुकारा कौन है रे—बागदियों को बुलाओ तो यहाँ।

अचिन्त्य बाबू बोले—धोखा खाइयेगा, महाशय धोखा। ऐसा मत कीजियेगा। संथाल मुखर्जी साहब की प्रजा हैं। आपकी प्रजा हैं मुखर्जी साहब और वे उनकी प्रजा हैं। संथाल उनकी प्रजा, मजदूर और आश्रित हैं, वे ही हैं उनके माँ-बाप, ब्रह्मा, विष्णु, महेश—सब कुछ।

अहीन्द्र ने भी यह बात सुनी। विवाह मण्डप में बैठे हुए उसकी भौंहों पर बल पड़ गया। चाँदनी में जगमगाते हुए दियारे की ओर देख कर उसे पीड़ा होने लगी। बयनामे की धूर्तता से संथालों को फोड़ लिया। आज कागज से मनुष्य बिक गया।—ऐसा देखकर वह चिन्तातुर हो उठा।

दियारे के बीच में लाल ईंटों वाली चिमनी उसे आज्ञा देने वाली तर्जनी की तरह जान पड़ी।

उस ओर यह समाचार सुन कर दिन भर उपवास तथा परिश्रम से थके हुए शरीर को इन्द्रराय ने सीधा कर लिया। किन्तु उनके कुछ कहने अथवा करने के पहले हेमांगिनी ने आकर कहा—आज उमा का विवाह है, आज तुम कुछ न कर सकोगे।

उनतीस

बहू-भात के अवसर पर इन्द्रराय ने फिर संथालों को निमन्त्रण दिया। किन्तु सन्थालों को उस निमन्त्रण के भी स्वीकार करने का साहस न हुआ। सब हितचिन्तकों ने मना किया था, हेमांगिनी ने भी बार-बार कहा था—देखो मैं मना करती हूँ, तुम वह काम मत करना।

जब उनको विवाह में आने नहीं दिया तो फिर निमंत्रण देकर उन्हें विपत्ति में झोंक रहे हो! राजा-राजा लड़ते हैं, बेचारे सिपाहियों के प्राण जाते हैं।

सुनीति ने भी करुणा भरी दृष्टि से देख कर कहा था—अब लड़ाई-झगड़ा करने का काम नहीं है भैया।

पर इन्द्रराय ने किसी की बात पर कान नहीं दिया—उन्होंने आँखें मूँद कर कुछ देर विचार किया, फिर गर्दन हिलाकर उनका अनुरोध अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा—सिपाहियों के प्राण जाने का दुःख झूठा है, इस प्रकार मरने के लिये ही उनकी पैदाइश हुई है। फिर हँसने लगे।

हेमांगिनी तथा सुनीति—दोनों ने इन्द्रराय की हँसी का ढंग देखकर चुप्पी साध ली। वह हँसी थी छुरे की धार के समान तेज तथा काटने-

वाली। धीरे धीरे वह हँसी उनके मुँह से मिट गयी; फिर उन्होंने गम्भीरता के साथ कहा—इस संसार में जिसका मान नहीं, उसकी जाति नहीं। यह चक्रवर्ती तथा राय घराने के इज्जत की बात है। इस सम्बन्ध में तुमलोग चुप रहो।

उन्होंने उस पार दियारे में केवल सन्थालों के पास ही निमन्त्रण नहीं भेजा बल्कि सभी लोगों—यहाँ तक कि विमल बाबूको भी निमन्त्रित किया। एक दरवान और एक नौकर निमंत्रण लेकर भेजा गया। विमल बाबू को छोड़ सबको जबानी निमंत्रण दिया गया, केवल उनको ही एक पत्र भेजा गया।

चूड़ा माँझी हैरान होकर कुछ देर खड़ा रहा; और सन्थाल चिन्ता के साथ उसका मुँह देख रहे थे, वकवादिनी स्त्रियों ने आपस में दो-चार बातें करनी आरम्भ कर दीं।

दरवान ने कहा—सब लोग जरूर आना।

अब चूड़ा बोला—कैसे आऊँगा बाबू! साहब के कारखाने में दोनों वक्त काम करना पड़ता है।

दरवान ने हँसकर कहा—अच्छा है, तो न आओगे न। और कुछ न कहकर वह चला आया। कुछ दूर चले आने पर चूड़ा ने पीछे से पुकारा—बाबू साहब, दरवान जी!

क्या है?

बाबू, साहब चिढ़ता है, कहता है उनके यहाँ जाने पर यहाँ से निकाल दूँगा।

अच्छा—मैं मालिक से कह दूँगा।

चूड़ा का हृदय भय से काँपने लगा। उसने कहा—नहीं वा साहब; ऐसा न करना, साहब चिढ़ेगा।

दरवान ने उत्तर नहीं दिया, घृणा के साथ हँसकर चला गया। चूड़ा

किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर खड़ा रहा, भय से उसके पैर थरथरा रहे थे, आह क्यों यह बात उससे कह दी !

सन्थाल नहीं आये ।

केवल आये ही नहीं, शाम से ही दियारे पर करताल, बाँसुरी तथा ढोल बजाकर उन्होंने उत्सव मनाना शुरू कर दिया । विमल बाबू हैं पक्के व्यवसायी, उन्होंने इस निमन्त्रण को अस्वीकार करने पर सन्थालों की उदासीनता की बात अच्छी तरह समझ ली थी । उन्होंने तीसरे पहर उन्हें बुलाकर उनके लिये बहुत अधिक शराब तथा दो सुअरों का प्रबन्ध कर दिया और कहा—तुम्हें खूब नाचना-गाना पड़ेगा ।

शराब की बात सुनने पर भी किसीने उत्साह नहीं प्रकट किया, वे चुपचाप उसका मुँह देखते रहे ।

विमल बाबू ने इसे देखकर कुछ नहीं कहा, उन्होंने अपने एकाउण्टेण्ट अचिन्त्य बाबू को बुलाकर कहा—दस रुपयों का एक वाउचर बनाइये । सन्थालों को बखशीश दी जायगी । शराब के दूकानदार को एक स्लिप दीजिये, जो सन्थाल जितनी शराब पीना चाहे, उसे दे दी जाय—अप टू टेन रुपीज़ ।

रुपये हाथ में पाकर सन्थालों का मन थोड़ा खुश हो गया । इसके बाद शराब की दूकान में आकर उनमें होड़ लग गयी । कोई किसीकी बात का जवाब नहीं देता था, इसलिये उत्तेजना से खूब तर्क-वितर्क होने लगा । सभी कहने लगे—

लाल बाबू क्या कहेंगे ?

उनके ससुर ? बाप रे, बाघ की तरह घूरते हैं ! वह क्या कहेंगे ? क्रोध में आकर पकड़ ले जायँगे । तब क्या होगा ?

इधर साहब क्रोध करते हैं, बाप रे, वे भी तो कम नहीं हैं । उसके पास बन्दूक है, गोली मार देंगे ।

इसी बीच शराब आ गयी। कुछ ही देर में उनका वाद-विवाद खूब बढ़ गया। सब कूद-कूदकर जोर से कह रहे थे—लाल बाबू के ससुर हमारा क्या करेंगे? हम उन्हें नहीं मानते। हमारे साहब हैं, उन्हींको हम मानेंगे, हुँ। इसके बाद स्त्रियाँ भी शराब लेकर शोरगुल करती हुईं अपने घरों की ओर लौटीं। ढोल, करताल तथा बाँसुरी बजाकर नाचने-गाने लगीं।

\+ \+ \+

उधर बहू-भात के खाने-खिलाने की झंझट अभी चल ही रही थी। फिर भी अधिक लोग भोजन कर चुके थे। अब बचे-बचाये परोसनेवाले, रसोइये और नौकर खा रहे थे। इन्द्रराय स्वयं उपस्थित होकर उनके खाने-पीने की देखभाल कर रहे थे। ढोल, करताल तथा बाँसुरी की आवाज कान में पड़ते ही वे गम्भीर हो गये। उन्होंने सारा मामला मन-ही-मन समझ लिया।

अमल दूसरे काम में लगा था, उन्होंने उसे खिलाने-पिलाने का भार सौंप कर रामेश्वर के घर में प्रवेश किया। रामेश्वर खिड़की के पास खड़े होकर कृष्ण पक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा के प्रकाश में संगीत से गूँजते हुए उस दियारा की ही ओर देख रहे थे।

राय ने पुकारा, रामेश्वर!

रामेश्वर चौंककर घूम पड़े, कौन हैं?

मैं हूँ, इन्द्र!

इन्द्र! आओ, आओ भाई। खिलाना-पिलाना सब हो गया? हाँ। मैं स्वयं खड़ा होकर सब खतम करने के बाद तुम्हारे पास आया हूँ। जो लोग काम करते थे, वे ही अब खा रहे हैं। अमल वहाँ देख रहा है। रामेश्वर ने व्यस्त होकर पुकारा, बहू! बहू!

राय हँसे, उमा के ससुर उसे पुकार रहे हैं। वधू के वेश में उमा

कमरे में आयी और पिता को देख थोड़ा हँसी, इसके बाद ससुर के पास जाकर बोली, मुझे पुकार रहे हैं ?

रमेश्वर बोले—हाँ रे, बेटी हो ! मेरी बेटी होकर तुम्हें कुछ भी ध्यान नहीं है। देखती नहीं हो, कौन आये हैं ! सारे दिन तुम्हारे घर काम करते रहे, अभी मुँह में जल भी नहीं डाले। लाओ हाथ, पैर और मुँह धोने के लिये जल और खाने का प्रबन्ध कर दो। इस कमरे में नहीं, दूसरी जगह। उनकी चकित आँखें एक बार अपने दोनों हाथों पर पड़ कर फिर लौट गयीं।

राय हँसकर बोले—हाथ-मुँह धो लिया है, खाने के प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं, रहने दो !

अचरज के साथ रामेश्वर ने पूछा—क्यों इन्द्र, खाने का प्रबन्ध क्यों न होगा !

तुम बिलकुल मूर्ख हो। राय ने हँसकर कहा—किसे गोद में लेकर खाने बैठूँगा ? ठहरो, मेरे नाती का आगमन होने दो, तब खाऊँगा।

बार-बार अपनी गर्दन हिलाकर राय की बात मानते हुए रामेश्वर ने कहा—हाँ यह तो ठीक, ठीक है। तुम जिस दिन नाती को गोद में लेकर खाने बैठोगे इन्द्र, उस दिन मेरे घर की जो शोभा होगी, उसकी कल्पना भी मैं नहीं कर सकता। कवि कालिदास ने भी उसकी उपमा नहीं दी है। कुमार कार्तिकेय को उन्होंने गिरिजा की गोद में देखा नहीं। सूर्यवंश के राजा तो पुत्र के युवा होने पर गृहस्थाश्रम में रहते ही नहीं थे, जान पड़ता है, मुझे ही एक श्लोक बनाना पड़ेगा।

उमा आजकल की युवती होने पर भी भारतीय बालिका है, वह लज्जा से पसीने-पसीने हो रही थी, उसके मुँह के शृंगार की सफेदी भी लाल लग रही थी, उसके माथे पर पसीने की बूंदें झलक रही थीं।

इन्द्रराय ने उसको बचा लिया, उन्होंने कहा—उमा, तू जा बेटी, देख तेरी सास ने खाया-पिया या नहीं। अपनी माँ से भी कह वह जल्दी-जल्दी अपना काम खतम कर ले।

उमा वहाँ से भागकर जैसे बच गयी। कमरे से निकल दालान के सन्नाटे में आकर प्रसन्नता की हँसी से उसका मुँह भर गया।

मकान के बाहर की ओर लम्बे बरामदे की रेलिंग पर सिर रख कर सुनीति चुपचाप खड़ी थीं। खाना-पीना समाप्त हो जाने पर वह छुट्टी पाकर अहीन्द्र के लिये रोने आयी थीं। उनका अहीन्द्र लम्बे शरीर, बलवान पेशी, उद्धत दृष्टि, ऊँचे सिर वाला अहीन्द्र, पहले तो उसी की बहू को इस मकान में मंगल घट लेकर आना चाहिये था। अहीन्द्र के विवाह के समय उसी की आदेश-ध्वनि से इसका प्रत्येक कोना गूँज जाना उचित था।

वह सर्वनाश न होता तो आज नेनीपाल भी खूब भोजन कर कहता, खूब खाया बाबू।

बेचारा नवीन बागदी तथा उसके कई साथी भी उन्हें याद पड़े। वह अपरिचित मुसलमान लठैत, जो नवीन की लाठी से मर गया, यदि जीवित रहता तो आकर बखशीश ले जाता, मिठाई-पूड़ी खा जाता। एक गहरी साँस छोड़कर सुनीति ने चन्द्रमा के प्रकाश में दियारे की ओर देखा। आज भी सन्थाल खाने नहीं आये; कारखाने का मालिक भी खाने नहीं आया; उस घर के भैया का मुँह लाल हो गया है। इसके बाद ढोल, करताल तथा बाँसुरी बजा कर वे कर क्या रहे हैं? ना, ना, ना वे बहुत अन्याय कर रहे हैं! वे चुपचाप दियारे की ओर देखती रहीं—इतने जोर से बाजा कभी बजा नहीं है। क्या वे झगड़ा मोल लेने को तैयार हो गये हैं? दियारा डंका बजाकर जैसे युद्ध घोषणा कर रहा है! भय से वे सिहर उठीं। पैर के नीचे का मकान जैसे काँप उठा, आंखों के सामने दियारा नाचने लगा।

उमा आकर उनके पास खड़ी हो गयी।

सुनीति ने मीठे स्वर में पूछा—उमा ? बहू ?

अंधेरे में धीमे से उमा ने कहा—आप भोजन करने चलिये माँ।

दूसरे क्षण ही इसमें लज्जा अनुभवकर उसने कहा—नीचे माँ आपको पुकार रही हैं। यहाँ माँ का अर्थ है उसकी माँ हेमांगिनी।

सुनीति जैसे भूल-सी गयी थीं। सिर ठीक न रहने के कारण नसों की चंचलता से दियारे को चक्कर करते देखा था, धरती के समान सहनशील उसका मन भी आज थर थर काँप रहा था। इसी क्षण बहू को देख उनकी चंचलता बढ़-सी गयी। अहीन्द्र के लिये वे व्याकुल हो उठीं। वे किसी भी अवस्था में उसे इस झगड़े में पड़ने नहीं देंगी। जैसे भी हो, वे उससे रोकेंगी। उस घर के भैया के पैरों पर उमा को गिरा देंगी। अहीन्द्र के दरवाजे पर उसका मार्ग रोकने के लिये वे स्वयं खड़ी होंगी।

उमा ने फिर पुकारा—माँ ?

उत्तर में सुनीति ने पूछा—अहीन कहाँ है बहू ?

उमा लज्जा से चुप हो गयी। सुनीति उत्तर के लिये राह न देख बाहर निकल गयीं।

अहीन्द्र पढ़ने के कमरे में बैठा था। एक मोटी पुस्तक के पन्नों में उँगली डालकर मानदा के मुँह की ओर देखते हुए वह हँसी के साथ उसका तिरस्कार सुन रहा था।

मानदा उसका तिरस्कार कर रही थी—नहीं, यह काम आपका अच्छा नहीं है भैया जी, आप जो कुछ कहें। आज का दिन आदमी की जिन्दगी का एक महान दिन है। आज पाँच युवतियाँ आयी हैं, हँसी मजाक करेंगी, गाना गायेंगी, आपका गाना सुनेंगी। फूल-सेज का दिन है। फिर आप पुस्तकों की ढेर में इस तरह मुँह छिपा कर बैठे हैं।

अहीन्द्र ने कुछ उत्तर न दिया, मीठी हँसी हँस कर उसकी ओर देखता रहा।

मानदा कुछ उत्तर न पाकर फिर बोली—आप उठेंगे कि नहीं, चलिये उठिये, कपड़ा उतारिये, युवतियाँ अधीर हो रही हैं। सुनीति ने घर में प्रवेश किया, मानदा ने नालिश की, यह देखिये आज एक मोटी पुस्तक में मुँह छिपाये बैठे हैं। इनको आदमी का ख्याल नहीं है। न जाने स्याही की उन टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियों में क्या रखा है?

सुनीति बोली—तू जा मानदा, मैं ले जा रही हूँ।

मानदा उबल पड़ी, अब बना। अब आप एक पहर धर्म कथा प्रारम्भ कर दीजिये। उधर सब युवतियाँ चली जाँय। नहीं रे नहीं! तू जा, मैं इसे लेकर पहुँचती। मन की अवस्था ठीक न रहने पर भी सुनीति ने मानदा के प्रेम भरे शासन की अधीनता स्वीकार कर ली।

अहीन्द्र ने भी सोचा, सुनीति उसे बुलाने ही आयी हैं। उसने पुस्तक में कागज का एक लम्बा टुकड़ा डाल कर उसे मेज पर रख दिया और कहा—जाता हूँ माँ। फिर हँसते हुए बोला, बड़ी अच्छी पुस्तक है, पढ़ते समय छोड़ने की इच्छा नहीं होती।

कौन पुस्तक है रे?

संसार के एक बहुत बड़े विद्वान की लिखी हुई है माँ, वे जर्मनी के रहनेवाले थे, उनका नाम था कार्ल मार्क्स। हम जिसे ऋषि कहते हैं, वे भी वैसे ही थे। धरती पर छोटे-बड़े का जो भेद भाव करोड़ों लोगों में दरिद्रता तथा मुट्ठी भर में भोग विलास, और धन-सम्पत्ति के लिये हिंस पशु के समान मनुष्यों में खींच तान है, उन्होंने इसका कारण बतलाया है और इसे दूर करने का रास्ता भी दिखाया है।

सुनीति अचरज के साथ अपने बेटे के मुँह की ओर देख रही थीं। पृथ्वी भर में सम्पत्ति के लिये छीना-झपटी, मनुष्य-मनुष्य में हिंसा-द्वेष,

करोड़ों की दरिद्रता दूर करने का उपाय इसमें है ! कुछ क्षण बाद उन्होंने पूछा—तो वह उपाय मनुष्य करता क्यों नहीं, अहि ?

अहीन्द्र हँसकर बोला—उस रास्ते में जमींदारों तथा धनियों का दल—हमलोग और विमल बाबू—बाधा के समान खड़े हैं, माँ। हमारी यह प्रभुता, यह पक्का मकान, जमींदारी की चाल, सुखविलासिता फिर न रह जायेगी, माँ। सम्पत्ति के लिये छीना-झपटी हमींलोग तो करते हैं, गरीबों की सम्पत्ति तथा धन छीनकर हमीं तो उन्हें गरीब बना देते हैं। इस दियारे की बात पर अच्छी तरह विचार करने से तुम समझ जाओगी। दियारा निकला नदी में, एकदम नयी मिट्टी का एक टुकड़ा—

सुनीति ने बीच ही में उसे रोककर कहा—मैं उस दियारे की ही बात तुमसे कहने आयी हूँ। दियारे के लिये फिर झगड़ा खड़ा हो गया, बेटा।

अहीन्द्र हँसा छोटी तीखी हँसी। उसने कहा—झगड़ा तो होगा ही माँ, एक ओर जमींदार और दूसरी ओर महाजन हैं। इनमें झगड़ा तो अवश्यम्भावी है।

सुनीति ने करुणा के साथ कहा—अरे, दियारे की हमें जरूरत नहीं है, अपने ससुर से कह, उसे बेच दें। यह दियारा हमारा सर्वनाश कर देगा !

अहीन्द्र बोला—यह बात मैं नहीं मान सकता, माँ। अपराध दियारे का नहीं है, अपराध है हमलोगों का।

तू जानता नहीं, अहीन्द्र, वह बात तुमलोग नहीं जानते, वह तुम समझ नहीं पाते। मैं समझती और देखती हूँ। सुनीति आतुरता के साथ देखने लगीं। उनको उस दृष्टि के सामने जैसे दियारे का रहस्यमय रूप प्रकट होकर तैर रहा था।

माँ का ऐसा भयपूर्ण मुँह देखकर अहीन्द्र ने स्नेह के साथ कहा—इस तरह डरती क्यों हो, माँ ? हमें किसका भय है ? अरी, तुम तो दियारा बेच दिया जाय।

मगर तुम इस लड़ाई-झगड़े में नहीं पड़ो बेटा। तुम्हारे वंश का क्रोध—परम्परा से—मैं बहुत डरती हूँ रे! क्रोध में आकर महीन्द्र ने कैसा अनर्थ कर डाला!

अहीन्द्र चुप हो रहा! नैनीपाल का खून से लथपथ शरीर उसकी आँखों के सामने नाचने लगा। इसके बाद ही कठघरे में अपने भैया को देखा, दुबला किन्तु चमकता मुँह, और बिना झुका सीधा शरीर! उसे जैसे उन्माद-सा हो आया। यह चालबाज कारखानेदार, जिसे सन्थाल स्त्रियाँ विषधर पहाड़ी साँप समझती हैं, अजगर कहती हैं, काश यदि उसके शरीर को भी निष्ठुर अजगर इसी प्रकार भूलुंठित कर देता।

सुनीति ने कातर स्वर में पुकारा—अहीन!

अहीन्द्र ने माँ के मुँह की ओर देखा। सुनीति बोलीं—चल तू, एक बार चल, तेरे पिता और उस घर के भैया शायद दियारे की ही बात कर रहे हैं। चल, तू चल।

× × + +

रामेश्वर के कमरे में पहुँचते ही माता-पुत्र चौंक पड़े। रामेश्वर का यह रूप अद्भुत था! अहीन्द्र ने तो ऐसा अपने जीवन में कभी नहीं देखा था; सुनीति ने बहुत दिन पहले देखा था। इस समय के अपने इस रूप की उन्हें कोई याद भी नहीं थी। अपने इस शरीर को लोहे की खूँटी के समान सीधा कर वह खड़े थे। दुर्बल हाथों की ऊँगलियों को बाघ के नख के समान चमकाकर वह राय से कह रहे थे—उसका सिर काट कर नहीं लाया जा सकता इन्द्र? अथवा अमावस्या की रात में माँ सर्वरक्षा के यहाँ बलि .....?

राय बोले—नहीं, अब वह जमाना नहीं रहा, रामेश्वर! इस समय हमें कानून के रास्ते पर ही चलना होगा। कानून की अवज्ञा करने से हमारा कल्याण नहीं होगा। हमारी खास जमीन, जो सन्थालों को

बँटाई पर दी गई है, उसे कल ही दखल में ले आना होगा। सन्थालों को भी अच्छी तरह सिखा दूँगा। और जो मैंने कहा है—कालिन्दी में कारखानेदार ने बाँध बाँधकर पम्प बिठाया है, उसको हटा देना होगा। जान पड़ता है, इसीको लेकर झगड़ा होगा।

अहीन्द्र ने कहा—माँ एक बात कहना चाहती हैं। वह नहीं चाहतीं कि दियारे के लिये लड़ाई-झगड़ा हो। उनका कुछ अजीब ख्याल हो गया है कि दियारे ही से हमारा अमंगल होता है। इसलिये उनका कहना है कि दियारा बेच दिया जाय।

वज्र के समान कठोर स्वर में रामेश्वर ने कहा—नहीं, हर्गिज नहीं। अत्यन्त उत्तेजना के कारण शरीर तथा मन की दुर्बलता भुलाकर रामेश्वर अकस्मात् पहले जैसे रामेश्वर हो गये।

राय सुनीति को लक्ष्यकर बोले—तुमसे ऐसी बात सुनने की आशा मैंने नहीं की थी, बहन। तुम कोई भय मत करो, जो करना होगा मैं करूँगा।

कमरे से निकलते ही अमल से भेंट हो गयी। अमल हाथ-पैर धोकर अहीन्द्र की ही खोज में आया था। आज उसकी स्वाभाविक मुखरता और बढ़ गयी थी। उसने कहा—बाप रे बाप, खूब थकाया मुझे! ठहरो, अपने विवाह में मैं इसका बदला ले लूँगा।

अहीन्द्र एक अर्थहीन हँसी हँसा। अमल की बातें जैसे उसके मन में घुसीं ही नहीं। उसने कहा—दियारे को लेकर फिर कल सवेरे झगड़ा होगा!

अमल बोला—लड़ाई-झगड़ा न कर उस करखानेदार को कोड़े लगाना चाहिये।

अहीन्द्र फिर हँसा। अमल बोला—विवाह खतम न होने तक लड़ाई-झगड़ा न किया जाता, तो अच्छा था। किन्तु लड़ाई

छोड़ उपाय ही क्या है ? वह जैसे एकदम दण्डमुण्ड का मालिक बन गया है !

अहीन्द्र ने हँसकर कहा—

वणिक का मान-दण्ड दिखाई देगा, प्रकाशमान रात्रि में
राजदण्ड रूप।

अतः उसके गतिरोध की चेष्टा राजकुल के लिये स्वाभाविक है।

अमल हँसकर बोला—तुम अपने को राजकुल से अलग रखना चाहते हो ? बुद्धदेव जो बन गये ! अरे उमा !

हँसकर बाधा देते हुए अहीन्द्र ने कहा—भय नहीं। इस युग के गौतम संसार त्यागकर निर्माण के लिये वन में नहीं जायँगे। इस युग का निर्माण समाज की आर्थिक अवस्था के भीतर छिपा है। घर में बैठकर भी ऐसी तपस्या हो सकती है, अतः उमा नामधारिणी गोपा को बुलाकर उसे सावधान करने की आवश्यकता नहीं है !

तीस

दूसरे दिन जमींदार दल दियारे पर हाजिर हुआ, सन्थालों के साथ बन्दोबस्त की गई जमीन आज दखल में लायी जायगी।

जमींदार के दल के लोगों को रुकावट नहीं हुई। बहुत आदमी जुट गये। गाँवभर के किसान अपनेआप हल-बैल लेकर आ जुटे। सबके आगे-आगे था रंगलाल। किसी दिन भी दियारे की उपजाऊ भूमि का लोभ किसानों के मन से दूर नहीं हुआ था। विवश होकर वे बैठे थे। अब खबर मिलते ही सन्थालों के परिश्रम से बनी हुई भूमि दखल करने के लिये वे तैयार हो गये। बागदी पाड़े के नवीन का दल तथा राय के लठैतों का दल चक्रवर्ती-घराने की जमीन की सीमा-पर हाथ में लाठी तथा सिर पर पगड़ी बाँधकर खड़ा हो गया। किसानों ने बड़े उत्साह के साथ बैलों को हाँककर हल चलाना आरम्भ कर दिया।

बेचारे सन्थालों ने उदासीभरी दृष्टि से अपनी कमाई हुई जमीन पर दूसरों के हल चलते देखा। उनकी स्त्रियाँ धाड़ मारकर रो रही थीं। कोई-कोई अपने मरदों को गालियाँ भी दे रही थीं, और कह रही थीं—लाल बाबू के साथ झूठमूठ क्यों झगड़ा किया? इसका ऐसा ही फल मिलना चाहिये। उधर साहब ने जमीन निकाल ली, इधर लाल बाबू

ने जमीन निकाल ली। अब क्या करोगे? मरना पड़ेगा, दाने बिना मरना पड़ेगा।

एक बुढ़िया ने कहा—मैंने तो तभी कहा था, तुम लोग श्रीवास मोडल से धान उधार न लो। वह पापी है। हिन्दू महाजन पुराने बाघ का बेटा है। वह हड्डियाँ भी चूस डालेगा। लो, वही हुआ न! हाय हाय! अब क्या होगा?

एक ने कहा—उसका क्या दोष है? उसने क्या किया?

दोष किसका है? वह यदि साहब के हाथ दस्तावेज न बेच देता, तो साहब जमीन कैसे लेता! वह कैसे जमींदार बनता?

एक युवती ने कहा—फिर लाल बाबू के विवाह में जाने से हम लोगों को कैसे रोकता?

चूड़ा तथा अन्य कई प्रमुख मांझियों की स्त्रियाँ रो रही थीं—हाय, सब जमीन-जायदाद चली गयी, अब दूसरों की मजदूरी करनी पड़ेगी, नहीं तो भीख मांगनी पड़ेगी। गूंगे भीख माँगते हैं, अन्धे भीख माँगते हैं, लंगड़े भीख माँगते हैं। उनको जैसे सब लोग थूकते हैं, उसी प्रकार हम को भी थूकेंगे, हाय रे, क्या किया जाय!

बागदी लठैत विरोधी न रहने के कारण शून्य के साथ लड़ाई करने लगे। बिना कारण लाठी फिरा, हाँक मार, उछल-कूदकर जैसे ताण्डव में मतवाले हो गये! वे आये थे घोर विरोध की सम्भावना से धीरे-धीरे सावधानी के साथ कदम रखते हुए, किन्तु शत्रुके अभाव से उनकी अबाध प्रसन्नता बाँध टूटे हुए जल के समान बह चली। भूमि पर हल टेढ़ीमेढ़ी चाल से जैसे दौड़ रहे थे। किसान बड़ी प्रसन्नता से बैलों को दौड़ाकर जैसे उन बैलों की दौड़ कर रहे थे। एक घण्टे में ही सारी जमीन को चीर-फाड़कर उन्होंने दखल ले लिया।

रायघराने तथा चक्रवर्ती-घराने के दोनों नायब भी उपस्थित थे।

इस मतवालेपन ने उनको भी नहीं छोड़ा था। उन्होंने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कालिन्दी का बाँध काटने का हुक्म दिया। पाइप-टाइप सब उखाड़ दो।

लठैतों का दल बाँध पर जा भिड़ा, इस बार वे जरा सावधान थे। कारखाने के कुली कुछ दूर पर दल बाँधकर बैठ गये! बहुत आश्चर्य है, कि उनमें कोई सामने नहीं आया। इन्होंने बाँध काट डाला और पाइप हटाकर छिन्न-भिन्न कर दिया, किन्तु वे दर्शकों की भाँति देखते रहे। जनता से दूर पेड़ के नीचे एक लम्बे शरीरवाली काली युवती भी यह सब देख रही थी, इन सब का कुछ भी प्रभाव उस पर नहीं पड़ा, उसके लिये इन सब का कुछ अर्थ ही नहीं था।

मुकर्जी साहब ने कल से सारी को बँगले के आउट हाउस से निकाल दिया है। उनका शौक पूरा हो गया। वह कुली बैरक में रहती है। सरकार बाबू शूलपाणि राय ने चुनकर एक अच्छा घर उसे दिया है। उसे खूब तेज शराब भी पिलाई है। उसका सिर अब भी कैसा हो गया है। वह केवल देख रही है, बहुत आदमी हैं, बहुत आदमी। बाप रे, लाल बाबू कहाँ हैं? नहीं, वे नहीं हैं। साहब कहाँ हैं? सामने बन्दूक लेकर वह तो अभी तक कहीं खड़ा भी नहीं हुआ है! बाप रे!

सचमुच विमल बाबू इतनी बड़ी ललकार से भरा हुआ उत्तर पाकर भी शान्त रहे। उन्होंने कुछ भी नहीं किया। उनको इसकी सूचना समय रहते ही मिल चुकी थी। अगले दिन रात के पहले पहर में ही यह खबर उनके कानों में पड़ गयी थी।

यह खबर सबसे पहले अचिन्त्य बाबू ने सुनायी थी। यह बात सुनते ही वे बहुत चिन्तित हो गये। राय तथा चक्रवर्ती-घराने के लठैत साधारण जीव तो नहीं हैं—वे हैं पूरे डाकू। नवीन बागदी की लाठी की एक ही चोट से उस मुसलमान लठैत का सिर अण्डे की खोल की तरह

फट गया ! ये सब भी तो उसीके समान हैं। उधर मिस्टर मुकर्जी के हिन्दुस्तानी कुलियों का दल साक्षात् यमदूतों का दल है। इस पर साहब की बन्दूक सदा भरी ही रहती है। यदि कुछ हटकर चूक जाय, तो किसे खतम करेगी, कौन कह सकता है ? दूसरे को लक्ष्यकर दूसरे को मार देना ही बंगालियों का अभ्यास है। और यदि बागदी लटैतों का दल आफिस पर भी चढ़ाई कर दे, तो बड़ा गजब हो जायगा ! उन्होंने उसी समय दूसरे दिन छुट्टी लेने का विचार किया और रात के समय ही दो आने नकद पैसे देकर एक डोम को साथ ले विमल बाबू के बँगले पर जा पहुंचे।

विमल बाबू उस समय सारी को बँगले से निकालकर पाँचवाँ पेग लिये बैठे थे। भौंहें चढ़ाकर उन्होंने पूछा—क्या बात है ? इतनी रात में ?

एक दरख्वास्त आगे बढ़ाकर अचिन्त्य बाबू बोले—जी, छुट्टी सर।

छुट्टी ? क्यों ?

जी, मेरी स्त्री—सर—

कितने दिनों के लिये ?

दो दिन, जी, दो दिन सर।

इसी के लिये रात में आप तंग करने आये हैं ? नानसेन्स ! दरख्वास्त उन्होंने फेंक दी। इसके बाद बोले—अच्छा दो दिन न आइयेगा।

अचिन्त्य बाबू ने विनय के साथ कहा—जी, और एक खबर है, जमींदार फौजदारी के लिये तैयार हो रहे हैं, सर।

फौजदारी ? विमल बाबू सचेत हो बैठे।

सब बातें विस्तार के साथ सुनाकर अचिन्त्य बाबू बोले—इसीलिये मैं और आया हूँ सर।

विमल बाबू गहरी चिन्ता में पड़ गये। अचिन्त्य बाबू वहाँ से चले आकर जैसे बच-से गये।

बहुत सोच-विचारकर विमल बाबू ने कुछ उद्यम प्रकट नहीं किया। सवेरे ही योगेश मजुमदार एवं जमींदारी के कामों में चतुर हरीश राय के साथ चार-पाँच दोवानी तथा फौजदारी मुकदमों की अर्जी का मसविदा तैयार कराने वे बैठ गये।

× × × ×

उस ओर बहुत दिनों के बाद चक्रवर्तियों के हाते में चहल-पहल होने लगी। किसानों और बागदी लठैतों से बरामदा भर गया। नायब-गुमाश्ता डेमी पर हिस्सेदारी की कबूलियत लिख रहा है; वह सब दखल की हुई जमीन किसानों को भाग पर दी जायगी। राय बहुत प्रसन्न होकर बैठे हैं, उनके मन की ग्लानि बहुत कुछ दूर हो गयी है। प्रसन्न मन ही वे किसी नये विरोध को कल्पना कर रहे हैं। बीच-बीच में गर्दन झुकाकर चिन्ता करते हुए अनजान में ही थोड़ा हिल रहे हैं।

सहसा एक तीखे गले की जोरदार आवाज उनके कानों में पड़ी। वे मुस्कुराकर सँभल गये। यह आवाज अचिन्त्य बाबू की है। वे किसी आदमी के साथ बातें करते, रास्ते पर जा रहे हैं। स्लो एण्ड स्टेडी विन्स दी रेस (धीमा और लगातार काम करनेवाला दौड़ जीतता है)। ईसप की कहानी पढ़ी है! हेयर और टारटॉइज की कहानी? अंगरेजों के कानून में 'नो लाठी एण्ड नो फाटी।' ब्रेन एण्ड मनी एवरी-थिंग! पाँच-पाँच फौजदारी मुकदमे। आल वेस्ट प्रोडर्स एन्गेज्ड। सीरियस चार्ज—रायटिंग, ट्रेसपास, और बहुत कुछ। अभी लोग लारी पर जा रहे हैं।

राय ने हँसकर जोर से पुकारा—ओ अचिन्त्य बाबू, अरे महाशय!

अपनी बात छिपाकर अचिन्त्य बाबू ने तुरन्त उत्तर दिया—आइ डोन्ट नो एनिथिंग—आइ डोन्ट नो।

और भी बहुत-सी बातें उन्होंने कहीं, किन्तु धीरे-धीरे बढ़ती हुई दूरी के कारण साफ सुनायी नहीं पड़ीं, अतः कुछ समझ में न आयीं। किन्तु इतने से ही इन्द्रराय ने बहुत कुछ समझ लिया। वे तनकर बैठ गये और लगे मूँछों पर ताव देने।

कुछ देर सोच-विचारकर वे बगल के घर में चले गये और पुकारा—मित्तिर!

चतुर मित्तिर ने भी बात कुछ-कुछ समझी थी। वे झटपट काम छोड़ सामने आकर खड़े हो गये। राय बोले—सदर जाने के रास्ते में गाँव के बाहर जो पुल है—

पक्के नायब ने तुरन्त उत्तर दिया—जी हाँ। तो फिर लारी नहीं जा सकेगी। आधा गिरा देने से ही काम चल जायगा।

इसका प्रबन्ध मैं कर रहा हूँ। हमारे यहाँ गैती है, आधे घण्टे में काम हो जायगा।

सबसे तेज चलनेवाले को सदर भेजो, मुकर्जी, सेन और सिंहो को वकालतनामे का बयाना भेज दो। उनसे बढ़कर फौजदारी का वकील कोई नहीं है। पहले हमारी ओर मामला दायर हो जाय।

नायब तेजी के साथ बाहर चला गया।

राय लौटकर बैठे और कुछ देर में ही फिर झूमने लगे।

घर के भीतर विवाह की चहल-पहल अभी बनी हुई है। बहू-भात हो गया है। आज बासो भोज है, परोसनेवालों, रसोइयों, नौकरों और अपने कुटुम्बियों को अच्छी तरह खिलाया जायगा। उनके साथ ही इस झगड़े में जानेवालों को भी भोजन कराने का प्रबन्ध हुआ है। विवाह-भाण्डार में गाँव के ही कई आदमी भाण्डारी का काम कर रहे हैं।

आदमियों का हिसाब करके वे जलपान नाप रहे हैं। मानदा चिल्लाती फिरती है, घर में दंगे की उत्तेजना को उसने अकेले ही कायम कर रखा है। सबकी देख-भाल कर रही हैं सुनीति। सवेरे से ही प्राणहीन प्रतिमा के समान बैठी हुई हैं। वह उस दियारे की ही उधेड़बुन में पड़ी हैं। वह सोच रही हैं कि दियारे का चप्पा-चप्पा खून से सना है, झगड़े में मरे हुओं के हाथ-पैर, और सिर चारों ओर बिखरे हुए हैं। बार-बार उनकी आत्मा उनसे ही पूछ रही है—यह किसका पाप है? इस भय से उनकी आँखें कभी-कभी अपने आप बन्द हो जाती हैं।

मानदा ने आकर घमण्ड के साथ सुनाया—दंगे में जीत हमारी हुई, माँ! मुकाबिले को कोई आया ही नहीं, सब दुम दबाकर घर में बैठे रहे। इतना कहते-कहते वह हँसी से लोट-पोट हो गयी।

सान्त्वना की एक गहरी साँस लेती हुई—सुनीति जैसे किसी बुरे सपने से जग पड़ीं और पूछने लगीं—तो खूनखराबी कुछ नहीं हुई मानदा?

हेमाँगिनी आकर मानदा के पीछे खड़ी थीं, वह हँसकर बोलीं—नहीं भाई। अब तुम उठो और ननदोई के स्नान की व्यवस्था करो। उमा हजार होनेपर भी लड़की ही है, इसपर वह कुछ जानती भी तो नहीं।

सुनीति हंसती हुई उठीं—अहा, दीदी, मनुष्य के प्राण निकल जानेपर फिर नहीं लौटते। सवेरे से ही मेरी छाती पर जैसे पत्थर पड़ा हुआ था।

नीचे इन्द्रराय की गम्भीर आवाज सुनाई पड़ी—क्यों रे उमा, कहाँ गयीं? तुम्हारे ससुर क्या कर रहे हैं?

उमा का इन्तजार न कर वह ऊपर आकर रामेश्वर के कमरे में चले गये। फिर कुछ ही देर के बाद हँसी के साथ जोर के स्वर में सुनाई

पड़ा—कारखानेदार फौजदारी मामला चलाकर हमें तंग करेगा ! इसके बाद अपमान भरी हुई हँसी सुनाई पड़ी ।

उस हँसी की आवाज के साथ नीचे बागदी लठैतों के स्वर मिलने से सारा महल भर-सा गया । भाण्डार के द्वार पर जलपान लेते समय वे गोलमाल कर रहे थे । मानदा ने रेलिंग पर झुककर कहा—तुम लोग बहुत चिल्लाते हो !

उस विभीषण मजुमदार का एक हाथ तोड़कर आये होते, तो जानती, अथवा एक कतार दाँत—

कहते-कहते वह सकुचा गयी ।

जोर-जोर से गला साफ करने की आवाज से मालूम पड़ा कि राय बाहर आ रहे हैं । राय ने कमरे से निकलकर पुकारा—उमा ?

मानदा ने तेजी से जाकर उमा को बुला दिया । उमा के सामने आते ही उसके सिर पर प्रेमपूर्वक हाथ फेरते हुए राय ने कहा—अच्छी बहू बन गयी हो बेटी ! तुम तो दिखाई ही नहीं देती । इतना कहकर उन्होंने उसके मुँह की ओर देखा और देखते ही विस्मित तथा शंकित हो गये । उमा का मुँह प्रातःकाल के चन्द्रमा के प्रकाश के समान आर्द्र एवं पीला हो गया है । दूसरे ही क्षण याद पड़ा, कल रात में फूल सेज थी । वे हँसकर बोले—अपनी सास से कह दो—रामेश्वर के स्नान-पूजा का प्रबन्ध कर दें । दुर्बल शरीर थक गया है, तुम लोग भी नहा धोकर आराम करो ।

राय ने पहले उमा को ही रामेश्वर की सेवा-शुश्रूषा के लिये बुलाया था । किन्तु उसकी चेष्टा उदास देखकर अब सुनीति से कहने को कहा । आज रामेश्वर की अवस्था पिछली रात के समान नहीं है । राय की हँसी और प्रसन्नता उन्हें छू भी न सकी । आज जैसे रोग बढ़ गया है ।

राय ने उमा को देखा सही, पर उसके असली कारण को नहीं

पहिचान सके। उमा का चेहरा जो पीला दिखाई देता था, वह फूल सेज की थकान के कारण नहीं, बल्कि अपने हृदय के अभिमान तथा दुःख के ताप से उसके मुँह का सौन्दर्य फीका हो गया था। जीवन के इस प्रथम मिलन-दिवस के अवसर पर उसको अहीन्द्र में अनेक बातों का अभाव मिला। यहाँ तक कि इतने दिनों का घनिष्ठ मित्र-अहीन्द्र भी उसे नहीं मिला। शान्त, उदासीन, अस्वाभाविक और अपरिचित अहीन्द्र मिला। आँखों के सामने होने पर भी वह दिखाई नहीं पड़ता। सवेरे से लेकर अब तक वह बरामदे में टहल रहा है, कितनी बार उसकी आँखों से इसकी आँखें मिली हैं, उमा की आँखों से उसका अभिमान स्पष्ट प्रकट हुआ है, किन्तु अहीन्द्र की दृष्टि जैसे हरी और गूँगी हो गयी है; कोई बात उसे दिखाई ही नहीं देती, वह कुछ उत्तर भी नहीं दे पाती।

मानदा पास में ही खड़ी थी, राय के नीचे जाते ही बोली—चलिये बहूजी, स्नान कर लीजिये! आपका मुंह बहुत सूख गया है।

एकतीस

केवल इन्द्रराय ने ही नहीं, हेमांगिनी ने भी भूल की।

फूल-सेज के दो दिन बाद ही वर तथा कन्या के जोड़े को कन्या के नैहर में आने का प्रचलन है। 'अष्ट मंगला' के बारे विधान कन्या के नैहर में ही पूर्ण होते हैं। अतः अहीन्द्र तथा उमा भी राय के घर पधारीं। हेमांगिनी पूर्ण परिचित होकर भी उमा को अच्छी तरह परख नहीं पाईं। नदी के किनारे के निवासियों की तरह निन्दारूपी बाढ़ का भय कन्या की माता को हर घड़ी रहता ही है। इसलिये हेमांगिनी ने कन्या की जननी के कर्त्तव्य का बड़ी कठोरता के साथ पालन किया। वह उमा के पास जाकर किसी दिन बैठीं तक नहीं। मनुष्य के इस चंचल मन का क्या भरोसा है? कोई शायद कभी कह बैठे कि वह अपनी कन्या को छिपे-छिपे कुछ सिखा ही जाती हैं। वह अपने घर कन्या का मुँह देख पहले तो सिहर उठीं, किन्तु दूसरे ही क्षण हँस पड़ीं, अपने पति की बात उन्हें याद आ गयी। राय ने उस दिन घर आते ही हेमांगिनी से कुछ कहा था, जिसके उत्तर में हेमांगिनी ने हँस कर कहा था—वे दोनों हमलोगों की भाँति अपरिचित तो नहीं हैं। पन्द्रह वर्ष का वर तथा दस वर्ष की कन्या भी नहीं है।

राय ने हँसकर कहा—हाँ, यह तो ठीक है।

हेमांगिनी ने हँसकर उमा के सिर से खिसके हुए केशों को उँगली

से ठीक कर दिया। उन्होंने कहा—स्नान तथा भोजन के बाद अच्छी तरह सो जाओ।

उमा बिल्कुल अबोध बालिका नहीं है। उसने मां की इस गूढ़ हँसी का अर्थ भांप लिया। दुःख और अभिमान से द्रवित होकर उसकी आँखें आँसू बरसाना चाहती थीं। किन्तु, अपनी सारी शक्ति लगाकर उसने उन्हें रोक लिया और सिर झुकाकर धीरे-धीरे वह वहाँ से चली गयी। मां ने सोचा, कन्या लजा रही है। वह थोड़ी हँसी का बहाना बनाकर अहीन्द्र को जलपान देने चली गईं। इधर विवाह के सिलसिले में आयी हुई तरुणियाँ उमा के साथ ही चली आईं; क्योंकि आज उमा उन लोगों के बीच ही रहेगी। भाण्डार की ओर जाते-जाते हेमांगिनी फिर हँस उठीं। अमल घर पर नहीं है, इन्द्र राय ने उसे सदर में भेजा है। उस दियारे के मामले को लेकर वह स्वयं मजिस्ट्रेट के यहाँ दरबार करने गया है। वह चक्रवर्ती-घराने का प्रतिनिधि बनकर गया है। कारखानेदार के अत्याचार से दियारे की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही है, बलपूर्वक नदी में बाँध बाँधकर पानी उठाने के कारण जल की कमी से खेती सूखी जा रही है। गरीबों का जीना भी दूभर हो रहा है। अहीन्द्र को वहाँ जाना था। किन्तु विवाह के आचार और प्रचलन के अनुसार वह न जा सका। अतः चक्रवर्ती-घराने के प्रतिनिधि के रूप में अमल को जाना पड़ा। ससुर-दामाद दोनों ऊपर के कमरे में बैठकर इसी की चर्चा कर रहे थे! बात-चीत एकतरफा थी, राय अकेले बोल रहे थे। अहीन्द्र को सारी बातें अच्छी तरह समझा रहे थे।

अहीन्द्र चुपचाप बैठकर सब सुन रहा था। हेमांगिनी ने जलपान लाकर कहा—तुम तो एक अजीब-से आदमी हो! जमींदारी, मुकदमे, लड़ाई-झगड़े को छोड़कर कोई दूसरी बात ही नहीं है? अमल को तो सदर में भेज दिया, अब अहिन को हाईकोर्ट में भेज दो।

राय हँसकर बोले—जानती हो, अकबर बादशाह बारह वर्ष की उम्र में ही हिन्दुस्थान के तख्त पर बैठा था ? जमींदार का बेटा जमींदारी का काम नहीं सीखेगा, तो करेगा क्या ? उसे जिलेभर के हाकिमों से जान-पहचान रखनी होगी, माल-जायदाद कहां-क्या है, जानना पड़ेगा, और थोड़े-बहुत लड़ाई-झगड़े भी सीखने पड़ेंगे। जानती भी हो—'भूमि बाप की नहीं, भूमि दाप की है ?' थोड़ा चुप रहने के बाद हँसकर राय ने फिर कहा—दंगा कहो, चाहे मारपीट कहो, असल में है यह युद्ध। राजा-राजा में होने से इसे युद्ध कहा जाता है और जमींदार-जमींदार में होने से दंगा। असल में हमलोग राजा हैं। छोटे जरूर हैं, – जैसे गरुड़ चमकीला होता है, वैसे ही और क्या ? इतना कह वे जोर से हँसने लगे। इसके बाद उठकर बोले—तुम यहाँ बैठो। मैं जरा देखूं, अभी जमींदारी के बहुत काम बाकी हैं। अमल भी इसी बीच आ पहुँचेगा।

अमल आया तीसरे पहर—तीसरे पहर के अन्तिम भागमें। अहीन्द्र उस समय टहलने चला गया था। अपने स्वभाव के अनुसार अमल ने शोरगुल मचाना शुरू कर दिया। वह उमा को एक नये नाम से चिल्ला-चिल्लाकर पुकारने लगा—उमनी, उमनी, अरी ओ उमनी !

हेमांगिनी ने भौंहें चढ़ाकर कहा—यह क्या ? उमनी-उमनी क्या है रे !

अमल ने हँसकर कहा—नया नाम मैंने ईजाद किया है।

भैया के आने से उमा कुछ प्रसन्न हो उठी। वह हँसती हुई अमल के पास आयी। अमल बोला—तुम्हारा नाम मैंने रखा है उमनी। पसन्द है न ? इतना कहकर वह अपना सूटकेस खोलने लगा।

उमा ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। वह हँसती आई और फिर हँसती ही रही। अमल के आने से उसका मन बहुत आश्वस्त था।

अमल ने सूटकेस के ताले में चाबी डालकर कहा—बोलो—जल्द बोलो, yes or no !

उमा ने अब कहा—खराब नाम किसी को पसन्द आता है क्या ?

मैं यह सब नहीं जानता, Say yes or no.

गर्दन हिलाकर उमा बोली—no !

No ! अच्छा रहने दो, अब तुम्हें नहीं मिलेगा। अमल ने सूटकेस से हाथ हटा लिया।

उमा ने उत्सुकता से पूछा—क्यों ?

अब तुम इसे जानकर क्या करोगी ?

अत्यन्त व्यग्र होकर उमा ने कहा—ना, ना, ना। तब no नहीं, no नहीं। yes—yes !

अमल ने सूटकेस खोलकर निकाला सन्थाल जुलाहे का बुना हुआ मोटे सूत का एक सन्थाली कपड़ा—दूध की तरह सफेद जमीन, लाल पाढ़वाली साड़ी थी। उसे देखकर उमाकी आँखें चमक उठीं। अमल उमा के हाथ में साड़ी देकर बोला—Queen of Santhals. महिमामयी उमनी देवी ! जा पहन ले, इसे अभी पहन ले, मैं देखूँ कि तू कैसी लगती है।

उमा वहाँ से चली गयी, उत्साह के साथ नहीं, वरन् धीरे-धीरे मंथर गति से।

अमल हँसकर बोला—तीन दिनों से मैं देख रहा हूँ, उमनी की ३३ वर्ष की उम्र हो गयी है। इसे लज्जा आ गयी है। हेमांगिनी ने हाथ चमकाते हुए कहा—तुझे अक्ल कभी नहीं आयगी अमल। ले, मुँह-हाथ धो ले। अहीन टहलने गया है, तू भी थोड़ा टहलकर उसके साथ चला आ।

अच्छी बात ! तब तो उमनी देवी को साथ ले जाऊँगा। इतना कह वह पुकारने लगा—उमनी ! उमनी !

हेमांगिनी बोलीं—ना। गांव में ही ससुराल है। तुम्हारे मनोनुकूल

अब नहीं होगा। ससुराल की बात न भी हो, तब भी तुम्हारे बाप भी यह देखकर क्रोध करने लगेंगे।

उमा सन्थाली साड़ी पहनकर आ गयी। हेमांगिनी हँसकर बोली—जा, जा, छोड़कर फेंक दे।

अमल बोला—ना, ना, एक काम कर उमनी, सन्थालों की तरह केश बांध ले—बालों में गेंदे के फूल पहन ले। मैं इसी रूप में तुम्हारा एक फोटो ले लूँ।

फोटो के नाम से उमा प्रसन्न हो गयी।

× × × ×

अमल कालिन्दी के घाट पर आया। वह ठीक जानता था कि अहीन्द्र कहाँ मिलेगा। वह घाट से थोड़ी दूर एक करार के पास हरी घास पर बैठा था। करार के उस पार दियारे पर सन्थालों की बस्ती दिखाई दे रही थी। बस्ती शान्त थी, दियारे के दूसरी ओर हिन्दुस्तानी कुलियों की बस्ती में एक ढोल बज रहा था। देशी शराब की दूकान से शोर-गुल सुनाई दे रहा था। अहीन्द्र अचल बैठकर उस पार देख रहा था। अमल दबे पाँव आकर उसके पीछे खड़ा हो गया। किन्तु इससे भी अहीन्द्र की एकाग्रता में बाधा नहीं पड़ी। अमल ने अहीन्द्र के पास बैठकर कहा—क्या बात है? ध्यान करते हो क्या? इस आकस्मिकता से अहीन्द्र चौंका नहीं, उसने विरक्ति के साथ ही अमल को नीचे से ऊपर तक देखा, इसके बाद हँसकर कहा—तुम हो?

हँसकर अमल बोला—हाँ, मैं हूँ। किन्तु तुम्हारी अवस्था तो ध्यानी बुद्ध के समान हो गयी है!

अहीन्द्र भी थोड़ा हँसा, फिर बोला—दियारे की बात सोच रहा हूँ। देखता हूँ, वह दियारा ही तुम्हें खा जायगा। उसकी चिन्ता छोड़ो, उसकी व्यवस्था मैं कर आया हूँ। कलेक्टर ने बड़े ध्यान से मेरी बातें

सुनी हैं। अर्जेण्ट नोट देकर उन्होंने एस० डी० ओ० को इन्क्वायरी करने को लिखा है। सन्थालों की भूमि के सम्बन्ध में एक खास कानून है। उसके अनुसार उनकी जमीन बिक नहीं सकती। दाट पुवर इनोसेण्ट गर्ल—उस सारी-की भी बात मैंने कलेक्टर से कह दी है।

अहीन्द्र के मुँह पर विचित्र हँसी छा गयी। उस हँसी को देख अमल आहत और विरक्त हो गया। उसने कहा—तुम हँस रहे हो?

हँसता हूँ उस आदमी पर तुम्हार क्रोध देखकर।

क्या क्रोध कर मैंने कोई अपराध किया है?

अपराध नहीं, अविचार। अर्थात् वह नया अन्याय क्या कर रहा है? बहुत समय से पृथ्वी पर शक्तिशाली दुर्बलों तथा अबोधों पर जो अत्याचार करते आ रहे हैं, उससे अधिक उस बेचारे ने क्या किया है? सम्राट्, बादशाह, राजा, दिग्विजयी से लेकर रायहाट के जमींदार-वंश के पुरखाओं ने भी ऐसा ही आचरण किया है। जिसकी जितनी शक्ति थी, उसने वैसा ही किया। तुम-मैं भी अवसर पाकर, शक्ति रहने पर, वैसा ही करते, शायद भविष्यत् में करेंगे।

अमल आश्चर्य से स्तम्भित हो गया, केवल अचरज ही नहीं, बल्कि दिल में एक जलन का अनुभव किया। उसने तनिक गर्म होकर पूछा—ह्वाट डू यू मीन?

हँसकर अहीन्द्र बोला—संसारभर में प्रारम्भ काल से जो होता है, इस दियारे को लेकर भी वैसा ही कुछ हुआ।

अमल अब शान्त हो गया। अहीन्द्र की बात और उसकी करुणा से भरी हुई आवाज ने उसके हृदय को पड़ोसी की शक्ति की तरह छू लिया, ढँक लिया। उसके मुँह पर मुस्कराहट तो बनी रही, किन्तु मन ही मन वह गहरी चिन्ता में डूब गया।

कुछ देर बाद चिन्ता को बलात् दूर करते हुए उसने कहा—हंग योर विश्व प्रेम ! अब संध्या हो गयी, चलो।

अन्यमनस्कता के साथ अहीन्द्र बोला—ऐं !

चलो, चलो, सन्ध्या हो गयी। ऐसी विकट चिन्ता ! चलो, घर चलें।

सपने से मत्त की तरह अहीन्द्र उठा, और अमल के साथ उसके मकान का रास्ता लिया। चलते-चलते अमल बोला—दिस इज़ बैड, अहीन।

अहीन्द्र ने कोई उत्तर नहीं दिया।

अमल उसकी ओर घूमकर बोला—भो-भो चिन्ताकुल मनुष्य !

हाँ !

अरे राम-राम ! इस तरह तुम पागल हो जाओगे।

अहीन्द्र ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। उसके कानों में कोई बात जैसे पड़ती नहीं थी, शब्द कान के बाहरी भाग को छूते थे, किन्तु अर्थ मन तक नहीं पहुंच पाता था। उसके मन की अवस्था 'भाटे' के समुद्र के समान थी, उसका परिचित पृथ्वी का किनारा जैसे समुद्र में मिल कर एक हो रहा था, वह दूर से बहुत दूर अस्पष्टता तथा अपरिचित होता जा रहा था। किस गुप्त रास्ते से, कैसे जीवन में जाल की ऊँची लहरें नीचे जाकर समाप्त होती जा रही हैं, यह रहस्य उसे ज्ञात नहीं है।

उमा उत्तेजित होकर एक ड्रेसिंग टेबिल का कोना पकड़कर खड़ी थी। उसके वेश-भूषा तथा शृङ्गार को लेकर इस बीच एक तूफान आ गया था। वह किसी प्रकार अपनी वेश-भूषा में परिवर्त्तन नहीं चाहती ; जैसी है, वैसी ही रहेगी। हेमांगिनी ने पुत्री पर बहुत क्रोधकर पुत्री को उसी दशा में छोड़ दिया। उन्होंने कहा—घी से भूँजो, नीम का पात, नीम न छोड़े अपनी जात। इसमें तुम्हारा क्या दोष है ! तुम्हारे वंश की आदत ही ऐसी है।

उमा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। किन्तु उसकी दोनों काली बड़ी-बड़ी आँखें बिजली से प्रकाशित बादल के समान हो गयी थीं। हेमांगिनी उस ओर दृष्टिपात न कर चली गयीं। उनकी भौजाई, उमा की मामी ने उनको शान्तकर मीठे स्वर में कहा—ननदजी, यह सब आजकल का फैशन है। तुम क्रोध क्यों करती हो? हमारी आँखों को खराब लगने से क्या होगा, उसको आँखों में जब यह सब अच्छा लगता है?

उमा उसी समय से ड्रेसिंग टेबिल का कोना पकड़कर उसी भांति खड़ी रही—उसी प्रकार सन्थालों की तरह चोटी गायब कर, केश बँधे हुए, कान के ऊपर गेंदे के फूल, मोटे सूते की सन्थाली साड़ी पहने। उसे पहली नजर में पहचानना कठिन है। अकस्मात् उमा चौंककर हट गयी। आईने में अमल तथा अहीन्द्र की छाया पड़ी। उन दोनों के घर में आते ही उमा हैरान हो गयी। सन्थाली साड़ी घूंघट निकालने लायक लम्बी नहीं थी। अमल हंसकर बोला—लेट मी इण्ट्रोड्यूस उमनी देवी एण्ड लाल बाबू। उमा ने तेजी के साथ बगल से भागने की चेष्टा की। किन्तु अमल बोला—बैठ मुँहजली, बैठ। एकदम जैसे नाइन्टिंथ सेंचुरी की बहू हो।

अनमना अहीन्द्र ने भी इस नये साज में सजी हुई उमा को देखा तो सब बातें भूल उसकी ओर देखने लगा। उसकी आँखों से मुग्धता प्रकट होने लगी। वह प्रसन्नतापूर्वक हँसकर बोला—बैठो न उमा। ओह, जान पड़ता है, तुम घूँघट काढ़ने के लिये हैरान हो रही हो। किन्तु सन्थालिनें तो कपड़े के आँचल से घूँघट नहीं काढ़तीं। मैं दिखला देता हूँ।

खूँटी से उमा का लाल गमछा लेकर अहीन्द्र बोला—वे गमछे से इस तरह घूँघट काढ़ती हैं।

आगे बढ़कर उसने उमा के सिर पर घूँघट काढ़ दिया।

अमल हँसकर बोला—ठहरो, ठहरो, चाय का प्रबन्ध कर लूँ। इसके बाद उमा को आज सन्थाल-स्त्रियों की तरह नाचना पड़ेगा।

इतना कहकर वह बाहर चला गया।

उमा गर्दन झुकाकर खड़ी थी, अहीन्द्र ने अकस्मात् अनुभव किया कि वह रो रही है। उसने विस्मय के साथ उसका चिबुक पकड़कर जब मुँह ऊपर उठाया, तब देखा कि उमा की आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है। अहीन्द्र ने आँसुओं से भींगा हुआ उसका मुंह छाती से लगाकर अचरज से पूछा—तुम रोती हो; क्या हुआ है उमा?

उमा ने अहीन्द्र का हाथ अपने चिबुक से हटा दिया और उसकी ही छाती में अपना मुंह छिपाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

अहीन्द्र ने स्नेह से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—क्या हुआ है तुझे, जो मुझे न कहेगी?

अब इसे जान पड़ा, उसने उमा की उपेक्षा की है—दुःख की अधिकता से उसका आवेग बढ़ गया।

उमा ने उसकी छाती में ही अपना सिर हिलाया। अहीन्द्र ने दोनों हाथों से फिर उसका मुंह पकड़कर ऊपर उठाया। उमा ने आँखें बन्द कर लीं। अकस्मात् अहीन्द्र ने लगातार चुम्बनों से उसे अस्थिर कर दिया।

आकाश में जैसे पूर्णचन्द्र निकल आया, जीवन का खाली बालू से भरा हुआ प्रदेश जल की अधिकता से भर-सा गया।

× × ×

दूसरे दिन अभी अंधेरा अच्छी तरह दूर नहीं हुआ था। उमा और अहीन्द्र दोनों ने देखा, काली-काली छाया के समान कतार बाँधकर कुछ लोग सामने के रास्ते से जा रहे हैं। रातभर उमा और अहीन्द्र को

नींद नहीं आयी थी। अहीन्द्र ने उमा से अपने हृदय के सम्पूर्ण विचारों और पीड़ाओं की बात कह दी थी। उमा गाँव की कोई अज्ञान लड़की नहीं है, वह शहर के स्कूलों में पढ़ी हुई है। अहीन्द्र की बातों का पूरा अर्थ नहीं जानने पर भी आभास से उसने बहुत-कुछ समझ लिया। उसके तरुण हृदय का कोना-कोना अहीन्द्र के गौरव से गौरवान्वित हो उठा। अहीन्द्र ने छाया के समान वह काली कतार देखकर उमा से पूछा—कौन हैं?

उमा ने शंका के साथ कहा—डाकू तो नहीं हैं?

अहीन्द्र उठा और बाहर बरामदे की रेलिंग पर झुककर खड़ा हो गया, देखा कि बालक-वृद्ध, पुरुष-स्त्री और पशु एक कतार में जा रहे हैं। पुरुषों के कन्धों पर भार, स्त्रियों के सिरों पर बोझा, गाय-भैंसों की पीठों पर बोरे में भरे हुए सामान हैं, और वे सब चुपचाप चले जा रहे हैं। पीछे-पीछे कुछ बैलगाड़ियाँ भी जा रही हैं। इनके बीच कहीं कुछ मुर्गियाँ भी थीं, जो रात शेष होने का आभास पाकर एक के पीछे एक बोल उठीं। उमा भी अहीन्द्र के पास ही खड़ी थी। उसने पूछा—सन्थाल?

ऐसा ही जान पड़ता है।

फिर दूसरे ही क्षण उसने पुकारकर पूछा—कौन हैं?

तुम सब कौन जा रहे हो?

स्त्रियों की आवाज से दिशाएँ गूँज उठीं। किन्तु उसमें एक ही शब्द अहीन्द्र तथा उमा ने समझा—लाल बाबू।

एक पुरुष ने उत्तर दिया—हम हैं माँझी लोग।

माँझी? कहाँ जा रहे हो तुम लोग?

यहाँ से चले जा रहे हैं बाबू, उसी मोरक्षी के नये दियारे में।

उठे जा रहे हो? यहाँ से चले जा रहे हो?—एकदम आर्द्र स्वर से उमा ने पूछा।

जी हाँ।—बड़ी सरलता के साथ उत्तर मिला।

अहीन्द्र अब तक मौन था। वह एकटक उन्हीं की ओर देख रहा था, उसके मुख पर छुरे की तरह तेज मुस्कराहट फैल रही थी। फिर जीवन का उत्साह संकुचित होकर भाटे में घटता जा रहा था।

उमा के प्रश्न का उत्तर मिला—वही बदजात चूड़ा माँझी और कई घर रह गये। वे लोग साहब से मिल गये हैं, उसके कारखाने में काम करेंगे। —कहते-कहते दल चला गया। मनुष्य तथा पशु के पैरों और गाड़ियों के पहियों से धूल उड़कर आकाश में फैल गयी। मनोहर प्रातःकाल में धूल के परदे ने यवनिका की तरह काले मनुष्यों के पीछे फैलकर, क्रमशः उन्हें छिपा दिया।

धीरे-धीरे अन्धेरा मिट रहा था। दियारे पर के रैलर ने सीटी बजायी। प्रातःकाल के प्रकाश में लाल सुरखी की सड़क, ऊँची चिमनी, नवीन मिल हाउस, और कुली बैरकों से दियारा एक नगर की भाँति जान पड़ता था।

बत्तीस

इसके बाद बहुत दिनों तक मुकदमाबाजी होती रही। सन्थालों की जमीन तथा नदी के बाँध को लेकर कारखानेदार के साथ इन्द्रराय तथा चक्रवर्ती-घराने के छोटे-बड़े फौजदारी-दीवानी मुकदमे एक के बाद एक चलने लगे।

सदर से एस० डी० ओ० ने आकर जाँच की। उन्होंने अमल के लगाये हुए अभियोगों को सत्य पाया, सन्थाल अधिकांश बिला जमीन के होकर यहां से चले गये हैं। जो हैं, उनके पास भी जमीन-जमा नहीं है। किन्तु इसमें कोई बात उन्हें कानून के विरुद्ध न मिली। विमल बाबू ने ऋण के बदले भूमि खरीदी है, और सन्थालों ने अपनी इच्छा से उसे बेचा है। चूड़ा माँझी तथा उसके अनुयायी कई माँझियों ने, जो यहाँ रह गये हैं, यह बात स्वीकार की। सारी के सम्बन्ध में जाँचकर उन्होंने जो कुछ देखा, उसको ठीक-ठीक लिखा नहीं जा सकता। जङ्गली जीवन के साथ उच्छृंखलता तथा लोभ का बहुत गहरा सम्बन्ध है। किसी-किसी के जीवन में यह असाधारण रूप से प्रकट होता है। यहाँ भी ऐसा ही हुआ है। जङ्गली, लोभी, उच्छृंखला युवती की यह दशा दुःखदायिनी होने पर भी स्वाभाविक है। उसकी वर्त्तमान दशा से यह बात प्रकट है, किन्तु उसे लिखने की आवश्यकता नहीं है।

तात्पर्य यह है कि अभियोग के विषय स्पष्ट रहने पर भी इसमें वास्तविक सत्य का बिलकुल अभाव है। इसमें अन्तर्हित सत्य है जमीन्दार के साथ कारखानेदार का रोब-दाब के लिये झगड़ा। कारखानेदार ने कारखाना खोलकर यहांवालों का बहुत उपकार किया है। गरीबों को काम मिलने की सुविधा हुई है, ईख की खेती की उन्नति की अधिक सम्भावना दीख पड़ती है, चारों ओर सड़कों-रास्तों की अवस्था सुधरी है और यह बात भी सत्य है कि जमीन्दार की मालगुजारी बन्दकर कारखानेदार ने काफी अन्याय किया है। वास्तव में कहीं की प्रजा के संघबद्ध हो जाने से जैसी गड़बड़ी मचती, वैसी इन्होंने चतुराई से अकेले हो पैदा कर दी है।

किन्तु इससे कुछ फल नहीं निकला।

दोनों ओर से ही एक के बाद एक नये झगड़े खड़े होने लगे। इन्द्रराय के स्वाभाविक जीवन में परिवर्त्तन हो गया, इनकी मूँछें ताव खाते-खाते भुजाली के समान टेढ़ी और तेज हो गयीं। ये जमीन्दारी के कागज-पत्रों तथा दीवानी फ़ौजदारी कानूनों की पुस्तकों में डूब से गये। मकान के भीतर भी उत्तेजना फैल गयी, प्रतिदिन प्रातःकाल आज नया क्या होगा, इसी चिन्ता में लोग उठते हैं।

अहीन्द्र तथा अमल कलकत्ता में हैं। अमल अव्वल श्रेणी में आइ० ए० पासकर अब बी० ए० में पढ़ रहा है। अहीन्द्र परीक्षा की तैयारी में है। शायद अब वह भी सब कुछ छोड़कर विद्या-समुद्र में कूद पड़ा है। बीच में अमल दो बार घर आया, किन्तु अहीन्द्र पढ़ने में लगा रहा।

हेमांगिनी ने उसे दोष देते हुए कहा—उसको तुम पकड़ क्यों नहीं लाते?

अमल ने भौंहें चढ़ाकर कहा—वह है विश्वविद्यालय का रत्न, हीरे

का टुकड़ा और हमलोग हैं कोयले की राख। सम्बन्ध घनिष्ठ होने पर भी उसका स्थान है सोने के गहने में और हमलोग जायेंगे चूल्हे में। उसकी बराबरी मैं कैसे कर सकता हूं ?

हेमांगिनी को कुछ आघात-सा लगा, वह मौन हो गयीं। थोड़ी देर मौन रहकर अमल फिर कहने लगा—जानती हो माँ, आजकल अहीन मुझ से अच्छी तरह मिलता भी नहीं। अब उसके अनेक नये-नये साथी हैं, अहीन बिलकुल बदल गया है।

हेमांगिनी उदास होकर बोलीं—इसमें केवल अहीन का ही दोष नहीं है अमल, बल्कि तुम्हारा भी है। तुम्हारे वंश में कभी बहनोई से मेल खाता ही नहीं। बहनोई के सामने सिर झुकाने में जैसे तुम लोगों के सिर कट जाते हैं।

अमल भी दुःखी हुआ, थोड़ी देर चुप रहने के बाद हँसकर बोला—मैं देख रहा हूँ कि मातायें पुत्र की अपेक्षा दामाद के प्रति अधिक स्नेह रखती हैं। इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है ; क्योंकि मैं भी तो विवाह करूँगा। पर मेरे साथ माँ तुम अन्याय कर रही हो, अहीन के सामने सिर झुकाने में मुझे कोई संकोच नहीं है। पर सिर नीचा कर लेने पर भी तो वह मुझे देख नहीं पाता। और इसीसे मुझे कष्ट होता है।

हेमांगिनी चुप हो रहीं। फिर वह अमल को कोई दोष न दे सकीं। अमल फिर कहने लगा—अहीन में बहुत परिवर्त्तन आ गया है। ठीक-ठीक तो मैं कुछ समझ नहीं पाता, किन्तु पहले का अहीन अब नहीं है। उसमें जो एक प्रकार के कोमल भाव थे, इस समय वे एकदम नहीं रह गये हैं। अब वह सब से चुभता हुआ मजाक करता है और विचित्र हँसी हँसता है।

हेमांगिनी कुछ विस्मित हुईं, उनको थोड़ी चिन्ता भी हो गयी। ठीक उसी समय हेमांगिनी की बुलाहट हुई, राय महाशय नीचे पुकार

रहे थे—एक बार अपनी समधिन के पास जाओ और कह आओ कि पुराने दस्तावेजों को देखने की आवश्यकता है अर्थात् हमारे राय-घराने के असली बँटवारे में चक अफजलपुर की क्या चौहद्दी है—

तुम्हारी ये सब बातें न तो मैं समझ पाती हूँ, न सुनीति समझ पाती हैं। मुझे बतलाओ, क्या कहना होगा। तुम लोगों के मामले-मुकदमे के कारण हमलोगों का खाना-सोना हराम हो गया है!

दस्तावेजों का बक्स देखना पड़ेगा। उनको भेजो—नहीं रहने दो, कह आओ, मैं ही उन्हें देखने सन्ध्या समय जाऊँगा, रामेश्वर के कमरे में ही निकाल कर रखें। हाँ, और कहना, मंगलवार को माँ सर्व-रक्षा की पूजा होगी। कालिन्दी के बाँध के मुकदमे में एक प्रकार-से हमारी जीत हो गयी है। बाँध रहने पर कारखानेदार को प्रति वर्ष लगान देनी पड़ेगी। उसका आधा उस पार दियारे का मालिक होने से चक्रवर्ती-घराना पायेगा और आधा राय-हाट के मालिक लोग पायेंगे। वर्षा होते ही बाँध काट देना पड़ेगा।

हेमांगिनी बोलीं—जाऊँगी, अमल अभी आया है, उसको जलपान कराकर जाऊंगी। लड़का घर आया, उसकी खोज-खबर नहीं, मामले में मतवाले हो रहे हो! धन्य हो तुम!

राय बोले—अमल से भेंट हुई है। वे हँस पड़े। यह हँसी अपने दोष दूर करने के लिये, फीकी हँसी थी। इसके बाद बोले—अमल कहाँ है? उसको एक कानून की पुस्तक के लिये लिखा था। अमल, अमल, पुकारते-पुकारते वे ऊपर चले गये, उनके पैर के आघात से सीढ़ी कांपने लगी।

हेमांगिनी जब सुनीति के पास गयीं, तब उमा से एकान्त में भेंट की। अमल की बात सुनने के बाद उमा से कई प्रश्न पूछने के लिये वे चिन्तित हो उठी थीं।

उमा को आश्चर्य हुआ—ऐसे एकान्त में मां क्या कहेंगी ? हेमांगिनी बोलीं—एक बात पूछती हूं उमा। सच्ची बात कहना। मुझसे कुछ छिपाओगी नहीं तो ?

क्या माँ ?

हाँ रे, अहीन तुम्हें चिट्ठी-पत्री लिखता है न ?

लज्जित होने पर भी उमा ने विस्मय के साथ कहा—लिखते हैं माँ।

खूब अच्छी तरह लिखता है न ?

उमा हँस पड़ी। हेमांगिनी बोलीं—अमल कहता था, अहीन उसके साथ अच्छी तरह मिलता नहीं, उसमें बहुत परिवर्त्तन हो गया है।

उमा गम्भीर भाव से कुछ देर चुप रही। फिर बोली—वे बहुत बातें सोचते हैं माँ। अनेक बड़े-बड़े विषयों की आलोचना करते हैं। जान पड़ता है इसीलिये—

कन्या का गौरव-बोध देखकर माँ प्रसन्न हो गयीं। उन्होंने फिर कुछ नहीं पूछा।

\+ + + +

हेमांगिनी उस समय तो निश्चिन्त हो गयीं, किन्तु पूजा की छुट्टी में अहीन्द्र के घर आने पर उसको देखकर उन्होंने मन ही मन शंका की। अहीन्द्र का शरीर दुर्बल हो गया है, सिर के केश बिखरे हुए हैं। इससे शरीर के प्रति उसकी लापरवाही साफ-साफ टपकती है। लापरवाही न कहकर उसे अत्याचार भी कह सकते हैं। उसके दुर्बल शरीर में दोनों आँखें चमक रही हैं, वे जैसे कृष्णपक्ष के आकाश में दो लाल मंगल ग्रह के समान हैं।

उन्होंने स्नेह के साथ अहीन्द्र के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—तुम्हारा शरीर इतना खराब क्यों है बेटा ?

थोड़ा मुस्कुराते हुए अहीन्द्र ने कहा—शरीर ? इसके बाद फिर

हँस पड़ा। कुछ उत्तर नहीं दिया, जैसे हँसी में ही उत्तर दे दिया गया।

हेमांगिनी बोलीं—हँसी की बात नहीं है बेटा, शरीर बचाकर ही सारे काम किये जाते हैं। सारा परिवार तुम्हारा ही मुंह जोह रहा है।

अहीन्द्र फिर हँसने लगा।

हेमांगिनी ने जाते समय कन्या को सावधान कर दिया—उमा तू ही थोड़ा यत्न-वत्न कर अच्छा कर दे।

उमा सिर नीचा कर चुप रही। हेमांगिनी चिढ़ गयीं। बोलीं—हमारे समय की घूंघटवाली बहू तो हो नहीं, अच्छी तरह लगाम पकड़ेगी, तभी ठीक होगा।

हेमांगिनी चली गयीं। उनके चले जाने पर उमा हंसती हुई घर में घुसी। अहीन्द्र बोला—स्वागत है बंगालिन!

गुड आफ्टरनून साहब! किन्तु साहब के शरीर की अवस्था तो खूब अच्छी है!

बंगालिन के अभाव से यह अवस्था है। अब तो पास हूं, अब खूब मोटा-ताजा मेमना बना दो।

उमा हँसकर बोली—मेमना, मोटा-ताजा घोड़ा। माँ ने कहा है, रास खींच रखने के लिये। पतली हड्डी-पसलीवाले, आकाश में विचरनेवाले पक्षिराज को भूमि पर आना होगा। और बिना कान-पूँछ हिलाये बंगालिन को पीठ पर चढ़ाकर चलना होगा!

मानदा घर साफ कर बिछौना ठीक करने के लिये आयी। उमा थोड़ा हटकर खड़ी हो गयी। मानदा ने अहीन्द्र को देख गाल पर हाथ रखकर कहा—भैया की कैसी सूरत बन गयी है? सुनीति कुछ बोलीं नहीं, केवल कठोर नेत्रों से पुत्र की ओर देखा। कई दिनों में उमा भी जैसे सूख-सी गयी। सुनीति ने इसे भी देखा।

अन्त में एक दिन रात के अंधेरे में माँ आकर पुत्र के सामने खड़ी हो गयीं। पूर्णिमा बीत चुकी है और सामने अमावस्या आ रही है। उसी अंधेरे में अहीन्द्र छत पर अकेला बैठा था। वह इसी प्रकार अंधेरे में बैठा रहता है। कचहरी के आँगन में नारियल के पेड़ों की चोटियाँ छत की रेलिंग से थोड़ी दूर आकाश में जटाजूटमय होकर जैसे सभा कर रही हैं। इसी बीच सुनीति चुपचाप आकर अहीन्द्र के पास खड़ी हो गयीं, अहीन्द्र यह जान भी नहीं पाया।

सुनीति ने पुकारा—अहीन्द्र ?

अहीन्द्र ने चौंककर मुंह फेर लिया और कहा—माँ ?

हाँ, मैं हूं।

आओ माँ, बैठो। कुछ कहना चाहती हो ?

हाँ। अंधेरे में अहीन्द्र माँ का मुंह तो नहीं देख सका, किन्तु स्वर से स्पष्ट हो गया कि उनके मुंह पर वही विचित्र हंसी फैल रही है, जो उसकी माँ को छोड़ इस पृथ्वी पर दूसरा कोई नहीं हंस सकता।

सुनीति पुत्र के पास बैठ गयीं, उसका सिर अपनी गोद में खींच लिया, और रूखे केशों को ठीककर बोलीं—तुझे क्या हुआ है बेटा ?

कुछ भी नहीं। अहीन्द्र की आवाज में कपट का लेश नहीं था।

तो फिर ?

क्या माँ ?

तू हमलोगों से इतनी दूर क्यों चला जा रहा है बेटा ?

दूर चला जा रहा हूं !—अहीन्द्र ने अचरज के साथ पूछा।

हाँ,—माँ ने कहा, दूर चला जा रहा है, हमलोग तुम्हारा पता ही नहीं पा रहे हैं।

अहीन्द्र चुप हो रहा। मां ने फिर कहा—पहले तो सोचा था कि तू हमारे पास से चला गया। बहू—उनकी आवाज से लज्जा प्रकट होने

लगी। उन्होंने कहा—विवाह होने के बाद लड़के का बहू के प्रति आकर्षण होता है, उस समय पुत्र माँ के पास से थोड़ा दूर हो जाता है, मैंने यही सोचा था। किन्तु बहू का मुंह देखकर समझ लिया कि ऐसा भी नहीं है। बीच-बीच में मैं उसको हंसमुख पाती हूँ, किन्तु फिर उसका मुँह सूखा हुआ पाती हूं। मैं खूब ध्यान से देख रही हूं अहीन्द्र, उसका मुँह अधिक समय सूखा ही दीख पड़ता है।

अहीन्द्र जैसे चुप था, वैसे ही रह गया। कुछ देर तक उत्तर की प्रतीक्षा करने के बाद माँ बोलीं—उमा तुम्हें नापसन्द तो नहीं है न अहीन ?

ना, माँ, ना। मैं उमा को लेकर सुखी हूं। अहीन्द्र के स्वर से आन्तरिक श्रद्धा टपकने लगी।

तो ? माँ ने जटिल प्रश्न पूछा—तो ?

तो ? क्या उत्तर दूँ माँ ? बात करने के बाद ही वह चौंक पड़ा। तुम रो रही हो माँ? अपने सिर पर गर्म जल पड़ने से वह चौंक पड़ा था।

माँ ने शान्त तथा उदास स्वर में कहा—जानती नहीं, तू मुझ से छिपा रहा है कि नहीं, किन्तु तुम्हारे मुँह से एक नया पुरुष प्रकट हो रहा है अहीन ! क्या तू आईने के सामने खड़ा होकर अपने को अच्छी तरह नहीं देखता ? तेरी आँखें देखकर मेरा शरीर सिहर उठता है।

अहीन्द्र बोला—आजकल मैं बहुत विचार करता हूँ, यह सत्य है। किन्तु मेरी आँखों की बात अथवा मैं पहुँच के बाहर हूं, यह सब बातें तुम्हारी भूल हैं माँ।

लम्बी साँस छोड़ माँ ने कहा—क्या जानूँ ! किन्तु मेरा मन क्यों ऐसा हो गया अहीन ? इससे मुझे बहुत दुःख, बहुत शोक हो रहा है। किन्तु जिनके लिये दुःख है, उनके मुँह तो याद ही नहीं आते, तेरा ही मुँह क्यों आँखों के सामने आ जाता है !

जीवन में तुम्हें अनेक आघात सहन करने पड़े हैं माँ, उनकी पीड़ा तुम अब तक सहन नहीं कर सकी हो। ये चिन्तायें उन्हीं के फल हैं। तुम रोओ मत, तुम्हारा रोना मुझ से सहन नहीं होता।

किन्तु तू इतना क्या सोचता है ?—मुझ से कह तो।

सोचता हूं ?—अहीन्द्र हँसकर बोला, तुमने जैसा सोचना सिखाया है, वैसा ही सोचता हूं और क्या सोचूँ ? मनुष्य के दुःख की बात सोचता हूं। मनुष्य मनुष्य पर जो अन्याय-अत्याचार करता है, उसी पर विचार करता हूं।

सुनीति चुप रह गयीं। उनका दुःख दूर तो नहीं हुआ, किन्तु उस शोक में सान्त्वना के स्नेह-स्पर्श के समान सन्तान-गौरव का आनन्द उनके मन में उत्पन्न हो गया। कुछ देर के बाद वे बोलीं—आशीर्वाद देती हूं, तू मनुष्यों का दुःख दूर कर।

उनकी आँखें फिर भर आयीं, उन्होंने कपड़े के छोर से उन्हें पोंछकर कहा—किन्तु इसके साथ ही याद रखना बेटा, हमारा—

मैं, उमा—

माँ ! माँ आप हैं न, अच्छी हैं आप ! सुनीति की बात में बाधा देकर मानदा बोलते-बोलते छत के दरवाजे के सामने खड़ी हो गयी।

बात के स्वर तथा ढंग में बात का अर्थ छिपा रहता है। मानदा की बात से चंचल होकर सुनीति बोलीं—क्या है मानदा ?

बाबा ! इस अन्धेरे में माँ-बेटा छत पर हैं, यह कैसे जानूँ ? सारे मकान में खोजकर हैरान हो गयी ! भैयाजी के ससुर आये हैं, सास आयी हैं, आपको खोजते हैं। भैयाजी के सम्बन्धी आये हैं।

सुनीति ने चंचल होकर कहा—नीचे आओ अहीन !—इतना कह वे चली गयीं, अहीन्द्र भी उनके पीछे हो लिया। कहीं कुछ छूटा तो नहीं

है, देखते-देखते मामदा अपनेआप कहने लगी—कार्त्तिक के शीत में इस अन्धेरे में बैठे थे !

× × × ×

राय घर-गृहस्थी के काम से आये हैं, मामले के सम्बन्ध में उन्हें राय-मशविरा की जरूरत हुई है। वह रामेश्वर की खाट की बगल में बैठे हैं। घर में दीपक का धीमा-धीमा प्रकाश फैल रहा है, खाट के पास ही हेमांगिनी भी बैठी हैं। उमा घर के कोने में टेबिल पर पुस्तक सजा कर रख रही है। अभी दोनों, ससुर-पतोहू, काव्य की आलोचना कर रहे थे। उमा के आगमन से रामेश्वर अब कुछ स्वस्थ-से दीखते हैं।

सुनीति ने जिस समय घर में प्रवेश किया, उसी समय कोई हास्य समाप्त हुआ था, सब के मुँह पर हँसी खेल रही थी। हेमांगिनी उदास हँसी हँसते-हँसते कह रही थीं—बातों से आपको कोई जीत नहीं सकता। मैं हार मानती हूँ।

रामेश्वर ने हँसकर कहा—तो आप मुझे मिठाई खिलाइये।

हेमांगिनी बोलीं—आप मुझे मिठाई खिलाइये; क्योंकि विजय आपकी है।

रामेश्वर हँसे, और एक बनावटी लम्बी साँस छोड़कर बोले—आपकी बात से मुझे बड़ा दुःख हुआ देवि ! 'राय' है 'राज' शब्द का अपभ्रंश, आप राय-पत्नी—रानी हैं। राज-परिवार बातचीत में हार जाने पर भी मिठाई सदा दरबारियों को देता आया है। आज उसी वस्तु की ओर यदि आप हाथ फैलाती हैं, तो उस हाथ को राजा के हाथ में देने के अलावा कोई उपाय नहीं है।

घर में उमा की उपस्थिति की याद आते ही हेमांगिनी लज्जित हो गयीं, उसको वहाँ से टालने के लिये बोलीं—उमा, अमल बाहर खड़ा है, उसे देख तो।

उमा चली गयी, उसका नाम लेते ही रामेश्वर भी कुछ संयत हो गये। राय हंस रहे थे, उन्होंने भी गम्भीर होकर काम की बात छेड़ दी। वह ऐसे ही अवसर की ताक में थे। कुछ देर चुप रहने के बाद गला साफकर उन्होंने कहा—रामेश्वर, तुम्हारे साथ कई आवश्यक विषयों पर बातें करने आया हूं।

गम्भीरता के साथ रामेश्वर ने कहा—आँखवाला भी मार्ग भूल जाने पर विवश होकर अन्धे से रास्ता पूछता है। क्या कह रहे हो? दिशा तो बतला सकूँगा, किन्तु सामने-पीछे, दायें, बायें, ये सब कैसे बताऊंगा? रास्ते के आस-पास के चिह्नों की बात तो न बतला सकूँगा, किन्तु उसकी अवस्था बतला सकूँगा।

राय बोले—मान-मर्यादा के लिये मुकदमा लड़ा जा रहा है। किन्तु, अब रुपये का अभाव हो गया रामेश्वर! मेरा भी हाथ खाली हो गया। अब·····

रामेश्वर ने कहा—अधर्म छोड़कर साक्षात् नारायणरूपी राम की शरण में जाने पर भी विभीषण अमर तो हो गया, किन्तु उसे कलंक लग गया। मामला अन्त तक लड़ना ही पड़ेगा इन्द्र। रुपया न रहने पर ऋण का प्रबन्ध करो।

ना।—राय ने गम्भीरता के साथ गर्दन हिलाकर कहा—ना। ऋण लेने से अन्त में इस कारखानेदार के पंजे में पड़ना होगा। अधिक रुपये देकर वह कागज खरीद लेगा। आज की दुनिया में सूदखोरों से बढ़कर धूर्त और लोभी कोई नहीं है। ये रुपये के लालच में सब कुछ कर सकते हैं। कागज तो ये बेच देंगे ही!

रामेश्वर चुप हो रहे! राय बोले—जमींदारी में जो खास जोत है, उसी का कुछ बन्दोबस्त कर देना क्या अच्छा नहीं है?

रामेश्वर ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वे विचार कर रहे थे, किन्तु

कुछ देर में ही उनके निर्बल मस्तिष्क में सब गोलमाल हो गया, वे खाली नजरों से ताकते हुए बैठे रहे।

राय ने उन्हें पुकारा—रामेश्वर !

रामेश्वर हिल-डुलकर एक लम्बी साँस छोड़ते हुए बोले—इन्द्र ! तब तो ऐसा ही करूँ न ?

कुछ देर तक बात याद कर सम्मतिसूचक सिर हिलाते हुए फिर बोले—हाँ, यही अच्छा है। ऋण—ना, अच्छा नहीं है। अन्त में बाडी वारण्ट निकलते हैं।

हवा के भी कान हैं। जमीन बन्दोबस्त की बात प्रकट नहीं करनी पड़ी, किन्तु सारे गाँव में फैल गयी।

दो-तीन दिनों के बाद ही गांव के किसान दौड़े आये—'जमीन का बन्दोबस्त करना है तो दियारे के उस भाग में दी हुई जमीन का बन्दोबस्त हमारे साथ कर दीजिये। एक सौ बीघे जमीन का तीस रुपये बीघे नजराना तथा दो रुपये लगान देने के लिये हम तैयार हैं। इस दल में रंगलाल सबसे आगे था।

राय ने भौंहें चढ़ाकर कहा—इतने रुपये तुम लोग कहां पाओगे ?

रंगलाल बोला—जी, हम तीस आदमी मिलकर लेंगे। आदमी-पीछे एक सौ रुपये का प्रबन्ध किसी प्रकार हो जायेगा।

वह व्यग्रता के साथ राय के दोनों पैरों से लिपट गया—ऐसा न होने पर मैं आपका चरण किसी प्रकार भी नहीं छोड़ूंगा।

राय ने सोचकर देखा—इतने से अधिक रुपये पर खास जोत की जमीन का बन्दोबस्त नहीं हो सकता। ऐसा होने पर किसान भी गुलाम बने रहेंगे। योगेश मजुमदार ने आकर पाँच हजार नजराना देना चाहा, किन्तु राय ने हँसकर कहा—नहीं।

तैंतीस

तीन महीने और बीत गये। माघ मास के प्रारम्भ में ही एक दिन कारखानेदार ने समूचा दियारा दखल कर लिया। रंगलाल आदि किसानों ने कुछ दिन पहले जो जमीन जमींदार से बन्दोबस्त में ली थी, उसे भी दखल कर लिया।

मोटरवाला विलायती हल चलाकर दियारे की सारी जमीन एक ओर से दूसरी ओर तक एक कर दी गयी। यह समाचार सुनकर सारे गाँव में विस्मय, उत्तेजना तथा कौतूहल फैल गया। दियारे पर कल-वाला हल आया है। बैल नहीं, भैंसे नहीं, कोई हल की मुठिया नहीं पकड़ता, किन्तु जुताई हो रही है। केवल एक आदमी गाड़ी के समान हल के ऊपर बाबू की तरह आराम से बैठा है। वह हाथ-पैर से दो-एक यंत्र घुमाता-दबाता है और गाड़ी चल रही है। पीछे से मिट्टी के बड़े-बड़े ढेले उलट रहे हैं। यह शायद मोटर का हल है, ठीक उसी तरह धुँआं छोड़ता और आवाज करता है। घर्र-घर्र शब्दकर जंगली सूअर की तरह एक ओर से दूसरी ओर तक दौड़ रहा है। इसमें तनिक भी अड़-चन नहीं पड़ती, ऊँच-नीच, गहरे-चौड़े सब को उखाड़ देता है।

गांव के सभी लोगों ने कालिन्दी के घाट से दियारे तक भीड़ कर दी।

स्त्रियाँ भी अधिक संख्या में आयी थीं। वे कालिन्दी के इसी पार खड़ी थीं। किसानों की स्त्रियाँ खड़ी होकर घूंघटों के भीतर रो रही थीं। वे कल देखने नहीं आयी थीं, वे देखने आयी थीं कि उनकी जमीन चली जा रही है। जिस प्रकार प्रियजन के मरने पर दूर से आकर लोग उसके सिरहाने बैठकर रोते हैं, और मरनेवाले की ओर अपलक दृष्टि से देखते हैं, इनका देखना भी ठीक वैसा ही था। इनकी आँखों में ठीक वैसी ही ममता थी। किन्तु किसान नहीं आये! वहाँ एकत्र जनता आशा कर रही थी कि किसानों के साथ ही छोटे राय-घराने तथा चक्रवर्ती-घराने के अनुचर होहल्ला करते आ धमकेंगे, किन्तु बहुत समय बीत गया, कोई नहीं आया। उधर सारा दियारा जोतकर कल शान्त हो गयी।

राय-घराने तथा चक्रवर्ती-घराने के अनुचरों के न आने का कारण था। वे फिर कभी न आयेंगे। दियारा लेकर जमींदार तथा कारखानेदार का झगड़ा खतम हो गया। जमींदर-पक्ष सारा मुकदमा हार गया। कल हाकिम ने फैसला सुना दिया, यह खबर अभी सबको मालूम नहीं है।

सुनीति मामला हारने की बात नहीं जानती थीं। इन्द्रराय ने यह खबर उन्हें नहीं सुनायी; सुनीति क्यों, हेमांगिनी को भी नहीं बतलायी। कारखानेदार मशीन का हल चलाकर दियारा दखल कर रहा है—यह समाचार सुनकर सुनीति नये लड़ाई-झगड़े की आशंका से चंचल हो उठीं। भोजन-सामग्री निकालते समय उनका हाथ कांप रहा था। मुँह नीचा कर उमा सिलपर ससुर के लिये अनरस कूट रही थी। इसी समय मानदा भुनभुनाती हुई घर आयी, वह भी मशीन का हल देखने गयी थी। उसने दोनों आँखें बड़ी कर तथा गाल पर हाथ रखकर कहा—"जो देखा न पिताराज में, सो देखा मैं पुत्रराज में।" कल और भी कुछ होगा, जीवित रहने पर और भी देखूँगी।

सुनीति ने चंचल होकर पूछा—कोई खून-खराबी तो नहीं हुई न?

नहीं, कोई गया ही नहीं। कारखानेदार ने मशीन का सुन्दर हल चलाकर एक ओर से दूसरे छोर तक जमीन जोत ली।

सुनीति को परम शान्ति मिली। मानदा की असल बात अभी खतम नहीं हुई थी। वह कहती रही—बैल नहीं, भैंसे नहीं, हल नहीं, फाल नहीं—वह गाड़ी के समान है, चलने में घर्र-घर्र आवाज होती है, और जमीन जुतती जाती है। थोड़ी देर में ही इस सिरे से उस सिरे तक की जमीन जुत गयी।

उमा हँसकर बोली—वह है मोटर का हल। जिस प्रकार मोटर अपने आप चलती है, यह भी वैसे ही चलता है। नीचे इस्पात की बड़ी-बड़ी धारदार छुरियाँ लगी हैं, मोटर चलने पर ये मिट्टी काटकर उलटती जाती हैं।

मानदा ने विस्मय के साथ कहा—यही बात सभी कह रहे हैं कि कल धुँआँ छोड़ती है, उसकी गन्ध भी ठीक मोटर के धुँएँ की गन्ध जैसी ही है।

कुछ देर चुप रहने के बाद एक गहरी सांस छोड़कर उसने फिर कहा—आह! बेचारे बैलों-भैंसों की रोजी मारी गयी, और क्या!

मानदा की ओर उमा ने कौतुक के साथ देखा। वह बोली—अब बैल तथा भैंसा कोई नहीं पालेगा, खाना न मिलने से वे मर जायेंगे।

उमा इस बार कुछ जोर से हँस पड़ी। सुनीति ने मुस्कराकर पूछा—क्यों इतना हँसती हो बहू? इस बेचारी की जैसी बुद्धि है, वैसी ही बात कहती है।

मानदा अपनी बात का समर्थन पाकर बड़े उत्साह से कुछ करने ही जा रही थी, कि इतने में नवीन बागदी की स्त्री मोती बागदिन के परेशान होकर आ जाने से उसकी बात अधूरी रह गयी। मोती के मुँह तथा नेत्रों से उत्तेजना टपक रही थी। उसने मकान में आते ही पुकारा—रानी जी!

क्या है रे ? क्या है बागदी बहू ?—सुनीति ने शंकित होकर पूछा—क्या दियारे में फिर—

दियारे में नहीं माँ, रंगलाल सरदार के दाँतों की एक कतार लात से मारकर राय-हुजूर ने तोड़ दी है।

यह क्या ? क्यों ?

उसी दियारे की जमीन के लिये माँ। दियारे की जमीन लेकर किसानों ने उस कारखाने के साहब के साथ कुछ जाल किया था ! आज साहब ने दखल किया है न ! इसको जानकर—

सुनीति का मुँह फीका पड़ गया। उनके दोनों होंठ थरथरा रहे थे। उनको रंगलाल के मुँह का ख्याल हो आया—निर्बोध नजर, छोटी आंखें, होंठों पर खुशामदभरी मुस्कराहट। अहा उसी मनुष्य को—! उनकी आंखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

उमा पीसना छोड़कर खड़ी हो गयी। वह जमींदार की कन्या तथा जमींदार की बहू होनेपर भी नवीन युग की युवती है। इसके अतिरिक्त उसे अहीन्द्र का ध्यान हो आया। मनुष्य के मुँह पर लात मारने की बात सुनकर वह क्या कहेगा, शायद कुछ कहे नहीं, केवल शून्य दृष्टि से देखता रहे। छुरे की तरह तीखी हँसी हँसेगा। वह बोली—मैं एक बार उस मकान तक जाना चाहती हूँ माँ।

सुनीति बोलीं—मानदा, साथ जा। तुम देखो बहू, जिससे गरीबों को और दुःख न दिया जाय। कहो, वह दियारा मुझे न चाहिये, उसका चला जाना ही अच्छा है।

उमा तथा मानदा गयीं, मोती भी साथ हो ली। मोती यथासाध्य पहरेदार का काम कर स्वामी का काम ठीक रखना चाहती है। समय पड़ने पर हाथ में लाठी लेने में भी लाज नहीं करती।

सुनीति उदास भाव से चुप बैठी रहीं।

सत्यानाशी दियारा ! इसके लिये ही इतने काण्ड हुए हैं। उनको याद आयी, इस दियारे के झगड़े के प्रथम दिन से ही इसके साथ रंगलाल जुड़ा हुआ है। साथ ही साथ बिजली की चमक की तरह एक दिन की बात याद पड़ गयी। नवीन के मुकदमे के समय ही उन्होंने दियारे को घूमते देखा था, इस घराने को ही केन्द्र बनाकर वह चक्कर लगा रहा था। क्या वह आज भी चक्कर लगा रहा है ? अन्यथा इस निरीह किसान के मुँह से क्यों रक्त निकल पड़ा ? सत्यानाशी दियारा !

उनका करुणा से भरा हुआ भावुक हृदय सिहर उठा। ना, उस दियारे के साथ वे कुछ सम्बन्ध न रखेंगी। अहीन्द्र को आज ही पत्र लिखेंगी, वह आकर दियारा बेच दे।

साथ ही साथ याद पड़ी, उसने पन्द्रह दिनों से अधिक हुए, पत्र नहीं भेजा ! वह आजकल कैसा हो गया है ?

\+ + + +

प्रातःकाल से ही राय मन मारकर बैठे थे।

कल रात में ही मामले का समाचार लेकर आदमी लौट आया। सभी मुकदमों में जमींदार-पक्ष की हार हो गयी है। दियारे के सम्बन्ध में सब झगड़े खतम हो गये। सिर नीचा कर चुपचाप वे बैठे थे। इसके बाद खबर मिली—कारखानेदार मोटर का हल चलाकर दियारा जोत रहा है, यहाँ तक कि हल में बन्दोबस्त की हुई किसानों की जमीन भी दखल कर रहा है।

राय तन कर बैठ गये, फिर एक मौका हाथ आया है। किसानों को सामने रखकर वे फिर एक बार लड़ेंगे। नायब मित्तिर को बुलाकर कहा—शीघ्र बागदियों और कहारों को बुला भेजो और किसानों को भी बुला लो।

तुरन्त आदमी दौड़ाया गया। राय ने मूँछों पर ताव देना फिर

आरम्भ कर दिया। वे कुर्सी से खड़े हो गये और सन्ध्या के अँधेरे का इन्तजार करनेवाले बाघ की तरह बरामदे में टहलने लगे। ठीक उसी समय रंगलाल आकर उनके पैरों पर गिर पड़ा। बुलाने के पहले ही वह स्वयं आकर हाजिर हो गया है।

राय ने स्नेह के साथ कहा—उठो, उठो, भय नहीं।

मैं लठैत भेजता हूँ, तुम लोगों को कुछ करना नहीं पड़ेगा। तुम लोग खड़े होकर देखना। रुपया-पैसा सारा खर्च मेरा, तुम्हें कुछ भय नहीं है।

रंगलाल भों-भोंकर रो पड़ा। वह बोला—हमलोगों ने अपने हाथों से अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारी है, हुजूर।

राय चौंक पड़े, वे इन निर्बोधों को अच्छी तरह जानते हैं। इनकी सब से बड़ी बेवकूफी यही है कि ये अपने को बहुत बुद्धिमान समझते हैं। जायदाद के सम्बन्ध में छल-कपट और चतुराई करने में इन्हें बहुत आनन्द आता है। राय ने चौंककर कहा—क्या किया, सच्ची बात बताओ। सच्ची बात कहना। पैर छोड़ दो। वे कुर्सी खींचकर फिर बैठ गये।

अपने हाथ के तलवे से आंखें पोंछते-पोंछते रंगलाल बोला—जी हुजूर, उस मजुमदार की चालबाजी में पड़ गया, उन्होंने ही कहा हुजूर—

मजुमदार ने क्या कहा ?

रुपयों की क्या कमी ? मैं रुपये दूँगा।

कैसे रुपये ?

जी, नजराने के रुपये। हमारे पास रुपये नहीं थे हुजूर। उन्होंने ही हमें रुपये दिये थे। हमारी मौसमी जमीन को बन्धक लिखा लिया था। उन्होंने कहा था कि दियारे की जमीन का बन्दोबस्त हो जाने

पर यह दस्तावेज फेरकर उसको बन्धक कर देना। अब नया दस्तावेज लिखाकर कहते हैं कि जमीन बन्धक नहीं रखी गयी है, वरन् बिक्री हुई है। यह कबाले का दस्तावेज है।

अजगर की तरह फुफकारते हुए राय बोले—हुं।

हुजूर, हमारा क्या होगा ?

तुम लोग दस्तावेज की रजिस्ट्री न करना।

दस्तावेज को रजिस्ट्री तो हो गयी हुजूर। ऐसा न करने से वे पुराना दस्तावेज वापस नहीं दे रहे थे। रंगलाल फिर भों-भोंकर रोने लगा।

राय मुँहबन्द ज्वालामुखी की तरह बैठे रहे। इन अज्ञान तथा चालबाज घृणित लोगों पर उनके क्रोध की सीमा न रही। जमींदार का मन इन अभागों की विवशता पर विचार न कर सका। अभागा अन्धा जब बाघ की दुम पर पैर रख देता है, तब बाघ उसकी अन्धता का विचार नहीं करता।

रंगलाल बैठा हुआ उनके मुँह की ओर देख रहा था। राय ने जब कुछ उत्तर नहीं दिया, तब तो उसने फिर उनके दोनों पैर जकड़ लिये। राय अब सहन नहीं कर सके, अत्यन्त क्रोध से फट पड़े, रंगलाल के मुँह पर जोर से लात मारकर अपने पैर छुड़ा लिये। उसकी चोट से रंगलाल के सामने के दो दांत टूट गये और उसका मुँह खून से लथपथ हो गया।

हेमांगिनी कुछ कहने का साहस न कर सकीं, किन्तु उमा ने किया। बाप के सामने खड़ी होकर बोली—छिः छिः, यह क्या किया पिताजी ? वह जैसा भी हो, किन्तु मनुष्य है न !

राय कमरे में चुपचाप टहल रहे थे, वे रुककर खड़े हो गये, और पुत्री के मुँह की ओर देखते हुए बोले—मैंने पाप कर दिया बेटी, मैं भी

मनुष्य हूँ, मुझे मतिभ्रम हो गया था। किन्तु रंगलाल के पैरों पर गिरकर प्रायश्चित्त तो कर नहीं सकता।

इसका जवाब उमा न दे सकी, वह जैसे छोटी हो गयी। राय ने साँस छोड़कर पुकारा—तारा, तारा माँ !

उमा ने अब लजाकर कुण्ठित स्वर में कहा—आप बैठ जाइये, पिताजी, मैं हवा कर दूँ।

राय हँसे, किन्तु कन्या की बात मानकर बैठ गये। बैठ जाने पर उन्होंने कहा—जब मनुष्य का दिन समाप्त हो जाता है, तब ऐसा ही मतिभ्रम होता है। हमलोगों के दिन समाप्त हो चुके हैं।

उमा ने सिहरकर कहा—कहते क्या हैं पिताजी ?

मरने की बात नहीं कहता हूँ बेटी ; अपने बुदिन की बात कहता हूँ। किसान हमारे विरुद्ध होकर कारखानेदार से मिल गये हैं। एक समय खून करने पर भी उन्होंने हमारा विरोध नहीं किया था, उसे हमारा विचार समझकर मान लिया था।

उमा चुप रही।

राय बोले—एक बात और कहने में लज्जा से मेरा सिर फटा जा रहा है बेटी, किन्तु तेरे ससुर-सास से वह कहनी ही पड़ेगी। क्या तू वह बात कह देगी बेटी ?

कुछ देर चुप रहकर उमा बोली—कहिये।

दियारे के सारे मुकदमों में हमारी हार हो गयी, बेटी।

उमा ने एक लम्बी साँस छोड़कर कहा—कह दूँगी।

मुझे इसकी बड़ी लज्जा है बेटी। हठ के कारण मैंने तेरे ससुर की बहुत बुराई कर दी। सम्पत्ति तो केवल अहीन्द्र की ही नहीं है, अहीन्द्र जब लौट आवेगा, मुझे उससे बहुत लज्जित होना पड़ेगा। जानती हो, मेरी क्या इच्छा हो रही है ? मैं सोच रहा हूँ कि अपनी सम्पत्ति का

आधा भाग अहीन्द्र के बहाने उन दोनों को दे दूँ। अहीन्द्र के ससुर के नाते नहीं, सुनीति के भाई के सम्बन्ध से देना चाहता हूँ।

उमा बोली—अच्छी बात है, विचार कर जैसा हो, कीजियेगा। किन्तु कुछ दिन ठहर जाइये, नहीं तो वे लोग सोचेंगे कि मुआवजा दे रहे हैं।

राय हँसकर बोले—अब मेरे पास कुछ दिन रुकने का समय नहीं है बेटी। मैं अब पारिवारिक बन्धन में नहीं रहूँगा, मैं काशी जाना चाहता हूँ।

उमा बोली—संसार में हार-जीत तो होती ही है पिताजी, इसके लिये काशी क्यों जायेंगे ?

हेमांगिनी उस समय घर में आयीं, उनके हाथ में शरबत की ग्लास थी। उमा के आने से अवसर पाकर उन्होंने राय को शरबत पिलाने का प्रबन्ध कर लिया।

राय बोले—आज पूजा करते समय जप भूल गया, माँ के रूप का ध्यान नहीं कर पाया। केवल दियारा-दियारा ; मामला-मामला कहता रहा और रङ्गलाल तथा कारखानेदार के मुँहों का ध्यान करता रहा। अब नहीं, अब गृहस्थी नहीं बेटी। मैंने निश्चय कर लिया है, मैं काशी जाऊँगा।

हेमांगिनी बोलीं—अच्छा वही होगा। किन्तु, अभी उसमें देर है। इस समय शरबत तो पियो।

दियारे के मामलों में हार हुई है, दियारे के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रह गया है—यह सुनकर सुनीति ने एक लम्बी साँस छोड़ी। दुःख की साँस थी, किन्तु ऐसी इच्छा उन्होंने कुछ ही दिनों से नहीं, वरन् जब से दियारे के लिये झंझट खड़ा हुआ, तभी से की थी। उन्होंने बार-बार यह सोचने की चेष्टा की—अच्छा ही हुआ, भाग्य ने एक

भयङ्कर षड्यंत्र से उनको छुटकारा दे दिया। किन्तु विचार को ममता ने उन्हें ऐसा सोचने नहीं दिया। उनका महीन्द्र इसी दियारे के लिये कालापानी गया है, नवीन दियारे के लिये ही गया है, इसी दियारे के लिये उन्हें स्वयं खुली अदालत में हाजिर होना पड़ा था। संसार में अत्यन्त दुःख के बदले में जो मिलता है, उसका मूल्य अधिक होता है।

आज उन्हें हर समय महीन्द्र की याद आने लगी। दिन बीत जाने पर वे सन्ध्या के समय बरामदे में बैठ गयीं। उस पार दियारे के ऊपर आज बाजा बज रहा है, आनन्दोन्मत्त मनुष्यों का कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। हिन्दुस्तानी ढोलक बज रही है और अनेक बाजों की आवाजें सुनाई पड़ रही हैं! कारखानेदार विजयोत्सव मना रहा है। वे छत पर चली गयीं, छत पर से दियारा तथा कालिन्दी साफ दिखाई देती हैं। बाजे और कोलाहल के शब्द साफ सुनाई देने लगे।

अँधेरा बढ़ गया। दूर दियारे पर प्रकाश जल रहा है, आज प्रकाश अधिक है। कालिन्दी की सूखी बालू पर प्रकाश का बहुत समारोह है, मशाल की तरह दो-तीन लाल प्रकाश जल रहे हैं। प्रकाश के चारों ओर कुछ लोग बैठे हैं, उन्हीं के बीच एक लम्बे शरीरवाली युवती हाथ घुमा, शरीर टेढ़ाकर अनेक भंगियों से नाच रही है।

माँ!

सुनीति चौंक पड़ीं—कौन? दूसरे ही क्षण घूमकर बोलीं—बहू?

उमा ने ही पुकारा था, उसने कहा—यह आलवान ओढ़ लीजिये माँ, बड़ा शीत पड़ रहा है।

बात ठीक है! शीत बहुत अधिक बढ़ गया है। सुनीति आलवान ओढ़ स्नेह के साथ बहू की ओर देखने लगीं। उमा आज मन ही मन लज्जित थी। आज उसके पिता ने जो कहा था, "मैंने हठवश उनकी बड़ी हानि कर दी," यह बात उसके मन में भी आ रही है। उसने

सिर झुका लिया। अँधेरे में सुनीति उसका मुँह देख न सकने के कारण कुछ समझ न पायी। प्रेम से उन्होंने पूछा—और कुछ कहती हो बहू ?

ना।—कहकर वह धीरे-धीरे सीढ़ी का दरवाजा पार कर नीचे चली गयी। इधर सुनीति के सामने चक्रवर्ती-घराने की कचहरी के आँगन के नारियल के पेड़ों की चोटियाँ, अँधेरे में जटाजूटधारी तमोलोकवासियों की तरह आकाश में जैसे सभा कर रही हैं, उन लम्बे पत्तों में जैसे कोई गुप्त कानाफूसी हो रही है। दोनों बड़े-बड़े झाऊ के पेड़ जैसे बड़ी वेदना के साथ साँसें छोड़ रहे हैं।

सुनीति के मन में अहीन्द्र का ख्याल हो आया। अधिक दिन नहीं हुए, थोड़े ही दिन आगे इसी छत पर ऐसे ही अँधेरे में वह अकेले सोया था। उन्होंने आकर उससे कातर भाव से पूछा था—क्यों तू दूर चला जा रहा है अहीन ? हम तुम्हारा पता नहीं पा रहे हैं ! उनका विचलित मन एकदम चञ्चल हो उठा। आज पन्द्रह दिनों से अहीन्द्र का पत्र नहीं आया। पूजा की छुट्टी के बाद गया, तो फिर वह आया नहीं। जो पत्र वह लिखता है, वह भी जैसे-तैसे दो-तीन लाइनों का। उमा चली गयी। उसकी धीमी चाल का एक अर्थ उनके मन में आने लगा। उमा सूख गयी है ? क्या उसे भी वह ऐसा ही पत्र लिखता है ? क्या वह भी मेरे ही समान उसका पता नहीं पाती ? तेजी के साथ सीढ़ी के पास जाकर उन्होंने पुकारा—बहू ! बहू ! उमा !

माँ !

उमा फिर आकर उनके सामने खड़ी हो गयी।

क्या तुम्हें अहीन पत्र नहीं लिखता बहू ?

उमा सिर नीचा कर चुपचाप खड़ी रही।

अहीन ऐसा क्यों हो गया ? मेरा मन जैसे काँप उठता है !

आज दिनभर से उमा का मन भी विचलित था। उसे वह सँभाल न सकी, रो पड़ी। अंधेरे में उसका काँपता हुआ शरीर देखकर सुनीति ने उमा के रोने का अनुमान कर लिया। बहू के मुँह पर हाथ देते ही वे चौंक कर बोलीं—रोती क्यों हो बहू? क्या हुआ है बेटी? मुझ से न कहोगी?

उमा अब छिपा न सकी। वह नये युग की युवती है, आजकल की शिक्षा-दीक्षा पाने के कारण, अहीन्द्र को जो बात उसने स्वीकार कर ली थी, और इतना दुख-सुख सहकर भी जिसे अब तक छिपा रखा था, आज इस अत्यन्त चञ्चलता के क्षण में उसे अहीन्द्र की माँ से कह दिया। सब तो जानती नहीं, जितनी जानती थी, धीरे-धीरे कह सुनायी। सुनीति का सारा शरीर थरथर काँपने लगा! सारी बात तो समझ में नहीं आयी, किन्तु उसकी भयङ्करता का उन्हें अनुमान हो गया।

व्याकुलता से अधीर होकर उन्होंने पूछा—वे लोग क्या चाहते हैं बेटी?

ठीक तो जानती नहीं माँ। ऐसा लगता है कि वे चाहते हैं, मनुष्य के साथ मनुष्य का कुछ भेद न रहे। जमीन-धन सब बराबर बाँट लेंगे। इसीलिये वे विद्रोह कर राज्य पलटना चाहते हैं। वह फिर रो पड़ी।

सुनीति को स्मरण हो आया, उनसे भी अहीन्द्र ने संकेत से कहा था, वे उसे समझ न सकी थीं। वे चुप हो रहीं। उमा आज कोई बात छिपा नहीं पा रही थी। कुछ देर बाद उसने कहा—जब सन्थालों से दियारे की जमीन बेदखल हो गयी, तब वे एक दिन सवेरे दियारे से उठ कर चले गये। उन्होंने बरामदे में खड़े होकर देखा। उस समय मुझ से कहा था, यह हमारा पाप है। हमारे पूर्वजों के समय से यह जमा हो रहा है, केवल कारखानेदार ही इसके लिये दोषी नहीं है। मुझे इसका प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। मैं उस दिन समझ नहीं पायी माँ।

अब की पूजा में मैंने उसे समझा है। सूटकेस में कपड़ा ठीक करते समय कई पत्रों से समझ पायी। वह अधिक बोल न सकी, आँखों से आँसू निकलकर बहने लगे।

बहुत देर बाद सुनीति बोलीं—क्यों बहू, भैया के पास चलें? उनको छोड़ कौन उपाय करेगा?

उमा ने अत्यन्त चंचलता के साथ कहा—नहीं, नहीं माँ। इससे उन्हें विश्वासघाती बनना पड़ेगा, सारा दल पकड़ लिया जायगा माँ—ना, ना।

सुनीति पत्थर की तरह खड़ी रहीं, उमा भी चुप थी।

उस पार दियारे में बाजे का स्वर और तेज हो उठा था। नदी के दियारे पर लाल प्रकाश में वही काली युवती जैसे ताण्डव नृत्य कर रही थी। लम्बा सत्यानाशी दियारा, जैसे काली युवती का रूप धारण कर विध्वंस-नृत्य कर रहा है।

चौंतीस

भूल जानेके कारण ही दो इश्तहार तथा एक पत्र सूटकेस में बि
हुए कागज के नीचे छूट गये थे। झाड़-पोंछकर ठीक
समय उमा ने उन्हें पाया था। लाल अक्षरों में छपे इश्
को पढ़कर उमा भय से काँप उठी थी। इसके बाद उस पत्र में सब
स्पष्ट थीं, "हमारा यह अभियान मृत्यु को वरण कर ही है। पृथ्वी
सब विराट शक्तियोंने अपनी राइफलें भरकर तान रखी हैं। फाँसी
तख्ते की रस्सियों की नेकटाई तैयार झूल रही है। दूसरी ओर म
की अज्ञानता तथा स्वार्थ से भरे हुए विधान के फलस्वरूप करोड़ों मर्
की असमय मृत्यु युग-युग से होती आ रही है।" अन्त की कई ला
पर अहीन्द्र ने चिह्न लगाकर लिखा है—

"हल्के अन्धकार में सन्थाल दियारा छोड़कर चले गये।
आँखों से देखा है।"

उमा ने भरे गले से एक-एक कर सभी बातें सुनीति को सुना
किन्तु कई बातें कह न सकी, अहीन्द्र ठीक इसी समय आ गया
उसने झपटकर उमा के हाथ से कागज छीन लिये और कहा—इन
कहाँ पा गयी ?

उमा जिस भाव से खड़ी होकर पत्र पढ़ रही थी, उसी तरह

रही। उसके दोनों होंठ थर-थर काँप उठे। वह उत्तर न दे सकी। अहीन्द्र हँस पड़ा और हँसते हुए उसे अपने समीप खींचकर कहा—"हाय! भारतीय ललनाओं के न जगने से भारत स्वाधीन नहीं होगा, नहीं होगा।" इस नवजागरण के युग में तुम वोसवीं सदी की युवती होकर रोने लगी उमा? ना, देखता हूँ तुम एकदम बंगालिन हो। इसके बाद उसने लेनिन की स्त्री तथा विप्लव-युग की रूसी स्त्रियों की बात सुनाई थी। उमा के तरुण रक्त में आग लग गयी थी। अपने स्वामी के साधना-मंत्र को अपने इष्ट-मन्त्र की भाँति अब तक छिपा रखा था। किन्तु आज चञ्चलता की घड़ी में पति की वेदना से विचलित माता के सामने अपने को सँभाल न सकी, सब कुछ कह डाला।

सुनीति ने स्थिर होकर सुना।

वे पत्थर जैसी हो गयीं। बिजली छिपाये हुए बादल की ओर जिस प्रकार पहाड़ की चोटी देखती है, उसी प्रकार एक टक वे भविष्यत् की ओर देखती रहीं।

× × × ×

दो मास के बाद एक दिन वह वज्र गिरा।

उमा का हाथ पकड़कर सुनीति प्रतिदिन इसका इन्तजार करती थीं। इससे बचने का कुछ उपाय दीख न पड़ा। अहीन्द्र को घर आने के लिये बार-बार आदेश, अनुरोध तथा प्रार्थना से भरा हुआ पत्र भेजा, किन्तु न तो वह आया और न कुछ उत्तर ही दिया। अमल ने लिखा था—अहीन्द्र अकस्मात् कहीं चला गया, उसका उसे कुछ पता नहीं लगता, लौटने पर खबर देगा। किसी मित्र के साथ वह कलकत्ता से बाहर कहीं गया है।

सुनीति और उमा चुपचाप एक दूसरे का सहारा लेकर होनहार का इन्तजार करने लगीं, हेमांगिनी तथा इन्द्रराय को भी यह

समाचार नहीं बतलाया। उधर इन्द्रराय काशी जाने के लिये पूरे व्यस्त थे, आँख उठाकर उमा की ओर देखने की भी उन्हें फुरसत नहीं थी। हेमांगिनी स्वामी के प्रबन्ध में लीन थीं, इसके अतिरिक्त उन्हें इस बात से भी बड़ी लाज लगती थी कि राय ने चक्रवर्ती-घराने का अनिष्ट कर दिया। वे यहां अधिकतर आतीं नहीं, बीच-बीच में आती हैं, किन्तु उदासीन मुँह सुनीति के सामने अधिक बैठ नहीं पातीं। उन्हें ऐसा लगता है कि उदासीन मुँह सुनीति जैसे सम्पत्ति हानि के लिये उनका अपमान कर रही हैं। उमा का उदास मुंह देखकर सोचती हैं, बाप की लज्जा से ही वह सिर नीचा कर मलीन हो गयी है। किसी बात के पूछते समय उसका गला रुंध जाता है।

उस दिन अँधेरी रात थी। रात का पहला पहर बीत रहा था। चैत महीने के पहले सप्ताह में असमय पानी बरस रहा था। आकाश में उसी अकाल वर्षा के घनघोर बादल हैं, चारों ओर घना अँधेरा छाया हुआ है। उसी अँधेरे में चलनेवाले लम्बे अँधेरे के समूह के समान अहीन्द्र कालिन्दी की बालू पार कर चला आ रहा था। उसके शरीर पर बरसाती कोट तथा सिर पर बरसाती टोपी है। घने अँधेरे में अपने को छिपाये और इस आफत को सहते हुए वह माँ और उमा से भेंट करने आ रहा था। पुलिस को उनके षड्यन्त्र का पता चल गया है।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के महायुद्ध के पश्चात् उस समय भारत के जन-आन्दोलन का पहला अध्याय समाप्त हो चुका था। नये अध्याय की सूचना से रूस के आदर्श से प्रोत्साहित साम्यवादी युवकों में एक षड्यन्त्र प्रारम्भ हो गया। भारत के अनेक स्थानों पर तलाशियाँ तथा धर-पकड़ शुरू हो गयी है। अहीन्द्र यू० पी० के किसी शहर में था, वह वहीं से छिपकर आ रहा था, और आज ही रात में अँधेरा रहते

ही रहते उसे चला जाना पड़ेगा। लम्बे कदमों से बालू पार कर वह किनारे पर जा पहुँचा।

यह क्या? यह तो राय-हाट का नहीं, दियारे का घाट है! पक्की सड़कें हैं, उस अँधेरे में भी लम्बी चिमनी दिखाई पड़ रही है। वह जान पड़ता है, विमल बाबू के बँगले में उज्ज्वल प्रकाश हो रहा है।

लम्बे कुली-बैरक के पिजड़े के समान घरों में मन्द प्रकाश होने से वह जैसे एक खड़ी ट्रेन के समान जान पड़ता है। रायहाट उस पार है, वह भूल से दियारे पर आ गया है। वह लौट पड़ा, किन्तु फिर रुक गया। अनेक बातें याद आ गयीं।

कास तथा जङ्गली घासों से भरा हुआ दियारा इस समय जन-मानव से रहित होकर जैसे तन्द्रा में पड़ गया है।

अनेक दिन उस पार खड़े होकर उसने इसे देखा है। इसके बाद यहीं एक पतले रास्ते पर कतार बाँधकर काली स्त्रियों के दल को इस प्रकार निकलते देखा है, जैसे भूमि के बिल से चींटियों की कतारें बाहर निकलती हैं। वास्तव में ये मिट्टी के जीव हैं। मिट्टी में ही इनका जन्म, मिट्टी में ही कारबार और मिट्टी ही इनका सब कुछ है। उस दिन रङ्गलाल साथ था। उसी दल में सारी भी मुकुट के बीच काले पक्षी के लम्बे पर के समान थी। इसी रास्ते से उसने दियारे में प्रवेश किया था। आदिम जङ्गली जाति की बस्ती मिट्टी के कीड़ों के रहने के स्थान के समान होती है। चलते-फिरते पहाड़ के समान कमल माँझी, वृद्धा माँझिन और काले पत्थर से बने हुए अर्द्धनग्न मनुष्यों के समूह! चित्रित विशाल अजगर के माँस का ढेर; ढेर के ढेर कूची के फूल, लम्बे शरीरवाली मुखरा सारी, सन्थाल स्त्रियों का नाच! भूमि पर रङ्गलाल का लोभ! नवीन बागदी का दल भी याद आया। जमीन्दार के उदर की न मिटनेवाली भूख तथा उसे अपने भैया का भी स्मरण हो

आया। नैनीपाल की मृत्यु! श्रीपाल और मजुमदार का षड्यन्त्र! दंगा, नवीन को कालापानी। कारखानेवाले विमल बाबू। उसकी आँखें जल उठीं। इसने सीधी-सादी सन्थाल युवती सारी पर पंजा गड़ाकर उसका सर्वनाश किया है, सन्थालों की भूमि हड़प ली है। स्वयं उसके ससुर तथा पिता ने भी बाकी निकाल ली। रात के बीत जाने पर धुँधले अँधेरे में काले-काले आदमियों की कतारें—कन्धे पर भार, सिर पर बोझ, साथ में गायों, बकरियों, भेड़ों के दल—बस्ती छोड़कर चली गयीं। अन्त में भूमि-हीन होकर सन्थाल चले गये। युग-युग में इसी प्रकार ये लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर काल-समुद्र के किनारे पर आकर खड़े हो गये हैं।

अहीन्द्र की आँखें अंधेरे में पशु के समान जान पड़ रही हैं। उस विमलबाबू को! उसने पाकेट से एक छोटी, काली और भारी चीज निकाली। यह था छः चेम्बर भरा हुआ रिवाल्वर। विकार से पीड़ित रोगी के समान वह अधीर हो उठा। एक बार उसने अपनी सतर्क दृष्टि चारों ओर डाली। आस-पास सामने दियारा वैसा ही है, यहाँ-वहाँ केवल प्रकाश की किरणें फैल रही हैं, मनुष्य दिखाई नहीं देता, पीछे कालिन्दी के तट पर भी कोई नहीं है। उस पार रायहाट पर भी अँधेरा छाया है। केवल पेड़ों की चोटियों के ऊपर से एक प्रकाश दिखाई दे रहा है, वह प्रकाश घर की खुली खिड़की से आ रहा है। आलोकित घर में दो हैं, माँ और उमा! वह ठहर गया। माँ आकर खिड़की पकड़कर खड़ी हो गयीं—साफ-साफ माँ ही तो हैं। कुछ देर बाद रिवाल्वर पाकेट में डाल, दियारे को पीछे छोड़, रायहाट की ओर वह तेजी से चल पड़ा। पुराने गाँव की पेड़ों की छाया से ढँके हुए रास्ते को पारकर वह उसी आलोकित खिड़की के नीचे जाकर खड़ा हो गया, धीमे किन्तु स्पष्ट शब्द में पुकारा—माँ!

कौन? कौन?—शंका तथा व्यग्रता के साथ सुनीति ने पूछा।

माँ ?

अहीन ?

हाँ।

आयी, आयी, ठहर।

सिर की टोपी उतार कर रेन कोट की बटन खोलते-खोलते अहीन्द्र मां के मुँह की ओर देखकर हँसा। माँ को भुलावा देने के लिये वह हँस रहा था।

सुनीति एकटक अहीन्द्र की ओर देख रही थीं, आंखों में आँसू नहीं थे, किन्तु दोनों ओंठ थर-थर काँप रहे थे। अहीन्द्र को हँसते देखकर उनके कांपते ओठों पर भी हँसी की रेखा दिखाई पड़ी। मीठे स्वर में बोलीं—मैं सब सुन चुकी हूं अहीन !

अहीन्द्र चौंक पड़ा।

सुनीत बोलीं—बहू ने मुझ से सब कह दिया है।

उस घर के वे लोग ? नहीं तो तुम्हीं लोग—? उसको संदेह हुआ, शायद पुराने जमींदार-वंश ने उसकी रक्षा के लिये राजभक्ति की पराकाष्ठा दिखाकर पुलिस की शरण ली हो।

नहीं, और कोई नहीं जानता। मुझ से न कह बहू जीती कैसे ? ऐसा दुःख क्या छिपा सकती है ? किन्तु तू ने यह कर क्या डाला बेटा ?

कोट की अन्तिम बटन खोलकर अहीन्द्र हंसते हुए बोला—आज रात को ही मुझे चला जाना पड़ेगा माँ, पुलिस को हमारे दल का पता लग गया है।

सुनीति ने सब कुछ सुन लिया था, इसलिये उसने न तो कुछ भूमिका बाँधी और न उन्हें सान्त्वना देने की चेष्टा की। एक ही सांस में यह भयंकर समाचार सुनाकर निश्चिन्त हो गया। एक बार उसने हंसकर उमा की ओर देखा। खाट का बाजू पकड़े उमा खड़ी है। उसने उससे

कहा—उमा तनिक चाय पिलाओ। साथ में कुछ भोजन भी—भूख लगी है।

× × × ×

सुनीति ने केवल इतना ही कहा—यदि तुम ने विवाह न किया होता अहीन, तो मुझे कोई आपत्ति न होती।

अहीन्द्र ने उमा के मुँह की ओर देखा, उसके मुँह पर पीड़ा भरी हुई मलीन हंसी छायी हुई थी। उसे कोई शिकायत नहीं थी, उसकी आँसुओं से भरी हुई आंखों में वाडव की आग के समान तरुण प्राण के आत्मत्याग का प्रकाश चमक रहा था।

अहीन्द्र ने माँ से कहा—उमा कभी यह बात नहीं कहेगी माँ, वह इस युग की युवती है।

सुनीति ने एक गहरी साँस छोड़कर कहा—थोड़ा आराम कर ले बेटा, मैं ठीक सवेरे तुझे जगा दूँगी। वे उठ खड़ी हुईं और बहू से बोलीं—दरवाजा बन्द कर दो बहू।

उमा दरवाजा बन्दकर अहीन्द्र के सामने खड़ी हो गयी। अहीन्द्र उसका मुँह देखकर मुस्कराया, किन्तु कुछ कह न सका। उसे भय था कि शायद उमा अब रो पड़ेगी।

उमा ने कहा—सो जाओ, थोड़ा विश्राम कर लो।

अहीन्द्र एकदम आज्ञाकारी की भांति सो पड़ा। उमा उसके केशों में उँगली चलाकर जैसे उसे सुला रही थी। सवेरे, अभी थोड़ी रात बाकी ही थी, सुनीति ने आकर पुकारा—बहू! बहू!

उमा न जाने कब नींद में चूर होकर अहीन्द्र के पास ही सो गयी थी, किन्तु नींद में भी उसका चिन्ताकुल मन जाग रहा था। दो बार पुकारते ही उसकी नींद टूट गयी। उसने झटपट उठकर अहीन्द्र को जगा दिया। अहीन्द्र उठा और खिड़की खोल एक बार बाहर की ओर

देख लिया। इसके बाद उमा को खींचकर छाती से लगा लिया, और उसके काँपते हुए अधरों का चुम्बन किया ; किन्तु एक ही क्षण के लिये। इसके बाद कपड़ा पहनकर वह जूते का फीता बांधने लगा। उमा ने दरवाजा खोल दिया, सुनीति ने घर में प्रवेश किया। अहीन्द्र ने किसी के मुँह की ओर फिर न देखा, वह झुककर माँ को प्रणाम करने के बाद निकल पड़ा। सीढ़ी से उतरकर दरवाजा खोला, फिर बाहर निकल गया। दरवाजे पर खड़ी होकर सुनीति तथा उमा ने देखा, रात के अंत के हल्के अन्धेरे में अहीन्द्र कहीं गायब हो गया।

किन्तु दस बजे ही अहीन्द्र फिर चला आया, उसके साथ पुलिस थी। रेलवे स्टेशन पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया था। यू० पी० से पुलिस ने इस जिले की पुलिस को टेलिग्राम किया था। पुलिस अब घर की तलाशी लेगी।

उसपर भयंकर अभियोग था, राजा के विरुद्ध विद्रोह तथा राज्य-कर्मचारी की हत्या के लिये षड्यंत्र करने का।

\+ + + +

दस बजे से तीन बजे तक घर की तलाशी लेकर पुलिस का काम खतम हो गया। इन्द्रराय के मकान की भी तलाशी हुई। मकान के आस-पास आदमियों की भीड़ हो गयी थी। किसी की आँखें सूखी नहीं थीं, हाथ में हथकड़ी तथा कमर में रस्सी बांधकर अहीन्द्र को ले जाते देख सब की आँखें सजल हो गयीं। उनमें कुछ लोग बहुत रो रहे थे, मानदा तथा मोती बागदिन सगे-सम्बन्धियों की तरह रो रही थीं, और रो रहा था योगेश मजुमदार। उसके दुःख तथा लज्जा की सीमा न रही। वह सभी बातों का कारण अपने ही को मानकर चंचल हो उठा। यह रोना उसका थोड़े ही समय का है, शायद कल ही कारखानेदार के इशारे पर चक्रवर्ती-घराने को हानि पहुंचाने के लिये उठ खड़ा होगा, किंतु

तोभी आज रो रहा है। अचिन्त्य बाबू एक पेड़ की आड़ में खड़े होकर फफक-फफक कर रो रहे हैं। यह मर्मभेदी दृश्य वह दुर्बल मनुष्य देख नहीं सकता था। रंगलाल भी रो रहा है! केवल एक मनुष्य क्रोध के साथ कूद रहा था, हुं-हुं बाप रे! बदमाशी, सरकार के साथ चालाकी! वह था शूलपाणि। तुरन्त गांजा पीकर वह अपने शत्रु के निपात के आनन्द से कूद रहा था।

पुलिस अहीन्द्र को लेकर चली गयी। हेमांगिनी पछाड़ खाकर गिर पड़ी, उमा नीरव खड़ी रही। उसने अपने आँसू आंचल से पोंछ कर पुकारा—उठो माँ, एक दिन तो वे लौटेंगे हो। रोओ मत। हेमांगिनी ने जब मुँह उठाकर कन्या के मुँह की ओर देखा, तो अवाक् हो गयीं।

इन्द्रराय सिर नीचा किये हुए टहल रहे थे। राय-घराने तथा चक्रवर्ती-घराने का मिला हुआ जीवन-पथ फिर भंग हो गया। दूसरे क्षण जान पड़ा—नहीं, नहीं, भंग नहीं हुआ। विपद आयी है, आघात लगा है। उस आघात से दोनों घरानों को समान दुःख हुआ है। किन्तु विच्छेद नहीं हुआ है, दोनों घरानों का सम्बन्ध टूटा नहीं है। एक लम्बी साँस छोड़ उन्होंने इष्टदेवी को पुकारा—तारा, तारा माँ! इसके बाद बोले—उठो मालकिन, उठो।

हेमांगिनी बोलीं—अब नहीं, तुम काशी चलनेवाले थे, अब काशी चलो।

जाऊँगा। अहीन्द्र का फैसला हो जाय। माँने बाधा डाल दी। उमा तेरी सास कहाँ गयीं, देख तो।

रामेश्वर के कमरे में सुनीति भूमि पर मुँह छिपाये मिट्टी की मूर्ति के समान पड़ी थीं, धीमी साँस छोड़ सारे शरीर में तनिक भी हलचल नहीं थी। महीन्द्र ने जिस दिन आत्म-समर्पण किया, वह उस दिन भी ठीक इसी तरह पड़ी थीं।

खाट पर रामेश्वर पत्थर की तरह बैठे थे।

पैंतीस

अँधेरी रात है।

रामेश्वर पत्थर की मूर्त्ति के समान उसी तरह बैठे थे। वैसी दृष्टि, वैसी ही भंगी। घर में धीमा प्रकाश, प्रकाश के चारों ओर वैसा ही घना अँधेरा। सुनीति उसी प्रकार उल्टी होकर भूमि की ओर मुँह किये हुए पड़ी हैं, उमा को हेमांगिनी अपने साथ ले गयी हैं। राय नहीं ले जाना चाहते थे, किन्तु हेमांगिनी की कातरता देखकर "न" भी नहीं कह सके। अपराधी के समान कहा था—कल सवेरे ही उमा को भेज दूँगा।

क्षणभर के लिये सुनीति ने सिर उठाकर कहा था, अच्छा। मानदा नीचे पड़कर रो रही है।

शोकपूर्ण नीरवता भंगकर रामेश्वर ने पुकारा—जल। सूखे कण्ठ से आवाज नहीं निकली, किन्तु बात समझ ली गयी। सुनीति एक लम्बी साँस छोड़कर उठीं, उनके मन में दुःख हुआ, आज रामेश्वर का भोजन भी नहीं हुआ। उन्होंने उठकर देखा, उमा ने जलपान लाकर कोने के टेबिल पर रख दिया है। जलपान की थाली तथा ग्लास लाकर उन्होंने मीठे स्वर से कहा—कुछ खा लो। मैं भूल गयी थी, याद नहीं। केवल ग्लास उठाकर रामेश्वर ने जल पी लिया और भोजन अस्वीकार करते हुए कहा—नहीं।

सुनीति इस समय रो पड़ीं।

रामेश्वर ने मीठे स्वर में पूछा—अहीन को फाँसी हो गयी क्या ? णाभरे स्वर में सुनीति बोल उठीं—ना, ना, उसने खून नहीं किया है, ख़ व तथा खून के लिये षड्यंत्र किया है। खून तो किया नहीं।

रामेश्वर बोले—तुम्हारे पुण्य तथा उमा के भाग्य से वह बचा था— ाति चुप रह गयीं।

रामेश्वर बोले—अच्छा, वे मुझे सजा क्यों नहीं देते ? अहीन तो मेरा पुत्र है। दोष तो मेरा ही है।

आवेग से भरे हुए कण्ठ से सुनीति ने कहा—ना, ना, हमारे लिये ही हें इतना कष्ट हो रहा है। तुम्हारा दोष नहीं है, मेरे भाग्य का, मेरे का दोष है।

बहुत धीरे-धीरे सिर हिलाते-हिलाते रामेश्वर ने कहा—नहीं।

इसके बाद बहुत देर तक चुप रहकर वे बोले—तुम नहीं जानती, ई नहीं जानता—मेरे खून का ही दोष है। छाया मूर्त्ति की तरह हाथ ाकर उँगली से संकेत करते हुए उन्होंने कहा—उस जगह तुम्हारी ी—राधारानी और अपनी प्रथम सन्तान को गला घोंटकर मैंने ा है।

सुनीति ने भय से आँखें फाड़ लीं और स्वामी के मुँह की ओर ने लगीं।

रामेश्वर कहते गये—एक दिन देखा, राय के मकान में राधारानी एक ाक से हँस रही है। वह उसका फुफेरा भाई था ! मुझ में चरित्र- ष था न, इसलिये मुझे सन्देह हो गया। उन्होंने एक लम्बी साँस ड़कर कहा—संसार का यही नियम है—"आत्मवत् मन्यते जगत्।" अन्धा है, वह पृथ्वी में अन्धकार ही देखता है।

रामेश्वर चुप हो गये।

कुछ देर चुप रहकर वे फिर कहने लगे—पुत्र हुआ, किन्तु उसके नेत्र तथा केश काले थे, हमलोगों को तरह भूरे नहीं थे। मैं पागल-सा हो गया। जान पड़ा, बालक उसके समान है। एक दिन बालक सो रहा था, उसका गला घोंट दिया।

सुनीति ने थर-थर काँपते हुए स्वामी का मुँह हाथ से दबाकर कहा—ना, ना, कहो मत, कहो मत।

रामेश्वर चुपचाप बैठ गये। बहुत देर के बाद फिर अकस्मात् बोल उठे—किन्तु राधारानी समझ गयी थी। शायद उसने देखा था, किन्तु वह रोई नहीं, केवल इतना ही कहा—जिन आँखों से तुमने इस प्रकार का "कु" देखा है, वे अन्धी हो जायँगी।

फिर कुछ देर चुप रहकर उन्होंने कहना शुरू किया—उसने किसी से कुछ नहीं कहा, बाप के घर भी नहीं गयी, एक दिन काशी जाने के लिये कह घर छोड़कर चली गयी। मैंने उसी रात को उसे स्टेशन से लौटाकर उसी स्थान पर उसका गला घोंटा। जब उसका गला घोंटने लगा, तब उसने शाप दिया—केवल आँखें ही नहीं, तुम्हारे दोनों हाथों में कोढ़ हो जायगा।

सुनीति का सब गोलमाल होता जा रहा है! स्थान, काल, पात्र—सब घुँधले हो रहे हैं। वे विह्वल दृष्टि से स्वामी की ओर देख रही थीं, अज्ञान की तरह उन्होंने अब पूछा—कहाँ, तुम्हें तो कोढ़ हुआ नहीं? आँखें भी अन्धी नहीं हुईं।

हुई थीं, किन्तु अच्छी हो गयीं। महीन तथा अहीन ने अच्छी कर दीं। एक-एक हाथ और आँखें दिखाकर बोले—यह अहीन का और यह है महीन का। इसके बाद मीठी आवाज में उन्होंने कहा—तुम्हारे गर्भ का नहीं, मेरे खून का दोष है। जानती हो सुनीति, हमारा वंश पापमय है। नवाब दीवार में चुनाकर मनुष्यों को मारते थे, किन्तु मेरा सारा पाप नष्ट हो गया। सब रोग अच्छे हो गये।

सुनीति चुपचाप बठी रहीं, सूत कातने की घुण्डी की तरह उनका मन जीवन-केन्द्र से अलग हो गया है, वह किसी प्रकार भी उसे खींच नहीं पाती हैं। वह दिशा भूल जाने वाले की तरह उदास हैं।

कुछ देर बाद ही बाहर पक्षियों ने कलरव कर प्रातःकाल की घोषणा कर दी। रामेश्वर चौंककर बोले—सवेरा हो गया?—कहते-कहते बिछौने से उतरकर खिड़की खोल दी। वे आकाश की ओर देखते हुए खड़े रहे। सामने आकाश में तो उदयाचल से लाखों योजन पार कर प्रकाश की बाढ़ की धारा भूमि पर आने लगी। क्षण-क्षण पर दिशायें स्वच्छ होती जा रही हैं, सब कुछ दिखायी दे रहा है—पुराना रायहाट, जाड़े में पतली कालिन्दी, उस पार का दियारा, आकाश में उठी हुई चिमनी, कारखाने की इमारतों की कतारें, चौड़ी सुन्दर सड़कें, आदमियों से भरा हुआ दियारा।

दियारा देखते ही सुनीति चौंक पड़ीं। सत्यानाशी दियारा! व्याकुल होकर उन्होंने पूछा—क्या तुम—क्या तुमने मेरी सौत का शरीर उस-उस दियारे में ही गाड़ा था?

विस्मय के साथ मुँह फेरकर रामेश्वर बोले—ना, घर के कुँयें में—उसे बन्द कर दिया।

सुनीति ने विह्वल होकर पूछा—इसके पश्चात्? दिशा भूले हुए व्याकुल मन में बड़ी चिन्ता, बड़े प्रश्न उठ रहे थे। सौत के कंकाल पर तो दियारा निकला नहीं है, तब क्यों ऐसा हुआ?

रामेश्वर ने उस बातपर ध्यान नहीं दिया, मुँह फेरकर अपने दोनों हाथ शून्य में फैला दिये। उसी समय दिगन्त में सूर्य दिखायी पड़ा, उसका प्रकाश पूरी चमक तथा गर्मी लेकर रामेश्वर के हाथों पर फैल गया। उनको ओर देख उन्होंने कहा—आह कोई दाग नहीं है, एकदम सफेद हो गया है।

हड्डी तथा चमड़ेवाले बिना रक्त के सूखे दो हाथ हैं। दोनों हाथ

जोड़ रामेश्वर ने सूर्य को प्रणाम किया—जवाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महा-द्युतिं ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ।

सुनीति उदास दृष्टि से दियारे की ओर देख रही थीं, रामेश्वर का स्वर कान में जाते ही उन्होंने आकाश की ओर देखा। सामने ही लाल सूर्य है, उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक मेघ-रहित आकाश सब पापों के नाश करने वाले देवता के अत्यन्त प्रकाश से चमक रहा है। उसी का प्रतिविम्ब रायहाट में कालिन्दी के दियारे तथा सर्वत्र पड़ा हुआ है। उनकी आँखों से आँसू अविराम झरने लगे।

* समाप्त *